नरपिशाच ।

(दूसरा भाग)

एक अत्यन्त मनोहर उपन्यास

जी० डबलिउ० एम० रेनाल्डस कृत (Faust) फौष्ट
नामक अङ्गरेजी ग्रन्थ का भाषानुवाद ।

श्री हरिकृष्ण जौहर द्वारा अनुवादित ।

॥ काशी ॥

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित ।

सन् १९०३ ई०

प्रथम वार १०००] मूल्य ।॥)

नर-पिशाच ।

(दूसरा भाग)

एडा—मैं अनुमान करती हूं, कि कदाच् आप उस बेहया का सविशेष वृत्तान्त मुझसे सुनाने आये हैं । जिसने हम दोनों को हमारे मुँह पर—हमारे घर में सैकड़ों ही दुर्वचन कहे—और फिर अधिक खेद तो इसका है, कि श्रीमान् उसकी इतनी आवभगत करें । मानों वह आप का मालिक है, और आप उसके गुलाम के भी गुलाम ।

बेरेन—(बेअदबी से चिल्ला के) मैं तुम्हें उसका कोई विशेष परिचय देने के लिये नहीं आया हूं, परन्तु जो मैं कहता हूं वह बात हित की है । एक निवेदन भी तुम हमारा स्वीकार कर लो तो फिर कभी शरमन के आने का कष्ट तुम्हें न उठाना पड़ेगा ।

एडा—(सकोर) और सुनें भी तो सही कि वह आपका निवेदन कौन सा है ?

लोर्ड—रुपया—और बहुत सा रुपया—क्योंकि मेरे पास अब एक फूटी कौड़ी भी नहीं रह गई ।

एडा—और क्यों श्रीमान्! अभी लौं वह लुच्चा घर में बैठा हुआ है !

लोर्ड—हां वह बैठा है । और कुछ रुपया माँगता है, परन्तु यहां मेरे पास कुछ हैही नहीं । तुम कौंटू ओरेना से बहुत कुछ ले सक्ती हो और इस तरह हमें इस कष्ट से उद्धार करा सक्ती हो । -

एडा—(अपनी आँखें बेरेन पर गड़ा के) अब मैं समझ गई, श्रीमान् ! कि अवश्य कोई भयानक भेद आप लोगों में छिपा हुआ है नहीं जिसने आप की स्त्री की बेइज्जती की उसका इतना ध्यान !

बेरेन—(घृणा से) हमारी स्त्री—क्या तुम्हारी रक्षा करना वा तुम्हें बेइज्जती से बचाना हमारा काम है ?—और क्या तुम ईश्वर की दृष्टि में सचमुच हमारी स्त्री हो ? माना कि मनुष्यों के दिखाने के लिये यह सब कर लिया गया ।

एडा—क्या हम लोगों का हाथ, गिरजा में नहीं मिलाया गया श्रीमान् ? और क्या तुमने हमारे प्रत्येक प्रकार के रक्षा की सौगन्ध नहीं खाई ?

लिये ताने दे सक्ती है? क्या उसे अपनी अवस्था भूल गई—क्या एक दिन श्रीमती लेडी साहिबा के गर्भ से फोष्ट का पुत्र नहीं उत्पन्न हुआ था—"

इतना सुनतेही एडा के चेहरे पर मुर्दों की जैसी रङ्गत आ गई, उसने काँप के जोर से कहा—

बस, बस! अब जाने दो, श्रीमान्! हम लोगों की यह बड़ीही भूल है कि एक दूसरे को ताना दें, और उसके दोषों को खोलें। यह हमारे पास उस आप के पीछेवाले सन्दूक की ताली है। उसमें सोना भरा हुवा है, जितना चाहे निकाल लें—परन्तु साथही उस व्यक्ति से भी सहेज दें, कि फिर कभी इस मकान में आने का साहस न करे।

बेरेन ने चाबी ले ली, और सन्दूक खोल के जितने द्रव्य की आवश्यकता थी वह उसमें से निकाल लिया।

इसके उपरान्त वह कोठरी से निकल गया।

कोई पाव घण्टे के उपरान्त जेरट्रूड ने आके एडा को यह सुसमाचार सुनाया कि शरमन मकान से चला गया है।

यह सुन के एडा ने एक उत्तम और दृढ़, सुन्दर, घड़ी पर, जो उसकी * कलाई में बँधी थी, दृष्टि डाली, और फिर आपही आप कहने लगी—

"अब समय बिलकुलही निकट आ गया है!"

इतना कहके उसने जरट्रूड को कमरे से निकल जाने का इशारा किया। और जब वह चली गई, तो पहिले तो इसने अपने बटुवे को सोने से भरा। एक काला लबादा ओढ़ा और एक नकाब चेहरे पर डाल मकान के पिछवाड़े एक चोर द्वार से बाहर निकल गई।

मकान से निकल के, वह बहुत सी सन्नाटी बाजारों, तथा अनेकानेक मैली और तङ्ग गलियों को अपने पीछे छोड़ती आगे बढ़ने लगी। बीच बीच में वह ठहर जाती थी, और अपने चारों ओर इस लिये देखने लगती थी, कि कदाच उसका पीछा कोई कर रहा हो, वा वह स्वयं ही अपने रास्ते से भटक गई हो। परन्तु जब इन दोनों में से कोई बात भी न पाती थी तो वह फिर उसी शीघ्रता से आगे बढ़ने लगती थी।

अन्त वह एक छोटे से मकान के द्वार पर जिसपर दरिद्रता की झलक दिखाई पड़ती थी, आ के ठहरी। नीचे की कुल खिड़कियाँ बड़ीही कड़ाई से बन्द थी, हां ऊपर के खण्ड की एक खिड़की खुली हुई थी, जिसमें से किसी प्रदीप का टिमटिमाता हुवा मन्द २ प्रकाश निकल के सामने के एक दूसरे मकान की दीवार पर पड़ रहा था।

बस यही छोटा और टूटा फूटा मकान था, जिसके द्वार पर एडा ठहरी और उसे जोर से खटखटाया।

द्वार खटखटाने के उपरान्त एडा चुपचाप वहीं खड़ी थी, उसने दोबारा द्वार खटखटाने का उद्योग न किया, क्योंकि वह गृहस्वामी के स्वभाव से भली प्रकार परिचित थी।

अन्त द्वार बहुतही धीरे धीरे खुला और उसके भीतर एक बुढ़िया—जिसके बाल पक के चांदी की तरह चमक रहे थे—जिसका चेहरा बड़ाही पीला हो रहा था, मानों किसी शव का हो—हाथ में लम्प लिये खड़ी थी।

द्वार खुलने पर एडा ने बहुतही धीरे से एक बेर उसका नाम लिया, और तुरन्त द्वार के भीतर हो रही।

भीतर पहुँचतेही द्वार तुरन्त बन्द कर दिया गया, और बुढ़िया इसे प्रकाश दिखाती और एक सँकरे रास्ते से होती हुई एक बड़े कमरे में ले गई। इस बड़े कमरे के सामानों से हम, पाठकगण को विज्ञ कर देना परमावश्यक समझते हैं।

इस कोठरी के द्वार के दाहिनेही बिलकुल सटी हुई एक इलामारी थी, जिसका द्वार इस समय खुला हुवा था, और उसके खानों में सैकड़ोंही छोटी बड़ी शीशियां तथा बोतले, रङ्ग बिरङ्ग के अरकों से भरे हुये रक्खे थे। कुछ नाप और पैमाने के गिलास के सिवा और कुछ भिन्न २ प्रकार की शराबे भी रक्खी हुई थीं।

अँगेठी के निकट, एक टेबुल रक्खा हुवा था, जिसपर अनेकानेक दवाइयां बनाने के औजार, जैसे तौलने का काँटा, नापने का गिलास, दो चीजों को एक में मिलाने का पत्थर और छुरी इत्यादि रक्खी हुई थीं। अँगीठी तथा टेबुल के बीच में एक संगमरमर का खल, अनेक प्रकार की दवाइयों से भरा हुवा रक्खा था। और एक खूंटी पर एक लबादा और एक नकाब रक्खी हुई थी।

कोठरी के एक कोने में लकड़ी के पिंजड़ों में कई प्रकार की चिड़ियां तथा खरगोश फिर रहे थे।

इन्हीं पिंजड़ों के निकट एक बहुत बड़ा सन्दूक रक्खा हुवा था, जिसमें बहुत से छोटे बड़े छेद बने हुये थे।

तात्पर्य यह कि इस कोठरी की कुल वस्तु दवाइयों के काम की और मनुष्य को हैरानी में डालनेवाली थी।

दीवारों पर खूंटी गाड़ के चौड़े तख्ते के टुकड़े रख दिये गये थे। जिनपर बहुत सी आश्चर्यमय और भयदायक वस्तुवें रक्खी हुई थीं, जिनमें एक शीशे की सुराही रक्खी हुई थी, जो बिलकुल इन्हीं कामों के लायक स्पिरिट शराब से भरी रक्खी थी। इसके अतिरिक्त उस तख्ते पर और भी बहुत सी सुराहियां थी, जिनका मुँह लाह से बन्द किया गया था। इनमें से एक में एक मुरदे बच्चे की लाश थी, जिसका धड़ तो दो था, परन्तु सिर केवल एक ही। दूसरे में एक और मुरदे बच्चे की लाश थी, जिसकी चोटी इतनी उँची थी कि एक मुकुट सिर पर धरा जान पड़ता था—और तीसरी सुराही में एक काला साँप लिपटा हुवा रक्खा गया था—चौथे में एक बहुत बड़ा पीला मेंडक रक्खा हुवा था—पांचवे में किसी मनुष्य का हृदय रक्खा हुवा था, जिसमें एक चांदी की कील गड़ी हुई थी—इसके अतिरिक्त बाकी की सुराहियां जो बीस से किसी प्रकार कम न होंगी, इसी प्रकार की वस्तुओं से भरी रक्खी थीं।

इन्हीं तख्ते के बीच एक और काठ की इलामारी थी, जिसमें मनुष्य का प्रत्येक अङ्ग जो हाथ, पैर, हृदय, सिर, कलेजा, इत्यादि हैं पृथक कर रक्खा हुवा था, और उसपर एक विशेष प्रकार का ऐसा रङ्ग चढ़ा हुवा था, कि जिससे वह सब ताजाही जान पड़ता था।

अब हम दो एक शब्द बुढ़िया के बारे में भी कहा चाहते हैं, और फिर अपना किस्सा आगे बढ़ाते हैं।

इसका कद बड़ाही लम्बा था, जैसा प्रायः स्त्रियों में नहीं देखने में आता था। इसका वयस सत्तर से किसी प्रकार कम न होगा। इसकी कमर झुकी हुई थी, जिससे जान पड़ता था, कि समय ने इसके कन्धों पर कोई बोझा लाद दिया है।

उसकी आंखे भूँरी चमकीली और अचल थीं। वह स्थिरता से जब अपने से बात करनेवाले के चेहरे को देखती तो तुरन्तही उसके हृदय का हाल जान जाती थी।

इसके चेहरे पर कोई रङ्ग न था। वह ऐसा सुफेद था कि जैसा मुर्दों का होता है। एक मोटा नीला रङ्ग उसके होठों को चेहरे से पृथक् कर रहा था।

यह स्त्री इटली देश की रहनेवाली थी, और उसका नाम फोनरेना था।

हां तो जब बुढ़िया एडा को इस कोठरी में लाई तो कहने लगी—

"बैठ जावो बेटा। कहो कैसे आना हुवा?"

एडा—बूआ! मैं इस लिये आई हूं, कि मुझे एक विष हलाहल दो—जिसका प्रभाव क्रमशः प्रगट हो—हां बहुतही धीरे धीरे कि मनुष्य घुल २ के मर जाये परन्तु किसी प्रकार इसका पता न चल सके।

बुढ़िया—हां मैं आप को एक ऐसा अरक दे सक्ती हूं, कि जिसकी छः बून्दें अपना भयानक परिणाम दिखा सक्ती हैं, और मनुष्य को कबर में सुलाये बिना नहीं छोड़तीं—

एडा—(बाधा दे कर) भला कितने दिनों में इसका असर प्रगट होगा?

बुढ़िया—छः हफ्तों में मेरी प्यारी!

एंडा—आह! यह तो बहुतही शीघ्र है—इतने दिनों में मनुष्य के स्वास्थ्य का बिगड़ जाना और एकदम से मृत्यु के मुँह में जा पड़ना तो लोगों के चित्त में भांति २ के सन्देह उत्पन्न करेगा, और इससे वे मुझी पर सन्देह कर सक्ते हैं—और फिर मेरा सब भेद खुल जायेगा। मुझे इसमें बड़ी सावधानी से काम करना होगा, क्योंकि मुझे धोखा भी एक बहुत बड़े चालाक मनुष्य को देना है।

बुढ़िया—तो क्या यह किसी पुरुष के लिये है?

एडा—नहीं यह एक स्त्री के लिये है। परन्तु वह एक ऐसे चालाक व्यक्ति की स्त्री है कि जो तनिक से सन्देह पर बात की तह में पहुँच सक्ता है।

बुढ़िया—(एडा की कुल बातों को भली प्रकार समझ के) आहा; सुन्दरी, मैं अब तुह्मारी कुल बातों को समझ गई। तुम किसी स्त्री को ऐसे मारा चाहती हो, कि उसके पति को यही जान पड़े कि वह अपनी मौत से मरी है।

एडा—बस ठीक यही! तुम भली प्रकार समझ गईं! हां तो कहो—कोई दवा इस प्रकार की तुह्मारे पास तैयार है?

बुढ़िया—हां वही विष, जिसे एक बेर मैंने तुह्में दिया था—"

एडा—हां हां मुझे मालूम है, उसके बयान से क्या लाभ—यह देखो—हमारा सोना से भरा हुवा बटुवा है—यदि मुझे दवा दो तो तुम इसे ले सक्ती हो, और नहीं तो मुझे बिदा करो मैं चलूं।

बुढ़िया—मैं दवा दूंगी। मुझे और एक नया नुसखा भी मिल गया है, जो बहुतही धीरे धीरे अपना असर प्रगट करता है—इससे पहिले मनुष्य में निर्बलता आती जाती है—भूख बन्द होती जाती है—परन्तु प्यास बहुतही लगती है—परन्तु कोई शारीरिक कष्ट, जैसे बुखार, या सूजन, या बेचैनी नहीं होती, और अन्त रोगी का

प्राणान्त हो जाता है। इस विष की न तो कोई दवा है; और न किसी प्रकार इसकी पहचान ही हो सकती है।

इतना सुनतेही एडा के काले २ नेत्र मारे प्रसन्नता के चमकने लगे, और वह बोली—

"बस बस ऐसाही विष मुझे चाहिये भी—कि जिसमें शिकार बहुतही धीरे २ एक वर्ष में प्राण त्यागे, जिसमें किसी को सन्देह वा दुबधा न होने पाये।—"

बुढ़िया—तो मैं तुम्हें ऐसाही विष दूंगी भी! परन्तु क्या उसके लाने तक तुम यहां बैठ सकोगी?

एडा—क्यों नहीं! वरन् उसमें दवाइयों के मिलाने और उसके बनने का तमाशा भी मैं देखूँगी।

यह सुनके सिगनोरा फोनटेना अपने स्थान से उठी, और उस इलामारी में से कुछ शीशियां निकाल के टेबुल पर रक्खीं।

इन शीशियों में की दवा मिला जुला के, जो बहुत नाप जोख और सावधानी के साथ मिलाई गई थी उसने एक दवा तैयार की।

इसके उपरान्त वह उन पिंजड़ों के पास पहुँची, और उन खरगोशों में से एक खरगोश को जो खेल रहा था निकाल लाई।

बुढ़िया—मैंने हालही में इन ख़रगोशों को मँगाया है। आज रात को इनका एक नया और विशेष अरक तैयार करूंगी। अच्छा अब देखिये मैं उन वस्तुओं को निकालती हूं, जो मेरे कामों के लिये बड़ीही उपयुक्त है।

इतना कहके उसने उस बड़े सन्दूक को खोला, जिसमें बहुत से छोटे बड़े छेद बने हुवे थे।

एडा उत्सुकता से उस सन्दूक की ओर बढ़ी—परन्तु निकट पहुँच के और उसे देख के एक भययुक्त चीख मारके पीछे हट गई। इस सन्दूक में एक फ्लानेल के टुकड़े पर बहुत से साँप पेचखाते हुवे दिखाई पड़े, जिनकी भयानक आँखें और लपलपाती हुई जीभों ने एडा को बहुतही भयभीत कर दिया।

जहर बनानेवाली बुढ़िया एडा के इस भय को देख के बहुतही हँसी। फिर सन्दूक में हाथ डाल के कई सर्प उसमें से निकाल लिये, जो इधर उधर गरदन बढ़ाके फुफकार रहे थे, और फिर उसके खुले हुवे हाथ में बेतौर लपट गये।

एडा—(भय से) ईश्वर के लिये, ऐसी उजड्डता न करो।

बुढ़िया—प्यारी लेडी इनसे भयखाने की क्या आवश्यक है—वे कुछ बिगाड़ नहीं सकते।

इतना कहके उसने उन्हें सन्दूक में डाल दिया, और उसका पटरा बन्द कर दिया। अब एडा के प्राण में प्राण आये, उसने निडर हो के कहा—

"तो क्या इनमें विष नहीं है !"

बुढ़िया—आह ! इनके दाँतो में तो वह हलाहल भरा हुवा है कि छूजाते मनुष्य पर अपना असर दिखाता है, पर मैं आज सोने के पहिले, इनका कुल विष निकाल लूंगी। मुझपर विष न असर करने का कारण यह है कि तुह्मारे आने से कुछ पहिले मैंने एक दवा अपने हाथों पर लगा ली थी, जिसकी वजह वे हमें काट नहीं सकते।

बुढ़िया फिर अपने कामों में लग गई।

वह एक तिपाई पर बैठ गई, और खरगोश को अपने जांघो में दबा के तथा उसका मुँह एक हाथ से खोल के दो चार बूँद उसी विष का उसके मुँह में टपका दिया, जिसे अभी इसने तैयार किया था।

आगे बेचारे खरगोश को कोठरी में छोड़ दिया।

बेचारा छोटा जानवर कुछ देर तक तो कोठरी में इधर उधर बड़ीही प्रसन्नता से दौड़ता रहा—परन्तु कुछही मिनटों के उपरान्त उसकी चाल बड़ीही मन्द पड़ गई—वह कष्ट में पड़ा मालूम होने लगाः—एक भारी निर्बलता उसपर बोध होने लगी। एडा तथा बुढ़िया उसपर दृष्टि गड़ाये थीं, कुछही देर में वह गिर पड़ा, इसके उपरान्त मर गया।

इसके मरतेही ताक पर की रक्खी घड़ी को बुढ़िया ने देखा और हिसाब लगाया कि यह जानवर पाव घण्टे में इस विष से मर गया।

बुढ़िया—अच्छा तो मुझे मालूम हो गया, कि कितना बल इस विष में इससमय है। यह अभी बड़ाही तेज है। मैं श्रीमती से निवेदन करती हूं, कि जहाँ लों बन पड़े इस आग से हटही के बैठिये।

एडा, बुढ़िया की बात मानके पीछे हट गई। और बुढ़िया ने उस दवाई को एक लोहे के बरतन में डाल के आग पर चढ़ा दिया। और जब उसने चूल्हे में आग धधकाई तो साथही कुल खिड़कियो के द्वार भी खोल दिये, जिसमें बरतन में का निकलता हुवा धूँवा खिड़कियों की आती हुई वायु से बाहर निकलता जावे, और फिर जब वह चूल्हे के पास पहुँची तो एक शीशे की टट्टी अपने चेहरे के सामने लगा दी।

एडा यह सब बड़ी उत्सुकता से देख रही थी।

बुढ़िया चूल्हे के पास बैठी अपने दुबले पतले हाथों से आग भड़का रही थी।

जैसे२ आग भड़की वैसेही वैसे उस बरतन में से धूंवा कुछ विशेष निकलने लगा, और जिसमें से उसका मुर्दे का सा चेहरा ठीक भूत की भांति मालूम होता था।

उससमय ठीक यही जान पड़ता था कि मानों कोई कापालिक श्मशान जगा रहा है।

उसके सुफेद २ बाल इससमय खुले हुवे थे, जिसपर दहकती हुई आग की लालिमा की सभा जाके पड़ती थी; और ऐसा जान पड़ता था कि मानों उसके सिर पर आग बल रही थी, और उस शीशे की टट्टी में से बुढ़िया की चमकती हुई आँखे बेतरह अपने घर में से बाहर निकल आई थीं। जिससे बड़ाही त्रास मालूम होता था।

एडा—वही एडा जिसके हृदय को पत्थर या लोहे से भी तुलना देने में अत्युक्ति नहीं हो सकती—वही एडा जिसकी बहादुरी और दृढ़ता ने फोष्ट को भी वशीभूत कर लिया था—वह एडा इस विचित्र दृश्य को देख के काँप गई।

इससमय उसने अपने आस पास एक दृष्टि दौड़ाई तो उसे चारों ओर वेही भयानक वस्तुयें दिखाई पड़ीं। अर्थात् वह इलमारी जिसमें विष भरे हुये थे। वह शीशे की सुराहियां जिनमें बड़ीही भयानक वस्तुयें रक्खी हुई थीं—वह सन्दूक जिसमें साँप रक्खे हुवे थे, और जिनकी फुफकार अबलों इसके कर्ण कुहर में प्रवेश करती बोध होती थी और वह विष जो इससमय आग पर चढ़ा था—इसके साथही उसे यह भी ध्यान आ गया कि इस विष के तैयार कराने का फल क्या होगा। यही सब बातें थी, जिन्हों ने बेरोनेस जेरतिन के मस्तष्क में पहुँच के उसे बिलकुलही डरा दिया।

परन्तु कुछही काल के उपरान्त एक भयानक बात और हुई अर्थात् उस दवाई का निकलता हुवा धुवां, इसके नाक से हो कर दिल और दिमाग में पहुँचने लगा। जिससे उसे बड़ीही घबड़ाहट हुई—उसका दम घुटने लगा—उसने घबड़ा के कुरसी से उठने की चेष्टा की परन्तु निष्फल हुई, और फिर अचेत सी हो के कुरसी पर बैठी रह गई।

अब वेही भयानक और मरी हुई वस्तुयें जिन्हें उसने देखी थीं, जीवित हो के उसके सामने आती दिखाई देने लगीं। कोठरी ऐसीही ऐसी वस्तुओं की भीड़ से भरी जान पड़ने लगी। सुराही में की बन्द लाशें मानों आँखें खोले इसकी ओर घूरती जान पड़ने लगी—उनके होंठ हिलते हुवे दिखाई पड़े, और अपने उसी स्थान पर आगे पीछे नाचते बोध होने लगी। कुछ काल पर्यन्त उसको यही दिखाई पड़ता रहा, अन्त एक बढ़ती हुई स्याही उसे जान पड़ी, और वह दृश्य इसकी आँखों के सामने से छिप गया।

कमरे के दूसरे सिर में जो एक इलामारी रक्खी हुई थी, उसका द्वार, आप से आप खुलता जान पड़ा, और उसमें से एक मुरदे की ठठरी निकलती दिखाई दी जिसकी बे-आँखों की खोपड़ी उसकी ओर दाँत निकाले और ऊपर नीचे कूदती हुई आती जान पड़ी। इतने में वह छेदवाला सन्दूक, टूटता जान पड़ा। और उसमें के कुल सर्प फुफकार मारते इसकी ओर आते जान पड़े और फिर क्रमशः निकट आके अपने काले और लम्बे शरीर से इसके पैरों में लिपट गये, जिससे एडा का सारा रक्त मारे भय के सूख गया। उसी समय उसे एक मुर्दा आग के सामने उलटा लटका हुवा और उससे फुंकता दिखाई पड़ा, और फिर दूसरे क्षण में एक लाश कफन पहिने और कूदती हुई उसके सामने एक प्याला लिये खड़ी हुई जिसमें से भाफ निकल रहा था, और कहने लगी "लो अब विष तैयार है।"

एडा एक भयानक चीख मार के अपने आपा में आई।

इतने में फिर वही आवाज सुन पड़ी "लो अब विष तैयार है।"

यह सुनके वह खड़ी हो गई, और अपने चारों ओर मारे भय के देखने लगी तो उन मुर्दों और उन भयानक वस्तुओं में से किसी को अपने निकट न पाया परन्तु हां उनका भय अबलों उसके चित्त में घुसा हुवा था।

परन्तु इसके दूसरे क्षण में उसकी बेहोशी बिलकुलही टूट गई जब उसने अपने सामने बुढ़िया को प्याला लिये खड़ी पाया और तब वह समझ गई कि वह पहिली-बातें केवल स्वप्न मात्र थीं।

एडा—(जल्दी से) भला मैं कितनी देर तक सोती रही हूं?

बुढ़िया—पूरे एक घण्टे! इस दवाई का निकलता हुवा धुँवा तुह्मारे माथे में चढ़ गया था परन्तु यह चिल्ला उठने का क्या कारण था?

एडा—आह! मैं एक भयानक स्वप्न देख रही थी—एक बड़ाही भयानक स्वप्न—मुझे यह सब मुर्दा सूरतें भूतों की तरह मुस्कराती जान पड़तीं थीं?

इतना कहके वह उठ बैठी, उसका हृदय धड़क रहा था और वह इधर उधर टहलने लगी।

बुढ़िया—(भूतों की तरह हँस कर) आह अब मैं समझ गई—आज पहिली मई है। पैशाचिक निशा—आज बहुत सी आत्मायें आ २ के हम लोगों को सता चुकी हैं। आह! मेरी प्यारी लेडी बस तुह्में भी इन्हीं आत्माओं ने दुःखी किया होगा।

एडा—परन्तु तू तो इटली की रहनेवाली है, क्या तू भी जरमनीवालों की भाँति आत्माओं और भूतों का यों आना जाना मानती है । परन्तु मुझमें कोई औरही रक्त भरा हुवा है, जिससे मैं तनिक भी इन बातों पर विश्वास नहीं करती। अस्तु! जो हो गया वह होगया, अब मैं ऐसा भयानक स्वप्न फिर नहीं देखा चाहती। हाँ विष तैयार है ?

बुढ़िया— हाँ यही तो है ।

इतना कहके उसने एक शीशी एडा के हाथ में दे दी, और फिर बोली इसके छः बूँदो में इतना असर है कि शिकार के स्वास्थ में क्रमशः इतनी हीनता उत्पन्न होगी कि वह एक साल में घुल २ के मर जायेगा । और देखो ! यह विष बिलकुल सुफेद बिना किसी रङ्ग के है और साथही इसका कोई स्वाद भी नहीं है, इससे इसके देने में भी कोई कठिनता न पड़ेगी ।

एडा—बस ठीक है ! अच्छा यह लो अपना सोना !

बुढ़िया ने अपने दुबले पतले मुर्दों के से हाथ को बढ़ाके सोना ले लिया, और जब उसे खोल के देखा तो उसकी आँखे चमकने लगीं, और उसके उस मरे हुवे शरीर में भी एक तेज जान पड़ने लगा सोना देख के उसने एडा को सलाम भी किया।

एडा ने अब उस शीशी को अपनी वक्षस्थली के पास रख लिया—हां उसी स्थान के निकट उसने उसे स्थान दिया, जहां किसी मनुष्य को गहिरी नींद सुलाने के लिये एक क्रोध की आग भड़क रही थी ।

अब एडा ने सिगनेोरा फौनटेना से विदा माँगी, और शीघ्रता से द्वार के बाहर हो अपने घर की ओर चली ।

छब्बीसवाँ बयान ।

चित्रकार ।

दूसरे दिवस एक गरीब और दुखिया चित्रकार वायना नगर में अपने फटे पुराने बिछौने से उठा ।

शीघ्रता से वस्त्र इत्यादि पहिन के उसने इलमारी खोली, और उसमें से एक सड़ी सूखी रोटी तथा उसी प्रकार की तरकारी और पानी का एक प्याला निकाला।

इन्हीं सब सूखे सड़े टुकड़ों का वह जलपान करने लगा ।

जब वह इन्हें खा चुका तो अपनी कुरसी की पीठ से लग के बैठ गया, और इस कोठरी में अकेले रहने के कारण वह आपही आप ज़ोर से कहने लगा—

"हाय रोटी भी समाप्त हो गई और तरकारी भी अब न रह गई, यद्यपि तरकारी तो हमारे मकान से कुछही दूर पर एक नदी के किनारे मिल भी सकती है, और जिसे ढूंढ़ ढाँढ़ और परिश्रम करके मैं लेही आऊँगा। परन्तु रोटी—रोटी (यहां उसका गला भर आया) रोटी कहां से आयेगी ? यह तो अन्य फलों की भाँति बन में उपजती नहीं कि मैं जाके तोड़ लाऊं। यह तो केवल रुपयोंही से खरीदी जाती है ! हाय रुपया!— और मेरे पास एक अधेला भी नहीं है। हाय यह भी भाग्य है कि इस नगर में दूर २ से लोग आके रईस और मालदार बन गये, परन्तु एक हम हैं कि जो कुछ पास था वह भी खा गये, और अब एक २ टुकड़े रोटी के लिये मोहताज हैं। माना मैंने कि मैं इस हुनर में पण्डित हूं, यहां के बड़े २ उस्ताद भी मेरा सामना नहीं कर सक्के, परन्तु मैं कोई अपना ऐसा मुरब्बी कहां से ले आऊँ, कि मेरी किसी रईस तक पहुँच करा दे जो मेरे हुनर की कदर करे ! और यह तस्वीर भी; जिसका नाम "एचिलेस की मृत्यु" है कम से कम एक महीने में तैयार हो सकती है ! परन्तु इतने दिनों पर्यन्त मैं जीवित कैसे रहूंगा, यहां तो एक कौड़ी भी खाने को नहीं है। मेरी बहिन ? परन्तु नहीं ! मैंने तो अब उससे मिलने की कसम खा ली है। उसकी हराम की कमाई, उसी को मुबारक होवे मुझे उसकी कोई परवाह नहीं है, मैं मरते २ मर जाऊँगा, परन्तु उसके आगे तो हाथ मुझसे न पसारा जायगा। परन्तु मुझे अवश्य रोटी लाना पड़ेगी। नहीं तो क्या मैं भूखों मरूंगा ? परन्तु हाय ! कोई राह भी तो नहीं सूझती, वह रोटी आ-येगी तो कहां से आयेगी ? अच्छा तो मैं अपनी अधबनी तस्वीर ही को देखूं, कदाच उससे किसी प्रकार की हिम्मत मुझ में आ जाये ! और निस्सन्देह !" इतना कहके वह अपने स्थान से उठा, और बहुतही धीरे स्वर में बोला "निस्सन्देह इस तस्वीर के दि-खाने पर वह बुड्ढा खरीदार कुछ न कुछ पेशगी देही निकलेगा।"

इसके उपरान्त युवक इस आशा से प्रसन्न जान पड़ने लगा। सच है आशाही से यह संसार भी बँधा हुवा है। युवक धीरे २ अपनी तस्वीर के चोखटे के पास पहुँचा और उसने उस कपड़े को, जिससे तस्वीर ढँकी हुई थी उठा दिया, और जैसेही उसकी दृष्टि तस्वीर पर पड़ी उसका हृदय प्रसन्नता से खिल उठा।

कई महीनों से वह इस तस्वीर के बनाने में लगा हुवा था—दिन भर तो वह

नित्यही परिश्रम किया करता था, परन्तु कभी २ रात को भी इसमें लग जाया करता था—इस काम के करने में वह केवल दो पहर को कुछ फल और सूखी रोटियाँ खा, लेता था, और फिर जी जान से उसी में लग जाता था।

इस तस्वीर को देख के वह मुस्कराया।

युवक—आह! यदि शीघ्रता करता हूं, तो तस्वीर का आनन्दही जाता रहेगा—परन्तु भली भांति तैयार करने में इसे एक मास का समय चाहिये! और यहां कल के भोजन का ठिकाना नहीं है बिना मित्र बिना सहायक के कैसी मेरी दुर्दशा हो रही है।

"तुम्हें इसका इतना सोच न करना चाहिये"

सहसा एक गम्भीर स्वर में उपरोक्त वाक्य युवक को पीछे से सुन पड़े।

शब्द सुनतेही चित्रकार शीघ्रता से फिरा तो एक शान्ति मूरति वृद्ध को जिसकी सुफेद बड़ी २ दाढ़ी उनकी छाती पर लहरा रही थी, अपने पीछेही खड़ा पाया।

बुड्ढा—(युवक को देख के और बड़ेही शान्त रूप से मुस्करा के) तुम अपनी तस्वीर के देखने में इतने डूबे हुवे थे कि मेरे जञ्जीर खटखटाने का शब्द तुमने न सुना और जब मुझे कोई उत्तर न मिला तो मैं स्वतन्त्रता से भीतर बढ़ता चला आया।

चित्रकार (दोहरा के) स्वतन्त्रता से भीतर बढ़ते चले आये—परन्तु कैसे?—यह सम्पूर्ण रूप से असम्भव है, क्योंकि द्वार तो भीतर से बन्द था।

आया वृद्ध—नहीं ऐसा नहीं है।

इतना कहके बुड्ढे ने द्वार को खोल के दिखा दिया।

चित्रकार—यथार्थ में इसमें हमारीही भूल थी। मै निस्सन्देह रात को सोते समय द्वार का बन्द करना भूल गया।

इतना कहके वह युवक चित्रकार उठा और जाके द्वार बन्द कर आया और फिर बोला "हां महाशय आप ठीक कहते थे बात यह है कि हम लोगों को सबको अपनी इज्जत का विचार रहता है।

बुड्ढा—इज्जत!

इतना कहते २ बुड्ढे की वह दयालु मूर्ति जल्लाद के सदृश हो गई और उसने सकोप कहा—

"इज्जत! क्या तुम अपनी दरिद्रता पर लज्जित होते हो? क्या तुम उसे मिटा सकते हो? क्या तुम अपने कुल बल से उसके मिटाने की चेष्टा नहीं कर रहे हो?

क्या यही ध्यान तुम्हें लज्जित किये देता है ? क्या तुम्हारी यही इच्छा है कि कुल संसार धनी और अतुल सम्पत्ति का अधिकारी हो जाये जिसमें किसी को भी दरिद्रता का कष्ट न भोगना पड़े ! आह यदि ऐसाही होता तो कभी तुम्हें इस हुनर का ध्यान भी न होता। मेरे सामने इज्जत का नाम न लो ! मैं इससे जलही मरता हूं। क्या तुम दरिद्री नहीं हो—क्या तुम अपनी इसी कोठरी में पड़े एक सामान्य व्यक्ति की भांति अपने जीवन के दिवस नहीं व्यतीत करते—नादान युवक ! यदि तुम गरीब और दरिद्री न होते तो मैं कभी तुम्हारे पास न आता !

वृद्ध के इन तानों से युवक ने दुखी हो के कहा—

"आपने कैसे जाना महाशय ! कि मेरी अवस्था वैसीही है जैसी कि आप कह रहे हैं !"

वुड्ढा—(और भी कड़ाई से) मैंने कैसे जाना ! क्या तुम इससे इनकार करते हो !

इतना कहके उसने इशारे की तरह उन टूटी फूटी दीवारों को देखा—उसकी दृष्टि चमकती हुई जाके उसके फटे पुराने बिछौने पर पड़ी—उसने इशारे से उस टूटी कुरसी टूटे टेबुल—बिगड़े हुवे चौखटे—अधूरी कलमों—खाली रकाबी—और इसके उपरान्त इसके फटे पुराने वस्त्र को देखा।

वुड्ढा—(फिर से) क्या तुम इससे इनकार करते हो !

युवक—(नेत्रों में जल भर के) भगवान जानता है कि मैं इससे इनकार नहीं कर सकता, हाय ! मेरी अवस्था तो उससे भी हीन है।

वुड्ढा—(बड़ीही सभ्यता से) अपनी अवस्था में भगवान के नाम का सम्बन्ध क्यों कराते हो—अच्छा अब यह बताओ कि यह तुम्हारी तस्वीर कितने दिनों में तैयार हो जायेगी ?

इस प्रश्न के सुनतेही युवक चित्रकार ने अपने आंसू पोछ डाले क्योंकि उसे कुछ आशा हो गई थी, और फिर इसके उपरान्त उसने कहा—

" एक मास में ! "

वृद्ध—और फिर इसके उपरान्त, मुझे आशा है कि तुम अवश्यही इसे बेचोगे !

चित्रकार—(शीघ्रता से) इच्छा तो ऐसीही है केवल इच्छाही नहीं वरन भगवान से प्रार्थना भी यही है।

वुड्ढा—तो भला वह बूढा मुसौविर जो तुम्हारे मकान से कुछ आगे, उस गली में रहता है, इसका क्या मूल्य देगा ?

यह सुनके युवक ने बड़ेही आश्चर्य से पूछा—

" पहिले मुझे यह बता दीजिये कि आप को कैसे मालूम हुवा कि मेरा और उस बुड्ढे मुसौविर का कुछ एकरार है ? "

बुड्ढा—समझ लो कि वह एक दयालुचित्त मनुष्य है—और वह यह भी जानता है कि तस्वीरों का मुझे बड़ाही शौक है—बस यही जान के और तुह्मारी गरीबी समझ के उसने मुझसे तुह्मारे लिये कुछ सिफारस कर दी हो कि तुम एक बड़ेही गुणी मनुष्य हो—परन्तु हमें इससे क्या ? "

चित्रकार—हां यदि मैं इन सब बातों को मान लूं तो फिर आप के इस झोपड़ी तथा इस ढोंस को कृतार्थ करने का कारण अनायासही मालूम हो जाता है ।

बुड्ढा—अरे जिस वस्तु का जो नाम यथार्थ में है उसके बिगाड़ने से तुह्में क्या लाभ ! यह झोपड़ी नहीं वरन एक कोठरी है । परन्तु अब भविष्य में तुह्में ऐसे स्थानों में न रहना पड़ेगा !

चित्रकार का पीला चेहरा यह सुन्तेही हर्ष से लाल हो गया । उसके कानों में इन शब्दों ने पहुँच कर बहुत कुछ आशा उसे बँधा दी ।

बुड्ढा—घबड़ाओ नहीं अब तुह्मारी योग्यता के अनुसारही तुह्मारी कदर होगी ।

उसकी योग्यता—जो यथार्थ में उच्चश्रेणी की योग्यता रखता था यदि कोई न्याय की दृष्टि से देखता तो सचमुच उसे अद्वितीय चित्रकार पाता—युवक चित्रकार अपने इस अपूर्व गुण से कुछ अविज्ञ न था—उसने बुड्ढे की बात सुनके हर्ष से एक बेर अपनी तस्वीर को देखा ।

बुड्ढा मानों युवक के चित्त की उठती हुई बातें को भली प्रकार जान रहा था ।

बुड्ढा—हां युवक निस्सन्देह तुम एक अपूर्व योग्यता रखते हो—और यह तस्वीर उसका प्रमाण है—अब मैं एक बात, तुमसे इस तस्वीर के मूल्य के बारे में कहता हूं । क्या तुम उसे छ हजार रुपये पर बेचोगे ?

युवक चित्रकार—(मुँह खोल के) छः सहस्र रुपये—क्यों महाशय ! आप मेरी दरिद्रता और हीनावस्था से अवगत होके भी दिल्लगी करते हैं—मुझे बातों में उड़ाते हैं—लज्जित करते हैं —"

उसकी बातों में बाधा दे कर बुड्ढे ने तीन सहस्र रुपयों की थैली निकाल के टेबुल पर रख दी । और फिर बड़ीही गम्भीरता से कहने लगा—

"यह मैं तुह्मारी तस्वीर के मूल्य का आधा—पेशगी की भांति दिये देता हूं ।"

यह देखतेही चित्रकार बुड्ढे के पैरों पर गिर पड़ा जिसे भगवान ने उसकी सहायता के लिये देवता के तुल्य भेज दिया था।

परन्तु उसकी यह आश्चर्ययुक्त अवस्था देख के वह सभ्य सूरत बुड्ढा बड़े जोर से ठट्ठा मार के हँसा।

इसे सुन्तेही युवक चित्रकार लज्जित हो के उठ बैठा।

बुड्ढा—(जिसे चित्रकार नहीं जानता था कि वह कौन है) देखो युवक! किसी मनुष्य के सामने घुटने न टेको। क्योंकि यह तुम नहीं जानते कि मैं किसके सामने घुटने टेके हुवा हुवा हूं। यह रुपया जो मैंने तुम्हें दिया है, केवल उस तस्वीर का बदला मात्र हैं। इसके लिये घुटने टेकने और पैरों पर गिरने की क्या आवश्यकता थी।

युवक—महाशय! यह रुपया हमारी आशाओं से कहीं विशेष है हां इतना विशेष कि जिसपर कभी स्वप्न में भी मेरा ध्यान नहीं गया था—महाशय मैं आप का बड़ाही अनुगृहीत हुवा।

बुड्ढा—तुह्मारी दृष्टि में यह एक बहुत बड़ा मूल्य है, परन्तु हमारी दृष्टि में केवल इस तस्वीर की न्योछावर मात्र हैं—तुम इसे लेने में मत हिच किचाओ यह हमारे लिये कुछ भी नहीं है, परन्तु तुह्मारे लिये बहुत कुछ है वह तस्वीर पूरी होने पर, इन्हीं रुपयों के कारण अन्त मेरी होगी। अच्छा यह बात तो समाप्त हुई और अब मैं तुमसे एक दूसरे परमावश्यक विषय पर बात चीत किया चाहता हूं जो तुह्मारी हितकर है—यदि इतनी हितकर तुह्मारे लिये नहीं है—परन्तु दूसरे के लिये तो अवश्यही है। तो क्या तुम हमारे इस एहसान के बदले हमारा भी एक काम करने के लिये प्रस्तुत हो?

चित्रकार—(गद्गद कण्ठ से) क्या इसके लिये आप मुझसे पूछते हैं? आप मुझे उस कार्य के लिये अभी आज्ञा दे सक्ते हैं? और भविष्य में भी सदैव हमारे योग्य-कार्मो से बाधित करते रहियेगा।

बुड्ढा—तुह्मारी बातों से बहुतही लड़कपन की बूपाई जाती है, युवक मनुष्य! अरे जब तुम मेरे नाम पर्यन्त नहीं जानते तो सदैव के लिये मेरे अधीन क्यों कर रह सकोगे। परन्तु इन सब बातों को जाने दो। मैं तुमसे अवश्यही कुछ बात-चीत करूंगा। इससे मैं तुह्मारी इस एक कुरसी पर बैठ जाता हूं, और तुम उस अपनी चारपाई पर जा बैठो, और जो कुछ मैं कहता हुं उसे ध्यान दे के सूनो।

चित्रकार ने बुड्ढे की आज्ञा का तुरन्तही प्रतिपालन किया; और उसका दयावान बुड्ढा कुरसी पर बैठ के यों कहने लगा।

सत्ताईसवाँ बयान।

विष का तोड़।

बुड्ढा—इतः पूर्व कि मैं तुम्हें अन्य बातों से विज्ञ करूं युवक मित्र! तुमसे यह कह देना उचित समझता हूं कि मैं तुम्हारे घराने के बहुत से विशेष २ गुप्त भेदों से विज्ञ हूं। और इसे मैं इसलिये बताये देता हूं, कि जिसमें तुम्हें हमारी बातों पर पूरा २ विश्वास हो जाय। और इस हमारे कहने के पहले भी कदाच कुछ न कुछ तुम्हें इसका अनुभव होही गया होगा कि मैं निरा अजनबी नहीं हूं।

युवक—और कदाच यही सब जान के आपने मुझपर इतना अनुग्रह दिखाया है कि जिसका धन्यवाद मैं किसी प्रकार कर नहीं सकता।

बुड्ढा—तुम्हारी इन बातों से, मुझे बड़ीही प्रसन्नता हुई, साथही मुझे खेद के साथ यह भी कहना पड़ता है, कि तुमने कारणवश इस नगर में आके अपना प्राकृतिक नाम बदल दिया है, क्योंकि यथार्थ में तुम्हारा नाम आटू पैनेल्ला है।

यह सुन्तेही आटू घबरा गया, और बेचैनी से अपने बिछौने पर पलथी बदल के कहने लगा—

"तो कदाच, यह आप से किसी पिशाच ने कह दिया है।"

इसपर बुड्ढा मुस्कराया और ऐसी दृष्टि से उसने आटू को देखा कि जिसका तात्पर्य वह बिलकुलही समझ न सका और बोला—

"आटू! तुम हमारी बातों का सिलसिला न तोड़ो! तुमने उस गुप्त भेद को जो तुम्हारी बहिन तथा कौन्ट ओरेना के बीच में था जानही लिया है—और उसे—"

आटू—(बाधा दे के शीघ्रता से) और साथही मैंनें उस पाजी कौन्ट को लड़ने पर भी प्रस्तुत कर दिया।

बुड्ढा—(ताने से) हां इसमें क्या सन्देह! परन्तु उसने पहिलीही चोट में तुम्हारे हाथ से तलवार गिरा दी।

आटू—(बड़ीही कड़ाई से) तो उससे मेरी नामर्दी तो न प्रतीत हुई—मैं वीरता से—

उतने भूखे—प्यासे—तथा थके मारे रहने पर भी उसके आगे तलवार ले के खड़ा हो गया।

बुड्ढा—वह सब कुछ हमें मालूम है। कौन्ट ने तुह्मारी तलवार छीन ली, और फिर अपनी तलवार तुह्मारी गर्दन पर रख के तुह्में इस बात की सौगन्ध खाने पर विवश किया कि तुम फिर कभी उसके तथा उसकी प्रेमिका के बीच में आके किसी प्रकार की बाधा न दोगे।

आटू—यथार्थ में यह सब सच है। और आप इस बात को ठीक उसी प्रकार बयान कर रहे हैं, मानों अपनी आखोंही से कुल देखा है। परन्तु वहां प्रथम तो चारों ओर अँधेरा छाया हुवा था—दूसरे आकाश पर बादल छाये हुवे थे, हमलोगों की उस अवस्था को, ईश्वर के सिवा, और किसी ने देखाही काहे को होगा। भगवान—"

बुड्ढा—(बेचैनी से चिल्ला के) नहीं नहीं, तुमने और तुह्मारे वैरी ने कदाच कुछ भी न देखा हो परन्तु मैं उसी अन्धकार में एक वृक्ष के पीछे छिपा हुवा यह सब देख रहा था। और तुम देखतेही हो कि मैं वहां की सब बातों से भली प्रकार विज्ञ हूं।

आटू—अच्छा तो अब तुम मेरे बारे में क्या सोचते होगे, जब तुह्में यह भली प्रकार मालूम हो गया है कि इस व्यक्ति ने एक ऐसे मनुष्य से अपना जीवन दान मांगा जो उसकी बहिन का धर्मभङ्ग कर चुका है ? यह आटू ने चिल्ला के और लज्जासागर में बिलकुलही डूब के कहा परन्तु मुझे ऐसी आशा नहीं है कि आप मेरे बारे में कोई बुरा ध्यान अपने चित्त में रखते होंगे। मैंने उस बदमाश से स्वीकार करा लिया कि एडा के गर्भ का बालक उसी से है, और मैंने विवश करके उससे तलवार लिया और लड़ने पर खड़ा हो गया, और फिर जब मैं पराजित हो गया तो मैंने अपने तुच्छ जीवन के निमित्त यह प्रण किया। परन्तु क्या मैंने उतना नहीं किया जितना किसी व्यक्ति को अपने घराने की बेहुरमती पर करना चाहिये ?

बुड्ढा—इसमें तुह्मारा कोई दोष नहीं है युवक ! मनुष्य की प्रकृतिही कुछ ऐसी बनाई गई है (कड़ाई से) जब वह किसी से पराजित होता है तो योंही एक न एक बात बना के वह लोकलाज से बचने की चेष्टा करता है।

आटू, बुड्ढे की यह बात सुन के बड़ा चकराया और फिर उसकी ओर देख के कहने लगा—

परन्तु आप को मनुष्यों पर आक्षेप तथा उनकी प्रकृति पर घृणा करना न चाहिये— वह अच्छे हों या बुरे—जो हैं वह अपने को हैं—आप भी तो मनुष्य हैं फिर अपनी बुराइयां निकालने को क्या कम हैं जो दूसरे की बुराइयां व्यर्थ ढूँढ़ते फिरैं।

बूढ़ा—मैं तुह्मारी इस बात का उत्तर नहीं देता युवक !—क्योंकि मुझे इन व्यर्थ के झगड़ों से कोई लाभ नहीं, और न मैं इस वादाविवाद के लिये तुह्मारे पास आया ही हूं। हां तो हमें अपनी बातों के असल मतलब की ओर पुनः आ जाना चाहिये। तुमने उस कथन का प्रतिपालन किया जिसे फोष्ट से तुमने किया था— तुमने अपना नाम बदल डाला—तुम अब अपनी रोटी के लिये आप परिश्रम करते हो। परन्तु अब तुह्मारे कष्ट के दिवस दूर हो गये हैं, रुपया तुह्मारे पास है, अब परवाह तुह्में किस बात की है ? परन्तु देखो सावधान ! ऐसा न करना कि रुपया पाने से तुम अपने आपे के बाहर होके मस्त हो जाओ और अपने पिछले कष्टों को बिलकुलही अपने हृदय से भुला दो और अपने भाइयों की भलाई से एकबारगीही अचेत हो जाओ।

आटू—(दृढ़ता से) नहीं महाशय ! मैं दृढ़प्रतिज्ञ हूं। आप मेरे परम मित्र हैं औ ऐसी अवस्था में मेरी सहायता पर प्रस्तुत हुये हैं। इस लिये मेरी भी यही इच्छा है कि आप पर प्रगट कर दूं कि दृढ़प्रतिज्ञ मनुष्यों के साथ उपकार करने से कैसा फल प्राप्त होता है। आप जो आज्ञा दीजिये मैं उसे करने पर प्रस्तुत हूं।

बूढ़ा मैं अभी तुह्मारी परीक्षा करूंगा—लेडी थेरिजा पर इससमय एक बड़ीहीं भयङ्कर घटना संघटित होने को है—बिचारी भोली भाली स्त्री एक निर्दयी का आखेट बना चाहती है।

यह सुनतेही आटू का चेहरा रक्त वर्ण हो आया और उसने मारे क्रोध के चिल्ला के कहा—"वही देवी तुल्य स्त्री जो एक महापिशाच के साथ व्याही गई है ?"

बुड्ढा—तुह्में मैं दृढ़प्रतिज्ञ और मुस्तैद पाता हूं। इससे आशा करता हूं कि इस काम को तुह्मीं भली भांति पूरा कर सकोगे। हां सचमुच फोष्टही की स्त्री; वहीं फोष्ट जिसने तुह्मारे प्राणों पर बन आने के लिये तलवार उठाई थी, बड़ेही खतरे में है और आशा है कि तुम उसकी प्राणरक्षा करने में कृतकार्य भी होगे।

यह सुनके आटू का जोश दूना हो गया, और उसने चित्त के बड़ेही उद्वेग के साथ कहा—

"चाहे वह किसी प्रकार से क्यों न बचे, आप बताइये मैं वह करने पर प्रस्तुत हूं। चाहे इसमें प्राणोंही पर क्यों न खेलना पड़े, मैं कदापि न हिचकिचाऊँगा --परन्तु— आप को मेरी उस प्रतिज्ञा का भी ध्यान रखना पड़ेगा, जिसे मैंने उसके पति के साथ की थी। (उदास होके) उसे तोड़ने की मेरी इच्छा कदापि नहीं है।

बुड्ढा—यह सब कुछ बिना प्रतिज्ञा के भङ्ग कियेही तुम कर सकते हो, क्योंकि तुम्हारा वहां जाना न तो फोष्टही को मालूम होगा और न उसकी प्यारी एडाही पर प्रगट हो सकेगा—देखो थोड़े में मैं तुम्हें सब समझाये देता हूं--एक हलाहल विष बिचारी थेरिजा के लिये तैयार किया गया है—और आज सन्ध्या को निश्चय वह उसे दिया जायगा।

यह सुन्तेही मारे भय के आदू पर एक फुरहरी आई और उसने घबरा के कहा—"हे भगवान क्या यह सम्भव है!"

बुड्ढा—मेरे प्यारे युवक! तुम अभी इस संसार की राह घाट से बिलकुलही अनजान हो क्या तुम यह सोचे बैठे हो कि तुम्हारी बहिन एडा जैसी बेहया और नीच प्रकृति की स्त्री जिसको फोष्ट ने केवल अपना काम निकालने के लिये अपना भेदिया बना रक्खा है, क्या वह केवल फोष्ट की मित्रताही पर निर्भर रहेगी। क्या उसके हृदय में अन्य आशायें स्थान नहीं कर सकतीं?

आदू—आह! तो क्या मेरी बहिनही है—एडा—हाय जिसे मेरी माता ने मरती समय ये आशीर्वाद दिये थे—क्या उसका यह काम है? –हाय क्या यह दम—"

बुड्ढा—युवक, जो मैं कहता हूं वह बिलकुल सच है और हां ऐसाही सच, कि जैसे यह तस्वीर है और जैसे यह सोना—तो अब क्या तुम हमारी बात मानोगे, और जो हम कहैंगे वह तुम करोगे?

आदू—मैं देखता हूं कि तुम एक पाप के रोकने की चेष्टा कर रहे हो—तो भगवान की सौगन्ध मैं भी उसमें हृदय से सहायता करने पर प्रस्तुत हूं। इसके अतिरिक्त क्या आपने मुझपर इतना अनुग्रह नहीं दिखाया कि मैं चिर काल तक आप का बाधित रहूं? तो अब कहिये—जो आज्ञा दीजियेगा मैं उसके लिये प्रस्तुत हूं।

बुड्ढा—एडा के पास एक हलाहल विष है। जिसके देने से वह समझती है कि फिर कोई दवा रोगी को नहीं बचा सक्ती। परन्तु यह देखो—यहां—"

इतना कहके उसने अपने कपड़ों से एक शीशी निकाली जिसमें एक प्रकार की

दवा पानी के सदृश थी, और जिसका कोई विशेष रङ्ग न था, इसे निकाल और आटू को दिखा बुड्ढा कहने लगा।

"यह देखो—हमारे पास यह देखो एक ऐसी औषधि है कि चाहे कैसाही हलाहल विष क्यों न हो, परन्तु इसके पीने से उसका कोई असर नहीं रह जाता।

आटू—तो क्या आप की यह इच्छा है कि मैं इस दवा को थेरिजा पर्यन्त पहुँचा दूं।

बुड्ढा—बेवकूफ लड़के! क्या तू यह समझता है कि बिना किसी मातवर आदमी के कुल हाल बताये यह दवा किसी सामान्य व्यक्ति के हाथ से ले के पी लेगी? और क्या तेरी ऐसी इच्छा है कि उसे अपने पति की कुल बदमाशी और पाजीपना मालूम हो जावै और फिर वह आजीवन पर्यन्त दुखीही रहे?

आटू—तो क्या फोष्ट हमारी बहिन के महापाप को जानता है, वा उसके सलाह से एडा यह कुकर्म करने पर उद्यत हुई है?

बुड्ढा—नहीं, वह थेरिजा को अब भी प्यार करता है—परन्तु उसी अपने पापमय हृदय से—और साथही वह एडा से भी अपना प्रेम जनाये जाता है। और यही कारण है कि चुपके २ उसने तुह्मारी बहिन का ब्याह, बेरेन जरनिन से कर दिया है। हां तो इस थेरिजा के विष देने में एडा ने अपना ही उपकार विचार रक्खा है—जिसे तुम भी समझ सकते हो। परन्तु तुह्में यह सब थेरिजा से छिपाना चाहिये, क्योंकि यदि यह सब तुम उससे कहोगे तो अवश्यही उसका यह प्रश्न तुमसे होगा कि एडा हमारा बुरा क्यों चाहती है?

आटू—अच्छा—अब मैं आपका तात्पर्य भली भांति समझ गया, आप की यही इच्छा है न कि थेरिजा यह दवा पी भी जाय परन्तु उसे मालूम न हो?—परन्तु यह होगा कैसे?

बुड्ढा—तुह्मारी सहायता से, आज महल ओरेना में एक बड़ा भारी उत्सव होनेवाला है। एडा भी निस्सन्देह वहां जायेहीगी और फिर थेरिजा के पास बैठ के और उसे बातों में लगा के वह विष उसके शराब के प्याले में उँडेल देगी। जहर पीने के चौबीस घण्टों के भीतर २ यह दवा उसके पेट में चली जानी चाहिये, नहीं फिर कोई दवा उसे जीवित न कर सकेगी। और सुनो कल फोष्ट का वायना में किसी के यहां निमंत्रण है और वहां जाने पर कल महल बिलकुलही सूना रहेगा। बस उसकी अनुपस्थिति में कोई बहाना करके तुम थेरिजा के पास जा सकते हो,

और फिर तुम कोई न कोई समय अपने इस कार्य के सम्पादन का निकालही सकते हो।

आदू—मुझे तो सहस्रोंही आपत्तियां इस काम में बाधादायक जान पड़तीं हैं ।

बुड्ढा—परन्तु जो दृढ़प्रतिज्ञ मनुष्य है वह इन आपत्तियों की कोई परवाह नहीं करता और समय ढूँढ़ के अपना काम करही सक्ता है—तुम हमारी बात मानो—दृढ़ रहो—तुम अवश्यही कृतकार्य होगे ।

आदू—(शीघ्रता से) परन्तु महाशय मेरी शपथ—जो मैंने फोष्ट से किया है—वह टूट जायगी ।

बुड्ढा—तुम भी क्या आदमी हो—अरे भाई, तुम्हारी शपथ तो यही न थी कि तुम उन दोनों के घृणायुक्त सम्बन्ध में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करोगे, और न किसी से उनका वह भेदही प्रगट करोगे। फिर तुम्हारी शपथ वहां जाने में किस तरह टूट सकती है ? अच्छा यदि तुम यह देखो कि एडा ने थेरिजा को पानी में ढकेल दिया तो क्या तुम उसके बचाने की चेष्टा नहीं करोगे ? उस समय क्या तुम्हारी शपथ तुम्हें इस कार्य से रोक रक्खेगी। बोलो ! बताओ !

आदू—आपका कहना यथार्थ में ठीक है। आह ! परमेश्वर,—भाई अपनी बहिन के दुराचारों के रोकने के निमित्त प्रस्तुत किया जाता है ।

बुड्ढा—(रुलाई से) सारे संसार का यही हाल है !

इतना कहके बुड्ढा अपने स्थान से उठा और फिर यों कहने लगा ।

"सावधान ! यदि तुम्हें मेरी मित्रता का कुछ भी ध्यान हो तो मेरी कही बातों को भूल न जाना—और यदि तुम भविष्य में भी मुझसे कोई आशा रखते हो तो इस मेरी साक्षात तथा बात चीत को भी अपने हृदयही में रखना—और सुनो—यदि इस भेद का एक शब्द भी तुम्हारी जिह्वा से निकला तो और तो और तुम्हारी बहिन के प्राणों पर निश्चयही आ बनेगी। बुद्धिमानी से अपना कार्य सम्पादन करो—जिसका परिणाम निश्चय भला होगा—अच्छा अब मैं कल सन्ध्या समय तुमसे साक्षात् करूंगा।

इतना कहके वृद्ध शीघ्रता से बाहर चला गया ।

कुछ देर तक आदू पेनिल्ला एक अथाह शोचसागर में डूबा हुआ था, इसके उपरान्त जब उसने सिर उठाया और चारों ओर दृष्टि दौड़ाई, तो अपने को अकेला पाके एक क्षण के निमित्त यह अनुमान किया कि जो कुछ बीत गया वह केवल एक स्वप्न मात्र था ।

परन्तु टेबुल पर दृष्टि जातेही उसका यह ध्यान बिलकुलही बदल गया—क्योंकि उसपर बुड्ढे का दिया वह रुपया पड़ा था और शीशी रक्खी हुई थी।

आटू—आह! एडा—एडा मेरी बहिन! क्या तू सचमुच ऐसी कुकर्मिणी इतनी पापिष्ठा हो गई, कि मैं—हां मैं—तेरा भाई—तेरे पापों के रोकने के लिये प्रस्तुत किया गया हूं। हाय! क्या तुझपर उस आशीर्वाद ने कोई असर न किया जिसे तेरी माता—तेरी गरीब और दुखिया माता ने मृत्युशय्या पर अन्तिम समय में स्वच्छ और साफ हृदय से दिया था? अभागी लड़की—क्या तुझे कोई नेक और स्वच्छहृदय स्त्री न मिली जो तुझे समझाती, और तेरे इन पापों को रोकती,—और मैं—मैं तो शपथ खा चुका हूं, नहीं तो अवश्यही तेरे पास आता, और तुझे इस महापाप से रोकने की हृदय से चेष्टा करता!—आह! और यह बुड्ढा कौन था जो मेरे कुल गुप्त भेदों से भली प्रकार विज्ञ जान पड़ता है, और ऐसे छिप के यह सब काम किया चाहता है—भला यह कौन था?—उसने मेरे बहिन के कुल गुप्त भेदों को कैसे जान लिया?—आशा तो है कि जब वह कल आयेगा तो मुझे इन सब बातों से सचेत करेगा। जो हो उसका ध्यान तो अच्छा है—उसकी बातें कुल स्पष्ट थीं, आह!—हां हां यह असम्भव है, कि वह मुझे किसी प्रकार का धोखा देवे।

इतना कहके आटू चारपाई से उठा, और टेबुल के निकट पहुँच के उसपर की रक्खी दवा उसने उठा ली, उसका काग उसने खोला—उसे सूघाँ—परन्तु किसी प्रकार की गन्ध उसमें से न आई। इसके उपरान्त उसने एक बून्द उसका अपनी जिह्वा पर रक्खा, परन्तु किसी प्रकार का स्वाद उसमें न पाया।

आटू—(आपही आप) वाह! यह तो कोई भारी हकीम जान पड़ता है जिसके पास ऐसी अच्छी दवाइयां तैयार हैं, और कदाच किसी प्रकार से मेरी बहिन के दुराचार का समाचार इसे मिल गया होगा बस इसी लिये वह मेरी सहायता का इच्छुक हुवा है और मेरे द्वारा यह कार्य सम्पादन कराया चाहता है!

इतने बड़े भेद के कहने का उसने मुझसे साहस किया। अब मैं सब समझ गयाः—यह एक गुप्त रीति से गरीब और अनजान मनुष्यों की सहायता किया करता है! जिसके इस उत्तम कार्य में मैं अवश्यही सहायता दूंगा! हां—मैं अवश्य थेरिजा के पास जाऊँगा—और इस दवा से उसका प्राण बचाऊँगा।

अट्ठाईसवाँ बयान ।

थेरिजा के शोक ।

इसके दूसरे दिवस, दो पहर के समय, कौन्टेस ओरेना अकेलीही अपनी कोठरी में बैठी हुई है ।

उसने अपनी कुल खवासों, मजदूरनियों तथा सहेलियों को अपने निकट से हटा दिया है, और वह अकेली बैठी कुछ आपही आप सोच रही है ।

इस सोच विचार का कारण यह था कि युवती लेडी प्रसन्न न थी, उसके चित्त में अनेकानेक ध्यान आ २ के उसे सता रहे थे;—और साथही वह अपने पर इस व्यर्थ के सोच विचार पर घृणा भी करती थी, परन्तु उससे क्या होना था—विचार तो मनुष्य के चित्त में जो जड़ पकड़ लेता वह कठिनता से टलता है ।

पहिला विचार तो उसे फोष्ट की ओर से था, कि वह प्रायः क्यों अनुपस्थित रहा करता है और वह उसके इस अनुपस्थिति के कारण को देर तक बैठी सोचा करती थी । साथही थेरिजा के हृदय में कभी यह ध्यान, एक क्षण के लिये भी नहीं आया कि वह किसी स्त्री के प्रेम में फँसा है, क्योंकि उसको अपनेही हृदय की सफाई और स्वच्छता इस बात की आज्ञा न देती थी कि वह अकारण अपने पति पर इतना बड़ा घृणित सन्देह कर बैठे ।

प्रायः रात को फोष्ट सोते २ उठ बैठता था, और ऐसा चिल्लाने लगता था मानो कोई भारी यन्त्रणा स्वप्न में उसके आत्मा को हो रही थी । दिन के समय भी प्रायः उसकी स्वच्छहृदया पत्नी की दृष्टि में ऐसा प्रतीत हो जाता था कि मानों महाशोक का बादल फोष्ट के मुखचन्द पर छाया डालता निकल गया। उसने इस बारे में उससे प्रश्न भी किया—उसने उससे यह भी पूछा कि कौनसा गुप्त दुःख है जो तुह्मारी आत्मा को दुखी किये रहता है;—परन्तु वह कुछ इस प्रकार के ठीक २ उत्तर देने लगता वा कुछ प्रेमभरे शब्दों में उसे ऐसा विश्वास दिलाता और साथही उसे गोद में लेके चूमना प्रारम्भ कर देता कि जिससे, उस समय थेरिजा की आशङ्का बिलकुलही निवृत्त हो जाती ।

थेरिजा में हठ करने की आदत नहीं थी, और न उसका स्वभावही ऐसा था । कि किसी को बात छिपाते देख के उसके पीछे पड़ जाती, और जिस प्रकार बन पड़ता

उसके हृदय की बात जानही लेती। यद्यपि उसने फोष्ट के प्रायः अनुपस्थित रहने—रात को सोते २ यों वर्रा उठने—और उसके मुखड़े पर खेद की छाया आ जाने से यह अवश्यही निश्चय कर लिया था, कि कोई गुप्त दुःख का कीड़ा है जो भीतरही भीतर हर समय उसके हृदय को चाटा करता है, परन्तु इसपर उसने उसे जानही लेने के लिये विशेष उद्योग नहीं किया।

और कुछ यही एक दुःख उस स्वच्छहृदया रमणी को प्रत्येक समय दुखित नहीं किये रहता था। वह यह भी जान गई थी—और आह ! इसके जानने से उसे कितना दुख हुआ था कि फोष्ट कभी अपनी पुत्री एडीला को प्यार नहीं करता था। और जबलों कि वह स्वयं उसे उसके गोद में न दे देती वह कभी उसे गोद में न उठाता ! साथही वह यह भी देखती कि वह मेरिया के लड़के से बड़ाही प्रेम किया करता है। वह इस बारे में अपने को बड़ा सन्तोष दिया करती थी—आह बड़ाही सन्तोष, और अनेकानेक प्रकार की बातों से अपने चित्त का यह खेद मिटाया चाहती थी—परन्तु जब वह फोष्ट की ओर से एडीला की ओर रूखी फीकी दृष्टि पाती और राजकुमार अर्थात मेरिया के बच्चे मेकसमिलियन पर उसका इतना प्रेम (जो कि स्वाभाविक था) देखती; तो उसके आनन्द में बाधा पड़ती—उसका सब सुख भूल जाता और बिचारी बड़ीही दुखी हुआ करती थी।

उसने लाख २ ध्यान दौड़ाया परन्तु उसकी समझ में यह न आया कि ऐसा होता क्यों है—कभी वह सोचती कि क्या फोष्ट उससे लज्जा करता है—वा लड़की होने के कारण, उसे गोद में नहीं लेता—परन्तु जब औरों के बच्चों के साथ उसे प्रेम करते पाती तो उसके हृदय से यही उत्तर मिलता कि निश्चय फोष्ट अपनी बालिका को नहीं चाहता, परन्तु यह न जाने किस कारण से—इसके अतिरिक्त कभी २ उसे अपनी अवस्था पर भी खेद होता—अर्थात् उसका हृदय भी कभी २ फोष्ट के हृदय का अनुकरण करता जान पड़ता—क्योंकि वह भी जब मेकसमिलियन, (मेरिया के बच्चे) को देखती तो उसका हृदय उमड़ आता और वह लपक के उसे उठा लेती और प्यार करने लगती थी। आह ! जिस समय वह उस बच्चे को गोद में उठाती और अपने हृदय से लगाती तो उस समय सचमुच वह भी छोटी एडीला की सुध बिसरा देती। इस आकर्षण और चित्त के छिपाव के रोकने में वह सर्वतो भाव से असमर्थ थी—और इससे उसे बड़ा खेद भी था:—वह रोती थी—भगवान के सामने प्रार्थना करती थी—

इसका कारण अपने को समझाती थी—अपने पर घृणा करती थी—वह अपने पर दोष लगाती थी—वह अपने कुल क्रोध अपने ऊपर प्रगट करती थी, कि तुझे ऐसा नहीं करना चाहिये—यह सर्वतो भाव से अन्यथा है—परन्तु कहां उसके हृदय पर तनिक भी इसका असर न पड़ा।

वह घण्टों उस बिछौने के निकट बैठी रहा करती, जिसपर कि एडीला सोई रहा करती थी—और उस बच्चे के कोमल और सुन्दर अङ्गों को देख २ के अनेक प्रकार की प्रीति उसकी ओर उपजाया करती थी, अनेक प्रकार की प्रीति उपजाने की दृष्टि से अपने प्यारे बच्चे को देखा करती। और फिर—फिर जब एडीला जाग जाती थेरिजा तुरन्त उसे गोद में उठा छाती से लगा लेती—उसे चूमने लगती, उससे खेलने लगती उसे भगवान जाने कितने प्रेम भरे शब्दों में पुकारा करती—अपने हार्दिक कुल प्रेमों को सामर्थ भर उसपर प्रगट करती, यह सब करती—परन्तु फिर भी–फिर भी–यह भयानक बात उसके हृदय में आन उपस्थित होती कि आह मेक्समिलियेन भी एडीला से मुझे कुछ कम प्यारा नहीं है। बस इसी ध्यान से वह लाचार होजाती और बार २ इस ध्यान के दूर हो जाने के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करती।

पाठकगण विचारते होंगे कि थेरिजा जैसी, स्वच्छहृदया स्त्री के ध्यान में ऐसे बुरे ध्यानों ने क्यों प्रवेश किया, नेकी और भलाई की प्रतिमूर्ति के हृदय में यह उद्वेग कैसा? जब वह यह जानती थी कि यह मेरी बालिका है, और मेक्समिलियेन मेरा बालक नहीं है तो फिर उसके इस अकारण प्रेम का कारण क्या था, परन्तु आप जानते हैं कि रक्त में भी एक प्रकार का खिंचाव है। वह बेचारी यथार्थ में विवश थी, क्योंकि मेकसमिलियेन उसी के रक्त और मांस से था।

परन्तु उसका आश्चर्य एक कारण से और भी बढ़ गया—उस दिन के उपरान्त जिस दिन वह दोपहर को अकेली बैठी इन्हीं सोच विचार में डूबी हुई थी, आज फिर भी उसी कोठरी में अकेली बैठी, अपने ऊपर घृणा प्रगट कर रही थी कि सहसा मेरिया आर्कडचेज उसे देखने के लिये आई। और उस समय यह सुनके उसका आश्चर्य और भी बढ़ गया कि बेचारी मेरिया भी इस बात से बड़ी हैरान और दुखी है कि उसका हृदय मेक्समिलियेन को छोड़ के एडीला को प्यार करने को बहुत चाहता है। यह सुनके थेरिजा और भी आश्चर्य में आई कि हे भगवान यह बात क्या है!

इसके उपरान्त उन दोनों स्वच्छहृदया स्त्रियों ने इस बात पर सोचा और एक दू-

सरे से इसी बारे में अपने हृदय का वृत्तान्त कहना प्रारम्भ किया। इसके उपरान्त उन दोनों ने रो २ के भगवान से प्रार्थना करनी प्रारम्भ की, कि इस प्रकार बेजोड़ प्रेम हमारे हृदय से दूर करे और उसके स्थान सच्चा प्रेम, जैसा कि अपने २ बालकों पर चाहिये प्रदान किया जाये। परन्तु आह ! उन बेचारियों को क्या मालूम था कि यह उन लोगों का प्रेम प्रकृति के अनुसारही था—और वे दोनों यथार्थ में अपनेही अपने बालकोंसे प्रेम कर रही थीं, और इसके विरुद्धता के लिये भगवानसे प्रार्थना कर रही थीं।

वे इस बात से दुखित थीं, और जानती थीं कि यह अनुचित प्रेम है जो हमलोगों के हृदय में स्थान किये हुये है, इससे वे इसे अपने पति से सदैव छिपाये रहा करती थीं, और दोनों स्वच्छहृदया स्त्रियों के हृदय में एक गुप्त बात थी जिसे वे अपने पतियों से छिपाये रहतीं परन्तु उसे भी वहां से निकालने की पूरी २ चेष्टा कर रही थीं।

आर्कड्यूक अपने बालक पर प्रीति प्रगट करने में कदाच न हिचकिचाता था, वह छोटे मेकनमिलयन को हृदय से चाहा करता था। और यही एक कारण था कि मेरिया थेरिजा की अपेक्षा विशेष प्रसन्न रहा करती थी। क्योंकि थेरिजा जब आर्कडिउक को अपने बच्चे को प्यार करते देखती तो उसके हृदय में तुरन्त यह प्रश्न और उसके साथही खेद भी आन उपस्थित होताथा कि कारण क्या है कि फोष्ट भी इसी प्रकार अपनी बच्ची को लेके प्यार नहीं किया करता।

अब पाठकगण भली प्रकार समझ गये होंगे कि कौनसे कारण थे जिनसे थेरिजा सर्वदा दुखी रहा करती थी। अस्तु ! तो आज भी थेरिजा उसी प्रकार सोचसागर में डूबी अकेली एक कोठरी में बैठी हुई थी, कि सहसा एक नौकर द्वार खोल के भीतर आया और बोला कि एक व्यक्ति आपसे मिलने के लिये बड़े कमरे में बैठा है।

थेरिजा यह सुन्तेही तुरन्त उठी और उस बड़े कमरे में आई, जहां इससे मिलनेवाला बैठा इसकी प्रतीक्षा कर रहा था यह उससे साक्षात करनेवाला आटू सापनेला था, जिसे देख के थेरिजा बड़ीही प्रसन्न हुई, यह वही व्यक्ति था जिसने फोष्ट का चित्र खींच कर एडा के हाथ थेरिजा के मांगने पर भेज दिया था—इसके चित्र खींचने का वही समय था जब फोष्ट थेरिजा से दूर होने के कारण विडेनबर्ग के कारागार में बन्द कर दिया गया था, प्रथम तो इसके इस उपकार से दूसरे अपनी प्यारी सहेली एडा का भाई समझ के थेरिजा ने इसका आवभगत ठीक अपने भाई के समान किया।

आटू इस समय अच्छे वस्त्र पहिने हुये था, परन्तु वे केवल साफ और मोटे थे,

और इस समय उसके चेहरे पर गत वर्षों के दुःख तथा क्लेश का चिन्ह पर्यन्त भी नहीं दिखाई पड़ता था।

थेरिज़ा ने जातेही आटू को एक कुरसी पर बैठाया और कहने लगी—

"आटू भैया! मैं तुम्हारे आने से बड़ीही प्रसन्न हुई, कहो अच्छी तरह तो हो, तुम तो अपने मित्रों से सदैव दूरहीं दूर रहना पसन्द करते हो इससे कभी दर्शनों से भी कृतार्थ नहीं किया करते।

आटू। बहुत सी बातें ऐसी आ पड़ीं कि जिनके कारण मैं सेवा में न उपस्थित हो सका इसके अतिरिक्त आप मेरे स्वभाव से भी भली प्रकार परिचित हैं कि मैं बिलकुल सादा मनुष्य हूं, इस लिये मैं रईसों और अमीरों के यहां जाने तथा उनसे मिलने योग्यही नहीं हूं। इसके अतिरिक्त मैं अपनी बहिन के इस व्याह को भी पसन्द नहीं करता इससे मैं नहीं चाहता कि उसे यह समाचार मिले कि मैं भी कहीं इसी नगर के निकटही हूं।

थेरिज़ा—(मुसकरा के) ठीक है, तो तुम्हारी कदाच ऐसी इच्छा नहीं है कि तुम्हारा यह आना मैं किसी पर प्रगट करूं।

आटू। बस बस, श्रीमती से यही मेरी प्रार्थना है, और साथही एक विनय मेरी और भी है कि मेरा यहां आना कौण्ट साहब पर भी प्रगट न किया जाय।

थेरिज़ा। कदाच तुम्हें इसका भय होगा कि कौण्ट महाशय, एडा को देख के उससे तुम्हारे यहां आने का वृत्तान्त न कह सुनायें? परन्तु मैं तो एडा की ओर से तनिक भी रुष्ट नहीं हूं, और न मुझे कोई रुष्ट होने का कारणही दिखाई पड़ता है! इसके अतिरिक्त न्याय दृष्टि से देखने पर तुम्हें भी मालूम हो जायगा कि एडा का इसमें कोई दोष नहीं। परन्तु मुझे इससे क्या? मैं तुम्हारे आने से किसी को भी विज्ञ न करूंगी।

आटू। आह श्रीमती! प्रत्येक घराने में एक गुप्त भेद रहता है, और हम दुखिया लोग भी इससे खाली नहीं हैं। मुझे अन्यायी न बताइये, आप जानती हैं कि मैं कोई पाषाणहृदय का मनुष्य नहीं हूं, परन्तु कुछ कारणही ऐसे आ पड़े हैं कि जिनसे मैं विवश होके आप के यहां का आना गुप्तही रक्खा चाहता हूं। और अब श्रीमती बड़ेही आश्चर्य में होगी कि मैं किस कारण से यहां आया हूं!

थेरिजा । नहीं नहीं, विचार का कोई कारण नहीं है, मैं तुम्हें उसी प्रकार मानती हूं जैसा कि पहिले माना करती थी, मैं तुम्हें अपना एक परम मित्र समझती हूं। तुम्हारा आना मेरे सिर और आखों पर है।

आटू—और मैं सदैवही श्रीमती की कृपा दृष्टि अपने ऊपर योंही बनाये रखने का उद्योग भी करूंगा। आज बात यह हुई कि मैं आप के महलके निकटही एक विशेप कार्य के लिये आपड़ा था—और जब इधर आया तो मुझे ध्यान आया कि अपनी बहिन की पालनेवाली दयालुचित्त कौन्टेस के भी दर्शन करता चलूं। इसके अतिरिक्त बहुत दिवस हुये थे कि आपका कोई राजी खुसी का समाचार भी मुझे नहीं मिला था।

थेरिजा—तो इस प्रकार तो तुम यहां आ निकले, परन्तु बेरेन जेरनिन की साक्षात् को कभी काहे को आओगे—जो हो मैं तुम्हें इस तरह आने और फिर बिना खाये पीयेही लौट जाने तो न दूंगी।

इतना कहके थेरिजा ने नौकर को बुलाया और शीघ्रता से भोजन चुनने की आज्ञा दी।

यह भोजन मानों आटू के इच्छानुसारही हुआ अब उसे मानों अपने कार्य में कृतकार्य होने का एक समय सा मिल गया।

भोजन चुना गया—और दोनों खाने बैठे।

खाती समय आटू ने दवा की वह शीशी निकाली और समय पाके थेरिजा के उस गिलास में उडेल दिया, जो, उत्तम शराब और बरफ के पानी से भरा जा चुका था। और जिसे इसने थेरिजा के सामने कर दिया।

थेरिजा ने बड़ीही प्रसन्नता से उस गिलास को आटू के हाथसे लिया और मानों उसे प्रसन्न करने के लिये वह तुरन्तही उसे पी गई।

गत रात को एक बड़े उत्सव में एडा ने वही सिगनोरा औनटेनावाला विष थेरिजा को पिला दिया था परन्तु अब उसने उसकी तोड़ यह दवा पी ली।

परन्तु यह तोड़ की औषधि मिली कहां से ? क्योंकि उस इटली की रहनेवाली विप जाननेवाली ने, जो संसार भर के यावत् विषों को जानती और समझती थी, यह कह दिया था कि इस विष का कोई तोड़ही नहीं है।

वह बुड्ढा जो बड़ाही दयालु जान पड़ता था, और जिसने एडा के गुप्त भेदों को जान कर आटू को उस विष का तोड़ देके भेजा वही कौन था ? और उसे यह सब रहस्य कैसे मालूम हुआ ?

समय पर हमारा उपन्यास इस वृत्तान्त को सविस्तर आपही आप पर प्रगट कर देगा।

आटू ने अपना काम करने के उपरान्त थेरिजा से विदा मांगी, और अपने घर में लौट आया। अब इसका घर वह टूटी और पुरानी कोठरी रूपी न था। वरन अब यह एक नयेही घर में उठ आया था।

परन्तु बुड्ढे ने अपनी बात पूरी न की। अर्थात, उसने जो दूसरे दिवस सन्ध्या समय आटू से मिलने का वादा किया था उसे पूरा न किया।

उनतीसवाँ बयान।

यूनानी रमणी।

ऊर्धोक्त दो तीन बयानों के बाद के, हम आठ महीने के लग भग बीच में छोड़ जाते हैं। अब जब हमारा उपन्यास प्रारम्भ होता है, तो पिछला सन् बीत गया है, और सन् १४९६ का प्रारम्भ है।

स्वच्छ और सुन्दर तीसरे पहर का समय है, जब कौण्टेस एडा तथा उसका प्यारा फोष्ट, विशाल नगर वायना के शहरपनाह के निकट, एक सुनसान स्थान में टहल २ के बात चीत कर रहे हैं।

इन लोगों की बातें बड़ीही गम्भीरता के साथ बहुतही नीचे सुरों में हो रही थीं। इस समय फोष्ट बातें कर रहा था, और उसकी निर्लज्ज स्त्री बड़ेही ध्यान से उसे सुन रही थी।

फोष्ट—नहीं—तुमसे कदापि नहीं—एडा ! मैं उस भयानक स्थान का वृत्तान्त तुमसे मारे भय के नहीं कह सकता। मैं तुम्हें स्वयंही नहीं समझा सकता कि किस बल और किस सामर्थ पर मैंने वह भयानक दृश्य वहां का देखा मैं जहां लों समझता हूं मेरे देखने के शौक ने एक साहस मुझमें डाल दिया जिससे कि मैं वहां के कुल स्थानों को भली प्रकार देख सका। परन्तु आह ! उस समय मेरे चित्त में कैसे २ ध्यान आ रहे थे जब मैं पिशाच के पीछे २ जा रहा था, जो मुझे अपने भयानक राज्य की सैर कराने के लिये वहां से ले गया था।

एडा—और क्या इसी कारण तुमने मुझसे इतःपूर्व कभी भी इसका वृत्तान्त न कहा आठ लम्बे २ महीने उस भयानक दृश्य को देखे, तुम्हें बीत गये, और आज यह

दिन है कि तुम इसकी सूचना मुझे देते हो—क्या मैं तुह्मारे इस गुप्तभेद को अपने हृदय में न रख सकती, और क्या इसके पहिले जो एक भयानक भेद तुमने मुझे बताया था, हृदय के कड़े सन्दूक में नहीं बन्द कर रक्खा है?

फोष्ट—सैकड़ोंही वेर मेरे हृदय में ऐसा ध्यान आया कि मैं तुह्में इस समाचार से अवगत कर दूं प्यारी एडा! परन्तु मेरी आत्मा उस भयानक दृश्य का बयान करते काँप उठती है—और यह भी मैं नहीं कह सकता कि आज न जाने कैसे मेरे मुँह से यह बात निकल भी गई। इसका कारण कदाच यही हो कि आज तुम अन्य दिनों की अपेक्षा मुझपर कुछ विषेश दयालु हो—और इसी से तुह्मारे सामने यह बात मेरे मुँह से निकल गई हो। और कदाच यह कारण हो कि समय व्यतीत होता जाता है, और मुझे यह आवश्यक जान पड़ता है कि किसी को मैं शीघ्रही अपना पक्का मित्र बना लूं, जिससे अपने हृदय की कोई व्यथा छिपा न रक्खूं, तो फिर इसके लिये तुह्मारे सदृश मित्र मुझे और कौन मिलेगा परन्तु इस समय मुझसे यह न पूछो कि मैंने वहां क्या देखा—हाय कुछही वर्षों के उपरान्त जिस स्थान में मुझे रहना पड़ेगा वहां का वृत्तान्त भी मैं नहीं कह सकता—(कांप कर) आह मुझमें इतनी सामर्थही नहीं जान पड़ती। दूसरे समय एडा,—दूसरे समय मैं तुमसे सब कुछ कह दूंगा,—हां सभी कुछ मेरी प्यारी!

एडा—जिन बातों से तुह्में भय जान पड़ता है उसके बयान करने के लिये मैं तुह्में विवश भी नहीं किया चाहती!

फोष्ट—(पागलों की भांति) भय जान पड़ता है! आह! क्या कोई समय ऐसा भी होता है जब इसका भय मेरे चित्त में नहीं रहता?

एडा—परन्तु तुह्मारे अभी से उदास हो जाने का तो मैं कोई कारण नहीं देखती। क्या कई वर्ष अभी तुम संसार में रह के यहां का आनन्द संभोग नहीं कर सक्ते? या संसार भर की कोई भी आनन्ददायक ऐसी वस्तु है जिसे तुम एक क्षण में नहीं पा सकते? फिर व्यर्थ क्यों उदास हुये जाते हो?

फोष्ट—(कड़ाई से) आह! क्या शराब का प्याला जिसमें विष भी मिला हुवा हो, कभी स्वादिष्ट मालूम हो सकता है? वा सड़ा हुवा गुलाब का फूल जिसके पँखड़ियों से एक विषैली वायु निकलती हो कभी चित्त को आनन्द दे सकता है?

एडा—(वेपरवाही से) पिशाच आपका गुलाम है—क्या उसमें इतनी सामर्थ नहीं है

कि वह आप को किसी ऐसे गुण की औषधि ला दे कि जिसके पीतेही आप के हृदय से ये सब ध्यान एक दम से दूर हो जाँय ?

फोष्ट—आह! यह तो वास्तव में एक आनन्ददायक ध्यान है, एडा! मैं इसपर विचार करूंगा। मुझे अब यहीं छोड़ दो, एडा,—मैं अब यहां स्वतन्त्र रहके इस बारे में विचार किया चाहता हूं।

इसके उपरान्तही वे दोनों पृथक हो गये।

फोष्ट तो वहीं शहरपनाह के निकट धीरे २ इधर उधर टहलता रहा, और तबसे एडा छोटे २ कदमों में शीघ्रता से नगर के भीतर घुसी।

यहां से फिर उसने द्रुत पद से अपने घर की राह ली।

ठीक उसी समय, जब यह महल जेरिनन के फाटक के निकट पहुँची तो उसे एक स्त्री, ऊँचे कद और भरे तथा सुडौल हाथ पैर की नकाब डाले हुये मिली! जिसने इसके निकट पहुँचतेही इससे प्रश्न किया—

"क्या कृपा कर आप मुझे यह बता देंगी कि लार्ड जेरनिन का निवासस्थान यही महल है ?"

यह प्रश्न एक बड़ेही मीठे परन्तु साथही दुःखित स्वर में पूछा गया था। भाषा तो उसकी पक्की जरमनी देश की थी परन्तु उच्चारण से जान पड़ता था कि वह किसी अन्य देश की है। पहिनावा भी इस स्त्री का जरमनी देश की स्त्रियों के पहिनावे से कहीं भिन्न था, और जिसे देख के साधारणही जान पड़ता था कि यह किसी गरम देश की रहनेवाली है।

एडा—हां यही बेरोन जेरनिन का महल है! क्या आप इसमें के किसी रहनेवाले से मिलना चाहती हैं ?

स्त्री—मेरी इच्छा स्वयं बेरोन जेरनिनही से मिलने की है।

इतना कहने के उपरान्तही उसने अपने चेहरे से नकाब उतार दी!

अब एडा ने एक परम सुन्दरी रमणी मूर्ति को, जिसके चेहरे से खेद और म्लानता की साया झलक रही थी, और जिसका वयस लगभग तीस वर्ष के होगा अपने सामने खड़ी पाया, उसका रङ्ग एक प्रकार से गेंहुवाँ कहा जा सक्ता है—उसके नेत्र बड़े २ काले २—और हृदय में चूभनेवाले थे, साथही उसके सुन्दर लम्बे २ बाल काले और बड़ेही चमकीले थे। परन्तु उसके साथही उस स्त्री में एक अनोखी बात भी थी—अर्थात् उसके चेहरे से एक न्यारी शान, तथा हाकिमाना कान्ति वहिर्गत हो रही थी।

उसका माथा ऊँचा और चौड़ा था—उसके शरीर का बनाव ठीक यूनानियों के ऐसा जान पड़ता था, उसके होंठ पतले और लाल थे, उसके दांत बेदाग मोतियों की लड़ी को लज्जित करते थे—उसकी सुराहीदार गरदन दोनों कन्धों के बीच में बड़ीही सुन्दरता से खड़ी थी—इसके अतिरिक्त उसका सर्वाङ्गही प्रशंसा के योग्य था, और जिसपर उसका शाहंशाहों का सा तेज और भी उस कान्ति को बढ़ा रहा था— एडा इसे देखही के हैरान थी, वह आपही आप सोच रही थी, कि इस अजनबी सुन्दरी को हमारे पति से क्या काम है ? क्योंकि अबलों तो उसने अपने जान पहचानों में कभी इस परदेशी स्त्री का जिक्र भी न किया था। यह सब सोच विचार के बड़ेही मान संभ्रम से एडा उस स्त्री को महल में ले गई।

जब ये दोनों एक विशेष कमरे में जा पहुँची तो एडा ने जेरट्रूड को बुलाया और उससे पूछा कि क्या बेरेन महाशय मकान में हैं ?

परन्तु इसका उत्तर उसे नहीं में मिला।

बेरेन की अनुपस्थिति से एडा अपने चित्त में एक प्रकार से प्रसन्न हुई। क्योंकि उसने सोचा कि जबसे बेरेन महाशय लौट के आयेंगे तबसे मैं इस स्त्री का परिचय और बेरेन जेरनिन से इसकी कबकी और कहां की साक्षात् है इसका परिचय प्राप्त कर सकूंगी।

जेरट्रूड को कोठरी के बाहर चले जाने को इङ्गित कर एडा अपने मेहमान की ओर फिरी और बोली—

आपने सुना कि श्रीमान् लार्ड महाशय मकान में नहीं हैं, परन्तु आशा है कि वे शीघ्रही लौटेंगे, और उतनी देर पर्यन्त यदि आप बैठा चाहें तो इसी कोठरी में बैठिये, मैं आप के पास बैठने में अपना सौभाग्य समझूंगी।

स्त्री—तुह्मारी आज्ञा पाने से लेडी!—मैं बेरेन जेरनिन के लौट आने पर्यन्त यहां बैठ सकती हूं।

इतना कहके वह स्त्री चुप हो रही, और फिर कुछ ठहर के हिचकिचाती हुई बोली—

"क्यों लेडी ! तुम बेरोन जेरनिन की स्त्री हो ?"

एडा—हां मैंही बेरोनेस जैरनिन हूँ।

इतना सुन्तेही उसने एडा की ओर दृष्टि गड़ा के देखा और कई मिनिट पर्यन्त वह उसे बड़ीही स्थिर दृष्टि से देखती रही, और तब धीरे २ मानों अपने हृदयही से यों बातें करने लगी—

"हां—तुम एक सुन्दरी हो—परम सुन्दरी, इसके अतिरिक्त तुम, हमारी अपेक्षा युवती भी हो ! आह ! मुझे इसमें आश्चर्य न करना चाहिये,—और जब—"

इतना कहते २ उसने अपनी बातों को रोक लिया और साथही अपनी बड़ी २ आखों से निकलते हुये आंसुओं को भी पोंछ डाले।

एडा—क्यों बहिन ! क्या हमारे यहां रहनेसे तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट होता है ?

एडा ने यह प्रश्न बड़ीही व्यग्रता से किया, क्योंकि इस समय उसका हृदय इस स्त्री का सविस्तर हाल जानने के लिये व्यग्र हुआ जाता था।

स्त्री—(दुःखित स्वर में) एक प्रकार से, वा एक अर्थ से तो आपका यहां रहना मुझे कष्टदायक अवश्यही बोध होता है, परन्तु साथही आप की यह मीठी २ बातें बहुत कुछ मेरे व्यथित हृदय पर मरहम लगाती हैं। मुझे क्षमा करना, लेडी—मुझे क्षमा करना यदि मैं तुम्हें एक विजयी वैरी के ध्यान से देखूं, परन्तु भगवानही जानता है, कि मुझे किसी प्रकार का आप से दुःख वा आप की ओर से किसी प्रकार का वैर नहीं है ! परन्तु यह तो कहो—इतना तो बताओ—कि क्या आप के पति ने आप को कभी दमिश्क के सौदागर की बेटी इरेनी के नाम की भी सूचना दी है ?

एडा—कभी नहीं।

स्त्री—(बहुतही दुखी होके) यह भी एक प्रकार से उसने अच्छाही किया, क्योंकि जब वह एक दूसरी रमणी की प्रीति में फँस चुका था तो फिर उससे और मुझसे क्या सम्बन्ध ! शुभे ! मैं वही इरेनी हूं जिसके बारे में मैंने इसके पहिले प्रश्न किया था। और मैं आपके पति से अनेक वर्ष पूर्व से, भली प्रकार परचित हूं।

"आप की बातों से पाया जाता है कि अपनी उठती हुई अवस्था में आपने प्रेम की भारी चोटें हृदय पर सही हैं पर साथही यह भी जान पड़ता है कि सम्भोग के आनन्द और सुख की लूट से भी आप पराङ्मुखही रहीं" "एडा ने इसे ताने की तरह परन्तु उस स्त्री के दुःख से दुखी होके कहा" क्यों—क्या यह ऐसाही है न ? निश्शङ्क मुझसे कह दीजिये—क्योंकि मैं आप के दुःख में भाग लिया चाहती हूं—मैं उसे छिपाने की चेष्टा करूंगी—परन्तु आप पर किसी प्रकार का दोषारोपण न करूंगी। —

इरेनी—आह लेडी ! मैं आप के इन दयायुक्त वाक्यों से कितनी अनुगृहीत हूं ! आपका कहना ठीक है ! आज पन्द्रह वर्ष का समय व्यतीत होता है, कि जब मेरे पिता, जो बहुत बड़े यूनानी सौदागर थे, और दमिश्क में रह ते थे—एक युवक

आहत युरोपियन (अंग्रेज) को—जो साइरिया में भ्रमण कर रहा था, डाकुवों के पञ्जे से जङ्गल में से छुड़ा लाये । इस घटना का सविस्तर वृत्तान्त कहके मैं आपका बहुमूल्य समय नष्ट नहीं किया चाहती । हां तो वह पथिक भयानक रूप से आहत था और उसके नौकर चाकर सब काट डाले गये थे। उसकी यह अवस्था देखके मेरे पिता ने गुलामों को आज्ञा दी कि वे उसे डोली में रखके दमिश्क की ओर ले चलें, और इस प्रकार जब वह दमिश्क में पहुँचे तो उसकी हर प्रकार की सेवा सुश्रूषा की जाने लगी । उस समय मेरा यह काम था कि मैं चौबीस घण्टे उसी के निकट रहा करती, उसकी आंखे धोती—उसके होठों को ठण्ढे जल से सींचा करती—और औषधि इत्यादि पिलाया करती थी—क्योंकि हमारे प्रांत में प्रायः स्त्रियांही रोगी की सेवा सुश्रूषा तथा उसे औषधि इत्यादि देने में संलग्न की जाती हैं । इस कारण वहां की स्त्रियों में उक्त कार्य के सम्पादन की योग्यता भी बहुत कुछ है। उसका स्वास्थ्य बहुतही धीरे २ सँभलने लगा और क्रमशः घाव भी भरने लगे, परन्तु तिसपर भी वह अपने घावों के कारण बड़ाही निर्बल और दुखी हो रहा था । अन्त कुछ दिनों के उपरान्त वह चारपाई छोड़ के हमारे मकान की समीपवाली वाटिका में धीरे २ घूमने लायक हो गया । वह, वाटिका में मेरे हाथों के सहारे टहलता था, उसका दूसरा कोई भी सहायक न था—उसके उस कष्टमय अवसर पर—और प्रत्येक लड़खड़ाते हुये कदमों पर सँभालनेवाली थी तो मैंही थी । एक वर्ष पर्यन्त वह हमलोगों के यहां रहा ! उसने अपने को हमलोगों पर जेरनिन का वेरोन प्रगट किया और साथही यह भी कहा, कि मैं चित्तविनोदार्थ भ्रमण करने निकला हूं, और अपनी जन्मभूमि की एक अतुल सम्पत्ति का मैं स्वामी और उच्चश्रेणी के मनुष्यों में से हूं। इतः पूर्व मैं आप से कही चुकी हूं कि हम दोनों प्रायः एकत्रित रहा करते थे, और कदाच यह कहते (आप मुझे क्षमा करैंगी) कि वह प्रेमदेव का प्रथमही समागम था जो हम दोनों में एकत्रित रहने से प्रगट हो गया था और हृदय में स्थान भी पा चुका था । मेरे पिता बड़ेही धनाढ्य थे और उस प्रान्त में उनके धन की धूम थी । उनके बराबर कोई भी साईरिया प्रान्त भर में धनी न माना जाता था । अब इस समय कोई रुकावट हमलोगों के आनन्द सम्भोग में न थी, और मेरी प्रसन्नता का उस समय ठिकाना नहीं था । मैं फिर भी आपसे

क्षमा की प्रार्थी हूं प्रतिष्ठित लेडी !—यदि मैं आप से यह कहूं कि बेरोन जेर-निन ने एक दिन बातोंही बातों में मुझसे विवाह की इच्छा प्रगट की, और यह प्रतिज्ञा भी की कि वह भी मेरे प्रेम के वशीभूत हो चुके हैं।

"बढ़िये आगे बढ़िये।" एडा ने उस समय कहा, जब देखा कि यूनानी स्त्री आगे कहने में कुछ हिचकिचाती है।

"आप बेधड़क आगे कहें—मैं आप की बातचीत से कुछ दुःखित नहीं हूं—क्योंकि हमलोगों ने एक दूसरे को जान बूझ के कोई कष्ट नहीं पहुँचाया है।"

यूनानी—नहीं लेडी आप तो उस समय निरी दूध-पीती बालिका होंगी, जब यह सब घटना हुई—और उस समय मेरा वयस चौदह वर्ष मात्र का था—इतने वयस में उस गरम देश की बालिकायें पूरे युवत्व को प्राप्त हो जाती हैं—और फिर उनकी गणना बालिका से स्त्रियों में होने लगती है। मेरे पिता ! (इरेनी ने कुछ देर ठहर के कहा) मेरे पिता ने मेरी विनय स्वीकार कर ली। विवाह की तैयारी प्रारम्भ हो गई—और दिन भी नियत कर दिया गया। मैं उस समय के आनन्द का बयान करने में असमर्थ हूं, जो हमलोगों के एकत्रित वाटिका में टहलने—तथा मीठी २ आशायुक्त बातों के करने में आता था। हाय! वह सन्ध्या—वह सन्ध्या हमें कैसी शुभ आनन्द से भरी जान पड़ी जिसकी सुबह को हमारा व्याह होनेवाला था—और मैं अपने प्यारे के साथ सदैव के निमित्त धर्मबन्धन द्वारा बांधी जानेवाली थी।

इतना कहते २ इरेनी की नेत्रों से पुनः अश्रुधारा बह निकली—उसका हृदय भर आया, परन्तु फिर तुरन्तही उसने अपनी इस अवस्था को दबा दिया और हृदय को दृढ़ कर, आंसू पोंछ फिर वह इस घटना को आगे कहने लगी—

"सूर्यास्त के उपरान्त हम दोनों पृथक हुये—मैं तो अपनी निज की कोठरी में व्याह की सामग्री एकत्रित करने के लिये लौटी, और थिउडोर—मुझे क्षमा करना लेडी कि मैं उसे उसके प्राकृतिक नाम से पुकारती हूं—हां और थिउडोर—मैं जहां लों अनुमान करती हूं, कुछ आवश्यकीय वस्तुओं को खरीदने के निमित्त बाजार को चला गया। परन्तु इसके उपरान्त और उसे हमने कभी न देखा। वह उस सन्ध्या को पलट के फिर मकान में न आया—और न दूसरे दिवस उसने अपनी झलक दि-खाई—और न उसके तीसरे दिवस वह आया। इसकी इस आचांचक की अनुपस्थिति ने हमें और हमारे पिता को बहुत बड़े आश्चर्य और दुःख में डाल दिया। हमलोगों

को भय हुवा कि कदाच किसी गुप्त और दुखदाई चक्र में वह फँस गया है, क्योंकि हमलोगों के हृदय में वेरेन की ओर से इतना विश्वास जम गया था कि उनकी ओर की किसी अकृतज्ञता का ध्यान मन में न आता था। लेडी! उस समय के हमारे दुख का अनुभव आप स्वयंही विचार के कर सकती हैं—जिसके कहने की कोई आवश्यकता नहीं है, सप्ताह के उपरान्त सप्ताह, मास के उपरान्त मास—और वर्ष के उपरान्त वर्ष व्यतीत होते गये—परन्तु उनका कोई पता न लगा। मेरी माता तो तभी मर गई थी, जब मैं बिलकुलही अनजान बालिका मात्र थी—परन्तु मेरे पिता की मृत्यु (जिसे लगभग दस वर्ष के होते हैं) मुझे भली प्रकार याद है—वे अपने पीछे एक अतुल सम्पत्ति मेरे लिये छोड़ गये क्योंकि और उनका कोई वली वारिस न था, और इसके साथही वह मुझे इस महासागररूपी संसार में अनाथ भी कर गये। कभी २ मेरे चित्त में ऐसा ध्यान आता कि मैं अपने प्यारे के ढूंढ़ने के निमित्त जिसका प्रेम तब भी मेरे हृदय में वर्तमान था एक लम्बी यात्रा करूं। परन्तु इसके उपरान्तही मैं यह सोचने लगती कि यदि मैंने भ्रमण किया और मेरी अनुपस्थिति में वह दमिश्क में आया तो मुझे न पाके वह निराश होके और कहीं चला जायेगा। क्योंकि मेरे हृदय में यह विश्वास जमा हुवा था, कि यदि वह जीवित होगा और अब लों मेरी प्रीति उसके हृदय में जमी होगी तो वह छूटतेही मेरे पास दौड़ा आयेगा। मुझे ढाढ़स देनेवाली—उस दुःख में आशा की झलक दिखानेवाली, यदि कोई वस्तु थी तो वह एक हार था जिसे उसने मुझे ब्याह के एक दिवस पूर्व सन्ध्या समय दिया था।

इतना कहके इरेनी ने अपने लम्बे और झूलते हुये वस्त्रों के नीचे से एक छोटी चन्दन की लकड़ी की बड़ीही सुन्दर सन्दूक निकाली। उसने तत्क्षण उसे खोल नहीं दिया—वरन उसे हाथों में ले कर—(मानों कोई ताली वह अपने हाथ में लिये हुई थी) अपनी कहानी यों कहनी प्रारम्भ कीः—

"वर्षों पर वर्ष व्यतीत हो गये लेडी—और इन वर्षहावर्ष में मेरी कुल आशायें दुःख और कष्ट से बदल गईं। बहुत से श्रेष्ठ और सम्पत्तिवान युवकों ने मेरे प्रेम की इच्छा की, मेरे हृदय को अपने हाथों में लेना चाहा परन्तु वह तो मेरे पास था ही नहीं, मैं किसी को देती क्या! मैं शपथ खा चुकी थी कि यह दुःख मैं सदैव के निमित्त अपने हृदय में उस व्यक्ति के स्मारकचिन्ह की भांति रक्खूंगी जिससे एक बेर मैंने प्रेम किया था। मेरे हृदय में उसका स्वच्छ प्रेम स्थान कर चुका था। और यही

सोच के वरन उसी के सोचने से मैंने अपना जीवन किसी अन्य भांति न विताया वरन केवल अपने प्राणप्यारेही के नाम की सुमिरनी लिये बैठी रही। अन्त एक दिन सहसा मुझे एक यूनानी सौदागर द्वारा जो दमिश्क में नया आया था यह समाचार मिला कि बेरेन जेरनिन वायना में लौट आया—वह इस समय अपनी मातृभूमि में है—और बारह वर्ष की अनुपस्थिति के उपरान्त उसने अपने नगर मे प्रवेश किया है। उसी समाचार दाता से मुझे यह भी मालूम हुवा कि उसने अपनी कुल सम्पत्ति गवर्मेंएट से ले ली है—और जम के जेरनिन में रहने लगा है। साथही मुझे यह भी मालूम हुवा कि आज कल वह बड़ीही ऐयाशी में लग रहा है और उसका समय रागरङ्ग में व्यतीत होता है। उस समय मेरा हृदय बैठ गया—मेरी आशाओं की कमर टूट गई—और एक आवाज मेरे कानों में यह कहती जान पड़ी कि अब तू उसके प्रेम से हाथ धो बैठ। हाय! उस समय मैंने अनुमान किया कि कदाच वह यह समझे बैठा हो कि मैंही अब उस प्रथम प्रतिज्ञा पर आरूढ़ नहीं हूं, वा यह सोचता हो कि इतने दिनों के अनन्तर मैंने दूसरा व्याह कर लिया होगा बस यह बिचारतेही मैंने निश्चय कर लिया कि वायना पर्यन्त मैं अवश्यही जाऊँगी—उसे ढूँढ़ने के लिये उससे यह कहने के लिये कि धर्म पर आरूढ़ बाला एक से प्रीति लगा के फिर दूसरे से नहीं लगाती—और साथही इस हार को देने के लिये जिसे उसने अपने प्रेमचिन्ह के तुल्य मुझे दिया था। क्योंकि उस समय मेरे हृदय में भी कुछ अपनी मान मर्याद का घमएड हो आया था—परन्तु ऐसा नहीं कि इस ध्यान से मैं उसकी बैरीही बन बैठी हूं, हाय! नहीं—मैं तो अब भी उसपर प्राण विसर्जन करने के लिये प्रस्तुत हूं! परन्तु इसका कारण यह था कि मैं ऐसे व्यक्ति का प्रेम चिन्ह अपने पास रखना उचित न समझती थी जिसने मानो मुझे विश्वासघातिक अनुमान किया था और या स्वयंही अपनी प्रतिज्ञा पर आरूढ़ नहीं रहा। बस यही सोच, मैंने अपनी कुल सम्पत्ति आरमेनिया के एक विश्वासी सौदागर को सौंप दी—जो मेरे घराने से पहिलेही से भली प्रकार परिचित था, और फिर कुछ सुवर्ण राह में व्यय करने के निमित्त ले वहां से अपने दो गुलामों सहित इस ओर चल पड़ी। मैं राह की अनगिनती आपत्तियों का विवरण करके आपका समय व्यर्थ नहीं नष्ट किया चाहती। छः मास बीते कि मैंने दमिश्क छोड़ा था और पथ की दुर्घटनाओं से बचके कल सन्ध्या समय वायना में पहुँची हूं। आप समझ सकती हैं कि मैंने यहां आतेही पहिला प्रश्न सरायवाले से लार्ड जेरनिनही के विषय में किया। और प्रथमही

प्रथम उसके व्याह का समाचार मैंने वहीं सुना, क्योंकि यह सौदागर जिसने दमिश्क में लार्ड जेरनिन के विषय में मुझे सूचना दी थी आप के व्याह के पहलेही बयाना छोड़ चुका था, और घूमता घुमता दमिश्क में पहुँचा फिर वह कैसे मुझे इस समाचार से भी अवगत कर सकता था। अब मेरी कुल आशायें—(मुझे क्षमा करना लेडी कि मैं आप के इतनी दया दिखाने पर भी आप के सामने ऐसी बातें मुँह से निकालती हूं,) हां तो यह मैं स्वीकार करती हूं कि उस समय पर्यन्त अथात् कल सन्ध्या तक मुझे बहुत कुछ आशा थी—क्योंकि निराशा होने का मुझे और कारणही क्या था ? परन्तु जैसेही मैंने यह समाचार सुना मेरी कुल आशायें टूट गईं—मेरा आनन्दसागर गभरि-चिन्ता सागर से परिवर्तित हो गया। बस तभी मेरे हृदय में यह बात दृढ़ता से जम गई कि जिस प्रकार बनेगा इस हार को उसके देनेवाले पर्यन्त अवश्यही पहुँचा दूंगी। परन्तु ताने का एक शब्द भी—वा दोषारोपण का कोई चिन्ह भी,—लेडी—आपके पति के मिलने पर मैं न प्रगट करूंगी। मेरी यह भी ईच्छा है कि अपनी ओर से क्षमा करने का विश्वास दिला के उसके पश्चत्ताप तथा दुःख को एकदम दूर कर दूं, जो कदाच मेरे स्मरण से उसके हृदय को सताता रहा हो वा मेरे देखनेही से उसके हृदय पर आ बना हो—मेरी पूरी इच्छा है कि उसे अपनी दृढ़ता का पूरा २ परिचय दूं और साथही इस प्रेमचिन्ह को भी जिसे किसी समय में एक बड़े भारी इनाम के तुल्य मैंने पाया था उसे लौटा दूं। दयालु लेडी—यदि मेरी इन बातों में जिसे मैं कह आई हूं, कोई शब्द ऐसा रहा हो जिसने आपके हृदय को दुःखित किया हो तो उसके लिये मैं क्षमा की प्रार्थी हूं—मेरा कहा हुवा कुल ध्यान बिलकुल पवित्र है—और यह स्वच्छ हृदय से कहा भी गया है—न आप अपने पतिही को किसी प्रकार का दोष दे सकतीं हैं, कि उसने क्यों अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग की—क्योंकि सम्भव है कि वह प्रतिज्ञा जो उन्होंने मुझसे की थी, युवा अवस्था के उत्साह में कर दी हो या इसके अतिरिक्त और भी बहुत से कारण सम्भव हैं जिनको सोच के वह प्रतिज्ञा भङ्ग कर देने पर विवश हुये हों नहीं—लेडी—आपको यह सब कुछ न करना चाहिये और साथही आपको इस वृत्तान्त को सुनके अपना ध्यान भी न डावाँडोल करना चाहिये और न आपको मुझे देख के किसी प्रकार की ईर्षाही करनी उचित है—क्योंकि मुझे तो भगवानही ने उस सीधे पन्थ पर चलने योग्य नहीं किया है, और न अब मैं आजन्म उद्योग करने पर आप की श्रेणी के बराबर पहुँच सकती हूं।

क्षण पर्यन्त एडा, यूनानी लेडी के इस हृदय में चुभ जानेवाले वृत्तान्त को सुनके एक भारी असर में पड़के चुपकी बैठी रही। और तब से यूनानी लेडी के बड़े २ काले २ नेत्रों से आंसुओं की झड़ी लगी हुई थी—हां उन्हीं काले २ नेत्रों से—जो अन्धकारमय रजनी की तरह काली थीं आंसुओं की बूँदे नक्षत्र की भांति निकलते और नीचे गिरते जाते थे।

इसके उपरान्त इरेनी कुछ देर चुपचाप बैठी रही और फिर धीरे २ बोली—

"इतः पूर्व लेडी! अर्थात् जब मैंने इस बड़े महल में प्रवेश किया मेरा ऐसा ध्यान था कि इस हार को स्वयं लार्ड जेरनिन के ही हाथ में दूं। परन्तु आप की असीम कृपा से मैंने अपनी दुःख कहानी छेड़ी और जिसे आप ने ध्यानपूर्वक सुन भी लिया है फिर अब मुझे यहां ठहरने का कोई विशेष प्रयोजन नहीं दिखाई देता। मैं अब आप के लार्ड की साक्षात् को उत्तम नहीं समझती। इस सन्दूक को ले लो लेडी!—इसमें वह प्रेमचिन्ह है जिसका वृत्तान्त मैं आप से कर चुकी हूं—इसे ले लो—और अपने पति को लौटा दो—और उनसे जो कुछ आप मेरी ओर से उचित समझें वह कह देना।

एडा ने वह सन्दूक यूनानी लेडी के हाथ से ले लिया—जो अपने स्थान से उठ चुकी थी और बेरोनेस से विदा माँगने के समीपही थी कि सहसा कोठरी का द्वार खुल गया और इस महल के अधिकारी लार्ड जेरनिन स्वयंही इन लोगों के सामने आ खड़े हुये।

तीसवाँ बयान।

साक्षात्।

इस कोठरी की बैठी दोनों कामिनियों में (अर्थात् एडा, जेरनिन की स्त्री तथा इरेनी नेटेरस में) यदि मिलान किया जाय तो बहुत कुछ विभिन्नता निकलेगी।

दोनोंही स्त्रियां परम सुन्दरी थीं,—परन्तु उनका स्वभाव—उनकी प्रकृति, कितनी एक दूसरे से पृथक थी! पहिली तो परले सरे की धूर्त निर्लज्ज और कुचरित्रा थी तथा दूसरी बिलकुल सिधी साधी और सरलहृदया थी, पहिली अपनी नीच और निर्लज्ज आत्मा को बनावटी लज्जा और कृत्रिम धैर्य के नीचे छिपाये हुई थी—और दूसरे के स्वच्छहृदय तथा अकृत्रिम धर्म के तेज से एक ऐसी कान्ति बहिर्गत हो रही थी जिसे देख के सहजही मनुष्य का हृदय आकर्षित होता था। पहिली तो अपने

कड़े स्वभाव प्रबल क्रोध को दिखौवा सरलता तथा मीठी बोलचाल की आड़ में छिपाये हुई थी जिससे देखनेवालों को धोखा होता था। पर दूसरी ने निराशा और दुःख की पाठशाला में एक अच्छे समय पर्यन्त शिक्षा पाने के कारण अपनी बहार पर आई हुई उमङ्गों तथा तरुणावस्था के उद्वेगों को एकदमही हृदय से भुला दिया था, पहिली कामिनी सुन्दर—हावभाव और कटाक्ष में पूरी थी—तो दूसरी रमणी धर्म के आभूषणों से भूषित एक यथेष्ट धर्मिष्ठा स्त्री थी। अस्तु! अब हमारे इन दोनों अन्तिम शब्दों के लिख देने से आशा है कि पाठकों को बहुत कुछ इन दोनों के विषय में बोध हो जायगा कि पहिली तो सचमुच एक पिशाचिनी थी जिसने अपने को मनुष्य की देह में छिपा रक्खा था, और दूसरी पूरी देवी थी, जिसके मानुषी शरीर में रहने पर भी उसकी अकथनीय कान्ति किसी प्रकार छिपी हुई नहीं थी।

इरेनी नेटेरेस का वयस यद्यपि बहुत कुछ हो गया था परन्तु वह संसार के काट फांस से बिलकुलही अज्ञ थी और यही कारण था कि सरलहृदया इरेनी एडा की बनौवा बातों में आ गई, और उसके उस कृतृम प्रेम को सच्चा प्रेम जान अपनी कुल रामकहानी उसी व्यक्ति की स्त्री से सुना दी जो उसके उपन्यास का एक मात्र नायक था।

परन्तु जो हो, माना हमने कि इरेनी नेटेरेस के तीस वर्ष संसार के बिना कोई काट फांस जानेही समाप्त हो गये या उसी को यों कहिये कि वह इतनी बड़ी हो गई और अभी निरी अनजानही थी—उसके नेत्रों से कभी भी प्रेम के उमङ्गों से निकलनेवाली अग्निस्फुलिङ्ग बहिर्गत न हुई—तो क्या यह रमणी मूर्ति के लिये कोई हानिकारक बात है—और अन्य तो दूर रहें हम इसी इरेनीही को देखते हैं, जिसके इस अनोखे अनजानपने ने हमारे हृदय में एक सच्ची प्रतिष्ठा उसकी ओर से जमा दी और यदि अवसर पड़े तो श्रेष्ठ स्त्रियों की श्रेणी में हम उसका नाम भी देने को तैयार हैं!

इरेनी यद्यपि ईसाई थी परन्तु गरम और एशियाई देश में रहने के कारण इसे वहां की चालचलन पर बहुत ध्यान देना पड़ता था और केवल ध्यानही नहीं वरन् उसका पूरा २ अनुकरण करना पड़ता था वह केवल अपने जाति पांति के लोगों से मिला करती थी, और अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त तो वह बिलकुलही परदे में रहा करती थी और यदि मिलती भी थी तो अपनी ब्याही हुई मुँहबोली बहिनों से।

उपरोक्त लिखी सतरों के लिखने का मुख्य तात्पर्य केवल इतनाही था कि जिसमें

हमारे प्यारे पाठकगण, एडा के हाल से तो भली भांति परिचित हैं परन्तु इरेनी के नहीं थे, इससे उसके भी स्वभाव प्रकृति तथा अन्य वृत्तान्त से अवगत हो जाँय।

हां तो ऊपर यह लिखही चुके हैं, कि जेरनिन की पत्नी एडा, ने वह चन्दन का सन्दूक यूनानी लेडी से पा लिया है और उसे वह खोलाही चाहती थी कि सहसा वेरेन जेरनिन इस कोठरी में आ गये।

इरेनी ने एक दृष्टि उसपर डाली और फिर उसी कुरसी पर गिर पड़ी जिसपर से यह अभी जाने के लिये खड़ी हुई थी।

"यह वही है! यह वही है!"

इतना उसने हृदय में चुभनेवाले स्वर में कहा और फिर अपना मुँह दोनों हाथों से ढाँक लिया।

अब यह हमें समझाके लिखने की आवश्यकता नहीं है कि यूनानी लेडी की ऐसी अवस्था क्यों हो गई। क्योंकि इस समय उसके सामने एक वह व्यक्ति था जिसका ध्यान वह पन्द्रह वर्ष से अपने हृदय में रक्खे हुई थी—जिसका रास्ता देखते २ उसकी आंखे पथरा गई थीं और लगातार इतने दिवसों पर्यन्त उसका हृदय उसके प्रेम में जलते २ कोयला हो गया था। एक क्षण में इसे वह सब पिछली बातें स्मरण हो आईं इसके नेत्रों के सामने वह गरम देश की वाटिका घूम गई जिसमें यह और इसका यही प्रेमी हाथो में हाथ दिये घूमते थे—और जहां इसका पहिला प्रेम उत्पन्न हुवा था—और जहां एक ने दूसरे को सदैव प्रेम करने के लिये कसमें खाई थीं। उसे ऐसा जान पड़ता था कि मानों हमलोगों ने कलही वे शपथें की हैं और कलही एक दूसरे से दमिश्क के कुञ्जभवन से पृथक होके निकले हैं—इस समय उसे अपने सामने ऐसाही बोध होता था कि मानो उसी उद्वेग से उसका प्यारा प्रेम की बातें कह रहा है, और मानों उसका अटल प्रेम इसके हृदय में भी बहुत कुछ आशायें उत्पन्न कर रहा है।

परन्तु क्षणही भर में उसका वह सब ध्यान दूर हो गया—उसके ध्यान में इस समय वह बातें ठीक ऐसेही आईं कि जैसे दमिश्क के चारों ओर के भारी रेगिस्तान में आंधी का झँकोरा एक ओर से आता था और शीघ्रता से मनमाना हवा तथा बालू उड़ाता दमिश्क की शहरपनाह की दीवार से जा टकराता था,—अब उसका कुल ध्यान डांवाडोल था—अब पहिला ध्यान उसका बिलकुल बदल गया था और इस समय उसके सामने वह व्यक्ति था जिसकी आशा वह इतने बड़े समय से कर रही

थी—या वह स्वयं अपने उस प्रीतम के सामने थी जिसने इसकी सुध विसरा के एक दूसरेही से प्रेम लगा लिया था।

जिस समय बेरेन ने सुन्दरी इरेनी की वह अवस्था देखी और उसकी ऊपर लिखी बातें सुनीं तो कुछ क्रोध से कहने लगा—"यह स्त्री कौन है?"

"मेरे परमेश्वर! अब तो यह पहचानता भी नहीं"

इरेनी ने आंसुओ की धारा बहाते हुये यह कहा और फिर शीघ्रता से अपने स्थान से उटी—इस समय उसकी उन बड़ी २ चमकीली आंखों से अश्रुधारा बहती हुई गालों पर आती थी, और फिर वहां से लुढ़कती उसका वस्त्र भिगो रही थी—अपने स्थान से उठके उसने धीरे से एडा के हाथ का वह सन्दूकचा ले लिया और उसे खोल तथा उसमें से एक हार निकाल के उसने एक बड़ेही दुःखभरे स्वर में कहा—

"श्रीमान्! मैं बड़ाही दुःख और कष्ट झेल के और एक बहुत बड़े भ्रमण का कष्ट उठा के केवल एक बार पुनः आपका दर्शन करने की अभिलाषा से यहां आई हूं, और मेरा एक विशेष तात्पर्य यह भी था कि यह हीरों का हार जो आपने किसी समय कुछ समझ के मुझे प्रदान किया था—(अब आपको कदाच स्मरण न होगा)—आपको लौटा दूं।

यूनानी लेडी के इतना कहतेही एक विचित्र प्रकार का प्रकाश बेरेन के चेहरे पर दिखाई पड़ने लगा। मानों वह किसी विशेष बात को जान गया। फिर इसके उपरान्तही उसके चेहरे का रङ्ग उड़ गया और उसने बड़ीही घबड़ाहट से कहा—

"हां—अब—मुझे स्मरण हुवा—तुम इरेनी नोटेरेस उस सौदागर की बेटी हो—और यह हार—हां—मैंनेही तुम्हें दिया था जैसा तुम कहती हो—वह बहुत दिवस हुये—और—और—मैं आशा करता हूं कि तुम मुझसे दुःखी तो न—"

जब उस बेचारी स्त्री ने ऐसे बेहूदे शब्द जिसके कोई अर्थ न थे, और ऐसे निरर्थक बचाव बेरेन के मुँह से सुने तो वह बिलकुलही सुन्न हो गई—काटो तो लहू नहीं बदन में—उसने एक सरसरी दृष्टि बेरेन के चेहरे पर डाली और फिर चुपकी हो रही।

जब पहिले बेरेन ने कहा था कि "यह स्त्री कौन है" तो उसी समय उसके छाती पर एक कड़ी ठेस पहुंची और मारे दुःख के उसकी अवस्था बड़ीही खराब हो रही थी। उसने रोते २ अपना परिचय उसे दिया। परन्तु जब उसने दोबारा उन बिना मतलब के शब्दों में बातचीत की—और इसने उसकी वह मोटी और कांपती

हुई आवाज सुनी तो यह एकवारगी चौंक पड़ीः—उसे बड़ाही आश्चर्य हुवा। एक अ-नोखी बात उसके हृदय में समाईः—उसकी बड़ी २ और काली आंखें न जाने क्यों उठ २ के बेरेन के चेहरे पर जा जमी—इस मर्मभेदी दृष्टि को देखतेही न जाने क्यों बेरेन कांप गया—और जब उसने देखा कि लेडी की बड़ी २ आंखो में लज्जा और घमण्ड कूट २ के भरा हुवा है—और जब उसने देखा कि उसके माथे पर एक बहुत बड़े सोच का बादल जमा हो रहा है, तो वह बात करने में हिचकिचा गया—और जहां लों बन पड़ा अपनी बातों को घटा के थोड़ा और उसके साथही निरर्थक भी कर दिया, जैसा कि अभी ऊपर की बातों से प्रगट हुवा है, और फिर इसके उपरान्त कोई बात करने का उसमें साहस न रहा।

कई मिनिट तक पूरा सन्नाटा छाया रहा—एडा, बेरेन और यूनानी लेडी दोनों को देख रही थी, और फिर अपने पति के इस प्रकार चुप्पी साधने पर उसे बड़ाही आश्चर्य जान पड़ा—परन्तु वह किसी बात का अर्थ भली भांति न समझ सकी। बेरेन चुपचाप नीची दृष्टि किये खड़ा था, कठिनता से कभी २ उसके नेत्र ऊपर उठते थे जिसके देखने से जान पड़ता था कि वह यूनानी लेडी से दया भिक्षा का प्रार्थी है,—परन्तु इरेनी की तो मानों बेरेन के ऊपर टकटकी लग गई थी—और वह बड़ीही तीक्ष्ण दृष्टि से उसे सिर से पैर पर्यन्त घूर घूर के देख रही थी।

यह आश्चर्ययुक्त अवस्था भी उन लोगों की कुछही देर के बाद बदल गई!

इरेनी ने एक गहरे स्वप्न से चौंक के या एक बहुत बड़े विचार के परिणाम को सोच के हाथ मलते हुये पागलों की भांति कहा—

"नहीं—नहीं! मैं कदापि धोखा नहीं खा सकती! तू थिउडोर नहीं है जिससे मेरी मँगनी हुई थी—तू वह व्यक्ति कदापि नहीं है जिसका प्रेम अबलों मेरे हृदय में बसा है। आह उसकी मूर्ति तो मेरे हृदय पर खिची हुई है।"

इतना कहतेही उसके चित्त में न जाने कौन सा ध्यान आया कि हार उसने अ-पनी कक्षा की जेब में डाल लिया और जितना शीघ्र बना, उस कोठरी के बाहर नि-कल गई।

इसके निकलने पर द्वार बन्द न रहा क्योंकि जैसेही वह कोठरी के बाहर हुई वैसेही उसमें शरमन ने प्रवेश किया।

इकतीसवाँ बयान ।

व्यर्थ की धमकियाँ—शीशे का नकाब ।

एक कड़े क्रोध की भयानक झलक एडा के चेहरे पर उस समय दिखाई पड़ी जब उसने यों बेधड़क शर्मन को दरीता अपनी कोठरी में घुसता हुवा पाया ।

शर्मन वहां से सीधा बेरेन की ओर बढ़ा और अपने एक लगोंटिये यार की भांति उसने उसके कन्धे पर हाथ रख दिया और जोर से यों कहने लगाः—

"श्रीमान् ! क्यों आज इस निर्मल कान्ति में खिन्नता की छाया कैसी दिखाई पड़ती है ? क्या शराब का खज़ाना खाली हो गया वा रुपयों के कोष में चूहे कलाबाजिया खा रहे हैं ?

बेरेन—(बड़ीही बेसब्री से) आह शरमन ! तुम यहां अचांचक कैसे चले आये ?

"बस श्रीमान् का प्रेमही एक ऐसी वस्तु है जो यहां लों मुझे पुनः खींच लाया है।"

शर्मन ने यह जोर से कहा और फिर उस कोच पर बैठ के, जिसपर से अभी वह यूनानी लेडी उठके गई थी यों बोला—

"क्यों मेरी प्यारी (यह उसने एडा की ओर देख के कहा) व्यर्थ क्रोध कर अपने सुन्दर मनोरञ्जक चेहरे को क्यों बिगाड़े डालती हो । क्या तुम अनुमान करती हो कि मैं इन आंखो के दिखाने से डर जानेवाला हूं। कदापि नहीं।'

एडा ने यह सुनके एक बेर तो उसे लाल २ नेत्रों से घूरा और फिर मुँह फेरके बड़ीही घृणा से बोली—

"हरामजादा—पाजी—कमीना !"

शर्मन—(बड़ीही बेपरवाही से) श्रीमती—मैं तो अपनी ओर से सभ्यता निबाहे जाऊँगा चाहे तुम कुछही क्यौं न कहो । (बेरेन से) बेरेन—मेरे प्रतिष्ठित मित्र! अपने सुस्त नौकरों को बुलाओ और उन्हे शीघ्रता से भोजन चुनने के लिये आज्ञा दो क्योंकि इस समय हम और तुम दोनोंही भूखे और प्यासे हैं ।

"श्रीमान् !"

इतना कहते २ एडा, अपने स्थान से उठके अपने पति की ओर बढ़ी, और फिर बोली—"मुझे आपसे कुछ कहना है—और जिसे आप को अपने हृदय के कानों से सुनना चाहिये । यदि आप इस व्यक्ति को योंही स्वतन्त्रता से अपने विशेष मकानों में

घुस आने देंगे अथवा इसी में आप प्रसन्न हैं—तो इच्छापूर्वक आप अपने इस परम मित्र के हाथ में हाथ देके यहां विचर सकते हैं, परन्तु मैं एक दूसराही मकान ढूंढ़े लेती हूं—मैं अब यहां की गृहणी होने योग्य नहीं हूं।

बेरेन—(एक ऊँचे परन्तु लड़खड़ाते हुये स्वरों में) एडा—अब मुझे विशेष दुःख न दो, भगवान जानता है कि इससमय हमारी बुद्धि ठिकाने नहीं है। इस समय मुझे रहने दो एडा—मैं तुह्मारे साथ शीघ्रही इस विषय पर बात चीत करूँगा—कल—"

एडा—(बात काट के) नहीं मैं ऐसी अवस्था में इस मकान में नहीं रहा चाहती—यदि तुह्में इस व्यक्ति ने कुछ उधार दिया हो, तो बताओ वह कितनी रकम है, जिसे मैं कौड़ी २ बेबाक कर देना उचित समझती हूं, और कर दूंगी, और यदि यह व्यक्ति विना बुलाया मेहमान है, और व्यर्थ का बल हम पर प्रकाश किया चाहता है तो—"

शर्मन इतना सुन्तेही अपने स्थान से उठा और बेरेन तथा बेरोनेस की ओर बढ़ के जोर से कहने लगा—

"बस जी बहुत हुवा—श्रीमती भली भांति जानती हैं कि मैं इनके उन गुप्त भेदों से विज्ञ हूं जिनके नामही लेने से महाशय पर—"

"शर्मन !" बेरेन यह घबराहट से कहता अपने स्थान से उठा और शर्मन का हाथ पकड़ के तुरन्त उसे कोच पर बैठा दिया।

शर्मन—(कुछ नरमी से) अजी तो मैं इसी समय क्या सब खोले देता हूं—परन्तु अपनी स्त्री से कह दो कि तनिक वह अपनी जिह्वा रोके रहा करे, नहीं तो मुझे भी उसे कुछ विशेष सभ्यता सिखानी पड़ेगी। क्या मुझे वह कोई कुत्ता समझे बैठी है कि आये और दुरदुराने लगी ? और क्या मैं इसकी पूर्वावस्था से परिचित नहीं हूं—अरे यह वही कौन्टेस ओरेना की वस्त्र पहिनानेवाली एक सामान्य खवास थी जो आज बेरोनेस बन बैठी है ! हा ! हा ! हा !

यह कहकहा उसने इस जोर से लगाया कि प्रतिध्वनि से वह बड़ा कमरा गूंज उठा। इस समय एडा का इटेलियन रक्त उसके नसों में चक्कर मारने लगा और वह मारे क्रोध के अपने आपे से बाहर होके चिल्ला के कहने लगी—

"हरामजादे अभी इस मकान से निकल जा ! एक क्षण भी तू अब यहां दम नहीं

ले सकता ! निकल—या मैं नौकरों को आवाज दूं वे तुझे गरदनिया दे के निकाल बाहर करें।"

शर्मन—(जिसका होंठ मारे क्रोध के सुफेद हो गया, और जिसकी आंखों से आग सी निकलने लगी) बेरेन—तुम इसकी बातें सुन्ते हो। भगवान की सौगन्द मैं—"

बेरेन—(नर्मी और घबराहट से) चुप रहो शर्मन चुप रहो ! और तुम, एडा—हमें छोड़ दो—मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं ! मिष्टर शर्मन हमारे मित्रों में सें एक हैं—एक पुराने मित्रों में से, और वह मेरे एक मेहमान के तुल्य हैं—एक प्रतिष्ठित मेहमान के तुल्य !"

शर्मन—(गुर्रा के) हां—एक प्रतिष्ठित मेहमान के तुल्य !

इतना कहके वह घमण्ड से एडा की ओर देखने लगा।

अब एडा का वही क्रोध बेरेन की ओर फिरा और उसने उसकी ओर देख के गरज के कहा—

"नामर्द ! हां—नामर्द, मैं इसी को दोहराती हूं—इस लिये कि तुह्मारी स्त्री तुह्मारे सामने बेहुरमत हो रही है। परन्तु इसका बदला मैं लूंगी मेरी धमकियां व्यर्थ नहीं होती ! इस हरामजादे बेहया—कमीने को यदि तुमने अभी इसी समय निकाला तो निकला नहीं मैं अभी मकान से बाहर होती हूं और इसी रात एक मकान ढूंढे लेती हूं।

यह सुनके बेरेन ने एडा का हाथ पकड़ लिया और एक कोने में ले जाकर धीमी परन्तु भर्राई हुई आवाज में जल्दी २ कहा—

"एडा ! मुझ से सुनो। तुम भी एक गुप्त भेद रखती हो, और मैं उसमें विघ्न डालने का उसे खोलने का उद्योग नहीं करता। इसी प्रकार मुझे भी अपने गुप्त भेद की साधना करने दो—उसमें किसी प्रकार का विघ्न मत डालो। वह व्यक्ति पागल—बेहूदा—और निर्लज्ज है उसे इस प्रकार की धमकियों की कोई परवाह नहीं इस लिये यह सब निरर्थक हैं। साथही यह भी ध्यान रक्खो ! कि यदि तुह्मारे पति का भेद खुला, वह तबाह हुवा—उसकी बदनामी चारों ओर फैली तो तुह्मारी भी उसी के साथही साथ है, वह तो डूबेहीगा पर तुम्हें भी अपने साथही लेता जायेगा !"

"परन्तु यह निर्लज्ज है कौन ?

यह एडा ने गिरती हुई आवाज में शर्मन की ओर देखके कहा जो बेखटके कोच पर पैर फैलाये आराम कर रहा था।

एडा—हां तो यह व्यक्ति कौन है जिसका इतना भय आपको लगा हुवा है, और जिसके कारण आप इतनी बेहुरमती अपनी करते हैं ?

बेरेन—यह तुम्हें कभी न मालूम हो सकेगा, एडा ! और देखो निरर्थक उसे गाली गलोज न देना क्योंकि उससे—बस अब मुझे आगे कहने की कोई आवश्यकता नहीं है—देखो अब जो तुमने उसे गाली दी तो वह—"

"चाहे वह कैसीही खराब बात क्यों न हो, मुझे तो अवश्यही बता दो श्रीमान् ! यह उसे निर्लज्ज और हठी स्त्री ने कहा और फिर बोली—

"अब तो मुझे बे उसके जाने चैनही नहीं पड़ने का है—

बेरेन—(क्रोध से अपने दांतों से होंठ को काट के) देखो एडा ! तुम मुझे कड़ी बातों के कहने पर विवश करती हो । परन्तु याद रक्खो इस हठ से, तुम मेरा तो क्या अपने लिये निश्चय एक गहरा गड्हा खोद रही हो— और मैं भी फिर अपने इस क्रोधमय स्वभाव के कारण तुमसे एक कड़ा बदला निश्चय लूंगा ! अब यदि तुमने हमारे मित्र को गालियां दी, और उसे बुरा भला कहा तो निस्सन्देह वह क्रोध में आके मेरा एकबारगीही सत्यानाश कर देगा—परन्तु तुम्हें भी सावधान रहना चाहिये कि इसी समय अदालत के सिपाही भी आ पहुंचेंगे और तुम्हें पकड़ के अदालत में खींच ले जांयगे, और वहां तुमसे उस बच्चे के बारे में इजहार लिये जांयगे जिसे तुमने—"

"बस बस, ठहरो ठहरो । श्रीमान् ! तुम्हें भली प्रकार मालूम है कि मेरे हृदय पर कैसे नश्तर लगता है"

एडा ने यह कड़ाई से कहा । और इस समय उसका चेहरा क्रोध से इतना भयानक हो गया कि उसका वह अनुपम सौन्दर्य उसके छिपाने में बिलकुलही समर्थ्य न हो सका । इस समय उसका इटालियन क्रोध बड़ाही प्रबल होके उसके चेहरे को बिलकुलही काला किये हुये था ।

बेरेन, इस समय टकता २ के शर्मन की ओर देख रहा था, इस कारण उसे इसके चेहरे की यह रंगत बिलकुलही न दीख दड़ी ।

क्रमशः जब एडा का वह क्रोध कुछ कम हुवा और इसने शान्तरूप धारण किया तो बहुतही धीरे से कुछ देर के उपरान्त बोली—

"जैसी आपकी इच्छा हो वैसाही कीजिये, और अब मैं आपकी इन बातों में कदापि बाधा न दूंगी ।"

परन्तु उसका वह शान्तरूप धारण असली नहीं था। जैसे नील नामक नदी का पानी गरमी के दिनों के जलते बलते सूर्य के सामने और मिश्र देश के स्वच्छ और साफ आकाश के नीचे शान्तरूप से लहरें लेता रहता है,—और रेतीले किनारे पर के खड़े हुये मुसाफिर की दृष्टि जल के नीचे तक जहां बड़े २ मगरमच्छ छिपे पड़े रहते हैं, नहीं पहुंच सकती और जब बेचारा पथिक जल की स्वच्छता और ठण्ढक से निर्द्वन्द होके जल के निमित्त हाथ डालता है तो सहसा उस बेचारे को वे भयानक जन्तु पकड़ के नीचे ले जाते हैं। फिर वह उनसे किसी प्रकार छुटकारा नहीं पा सकता।

बस ठीक ऐसीही गम्भीरता बेरोनेस एडा ने जब वह अपने पति से वही उपरोक्त बातें कह रही थी धारण कर ली थी।

परन्तु पति की बाधा के अतिरिक्त एक ध्यान और भी उसके हृदय को दुःखित किये हुये था। वह सोचती थी कि लगभग छः मास के होते हैं, जब वह विष थेरिजा को दिया गया था, परन्तु अब तक उसका कोई भी फल नहीं दिखाई दिया। थेरिजा के चेहरे से तो केवल एक मन्द मुस्कान जो उसको किसी अन्तरिक दुःख का पता देती है, दिखाई देती है परन्तु उसे शारीरिक कष्ट तो कोई भी नहीं बोध होता। एडा केवल फोष्ट के बताये हुये उस भयानक भेदही के छिपाने में नहीं तत्पर रहा करती थी वा उसी के छिपाने का ध्यान उसे नहीं लगा रहा करता था, वरन् एक ध्यान और भी इसकी आत्मा को प्रायः सताया करता था—और जिसके निवारण करनेही के लिये उसने यह विष दिया था। वह समझे बैठी थी कि इसमें कृतकार्य होने से मुझे—सुख—सम्पत्ति—ऐश्वर्य सभी कुछ प्राप्त होगा—दूसरे यह कि मैं फोष्ट की प्राणप्यारी होके जीवन के दिवस बिताऊँगी। परन्तु आह! उसे यह नहीं मालूम था कि यह कुल व्यर्थ था! उसके ध्यान में यह बात न आई थी कि—'मेरे मन कछु और है कर्ता के कछु और'। इन छः महीनों में एडा कभी २ आपही आप यह प्रश्न भी कर बैठती थी कि क्या बुढ़िया ने मुझे धोखा दिया? अस्तु इन्हीं सब बातों को सोच विचार के उसने यह निश्चय कर लिया कि सिगनोरा फौनटेना से एक बार और अवश्यही चलकर उस विष की निष्फलता का समाचार सुनाना चाहिये। एडा बड़ीही दृढ़ थी, वह उस के ध्यान से कभी न हिचकिचाई, जब यह बिलकुलही वहां ज्ञान शून्य हो गई थी और उसके सामने वह भयानक २ मूर्त्तियां इधर उधर घूमती फिरती दिखाई पड़ी थीं। कभी २ वह इस ध्यान से वहां जाने से रुक रहती कि कदाच बुढ़िया ने विष असर करने की बात बताने में धोखा खाया हो और तब नहीं तो अब अवश्यही उसका असर होगा।

परन्तु अन्त उसकी यह आशा भी उसके हृदयही में ध्वस्त हो गई । उसने अपने हृदय में वहां दोबारा जाना निश्चय कर लिया । और उधर जब वेरेन अपने मित्र शरमन के साथ, शराब पी रहा था तो इधर एडा भी महल से निकल और उन अन्धकारमय तथा सँकरी गलियों को अपने पीछे छोड़ती उस निर्दयी और अभागी बुढ़िया के निवासस्थान के निकट जा खड़ी हुई ।

नीचे की खिड़कियां तथा द्वार रीत्यनुसार बन्दही थे । ऊपर की खिड़की से वैसेही प्रकाश निकल २ के सामने के द्वार पर पड़ रहा था ।

एडा ने यहां पहुँच के धीरे २ द्वार खटखटाया, परन्तु उसका कोई फल न दिखाई पड़ा । वह लगभग दस मिनटों के उसी स्थान पर खड़ी रही परन्तु मकान में किसी का शब्द न हुवा कोई द्वार खोलने के लिये आता न जान पड़ा ।

अब एडा ने आपही आप धीरे २ भुनभुना के कहा "क्या बुढ़िया अपनी साधना में ऐसी लगी हुई है, कि उसने द्वार की भड़भड़ाहट तनिक भी न सुनी !"

इतना बरबरा के एडा ने बहुतही जोर से बेसबरी के साथ द्वार को भड़भड़ाया। इसके भड़भड़ातेही द्वार पीछे हटा और खुल गया। द्वार खुलतेही एडा ने शीघ्रता से उसके भीतर प्रवेश किया और फिर पलट के द्वार को सावधानी से बन्द कर दिया ।

अब यह वहां से उसी सँकरे रास्ते से होती हुई ऊपर चढ़ने लगी जहां बड़ीही बदबू फैली हुई थी ।

इस ऊपरवाली कोठरी की अबभी वही विचित्र अवस्था थी जिससे इतः पूर्व हम अपने पाठकों को अवगत कर चुके हैं ।

दीवार के लगे हुये तख्तों पर वह शीशे की सुराहियां वैसीही रक्खी हुई थीं, जैसे पहिले थीं । इलामारी का द्वार खुला हुवा था जिसमें भिन्न २ प्रकार की और अनेकानेक प्रकार के रङ्गों से भरी बोतलें रक्खी हुई थीं;—कांटा बट्टे और अन्यान्य दवाइयों के, नापने, मिलाने तथा पृथक् २ करने की वस्तुयें टेबुल पर इधर उधर बिखरी हुई थीं—वह खरगोशों का पिंजड़ा उसी स्थान पर रक्खा हुआ था परन्तु उसमें खरगोश नहीं थे—वह बड़ा सन्दूक, जिसमें बहुत से छेद बने थे वहीं अपने पहिले स्थान पर रक्खा हुआ था । और वह लकड़ी की शीशों से बन्द इलमारियां जिनमें मनुष्यों की ठठरियां बंद थीं वहीं रक्खी हुई थीं । एक लम्प टेबुल पर जल रहा था ।

परन्तु वह संगमरमर का खरल जो लगभग साढ़े तीन फीट के ऊंचा था अँगीठी के पास पड़ा हुवा था जिस्में कुछ आग जैसी वस्तु चमक रही थी ।

परन्तु क्या वह बुढ़िया भी उसी मकान में थी ?

हां—एक कुरसी पर आग के निकट, वह बैठी हुई थी और अपना हाथ खरल के किनारे रक्खे खरल में की पड़ी हुई पीने की दवाओं को झुक के देख रही थी।

एडा और आगे बढ़ी और जब वह खरल के निकट पहुँची, तो उस्को ऐसी बदबू आई जिस्से उस्का सिर चकराने लगा और उस्के पेट में बड़ा दर्द जान पड़ने लगा। यह मालूम करतेही वह शीघ्रता से खिड़की की ओर झपटी और जलदी से उसने उस्का द्वार खोल दिया।

खिड़की खुलतेहीं स्वच्छ हवा का झोंका कोठरी में आया जिस्से इस्के माथे के चक्कर मिटा। पेट का दर्द भी कम हुवा और कोठरी की वह बदबूदार वायु भी खिड़की की राह से निकल गई।

परन्तु इतने पर भी सिगनोरा फौनटेना अपने स्थान से न हिली और न उसने सिर उठाया।

अब एक बड़ाही भयानक ध्यान एडा के चित्त में आया और उसने इच्छा की कि कोठरी के बाहर निकल जाये, परन्तु दूसरेहीं क्षण में वह अपनी गई हुई हिम्मत पर पुनः आधिकृत हुई और एक बार पुनः उस संज्ञाशून्य मूर्ति की ओर बढ़ी जिस्का सिर लटक के ओखली का सहारा लिये हुवा था।

जब एडा बुढ़िया के और निकट पहुँची तो उस्के जूते के नीचे कुछ लगता और टूटता जान पड़ा और जब उसने झुक के देखा तो मालूम हुआ कि वही शीशे के नकाब का टूटन है जिसे अपने नाक और मुंह के सामने करके बुढ़िया विष तैयार किया करती थी, और वही नकाब उस कोठरी में चारों ओर बिखरी हुई थी।

एडा का शुबहा दृढ़ हो गया और एक भयभीत दृष्टि उसने बुढ़िया के चेहरे पर डाली।

उसने वहां की वस्तुओं के देखके एक तात्पर्य निकाला। वह यह था कि बुढ़िया इसी शीशे की नकाब को लगा के कोई बहुतही बड़ा विष तैयार कर रही होगी—और इसमें या तो विष की झार से या बुढ़िया की असावधानी से वह शीशा टूट गया होगा और कुल विषैली झार बुढ़िया की नाक में पहुँची होगी। जिस्से बुढ़िया की मृत्यु निश्चय हो गई।

अच्छा तो अब विचार इस बात का है कि जब जीवनावस्था में बुढ़िया का

चेहरा इतना भयानक रहा होगा तो उस समय जब ऐसे कष्ट से उसकी मृत्यु हुई थी उसका चेहरा कितना कुछ भयंकर हो गया होगा।

एडा उसकी मृत्यु से घृणा करके पीछे हट आई—इस समय इस मृत्यु से, उसके पापमय आत्मा पर एक प्रकार का भय बोध हुआ।

एडा को कुछ उस बुढ़िया के मरने का खेद नहीं हुवा जो उसी वस्तु से यमलोक को सिधारी थी जिसे वह दूसरों के मारने के लिये तैयार किया करती थी—नहीं—एडा अपनी आत्मा को ऐसी ऐसी बातों से दुखित करना पसन्द नहीं करती थी।

परन्तु यदि उसे खेद हुवा तो केवल इस बात का, कि मैं अब किससे उन औषधियों के बारे में कहूंगी जिससे मेरा बड़ा मतलब निकलता था और दूसरे मैं उस पहिलेही विष के बारे में किससे पूछूं कि उस दवा ने बिलकुलही असर क्यों न किया, बस केवल इन्हीं बातों का दुःख उस पापिष्टा स्त्री को उस अत्याचारिणी और दुष्टात्मा बुढ़िया के मरने से हुवा था।

बत्तीसवां बयान।

जूलियेन आल्प्स।

हाय! यदि संसार में कुकर्मी, दुराचारी, स्वार्थी, और वे जो अनेकानेक पाप नित्यही कमाया करते हैं—जिनके कामों को सुनके रोमांच हो आया करता है—भयानक से भयानक पाप को जो अपने बायें हाथ का खेल समझते हैं—न होते—तो आप लोग अनुमान कर सक्ते हैं कि यही संसार यही लोक फिर कैसा उत्तम होता!

जब पृथ्वी, चमकते हुये सोने के सदृश—पके हुये अनाजों से भरी हुई है और जब किसान, वा उस भूमि का स्वामी प्रसन्नता से अपने परिश्रम का फल देख रहा है और उसके काटने की तैयारी कर रहा है उस समय देश में लड़ाई की चारों ओर उत्तेजना दिखाई पड़ती है और फौजी गाड़ियां उन्हीं अनाजों को कुचलती और बेचारे किसानों की सैकड़ों आशाओं का खून करती आगे बढ़ जाती हैं। जब सौदागर लदा फंदा अपने मकान की ओर चला आ रहा है, उसके हृदय में जब उसकी प्यारी स्त्री और उसके प्यारे छोटे २ बच्चों का ध्यान आ २ के उसे विदीर्ण किये डालता है, जिनसे उसने वर्षों साक्षात नहीं की और जिस आनन्द की कमी को पूरा करने

के लिये उसने अतुल सम्पत्ति का उपार्जन कर लिया है और सोच रहा है कि घर चलके और इसे अपनी स्त्री बालक में रख के मैं कैसा प्रसन्न होऊं, बेचारा पथिक यही सब सोचता जाता है कि अर्ध निशा में एक डाकू का खंजर आके उसकी छाती में अपना स्थान बना लेता है और उसकी तमाम आशाओं का तो अन्त करही देता है इसी के साथ बेचारे पंथिक या बेचारे सौदागर की मकान पर बाट जोहनेवालों के मस्तक पर भी बिजली गिरा देता है । जिस समय कोई न्यायप्रिय राजा अपनी प्रजा को अनेकानेक प्रकार के सुख देने में तत्पर होता है अपने जीवन को प्रजाही की भलाई करने में लगाये रहता है—और उसकी कार्य्यदक्षता तथा न्याय के कारण, प्रजा को भी बड़ाही आनन्द मिलने लगता है—अहा उसी समय मृत्यु का भयानक पंजा आके उसे सिंहासन से खींच लेता है, और फिर उसका राज्य एक ऐसे वारिस के हाथ जाता है जिससे उसकी वही पाली हुई प्रजा पशुओं के से अत्याचार से बरबाद होने लगती है ।

मनुष्य की प्रसन्नता का अन्त, तथा उसके दुःख और खेद का अन्दाजा किसी प्रकार कोई लगाही नही सक्ता ।

सुवर्ण के निमित्त सदैव का झगड़ा—दिन की लड़ाई और रात की बड़ी २ जंगी सभायें केवल इसी के लिये हैं कि उन्हें वह मोहिनी मन्त्र सिद्ध हो जाय जिससे लोग उन्हें उच्चश्रेणी पर देखने लगें, परन्तु हा ! वे नहीं जानते कि वही स्थान कितना पापमय है कितनी यन्त्रणा मनुष्य को उस स्थान पर पहुँचने वा उस मोहनी मन्त्र के सिद्ध करने मे होती है । दौड़ में, प्रथम श्रेणी में गिने जाने के लिये इतने अन्धेपन की तीक्ष्ण उत्सुकता—किसी न किसी प्रकार अपने साथियों से बाजी ले जाने की इच्छा ! चाहे कोई बीच में पड़के कुचल जावे और चाहे उन्हें किसी भारी पाप का भागी होना पड़े ! कड़ी प्यास के उपरान्त अर्थात् जब गला सूख जाता है, प्यास देर की लगी हुई है इसके उपरान्त—उस नदी में से सबसे विशेष जल पीने के लिये—जिसको परमेश्वर ने कुल सृष्टि के लाभ के निमित्त बहाया है—यह धक्कमधक्का—यह रेलारेल—यह जल्दी—यह भीड़भाड़—यह मुँह के बल गिरना—यह लड़ाई और मार धाड़—यह अनेक प्रकार के धोखे की टट्टियां—यह हुल्लड़—यह कोलाहल—जो संसार के प्रत्येक व्यक्तियों का सदैव का कांम हैं—नित्यही ऐसा किया करते हैं—बस यही सब उनका करना—यही सब बातें—मनुष्यों के आपस में की—एकता, प्रेम, सहायता इत्यादि की पूरी वैरन हैं ।

सहस्रों बुद्धिमान व्यक्तियों को यह देख के दुःख हुवा—इस दोष को संसार से मिटाने के लिये उन्होंने कमरें कसीं—स्थान २ पर लोगों को खड़े होके शिक्षा देने लगे, इस काम में—इस शिक्षा में, करोंड़ो रुपये व्यय हो गये—लोगों के गले यह चिल्लाते २ फट गये कि "एकता की डोरी में अपने को बांधके इसका आनन्द लूटो" परन्तु उस पर भी—इतने उद्योगों पर भी हमारे भाई और विशेषतः हमारे हिन्दुस्तानी भाई इस प्रेम और एकता से बँधे हुये जीवन के आनन्द का अनुभव करने से रहितही रहे—वे जैसे पहिले इससे वञ्चित थे अब भी वैसेही हैं।

यही सब ऊपर लिखे ध्यान आटू पेनिल्ला के चित्त में आ रहे थे, जब वह कारनीला देश के किसी बन के बीचों बीच एक सँकरी राह पर चला जाता था, उसने वायना नगर में इतने पाप और इतने अत्याचार देखे कि उसकी तबीयत वहां से उचट गई, और उसने यह निश्चय कर लिया कि कहीं दूर चलके ऐसे २ पहाड़ों की सैर करनी चाहिये जिन्हें प्रकृति ने साक्षात् वैकुण्ठ के तुल्य बना रक्खा है, और जहां के साधु तथा देवता तुल्य सीधेसाधे रहनेवालों को अभी लों बड़े २ नगरों की नीचता पाप, कुकर्म, इत्यादि की वायु पर्यन्त नहीं लगी है। यही सब सोच और वायना से घृणा कर वह इस भ्रमण में लगा है।

आटू एक हृष्ट पुष्ट और शीघ्रगामी घोड़े की पीठ पर सवार, हथियार लगाये और उन रुपयों को अपने पास लिये जिसे उसको एक अनजान परन्तु दयालु विचित्र मनुष्य ने दिये थे—भगवान की बनाई हुई अनुपम शोभा को देखता धीरे २ चला जा रहा है।

लोविल की पहाड़ियों को जिसकी चोटियों पर सदैव बरफ जमी रहती है, पार करके, यह युवक चित्रकार, थोड़ी २ दूर पर पड़ाव डालता हुवा सूबे कारनीला में आ पहुँचा है, और योंही देखते हुये उसकी इच्छा पर्वत जूलियेन आलप्स पर जाने और वहां की सैर करने की है।

वह इस समय एक सघनबन के बीचों बीच चला जाता था, परन्तु उसे आशा थी कि सूर्यास्त के कुछ पूर्वही हम इस बन के उत्तरीय किनारे पर जा पहुँचेगे।

मध्य बन से, किनारे पर्यन्त पहुंचने के लिये अब उसे केवल तीन घण्टे थे इस लिये उसने अपने घोड़े को शीघ्रगामी कर दिया।

उस सीधे साधे और स्वच्छहृदय किसान ने भी, जिसके यहां यह गत निशा को

टिका था उसे बहुतही ठीक राह पर लगा दिया था जिसपर यह दिन भर भ्रमण करता आया है । अभी यह कठिनता से वन के बाहर हुवा था कि उसे एप्रेल मास के सूर्य की अन्तिम किरनें जूलियेन आल्प्स पर्वत की सुन्दर सुहानी चोटियों पर पड़ती दिखाई पड़ीं इसी के ऊपर अकाश भी टुकड़े २ बादलों से आच्छादित हो रहा था।

जंगल के किनारे से थोड़ीही दूर पर एक झोपड़ी थी जिसके स्वामी ने प्रसन्नता पूर्वक आटू को अपने यहां एक रात टिक रहने की आज्ञा दी और जिसमें आज का पड़ाव उसने डाल दिया।

वह बड़े तड़के सूर्य देव के निकलने के पहिलेही उठा, सूर्य्य की किरनें बादलों पर धीरे २ पड़ रही थीं, और साथही बरफ से ढँकी हुई चोटियों पर पड़ २ के उसे बिलकुलही चांदी का बनाये देती थीं।

आवश्यकीय शारीरिक क्रिया से निवृत्त होके उसने मकान के स्वामी की आज्ञा से अपने घोड़े को वहीं छोड़ा और पैदल इधर उधर पहाड़ों पर टहलने के लिये झोपड़ी के बाहर हुवा। -

एक घण्टे में वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचा जहां से एक ऊंची चढ़ाई ऊपर को गई थी। आटू उसपर भी चढ़ने लगा और उसपर पहुँचने में उसे दो घण्टे लग गये। अन्त वह उस पहाड़ी चढ़ाई के ऊपर पहुंचा जहां दूर तक हरी २ घासों का मखमली फर्श बिछा हुआ था और जिसमें यहां और वहां स्थान २ पर बहुत सी बकरियों के झुण्ड चर रहे थे। वहां उसे बड़ाही मनोहर दृश्य दिखाई दिया— चारों ओर बरफ से ढँकी हुई और सूर्य की किरणों से चमचमाती हुई पर्वत आल्प्स की चोटियां उस बड़े और नील वर्ण के शामियाने को जिसका नाम आकाश है अपने सिर पर उठाये हुई थीं, और बीचो बीच में वह गोल मैदान फैला हुवा था।

सूर्य देव की तीक्ष्ण किरनों के बरफ पर पड़ने और उसकी छाया इस मैदान पर पड़ने से स्थान बड़ाही उज्वल हो रहा था, यहां लों कि उस पर नेत्र भरपूर नहीं जमते थे!

परन्तु जैसे २ वह आगे बढ़ने लगा वैसेही वैसे उसे बहुत से बरबाद खेत तथा मकान भी दिखाई दिये जो बरफ के ढोंको के गिरने से चौपट हो गये थे।

परन्तु वह सुनसान और विशाल दृश्य कैसा मनोरञ्जक जान पड़ता था जहां के सन्नाटे को कदाचही किसी मनुष्य के कंठस्वर ने भंग किया हो।

इन्हीं ध्यानों में डूबा हुवा आट्रूपेनिल्ला बराबर आगेही बढ़ता चला गया, यहां लों कि वह कुछही देर में एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचा जहां से एक ऊंचा नीचा पथ, दो पहाड़ियों के बीच से ऊपर गया था। अब यहां से उसे प्रकृति की अद्भुत और बड़ीही विचित्र लीलायें दिखाई पड़ने लगीं–नये नये चट्टान और बड़ी २ चोटियां उसके सामने खड़ी दिखाई पड़ीं–उसके पैरों के नीचे वह भयानक और बड़े २ गार दिखाई दिये जिनके मुँह अजदहों के मुंह की भांति फटे हुये थे !

बहुत से खिलखिलाते और ठट्ठे मारते स्रोते उसे बहते दिखाई दिये जो ऊंची २ चट्टानों से छितरा २ के बह रहे थे—दूर की वृक्षों से लदी हुई चोटियां नील वर्ण आकाश में ऐसी खड़ी जान पड़ती थीं कि मानों आकाश में किसी ने कोई चित्र खींच दिया है। परन्तु यह सब बरफ से लदी हुई थीं।

आट्रू चलते २ एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचा जहां से रास्ता एक चट्टान पर से दाहिने घूम के एक बहुत बड़े गार के मुँह पर्यन्त जाके रुक जाता था परन्तु जब आट्रू ने ठहर के और दृष्टि गड़ा के देखा तो जान पड़ा कि इस गार में की निकली हुई चट्टानों को तोड़ के सीढ़ी का काम लिया गया है यदि मनुष्य चाहे तो सहज से उसमें उतर सक्ता है।

यह विचार करके कि यह सीढ़ी निश्चय किसी कारण से मनुष्यही के हाथों की बनाई हुई हैं आट्रू ने उसमें उतरने और आगे बढ़ने की हिम्मत बांधी।

आट्रू ने गार में उतरने के पहिले अपने चारों ओर किसी अन्य रास्ते को ढूढ़ने के लिये दृष्टि दौड़ाई, परन्तु उसे चारों ओर की पहाड़ियां दीवार के तुल्य खड़ी दिखाई पड़ीं, जिनपर रास्ता तो दूर मनुष्य का किसी प्रकार से भी चढ़ना असम्भव था। अब लाचार होके आट्रू उसी गार में उतरा।

आट्रू भीतर की अवस्था जानने के लिये और भी उत्सुक हो गया और क्योंकि वह यथार्थ में एक वीर पुरुष था इस कारण साहस बांधे एक दो फीट चौड़े ढालुवां पुस्ते पर जो उसी गार के भीतर सौ में पैंतालीस भाग ढालुवां था बिना हिचकिचाये चला जाने लगा।

उसने अपनी पीठ गार की दाहिनी ओर की दीवार से लगा ली और इस प्रकार इस भयानक द्वार से उतरना प्रारम्भ किया।

इसी प्रकार वह बराबर आध घण्टे पर्यन्त उतरता चला गया—इसके बीच में

उसने अपनी दृष्टि एक बार भी नीचे न की क्योंकि उसे भय था कि कदाच उस भयानक गार की गहिराई देख के उसके पैर फिसलें और वह लुढ़कता हुवा नीचे चला जाये।

अन्त उसने भयानक उतार को समाप्त किया, और अपने को एक बहुत बड़ी दीवार से निकले चट्टान पर खड़ा पाया।

यहां से रास्ता कुछ चौड़ा होता गया और कुछही दूर चलने पर उसे एक ऐसी चट्टान दिखाई दी जो भूकम्प के कारण दो टुकड़े हो गई थी।

यहां से रास्ता ऊपर की ओर जाता जान पड़ा—और लगभग सौ गज के आटू इसपर चढ़ा होगा कि सहसा यह एक लकड़ी के द्वार के पास पहुंचा जो लोहे की चौखट में लगा था, और जिसमें स्थान २ पर अनेकानेक लोहे के फूलदार कांटे लगे हुये थे।

आटू रास्ते के सँकरे होने के कारण दृष्टि नीची किये चला जाता था क्योंकि उसे टूटी फूटी, और ऊंची नीची राह से बड़ाही भय लग रहा था। अब जो उसने अचांचक अपनी दृष्टि उठाई तो सामनेही उसे फटी चट्टान पर एक बहुत ऊंची दीवार एक ओर से दूसरी ओर को खिंची दिखाई दी जिसके बीचों बीच यह फाटक लगा हुवा था।

यह बड़ी और ऊँची दीवार इस प्रकार खिंची हुई थी कि उसके भीतर की अवस्था से अवगत होना एक प्रकार सर्वतो भाव से असम्भव था। तौ भी उसकी सामने की अवस्था देख के आटू को निश्चय हो गया कि यह किसी दृढ़ दुर्ग की बाहरी दीवार है जो पहाड़ी जिलों में प्रायः होते हैं, और जहां प्रकृति की बनावट के साथ मनुष्यों की सफाई और परिश्रम के मिल जाने से वे दुर्ग इतने दृढ़ और अभेद हो जाते हैं कि जिन्हें हस्तगत करने में एक भारी से भारी फौज को कठिनता होती है।

आटू खड़ा खड़ा यही सब सोच रहा था कि सहसा उस बड़े और दृढ़ द्वार में से एक खिड़की के खुलने का भन्नाटा सुनाई दिया। साथही यह आवाज़ उसके कान में आई—

"अजनबी! चाहे तुम कोई क्यों न हो, मुझपर दया करो! मुझे बचाओ—मुझे इस भयानक कैदखाने से छुड़ाओ जहां मैं इतने दिवसों से बड़ा कष्ट भोग रहा हूं।"

यह सुनतेही आटू की दृष्टि फाटक की खुली खिड़की की ओर उठी और जिस समय उसकी दृष्टि उस कहनेवाले के चेहरे पर पड़ी उस समय सहसा उसके मुँह से एक लम्बी आश्चर्ययुक्त चीख निकल पड़ी।

उस सूरत से यह भली प्रकार परिचित था ।

परन्तु जैसेही उस चेहरे ने प्रगट होके वह उपरोक्त बात आटू से कही तो अभी वह बात पूरी तौर से समाप्त भी न हुई थी कि सहसा वह चेहरा पीछे हट गया और इसके उपरान्तही आटू के कान में किसी अपरिचित व्यक्ति के कण्ठस्वर किसी को बड़ीही कड़ी आवज में बुरा भला कहते सुन पड़े—और इसके उपरान्तही खिड़की बड़ी जोर से बन्द हो गई ।

तैंतीसवाँ बयान ।
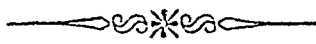
गुप्तरहस्य ।

आटू चकपका के बेड़ेही आश्चर्य से जो कुछ उसके सामने था उसी को देखता मूर्ति की भांति खड़ा रह गया । इस समय उसे अपने आगे पीछे की बिलकुल सुधि न रही ।

आटू—(आपही आप) वह चेहरा—हां यह वही था, परन्तु कैसा दुःखमय और पीला पड़ गया था । और वह उस समय तो वायनाही में उपस्थित था जब मैं अपने इस भ्रमण के लिये नगर के बाहर हुवा हूं ! हां यह तो ठीक है परन्तु मैंने मंजिलें भी तो बहुत छोटी २ की हैं कदापि इस अवसर में वह यहां आ पहुंचा हो और फँस गया हो । परन्तु नहीं ! उसने तो मुझ से साफ इन्हीं शब्दों में कहा कि मुझे इस कैद से छुड़ाओ जहां मैं बहुत दिनों से पड़ा सड़ रहा हूं ! आश्चर्य—बड़ेही आश्चर्य की बात है अच्छा यदि मैं यह भी मान लूं कि उसने वायना ठीक उसी दिन छोड़ा है जिस दिन कि मैंने, और जहां लों शीघ्र बन पड़ा है वह इस स्थान पर आ पहुँचा है और वह यहां पहुंचने के साथही कैद कर दिया गया है तो भी तो वह पन्द्रह दिनों से ज्यादा का कैदी नहीं हो सकता या बीस दिन सही । और वह तो मुझ से अपनी कैद बहुत दिनों की बताता है । खेद की बात है कि बेचारे के हृदय पर यह सहसा आघात पहुंचा इससे उसका चित्त ठिकाने नहीं रहा ।

कठिनता से आटू ने अपने इस ध्यान को अन्त तक पहुंचाया होगा कि सहसा सामने का बड़ा फाटक लोहे के चूलों पर घूम कर खुल गया और उसमें से छः हथियारबन्द मनुष्य निकल आटू की ओर झपटते दिखाई पड़े ।

उन्होंनें आतेही युवक चित्रकार को पकड़ लिया, उसकी आखों पर पट्टी चढ़ा दी और तदुपरान्त उसे हाथों हाथ उठा के उस फाटक से होते हुये उसे खिची हुई दीवार के भीतर ले गये !

बड़ी देर तक तो वे एक समतर भूमि पर चले गये । उनके जूतों के शब्द और उसकी प्रतिध्वनि से आटू को बोध होता था कि वे एक महराबीदार और पक्के पथरीले स्थान पर से जा रहे हैं ।

थोड़ीही देर के उपरान्त अब वे लोग घुमावदार सीढ़ियों पर चढ़ने लगे—जिसे न जानें क्यों आटू गिनता जाता था, और जो गिनती में सतत्तर थीं—अब उन आदमियों ने जो इसे गोद में उठाये हुये थे उसी स्थान पर उतार दिया और इसे आपही आप चलने की आज्ञा दी; लाचार आटू को चलनाही पड़ा ।

अन्त उन सीढ़ियों की समाप्ति हुई, और अब आटू अपने साथियों सहित वहीं ठहर गया । यद्यपि इसकी आंखो पर पट्टी चढ़ी हुई थी—तौ भी उसने किसी प्रकार की आहट से जान लिया कि इसके लानेवालों में का एक व्यक्ति द्वार खोलने का उद्योग कर रहा है परन्तु वह नहीं खुलता; अन्त हताश होके उसने कहा—

"हम लोगों को कुछ मिनटों पर्यन्त यहां प्रतीक्षा करनी पड़ेगी ।"

कठिनता से अभी उस व्यक्ति ने वह उपरोक्त बात समाप्त की होगी कि सहसा अरगनबाजे का सुरीला शब्द पास की कोठरी से निकलता हुवा सुनाई दिया—उसके मीठे तथा मनोरञ्जक स्वर से सारा मकान गूञ्ज उठा । इसके कुछ मिनटों के उपरान्तही बाजे पर स्वर मिलाके बहुत से मनुष्य भगवान की प्रार्थना की गीत गाते सुन पड़े ।

यह राग कुछ ऐसा मीठा था और गानेवालों का कण्ठस्वर भी उसपर कुछ इतना मँजा हुवा था कि आटू को कुछ देर के लिये अपनी उस शोचनीय अवस्था का ध्यान नहीं रहा—वह अपनी आंखों की बँधी पट्टी को भी भूल गया—साथही वह उस खिड़की निकले हुये चेहरे को भी भूल गया जिसे देख के इसे बड़ाही आश्चर्य हुवा था ।

परन्तु जैसेही बाजे ने गीत की अन्तिम तान समाप्त की—और जैसेही उसपर के गानेवाले मनुष्यों ने अन्तिम तान से मकान को गूंजा के निस्तब्धता साधी वैसेही वह अपनी अचेत अवस्था से फिर चैतन्य हुवा । साथही किसी व्यक्ति ने उसके कन्धे पर हाथ रख के उसके कान में धीरे से कहा—

"अब हम लोगों को आगे बढ़ना चाहिये !"

इसी समय वही द्वार जिसके खोलने की व्यर्थ चेष्टा की जाती थी और जो भीतर से वन्द था, खुल गया। ये लोग उसके भीतर आटू पेनिल्ला को लिये हुये चले। यह कोठरी जिसमें से ये लोग इस समय जा रहे थे लम्बी चौड़ी जान पड़ती थी। जाते २ ये एक ऐसे स्थान से होके चले, जहां इसके साथियों की जिह्वा पर हठात भगवान की स्तुति निकल पड़ी जिससे आटू ने अनुमान किया कि निश्चय यह गिरजाघर है, और जिस स्थान पर उन मनुष्यों ने परमेश्वर की स्तुति की थी वह अवश्यही यही जगह रही होगी।

यह स्थान, जो यथार्थ में गिरजाघर रहा हो या न रहा हो समाप्त होगया अब वे लोग इसे पार करके एक खुली जगह पहुँचे। और यह आटू को ऐसे मालूम हुआ कि उस समय उसे शीतल वायु के झोंके शरीर में लग रहे थे—बरफीली वायु ठहर २ के इसके चेहरे पर झँकोरे ले रही थी।

यह झुंड आटू को लिये उस खुले और बड़े हाते को भी समाप्त करके एक दूसरे बंद फाटक के द्वार पर पहुंचा—यहां ये लोग फिर ठहरे और उन में का एक व्यक्ति फिर द्वार खोलने का उद्योग करने लगा परन्तु जब उससे न खुल सका तो खिझला के वह कहने लगा।

"भगवान उसका सत्यानाश करे! इस द्वार को भी उसने बंद कर दिया है।" यह सुनके आटू के और साथियों में से किसी ने उस द्वार खुलानेवाले से कहा।

"कारेल तुम शीघ्रता से चाबी के लिये बढ़ जाओ तब से हम लोग यहीं खड़े हैं।"

यह सुनके उनमें से तीसरे ने कहा—

कारेल तो उधर चाबी लेने जायगा जिसमें कम से कम दस मिनिट अवश्यही लगेंगें तब से यह बरफीली हवा हमलोगों का प्राण ले लेगी।

इसका चौथे ने यों उत्तर दिया—

"तो यारो वहीं क्यों नहीं चले चलते, माना मैंने कि वह स्थान भी ठंढा अवश्यही है परन्तु यहां से तो वहां बहुत कुछ आराम मिलेगा।

"अच्छा तो मैं तुम लोगों से वहीं मिलूंगा।"

यह कहता कारेल चाबी लेने के लिये चला गया।

अब यह झुंड सहसा दाहिनी ओर को मुडा कुछही देर में कुछ सीढ़ियों पर

चढ़ गया जिन पर एक मोटी तह बरफ की जमी हुई थीं और फिर वे लोग ठहर गये। आटू ने अब अनुमान किया कि वे सायवान के नीचे खड़े हैं क्योंकि गिरती हुई बरफ की तड़तड़ाहट सायबान पर मालूम होती थी; परन्तु ठंढी २ वायु अब भी उसी सन सनाहट के साथ चलके इन लोगों का हृदय ठिठुराये देती थी।

यहां खड़े होने पर इन लोगों में से एक ने कहा—

"क्यों भाई वहां कितने हैं?"

इसका उत्तर उनके एक साथी ने दिया—

"उनतालीस! कल तीसरे पहर को एक और मिला है, कल मैंने उसे जिनज्लिन के निकट पृथ्वी में से खोद के निकाला था।"

इसपर उस पहिले व्यक्ति ने फिर बड़ीही गंभीरता और धीमे स्वर से कहा—

"क्यों यारो तुम्हें निश्चय है कि यह बेचारे भूले भटकों की सहायता किया करते हैं और प्रायः पथिकों से मिला करते हैं?"

इस पर एक दूसरेही स्वर ने उत्तर दिया—

"इसमें कोई संदेह नहीं मित्रो—कि ये सुनसान स्थान पर पाये जाते हैं और यह भी ठीक है कि जब वे देखते हैं कि कोई पथिक किसी भारी गार में गिरा चाहता है या अन्य कोई भारी शारीरिक कष्ट उसे पहुँचा चाहता है तो वे तुरतन्ही प्रगट हो के उससे उसे अवगत कर देते हैं"

इस पर उस पहिले बोलनेवाले ने कहा—

"नारायण! हमारी रक्षा कीजियो यदि मैं किसी दिवस उन बेचारों की किसी एक आत्मा से मिला होता, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि मारे भय के अचेत होके गिर पड़ा होता।

इस पर एक कड़ी और मोटी आवाज वाले ने जो अब लों नहीं बोला था कहा, और यह पहिलाही अवसर था कि आटू ने उसका कंठस्वर सुना—

"तुम बहुत बड़े बेवकूफ हो—और तुम लोग भी इससे कुछ कम नहीं हो, व्यर्थ ऐसी बातों के कहने और फिर उनसे डरने से क्या लाभ–जिसे तुमने अबलों कभी नहीं देखा सिवाय इसके कि केवल लोगों से सुनते आये हो?"

इस पर उसके साथियों में से एक ने कहा—

"फ्रिज; कभी किसी बात का विश्वासही नहीं करता!"

फ्रिज़—ऐसी बात नहीं है मित्रो—हां मैं इन व्यर्थ की बातों पर सचमुचही विश्वास नहीं करता, उसका कारण यह है कि मैं इन पहाड़ों में लगभग साठ वर्ष की अवस्था से रहता आया हूं एक छोटे से बच्चे से यहीं युवा हुवा और यहीं मैं साठ वर्ष की अवस्था को पहुंचा—इस अवसर में कोई गार, कोई नाला, कोई गुफा, कोई चढ़ाई यहां की ऐसी नहीं है जिसे मैंने न देखा हो ! मैं उन सब से भली प्रकार विज्ञ हूं और मैंने ऐसी २ घटनायें तो सैकड़ोंही देखी हैं जिनके विषय में तुमने पहले कहा था परन्तु कोई आत्मा वा कोई भूत पिशाच तुम्हारे कथनानुसार मुझे कभी भी न दिखाई पड़ा । अस्तु—अब इन बातों का समय नहीं है वह देखो कारेल कुंजी लेके आही पहुँचा; अब हम लोगों को आगे बढ़ना चाहिये ।

इनकी इन बातों से आटू पेनिल्ला की उत्कंठा बहुतही बढ़ गई, उसका हृदय भी उन भयानक बातों के सुनने से कुछ कंपित हुवा और उसकी ऐसी इच्छा हुई कि आखों की पट्टी हटा के अपने चारों ओर के दृश्य तथा उन बोलनेवालों के चेहरे को देखैं परन्तु जैसेही उसने इस विचार को पूरा करने के लिये अपना हाथ उठाया वैसेही किसी कड़े और बलिष्ट हाथ ने एक कड़े झटके से इसे निज इच्छा को पूरी करने से रोक दिया और इसका हाथ थम गया ।

यह झुंड अब यहां से और आगे बढ़ा और एक बड़े फाटक के निकट पहुँचा जो अपने चूलों पर जोर से घुमाया गया और इस झुंड ने उसमें प्रवेश किया । इसके भीतर जातेही द्वार पुनः पूर्ववत् बंद कर दिया गया ।

अब आटू को जान पड़ा कि वे लोग एकदूसरेही मकान में जा रहे हैं जिसमें बरफ के झोंके बिलकुलही न आते थे और साथही वहां गर्म्म वायु का झँकोरा भी कम लगता था ।

इसके उपरान्त यह झुंड कुछ चौड़ी सीढ़ियों पर से चढ़ा और फिर एक द्वार के सामने जा खड़ा हुवा जो उन आदमियों में के एक व्यक्ति द्वारा खोला गया । अब उसी फ्रिज़ ने जिसका कंठस्वर बड़ाही मोटा था आटू का हाथ पकड़ लिया और कहा—

"मेरे साथ आओ युवक ! और तुम दोस्तो खा पीके ताजेदम हो जाओ परन्तु देखो आध घंटे में तुम्हें तैयार होना चाहिये ! "

इतना कह फ्रिज़ पेनिल्ला को लेके आगे बढ़ा—इनके पीछे वह द्वार बंद किया गया जिसके भीतर ये अभी दाखिल हुये थे । पीछे छूटे साथियों के पैरों का शब्द

आटू को दूर होता मालूम होता था और कुछही देर में बिलकुलही न सुनाई दिया। अब आटू के शरीर में भी एक विशेष प्रकार की गरमी मालूम होने लगी। इतने में इसके नेत्रों की पट्टी भी सहसा खोल दी गई और अब इसने अपने को एक अत्यन्त सजे सजाये कमरे में पाया जिसमें एक ओर दीवार के बीचों बीच एक अँगीठी में आग सुलग रही थी और कोठरी के बीचों बीच एक बहुत बड़े टेबुल पर, जिस पर एक बहुतही उत्तम रेशमी झूल पड़ा हुवा था, भिन्न २ प्रकार के उत्तमोत्तम भोजन की समिग्रियां चुनी हुई थीं।

इसके निकटही एक बुड्ढा मनुष्य, जिसके बाल बिलकुही सुफेद हो गये थे और जो अपने पहिनावे से आधा पहाडी और आधा कोई जंगी मनुष्य बोध होता था, खड़ा था। इसी बुड्ढे का नाम फ्रिज़ था।

बुड्ढे ने जब आटू पेनिल्ला को अपने चारों ओर की वस्तुओं को बड़ेही आश्चर्य से चकपका २ के देखते पाया तो वह बहुतही धीरे से मुस्कराया और फिर अपनी मोटी और खर्राटेदार अवाज़ में यों कहने लगा।

"मैं अनुमान करता हूं युवक मनुष्य! कि तुम इस समय यह सोच रहे होगे कि तुम्हें यहां लों कोई दैवी वा पैशाचिक बल खींच लाया है—परन्तु नहीं—मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि तुम सामान्य रीति से लाये गये हो—और यदि तुम स्वयंही सोचोगे तो कदाच तुम्हें इसका विश्वास हो जायगा"।

आटू—मैं यहां निस्संदेह आल्प्स पर्वत की बरफ से ढँकी हुई चोटियों के बीच में हूं (टेबुल की ओर देख के) परन्तु साथही मुझे गरम इटली देश के ये फल और ये उसी गरम देश के ताजे २ फूल आश्चर्यसागर में डबोये देते हैं।

बुड्ढा—(धीमे स्वर और बड़ीही लापरवाही से) अतः यही तुम्हें आश्चर्य में डाल रहा है! परन्तु बैठ जाओ और कुछ खा पी तो लो, प्रातःकाल के भ्रमण और थकावट ने तुम में बहुत कुछ भूख उत्पन्न कर दी होगी।

इतना कहते २ फ्रिज़ टेबुल पर आ बैठा और भोजनों से भरी हुई रकाबियों को अपने सामने खींचकर उसने खाने का लग्गा लगा दिया—उसकी देखा देखी आटू भी टेबुल के सामने आ बैठा और खाने लगा विशेषतः उसने इस बात से निश्चिन्त होके भोजन करना प्रारम्भ किया कि यह हमारे पकड़नेवाले हमें कोई शारीरिक कष्ट नहीं पहुंचायेंगे।

खाते २ उसने कोठरी की विशेष अवस्था से अवगत होने के लिये एक बेर कोठरी के चारों ओर जो दृष्टि दौड़ाई तो जान पड़ा कि कोठरी में कोई खिड़की वा सूराख नहीं था। परन्तु हां कोठरी में प्रकाश आने के लिये उस के बीचों बीच छत में एक बहुत बड़ा सूराख जिससे आकाश दिखाई पड़ता था एक प्राकृतिक लम्प की भांति बनाया गया था। इस प्रकार इन सब वस्तुओं को देख के आटू यह न निश्चय कर सका कि वह किस प्रकार के स्थान में वा कहां बैठा हुवा है।

बुड्ढा—(खा पी के अपना छुरी और कांटा टेबुल पर रख के) युवक व्यक्ति! तुम इन पहाड़ों में कुछ नये तो आए नहीं हो। भला कह सकते हो कि तुम इस समय किस स्थान में हो ?।

आटू—नये न आने की भी एकही कही—अजी मैं पूरा अजनबी इन जूलियन आल्प्स के पहाड़ों में हूं; इतः पूर्व मैंने कभी भी इस बरफीली चोटी पर वा आल्प्स पहाड़ीही पर पैर नहीं रक्खा, और मैं स्वयंही इस विचार में पड़ाहुवा हूं कि इस समय में किस स्थान में हूं।

फ्रिज़—(आटू पर दृष्टि गड़ा के) तो फिर भला तुम पृथ्वी के भीतर के गार में कैसे आये, जिसमें एक पहाड़ी मनुष्य भी आने में भय खाता है ?

आटू—(वीरता से) मुझे अचांचक वह रास्ता घूमते २ मिल गया था—बस उसे देख मुझे उसके भीतर की अवस्था जानने की कुछ ऐसी प्रबल इच्छा हुई—"

फ्रिज़—(बाधा देके) केवल इच्छाही और उसके साथही तुम में वहीं साहस भी नहीं हो गया ?

आटू—हां—इसे तुम यों भी समझ सकते हो (आटू ने उस बुड्ढे की बात से कुछ लज्जित होके धीमे स्वर में कहा) किसी प्रकार से हो मैंने उस गुफा को भली भांति देखने का विचार चित्त में स्थिर कर लिया, क्योंकि मैं घूमने घामने के लिये निकलाही था और मेरी ऐसीही इच्छा थी कि जूलियेन आल्प्स के कुल गुप्त स्थानों को देख डालूँ। हां यदि मेरे उस स्थान में आने से तुम्हारी कोई हानि हुई हो तो मैं सच्चे हृदय से तुमसे क्षमा का प्रार्थी हूं या और जिस प्रकार आप प्रसन्न हों वैसाही मैं उस अपराध के बदले में करने तथा कहने को प्रस्तुत हूं।

फ्रिज़—तुम बड़ीही सफाई और चित्त की स्वच्छता से बात करते हो युवक व्यक्ति! और मैं आशा करता हूं कि कुछही दिवसों में एक बहुत अच्छे पहाड़ी बन जा-

ओगे। बस एक आधही महीने में तुम हमलोगों के भी कान मरोड़ोगे, अस्तु तो इन सब बातों को अब जाने दो। मैं तुमसे एक विशेष बात पूछा चाहता हूं, और वह यह है कि तुमने जब उस खिड़की में से उस व्यक्ति का सिर देखा था तो एक आश्चर्ययुक्त चीख क्यों मारी थी?

आटू–मैं उस चेहरे को इतः पूर्व देख चुका था।

बुड्ढा—तो क्या तुम उस व्यक्ति से परिचित भी हो?

आटू—नहीं, मैंने अपने जीवन भर में एक बेर भी उससे बात चीत नहीं की। परन्तु मैंने उसे प्रायः वायना में देखा है। इसी कारण उसकी शकल मेरी दृष्टि पर चढ़ गई है।

जैसेही आटू ने यह कहा वैसेही बुड्ढे फ्रिज़ के चेहरे से भारी शोच बोध होने लगा। कई मिनिट पर्यन्त वह चुपचाप बैठा किसी गूढ़ विषय पर विचार करता जान पड़ा। अन्त उसने सिर उठाया और कहा—

"तुम निश्चिन्त रहो-युवक—तुम्हें किसी प्रकार की क्षति न पहुँचने पाएगी। परन्तु मैं तुम्हें इस प्रकार स्वतंत्रता से जाने भी न दूंगा। हांयदि तुम इस बात की प्रतिज्ञा करो कि तुम किसी से उस मनुष्य के देखने की चर्चा न करोगे तो मैं भलेही तुम्हें चले जाने दूंगा।

आटू—यह कैसे हो सकता है? क्या मुझसे उसने उस भयानक कैदखाने से निकालने की प्रार्थना नहीं की? क्या वह मनुष्य नहीं है; इससे भी विशेष—क्या वह हमारा एक संबंधी नहीं है?

फ्रिज़—(आश्चर्य से) संबंधी? युवक!—तुम्हारा नाम क्या है?

आटू—पेनिल्ला!

फ्रिज़—(चिल्ला के) ऐं! अब मैं तुम्हें भली भाँति पहिचान गया।

इसके उपरान्त वह बृद्ध अपने स्थान से उठा और कोठरी में इधर उधर टहलने लगा।

फ्रिज़—सुनो! हमने तुम्हारे लिये एक विशेष बात ठीक की है। यदि तुम उसे स्वीकार करोगे तो तुम्हारा एक भी शब्द हमारे चित्त में संतोष डाल देगा क्योंकि मैं तुम्हारी सचाई से भली प्रकार विज्ञ हूं!

आटू—अच्छा तुम कहो तो सही!

फ्रिज़—देखो ! तुम थोड़ी ही देर में यहां से छोड़ दिये जाओगे और अब तुम मुझ से प्रतिज्ञा करो कि छूटतेही तुम उस व्यक्ति के, जिसने तुम से खिड़की से सिर निकाल के दयाभिक्षा की थी, छुड़ाने का उद्योग न करके सीधे वायना की ओर जाओगे और यदि वहां पहुंच के उस मनुष्य को स्वतंत्रावस्था में स्वतंत्रता की पूरी प्रसन्नता उठाते जर्मनी देश की राजधानी वायना में पाओ तो तुम फिर कदापि इस ओर आने तथा इस मकान में घुसने का उद्योग न करोगे इसपर मैं तुम्हें पूरी २ स्वतंत्रता दे सकता हूं, और साथही यह प्रतिज्ञा भी करा लेना आवश्यक समझता हूं कि तुम इसके उपरान्त किसी से भी इस बारे में एक शब्द न कहोगे। कहो तुम्हें यह स्वीकार है ?

आट्रू - नहीं । मैं किसी बात की प्रतिज्ञा नहीं किया चाहता (आट्रू ने यह बिना किसी हिचकिचाहट के कहा और फिर उसी दृढ़ता से बोला) यदि वह यहां से छुटकारा पा गया होगा वा पायेगा तो यह निश्चयही है कि वह स्वयमही तुम लोगों से बुरी तौर बदला लेने पर उद्यत हो जायगा और तुम्हारे इस अपराध का पूरे २ तौर से दंड देगा, क्योंकि तुमने व्यर्थही उस बेचारे को यहां फँसा लिया है । वायना में मैं जाऊँहीगा और यदि उसे वहां स्वतंत्रावस्था में पाऊँगा तो फिर मुझे कोई ऐसी गरज नहीं पड़ी है कि मैं व्यर्थ तुम लोगों के पीछे पड़ूं। परन्तु जबलों कि उसे मैं वायना में स्वतंत्र न देख लूंगा, तुम से किसी प्रकार की प्रतिज्ञा न करूंगा। साथही तुमसे मैं यह भी कहता हूं कि जितना कष्ट तुम मुझे दोगे वा जैसा बरताव तुम इस समय मेरे साथ करोगे उसके दूने तो क्या - चौगुने के लिये तुम्हें अपने को तयार कर रखना चाहिये ।

बुड्ढा—धन्य है तेरे साहस को युवक ! जो यों निधड़क वैरियों में बातें करता है। अच्छा आओ अब हमें एक दूसरे के स्वास्थ्य का प्याला पीना चाहिये।

इतना कहके फ्रिज़ ने बहुमूल्य और सुर्खा सुर्ख शराब के दो प्याले भरे और उस प्रातिज्ञा का स्मरण करके जो अभी उन दोनों में हुई थी—दोनों ने प्याले खाली कर दिये ।

परन्तु जैसेही आट्रू ने प्याला खाली करके टेबुल पर रक्खा वैसेही वह अपनी कुरसी की पीठ से टिक गया और उस पर एक विशेष प्रकार का नशा जान पड़ने लगा। कुछही देर में वह अचेत हो गया ।

जब उस्की निद्रा टूटी—वह बेहोशी से जागा—तो उसने सूर्यदेव को आकाश में तीक्ष्णता से चमकता पाया और अपने चारों ओर एक गरम देश देखा ।

वह इस समय एक बड़े लम्बे चौड़े मैदान में पड़ा हुवा था जिसमें हरी २ घासों का मखमली फर्श बिछा जान पड़ता था और जिसमें अनकानेक प्रकार के सुन्दर २ पुष्प खिले हुये थे ।

सूर्य की ओर जो उसने दृष्टि उठाई तो उसकी उँचाई से अनुमान किया कि इस समय ठीक दो पहर है ।

आटू शीघ्रता से अपने स्थान से उठा और अपनी बँटी हुई स्मरणशक्ति को एकत्र करने लगा—अब एक एक करके उसे वे सब गुप्त रहस्य याद पड़ने लगे—जिनसे अभी कुछ देर हुये कि वह पृथक् हुवा था ।

परन्तु इस समय वह कहां था ?

पर्वत जूलियन-आल्प्स इस समय उसे बहुत अन्तर पर दिखाई पड़ता था—और जब उसने सूर्यदेव से दिशा मालूम की तो जान पड़ा कि पहिले वह पहाड़ कारनिवाल से उत्तर की ओर दिखाई पड़ता था परन्तु अब वह ठीक दाक्षिण की ओर था ।

इसके अतिरिक्त वे हरे २ खेत—ढली हुई चांदी के से चमकते हुये सोते, सुन्दर लहलहाते हुये पत्तों के बीच की झोपड़ियां—और सजी सजाई वाटिकायें जो बड़ेही अन्तर पर से दिखाई पड़तीं थीं उनसे उसे विश्वास हो गया कि अब वह कारनिवाल के ठंढे देश में नहीं था ।

"तब वह कहां था ? क्या वह एक बहुत बड़ा और आश्चर्य युक्त स्वप्न देख के जागा था ? या कुछ पिशाचों के चंगुल में फँस गया था ?

यह कोई स्वप्न नहीं था—आटू के हृदय में पिछले बयान किये हुये वृत्तान्त ऐसी सफाई से खुदे हुये थे कि उसे किसी प्रकार का धोखा हो नहीं सकता था । वह अपनी स्मरणशक्ति पर बहुत कुछ भरोसा रखता था ।

जब वह इन्हीं सब ध्यानों में डूबा हुवा था तो उसने एक किसान को अपनी ओर बढ़ते पाया । परन्तु जब वह व्यक्ति और निकट पहुँचा तो आटू ने उसके विचित्र पहिनावे से निश्चय कर लिया कि यह कारनिवाल के रहनेवालों में से कदापि नहीं है ।

"योग्य मित्र ! यह तो बताओ कि मैं कहां हूं ?"

आटू ने यह प्रश्न तो किया परन्तु हृदय में बड़ाही लज्जित था कि कदाचित् यह व्यक्ति मुझे पागल समझेगा ।

और यथार्थ में किसान भी इस अनूठे प्रश्न से बहुत चकराया उसने एक बार नेत्र फाड़ के युवक को देखा और फिर इटालियन भाषा में उत्तर दिया ।

"तुम बेनविनिउटो किसान के खेत में हो—और तुह्मारी सेवा में जो यह व्यक्ति खड़ा है वह बेनविनिउटो किसान है ।"

इस पर आटू ने भी उसी भाषा में उत्तर दिया क्योंकि यह उसकी मातृ भाषा थीः—

"परन्तु यह कौन देश है ?—किसके अधीन है ?—इसका जिला कौन है ?"

"कौन जिला !—कौन देश !"

आटू की बात दोहराता हुआ किसान कुछ पीछे हट गया क्योंकि उसके प्रश्न से उसने अनुमान किया कि यह निश्चय कोई पगला है और फिर कुछ दूर पर खड़ा हो के कहने लगा—

"क्यों क्या तुम्हें विश्वास नहीं होता कि तुम इटली में हो ?—तुम अपने को कहां बैठा सोच रहे हो ?—हा !—प्यारे युवक ! मुझे तुम्हारी अवस्था पर खेद होता है ।

इतना कहके वह किसान जितना शीघ्र उससे बन पड़ा, आटू पेनिल्ला को आश्चर्य और दुःखसागर में गोता खाता छोड़ के वहां से भाग गया ।
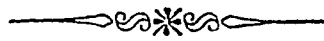
चौंतीसवां बयान ।

इटली का किसान ।

आटू, अब उसी हरे भरे, फूलों से ढँके, मखमली फर्श पर बैठ गया और बीती बातों का विचार करने लगा ।

उसने और पिछली बातों का तो तनिक २ सा उस समय पर्यन्त का पता लगा लिया जबलों कि उसने फ्रिज़ के हाथ से एक प्याला शराब का लेके पीया था, परन्तु इसके उपरान्त वह यह विचारने में बिलकुलही असमर्थ था कि कितना समय उस प्याले के पीने के उपरान्त व्यतीत हुवा है ।

इस समय उसे कुछ भी भूख न जान पड़ती थी इस कारण उसने अनुमान किया कि जूलियन आल्प्स की यह घटना आजही दिन को संघटित हुई है ।

अब उसने अपनी जेब में हाथ डाला तो जान पड़ा कि उसके रुपये और कागज सभी उसमें हैं एक तिनका भी उस में से निकाला नहीं गया था।

इधर से, एक प्रकार निश्चिन्त होके वह उठा—और एक झोपड़ी की ओर चला जो उसे कुछ अंतर पर दिखाई देती थी।

यह झोपड़ी बिलकुल पहाड़ की तराई में थी और इसी तरफ़ वह किसान भाग के गया था।

झोपडी के द्वार पर जब यह पहुँचा तो उसने उसकी खिड़की में एक बड़ीही स्वरूपवती लड़की को बैठे चरखा कातते पाया। आटू ने वहां पहुँचने पर कुछ देर विश्राम करने की आज्ञा उससे मांगी जिस पर बालिका ने बड़ीही प्रसन्नता से उसे भीतर बुलाया और जो कुछ खाने पीने की वस्तु मकान में उपस्थित थी वह उसके सामने ला रक्खी।

आटू ने भोजन करती समय उस सुन्दर बालिका से बात चीत करनी प्रारंभ की। और एकही दो प्रश्नों में उसने मालूम कर लिया कि आज कौन तारीख है और फिर कल की तारीख से मिलान करके उसे यह मालूम होगया कि वह घटना आज की नहीं वरन कल की थी।

इसके उपरान्त आटू कुछ देर तक चुप रहा और फिर बोला—

"भला मैं कितने दिवसों में इन पहाड़ों को समाप्त करके कारनिवाल के सूबे में पहुंच सक्ता हूं"?

लड़की—तीन दिवसों में भली प्रकार से—यद्यपि अन्तर तो कुछ इतना बहुत नहीं है परन्तु पहाड़ के चक्कर खाते हुये जाने से इतने दिवस लग जायेंगे।

"तीन दिवस!" इतना कहतेही आटू ने अपने को रोक लिया क्योंकि उसे इतना कहने का साहस न हुवा कि वह उस लड़की से कह दे कि मैं कारनिवाल से इटली एकही दिन में पहुंचा हूं।

आटू—क्या तुम्हें मालूम है कि कोई रास्ता—वा कोई छोटा फेर ऐसा नहीं है कि जिस्से मैं थोड़ेही समय में वहां तक पहुँच सकूं?

लड़की—मैं अपने उत्पत्तिकाल से अबलों यहीं रहती आई हूं परन्तु मुझे तो उस रास्ते के अतिरिक्त जिसका हाल मैंने आप से कहा और कोई भी नहीं मालूम और न मैंने कभी सुनाही। परन्तु मेरे पिता थोड़ीही देर में भोजन करने के नि-

मित्त यहां आयेंगे उनसे आप पूछें—कदाचित् वह इस विषय में मुझ से कुछ वि-शेष पता दे सकें ।

इतनी बातें होही रही थीं कि सहसा एक अधेड़ व्यक्ति द्वार से प्रवेश करता दिखाई पड़ा ।

लड़की—देखिये यही मेरे पिता हैं महाशय ! ये पहाड़ी रास्ते को प्रसन्नतापूर्वक आपको बता सकेंगे ।

किसान—(आटू की ओर देख के) हां मैं आपको प्रसन्नतापूर्वक बताऊँगा, पूछिये क्या पूछते हैं ?

इस पर आटू ने उसी प्रश्न को दोहरा दिया जिसे अभी उसकी पुत्री से वह कह चुका था ।

यह सुनतेही एक क्षण के लिये किसान के चेहरे से भय, तरद्दुद और घबराहट के चिन्ह दिखाई पड़ने लगे और फिर उसने अपनी काली २ आखों को युवक चित्र-कार पर गड़ा के कहा—

"क्यों महाशय! इस प्रश्न से आपका कोई विशेष तात्पर्य है ? वा एक सामान्य पथिक की भांति अपना पथ थोड़ेही में समाप्त करने के लिये आप यह प्रश्न कर रहे हैं ?"

पेनिल्ला ने जो किसान की बातों में एक पेच देखा तो यों कहा—

"मैं अब तुम से साफही साफ कहे देता हूं। यथार्थ बात यह है कि कल प्रातःकाल मैं कारनीला में था । मैं प्रातःकालही से पहाड़ों की सैर को निकला और लगभग दो घंटे पर्यन्त पहाड़ की उन बरफीली चोटियों पर घूमता रहा, घूमते घूमते मैं एक ऐसे भायनक पथ पर पहुंचा कि जहां प्रकृति के न रुकनेवाले कष्टों को निवारण करके मनुष्य ने अपनी बुद्धिमानी से एक प्रकार का रास्ता एक भया-नक खाड़ी में से बनाया था जिसके अन्त में एक लम्बी और ऊँची दीवार खिंची थी । उसी दीवार में से एक द्वार खुला और कुछ हथियारबन्द मनुष्यों ने उस में से बहिर्गत होके मुझे पकड़ लिया । मेरी आखों पर पट्टियाँ चढ़ा दीं और कई कमरों से होते हुये एक बड़े कमरे में लाके मेरी आखों की पट्टी खोल दी । उस समय मैंने अपने को एक सुन्दर कमरे में पाया और मेरे निकटही एक बुड्ढा भी खड़ा था जिसका नाम मैंने उसके साथियों से फ्रिज़ सुना था । हमारे और फ्रिज़ में कुछ देर तक बात

चीत होती रही जिसे कहने की इस समय कोई आवश्यकता नहीं है। इसके उपरान्त मैं ने एक प्याला शराब का पीया जिसके पीतेही मैं बेहोश हो गया और जब मैं होश में आया जिसे एक घण्टा होता है तो मैंने अपने को इटली में तुम्हारे इस मकान से कुछही दूर पर एक हरे मैदान में पड़ा पाया।

आटू ने इतना कहके अपनी बात समाप्त की और व्यग्रता से किसान का उत्तर सुनने के लिये उत्सुक हुआ परन्तु कोई उत्तर उधर से शीघ्रता से न दिया गया, किसान ने यह सुनके अपना सिर अपने हाथ पर झुका लिया और एक गहिरे सोच में पड़ गया।

आटू—क्या आप मेरे इस वृत्तान्त को बड़ाही आश्चर्ययुक्त समझते हैं वा इसकी सत्यता में आप को कुछ सन्देह है ?। परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मुझे इस समय पूरा २ ज्ञान है जैसा कि मेरी जीवनावस्था में रहता था, और साथही मैं आप से यह भी कहता हूं कि मुझे आप को धोखा देने से कोई लाभ नहीं। यह सुनके किसान ने अपना सिर उठाया और फिर आटू की ओर देखके कहने लगा—

"नहीं महाशय! मुझे आपकी एक २ बातें न तो विचित्रही जान पड़ती हैं और न उनकी सत्यता में तनिक भी संदेह है!"

यह सुनके आटू बड़ेही आश्चर्य्य में आया और बोला—

"तो क्या आप इस विषय को भली प्रकार जानते हैं?"

किसान—हां महाशय! मैं भली प्रकार इस्से विज्ञ हूं! क्योंकि मैं भी एक बेर उसी पथ पर भ्रमण कर चुका हूं जिस पर कि आप गये थे!

यह सुनके उसकी सुन्दर बेटी बड़ेही आश्चर्य से चिल्ला उठी—

"तुम ? पिता तुम ?

किसान—हां प्यारी पुत्री मैं! परन्तु मैं ने इस गुप्त रहस्य का एक अक्षर भी आज पर्यन्त किसी से नहीं कहा। मेरे पकड़नेवालों ने कड़ी धमकियां दे के मुझे इस बात को गुप्तही रखने पर विवश किया था और अब आज किसी कारण से मैं ने इतना सब कहा—और जब मैं इतना कही तो मेरी इच्छा है कि कुल गुप्त रहस्य से मैं आपको अवगत कर दूं।

इतना सुनके सुन्दरी आइना ने अपनी कुरसी खिसका के अपने पिता के निकट कर ली, आटू भी ध्यानपूर्वक उसकी बातों को सुनने लगा।

किसान—आज छः वर्ष का समय बीतता है—और तुम्हें स्मरण भी होगा बाइनां ! कि जब मैं तुम्हारी बेचारी माता की मृत्यु पर कारनीला पर बुलाया गया था। मेरी स्त्री महाशय ! (इतना कहके वह आटू की ओर फिरा) जरमनी इलाके के रहनेवाले एक सबंधी के यहां गई हुई थी और वहीं उसे एक बहुतही कड़ी बीमारी हो गई थी, मैं ठीक उसी समय अपने रिश्तेदार के यहां पहुंचा जब मेरी स्त्री के नेत्र बन्द हो रहे थे। उसके गाड़ने के उपरान्त मैं अकेला अपने मकान की ओर चला क्योंकि मुझे इस्का खटका लगा हुवा था कि मेरी प्यारी पुत्री बाइना जितना मुझे विलंब होगा उतनाही विशेष घबड़ायेगी। वह एक बड़ीही मनोहर सुबह थी कि जब मैंने अपना भ्रमण प्रारंभ किया परन्तु मेरा हृदय उस अचानचक की घटना से बड़ाही दुखी हो रहा था इस कारण मैं अपने सीधे पथ पर न चल सका वरन राह छोड़ के एक दूसरीही ओर भटक गया। अन्त मैंने एक रास्ता पकड़ लिया जिसने मुझे एक बहुत बड़े गार के मुंह पर ला खड़ा किया मुझे इस बात का बड़ाही आश्चर्य हुवा कि इतना चौड़ा रास्ता एकबारगी किसी बस्ती मे न जाके ऐसे भयानक गार के मुंह पर क्यों आके समाप्त हो गया। यह बिचारें इधर उधर देखने लगा और अन्त मुझे वही ढालुवां और सकरा रास्ता दिखाई पड़ा जिसका वृत्तान्त अभी आप ने कह सुनाया है। मेरी लगभग सभी उम्र इटली के बड़े २ पहाड़ों तथा भयानक गारों में उतरते और चलते बीती थी इस कारण मुझे उस जगह के उतरने तथा उस ढालुवें रास्ते पर चलने में तनिक भी भय न जान पड़ा ! उतरते २ अब मैं उसी खुले रास्ते पर जहां आप पहुंचे थे पहुंचा, तो फिर उसी रास्ते पर चलते २ अन्त उसी लम्बी दीवार के नीचे जा खड़ा हुआ जो चट्टान के एक सिरे से दूसरे सिरे पर्यन्त बराबर खिंची हुई थी। अब मैं वहां खड़ा होके सोचने लगा कि क्या करूं पीछे फिर जाऊँ वा द्वार खटखटाऊँ इतनेहीं में फाटक की खिड़की एक बड़े धड़ाके से खुली और उसमें से एक पीला परन्तु बड़ाही स्वरूपवान चेहरा दिखाई दिया।

आटू। (चिल्ला के) अरे !

किसान। और उसी चेहरे ने प्रार्थना की भांति मुझ से कहा "चाहे तुम कोई क्यों न हो दयालु अजनबी ! मैं तुम से भगवान का वास्ता दे के मिन्नत करता हूं कि मुझे इस भयानक स्थान से, जहां मैं बरसों से पड़ा हूं छुटकारा दो—तुम केवल लेविस आबरनट के पास जाके इतना कह दो कि बेरेन जेरनिन—"

आदू—(बाधा देके और चिल्ला के) बेरेन जेरनिन !—अरे वह बेरेन जेरनिन था ! और इस घटना को बीते आज से छ वर्ष होते हैं ?

किसान—(शान्तरूप से) हां छः वर्ष व्यतीत हुये होंगे—इसमें मैं किसी प्रकार की भूल नहीं करता हूं।

आद—अच्छा तो आगे कहिये ! परन्तु यह बड़ीही आश्चर्ययुक्त बात है—बड़ीही कौतूहलवर्धक !

किसान। वह कैदी—क्योंकि उसकी अवस्था से मैंने उसे कैदीही अनुमान किया—हां तो वह कैदी अभी यह बात कही रहा था कि सहसा किसी ने पीछे से पकड़ के जबरदस्ती उसे हटा लिया, और फिर इसके उपरान्त द्वार खुला और बहुत से हथियारबन्द मनुष्य—जैसा कि आप ने अभी कहा था निकल पड़े और मेरी ओर दौड़े। ततक्षण मैं उनके हाथ में पड़ गया मेरी आखों में पट्टी चढ़ा दी गई और वे मुझे उसी मकान में ले गये—मैं उसे मकान इसलिये कहता हूं कि पैरों की आहट से मुझे वह ऐसाही बोध होता था। इसी प्रकार मैं बहुत से मकानों के उपरान्त अपने पकड़ने वालों के साथ ठहराया गया और फिर उस कोठरी में पहुंचाया गया जो बड़ीही सजी सजाई थी और साथही उसकी दीवारों में कोई खिड़की इत्यादि न थी। और— "

आदू (चिल्ला के) और उस कोठरी की छत में केवल एक गोल छेद था जिससे प्रकाश आ रहा था। क्यों यही है न ? बस ठीक उसी कोठरी में मैं भी पहुँचाया गया था।

किसान—परन्तु तुम्हारी भांति मेरी आखों की पट्टी तुरन्तही न उतार ली गई। बरन इस बारे में वे लोग आपस में सलाह करने लगे कि मेरे साथ क्या करना उचित है। उन में से बहुतों की तो ऐसी इच्छा थी कि मुझे मारही डालें क्योंकि मुर्दा मनुष्य कोई बात नहीं कहता दूसरों ने कहा यदि यह जन्म पर्यंत के निमित्त यहां बंदीवत् रक्खा जाय तो भी अच्छा है। परन्तु बुड्ढे फ्रिज़ ने—जिसका नाम अभी आपने लिया—हमारे लिये एक हितकर राय दी—और उसका दबाव उस छोटे झुंड पर एक प्रकार से कुछ विशेष जान पड़ता था इस कारण जो कुछ उसने कहा उसे सभी ने स्वीकार कर लिया और इसके उपरान्त मेरे नेत्रों की पट्टी खोलदी गई। मुझे किसी प्रकार की भूख प्यास न लगी थी। अपने बारे में मैं उन लोगों

के मुह से भांति २ की भयानक बातें सुन के बड़ाही भयभीत हो रहा था। इतने ही में फ्रिज़ ने मुझे अपनी ओर दिखा के कहा कि देखो मैं तुम्हें इस मकान से बाहर तो किये देता हूं परन्तु यदि तुमने यहां का तनिक भी जिक्र किसी से किया तो यह समझ रखना कि फिर तुम से बेतौर बदला लिया जायगा। फ्रिज़ की ज-बानी बातें मुझे अबलों स्मरण हैं उसने कहा था "तुम नहीं जानते कि इस समय तुम किसके वश में हो; परन्तु मैं तुम्हें विश्वास दिलाये देता हूं कि भाग्य ने तुम्हें ऐसें मनुष्यों के हाथों में कर दिया है कि यदि तुम उन्हें बरबाद करने का उद्योग करोगे तो तुम याद रक्खो कि यदि एक पूरी फौज भी तुम्हारी रक्षा कर रही होगी तबभी तुम निश्चय मारडाले जाओगे इससे तुम्हें उचित है कि अपने प्राणों पर दया करके इस रहस्य को किसी से कहने का उद्योग न करना॥ इस के उपरान्त उनके साथियों में से एक ने मुझे शराब पीने पर विवश किया शराब पीतेही मैं अचेत होगया और जब मैं दूसरे दिवस दोपहर के समय चैतन्य हुवा तो मैं ने देखा कि मैं अपनी झोपडी से लग भग सौ गज के अंतर पर पड़ा हुआ हूं।

आटू—(उस्की कहानी सुन और बड़े आश्चर्य में आके)। हमलोगों की घटना एकही प्रकार की है परन्तु अब मैं तुम से यह भी बताये देता हूं कि मैंने भी एक मनुष्य का पीला चेहरा फाटक की खिड़की में से झांकते और दया प्रार्थना करते देखा था। परन्तु इस कहानी की सब से विचित्र घटना तो यह है कि मैंने उस व्यक्ति को पहचान लिया वह निश्चय बेरेन जेरनिन है।

किसान—तो क्या वह—जब से मैंने उसे देखा तब से अबलों बंदीही में है?

आटू—नहीं इसके बीच में वह कुछ वर्षों पर्यंत वायना में रहा। तात्पर्य यह कि वह मेरी एक मात्र बहिन का स्वामी है।

किसान—तो अभागा—मानो दोबारा उस बंदीखाने की आपत्तियों तथा कष्टों के सहन करने के निमित्त यहां लाया गया।

आटू—वास्तव में वह अभागाही है—परन्तु बात समझ में नहीं आती कि फिर वह उसी स्थान में क्यों आया जहां इतने दिवसों पर्यन्त बंदी रह चुका था? और आश्चर्य की बात है कि जब वह वहां से छूटा तो अपनी स्वतंत्रावस्था में उसने अपने व्यर्थ कैद रखने वालों से बदले का पूरा प्रबंध क्यों न किया?

किसान—सुनिये महाशय । हमारी जान में कोई बड़ाही गुप्त रहस्य इन बातों में भरा हुवा है परन्तु वह धमकियां जो मुझे दी गई थीं और जिसके भय के मारे आजलों मेरी जिह्वा से एक अक्षर भी नहीं निकला—"

आदू (बाधा देके) नहीं महाशय; बेरेन धमकियों से डरनेवाला मनुष्य नहीं है, इसके अतिरिक्त जब वह वायना में पलट के आया तो उसने अपनी पिछली धन सम्पति सब गवरनमेन्ट से लेली । इससे आप अनुमान कर सक्ते हैं कि एक ऐसा धनाढ्य व्यक्ति सरलता से एक बहुत बड़ी फौज एकत्रित करके इन आल्प्स निवासी पहाड़ी डाकुओं पर जिन्होंने उसे इतने दिनों तक बंदी कर रक्खा था चढ़ाई कर सक्ता था, फिर उन्हें एक कड़ी सजा भी उस अपराध के बदले में दे सक्ता था । मैंने सुना है कि बेरेन बारह वा तेरह वर्ष पर्यंत वायना से बाहर रहा परन्तु लौटने पर; जहांलों मुझे स्मरण है उसने कभी भी अपने इस बन्दी रहने का किसी से जिक्र नहीं किया । हां यह उस ने अवश्यही कहा था कि वह तुरकिस्तान में कहीं कुछ दिवसों पर्यंत कैद रहा परन्तु यहां का तो उसने नाम मात्र भी न लिया था । यह सब बातें मैं आपको इस कारण बताये देता हूं कि आपने भी मुझ पर विश्वास किया और मुझे भी अपने हृदय की बातों से अवगत किया है । अस्तु तो हमारी कुल बातों का तात्पर्य यह है कि इतनी बात तो निश्चय हो गई है कि बेरेन जेरनिन उस पहाड़ी दुर्ग में कैद हो गया है । वह मेरा बहनोई है और यद्यपि मैं उसकी चाल चलन से बहुत घृणा करता हूं (कदाच यह सुन के आपको आश्चर्य होगा कि) वह केवल मेरा नाम तो जानता है परन्तु पहचानता बिलकुलही नहीं तो भी मैं अपना कर्तव्य यह समझता हूं कि जिस प्रकार बन पड़े उसको इस बंदीगृह से छुड़ाऊं ।

किसान (सिर हिलाते हुये) परन्तु यह कुछ सरलता का कार्य नहीं है महाशय ! उस दुर्ग पर की रक्खी एक छोटी तोप भी लाखों वैरियों को जो उस सँकरे रास्ते से आ रहे हों भली भांति मिट्टी में मिला सक्ती है ।

आदू (बे धड़क) परन्तु उस दुर्ग का कोई दूसरा रास्ता भी अवश्यही है । नहीं तो भला हमें और तुम्हें शराब से बेहोश करके यहां ले आने का क्या तात्पर्य था ? यह चाल उन्होंने केवल उस रास्तेही को छिपा रखने के लिये की है । और यह तो सोचिये कि यदि ऐसी राह न होती तो वे दो तीन दिवसों का भ्रमण कुछ घण्टों में कैसे समाप्त करते ।

किसान—जब मुझ पर यह घटना संघटित हुई थी महाशय ! तो मैंने भी ऐसाही संदेह किया था ।

आदू—तो फिर तुम से तो वह गुप्त राह छिपी नहीं रह सक्ती । तुम इन पहाड़ी राह से भली प्रकार परिचित हो ।

किसान—महाशय ! बात यह है कि जब मुझे उस बुड्ढे की धमकियां याद आ जाती हैं तो मैं कांप २ उठता हूं क्योंकि कभी २ मेरे चित्त में भी ऐसा आता है कि कमर बांध के वह रास्ता ढूंढ़ने और उनके भेद को खोजने में तत्पर हो जांऊं परन्तु फिर मेरे जी में आता है कि मुझे लाभही क्या जो अपना काम छोड़ के दूसरे के कामों में व्यर्थ हाथ डालता फिरूं । इन सब बातों के अतिरिक्त एक ध्यान और भी मुझे इन कामों से बहुत कुछ रोकता है और वह यह कि यदि मैं किसी कुपथ में फँस गया तो मेरी प्यारी बाइना की कौन सुध लेगा, वह तो अनाथ हो जायगी ।

जब से किसान यह सब बातें करता रहा तब से आदू किसी विशेष मामले को भली भांति सोच रहा था । और जब उसकी बात समाप्त हुई तो वह यों बोला—

"सुनिये—बात यह है कि मैंने इस रहस्य के खोलने का पूरा २ विचार कर लिया है । मैं तुम्हारी इस बात को सच मुचही स्वीकार करता हूं कि एक बड़ी से बड़ी फौज भी उस स्थान को जिसे प्रकृति ने ही इतना दृढ़ कर रक्खा है नहीं विजय कर सक्ती । इस रहस्य के खोलने का एक मात्र उपाय यही है कि किसी प्रकार उस रास्ते का पता लगाया जावे जो उस दुर्ग तथा इटली के बीच में बना हुवा है । इसमें तो तुम्हें किसी प्रकार का भय और हिचकिचाहट न होगी और इस काम के बदले में मैं तुम्हें पूरा २ इस्का बदला भी दे सक्ता हूं ।

किसान—हां पहाड़ों में घूम घाम के रास्ते के ढूढ़ने में मैं आपको सहायता कर सकता हूं क्योंकि इसमें मेरी किसी प्रकार की क्षति नहीं दिखाई पड़ती परन्तु आप की और बातों में योग देने में मुझे हिचकिचाहट है । उसके लिये मैं अभी आप से कुछ नहीं कहता ।

आदू—अच्छा तो यदि आप इसी बारे में मेरी सहायता कीजियेगा तो भी आपका बड़ा उपकार होगा । दूसरे यदि आप आज्ञा दीजिये तो जब से हमलोगों का यह काम पूर्ा न हो जावे तब से मैं आपही के मकान मे रहूँ ।

किसान–मेरी झोपड़ी तुम्हारीही है; मैं सिर और आंखों पर आपको अपने यहां रक्खूंगा जबलों आपकी इच्छा हो यहां रहिये। मेरा नाम मेजिनी है और इस नाम के अधिकारी ने कभी भी किसी मेहमान को अपने द्वार से नहीं लौटाया। अब आज तो आप यहीं चैन से विश्राम करें, कल प्रातः काल सूर्योदय के पूर्वही हमलोग चलेंगे और गुफाओं में उस राह की ढुढ़ाई प्रारम्भ कर देंगे।

इसके उपरान्त मेजिनी ने वाइना को टेबुल पर भोजन चुन्ने की आज्ञा दी। और जिस समय वाइना टेबुल पर भोजन लगा रही थी उस समय आटू उसे देख २ के अपने हृदय में उसकी सुन्दरता की प्रशंसा कर रहा था और सचमुच स्वच्छहृदया वाइना एक देवी के तुल्य जान पड़ती थी।

वह इसके पहिलेही जान चुका था कि वाइना एक अपूर्व सुन्दरी है। उसका चेहरा बड़ाही सुडौल और सुन्दर था—उसके नेत्र बड़े २ और काले २ थे—उसका मुंह छोटा और दाँतों की लड़ी आबदार मोतियों को लज्जित कर रही थी।

आटू संध्या पर्यंत उस लड़कीही के साथ रहा और उससे अनेक प्रकार की इधर उधर की बातें करता और अपनी मित्रता बढ़ाता गया। अब इतनी देर की साक्षात ने उस पर भली प्रकार यह प्रगट कर दिया कि वह हँसोड़ और बड़ीही मान मर्यादा की बालिका थी। सचाई और लज्जा इन दोनों बहुमूल्य रत्नों से जगदीश्वर ने उसे विभूपित किया था। बस इन्हीं सब गुणों तथा उसके सुन्दर मुखड़े को भी देख के आटू उस प्यारी लड़की को अपना हृदय दे बैठा।

एक अच्छी कोठरी पेनिल्ला के निमित्त स्थिर की गई और वह उस इटालिअन किसान की झोपड़ी में रात भर बड़ेही चैन से सोया रहा।

सूर्योदय के एक घण्टा पहलेही वह नींद से उठा और कपड़े इत्यादि पहिन पहाड़ों में घूमने के लिये प्रस्तुत हो गया।

वाइना भी उतनेही सबेरे उठी और भोजन लाके उसने एक टेबुल पर चुन दिया और जब यह दोनों खा पी चुके तो मेजिनी ने भी आटू से अपनी तैयारी की खबर दी।

चलती समय वाइना ने आटू से एक मन्द मुसकान के साथ अपने पिता की रक्षा करने लिये कहा! मेजिनी ने अपनी बेटी को छाती से लगा लिया और उसका मुंह चूम के आटू के साथ जूलियन आल्प्स में घूसने के लिये निकल पड़ा।

पैंतीसवां बयान ।

जूलियेन आल्प्स की घटनायें ।

प्रातः काल नील - श्वेत रङ्ग का कुहरा पहाड़ पर छा रहा था जिस पर आटू तथा मेजिनी चढ़ते चले जाते थे परन्तु पहाड़ की चोटियों को गहरे बादलों ने घेर रक्खा था जिस में वे दोनों पहुंच गये और वहां से भी ऊपर चढ़ने लगे।

पहाड़ के नीचे जहां लों दृष्टि जाती थी—वहां लों बिलकुल हरियालीही हरियाली दिखाई पड़ती थी—और कोई २ पहाड़ियां तो सिर से पैर पर्यन्त बिलकुल श्याम-वर्ण के जङ्गलों से छिपी हुई थीं जिनके बीच २ में केवल छोटे २ चट्टानों के टुकड़े दिखाई पड़ते थे। इसमें स्थान २ पर बड़ेही सुन्दर वृक्ष खड़े थे, मौसमी फूल से वृक्ष लदे हुये थे जिनसे यह वन बड़ाही सुहावना जान पड़ता था।

पहले तो इस पहाड़ की चढ़ाई बड़ीही सहल थी—परन्तु रास्ता बड़ाही बीहड़ था—स्थान २ पर बहुत बड़े २ अंधकार मय गड़हे जङ्गली बेल बूटों से आच्छादित थे—जो सरसरी दृष्टि से दिखाई भी न पड़ते थे।

एक बहुत बड़ी ऊंचाई समाप्त करने के उपरान्त आटू ने अपने साथी से तनिक ठहर जाने की प्रार्थना की और फिर ठहर के उस इटलियेन दृश्य को जिस पर से हो के अभी २ यह ऊपर चढ़ आया था स्थिर भाव से देखने लगा।

जब उसने अपनी दृष्टि उत्तर की ओर उठाई तो देश की खेती हरियाली और पैदावार देख के हैरान रह गया और जब दक्षिण की ओर देखा तो उसको पहाड़ियों की एक श्रेणी दिखाई पड़ी जो एक के उपरान्त दूसरी एक लम्बी श्रेणी में दूर होती गई थी यहां लों कि एक बहुत बड़े अंतर पर, पहाड़ियां आकाश की नीली रङ्गत में मिल जाने के कारण बिलकुल मालूम नहीं की जा सक्ती थीं।

अब सूर्यदेव कुछ विशेष चढ़ आये थे और बादल फट के इधर उधर हो गये थे जिनसे इन पहाड़ों का दृश्य और भी मनोहर और इसके साथही साथ भयानक हो चला था।

मेजनी (जब वह घूमके अपने पथ पर चलने को था। ऐसी राह जो दुर्ग पर्यन्त पहुंचती हो वह पहाड़ की तराई में न मिलेगी इस कारण चाहिये कि हम उजाड़ और ऐसे स्थानों में ढुंढ़ाई प्रारंभ करें जहां मनुष्य जातेही न हों क्योंकि जब उ-

न्होंने अपने दुर्ग के एक ओर का रास्ता ऐसा भयानक बना रक्खा है तो दूसरी ओर इटली देश से जाने का रास्ता यदि उतना कठिन नहीं तो कुछ न कुछ फेर और पेंच से तो अवश्यही बनाया गया होगा।

आदू—सच है! परन्तु एक बात है जो हमारी इस ढूढ़ाई में बहुत कुछ सहायता दे सके।

किसान—वह क्या सुनें तो सही?

आदू—जब आप उस दृढ़ दुर्ग में से शराब पिलाये जाने के उपरान्त चैतन्य हुये तो अपने को अपनी झोंपड़ी से सौ गज के अंतर पर पड़ा पाया। और जब कल मैं दो पहर को चैतन्य हुवा था तो भी अपने को आप के मकान से इतनेही अंतर पर एक हरे भरे मैदान में पड़ा पाया। तो अब बिचारने की बात है कि वे लोग जो हम दोनों को उठा के ले आये तो अपनी गुप्त राह से निकल के जहां लों उन से बन पड़ा होगा उस खेत पर्यंत जहां वे हमें छोड़ गये एक थोड़ाही रास्ता समाप्त करके आये होंगे क्योंकि उन्हें और दूर भटकने से क्या लाभ था इससे उत्तम होगा कि पाहिले खेतों के इधर उधर के जङ्गलों तथा आस पास की पहाड़ियों को भली प्रकार ढूंढ़ लें तब कहीं दूर चलने का उद्योग करें।

मेजिनी—मैं भी उसी ध्यान से यहां लों आया हूं आइये तब हम उस ऊंचाई पर चढ़ चलें और उसके दूसरी ओर की देख भाल भली प्रकार से प्रारम्भ कर दें।

इस बात चीत के उपरान्त अब वे फिर चढ़ने लगे और कुछही देर में चार पांच माइल की ऊंचाई पर जा खड़े हुये और यहां से भी आगे बढ़ने पर वे एक ऐसे सँकरे गार में जा पहुंचे जिसके दोनों ओर बड़ेही ऊंचे २ झुके हुये चट्टान और भयानक से भयानक घाटियां थीं।

उन्हें दृश्य बड़ाही बीहड़ मिलने लगा जिसे देखने से भय उत्पन्न होता था और आत्मा उसमें प्रवेश करने को मना करती थी।

जैसेही दोनों घूमनेवाले इस गुफा में उतरे वैसेही ठंढी वायु का एक झकोरा इनके चेहरे पर आ लगा, और इसके उपरान्तही उन्हें किसी पहाड़ी नदी के बड़े वेग से चट्टानों पर गिरने की हड़हड़ाहट सुनाई दी। की प्रतिध्वनि से ऐसा बोध होता था मानों सहस्रों नादियां हरहराती हुई बह रही हैं।

और आगे जब ये बढ़े तो ठंढे २ वायु के झोंके बरफ की ढँकी चोटियों से टक-

राते हुये आके इन्हें लगने लगे। अब इन्हें ऐसा जान पड़ता था मानों बरफ की तीरें आ २ के इनकी हड्डियों में बेधी जा रही हैं। तात्पर्य यह कि तीनही घण्टे की चलाई में अब इन्हें ऐसा जान पड़ने लगा कि मानों हम दूसरेही देश में आ पहुँचे।

यह खोह कोई पाव मील पर्यन्त बराबर सम रूप से चला गया था और फिर सूखे वृक्षों के बीच में से जो बड़े २ चट्टानों में उगे हुये थे उधर बढ़ता चला गया था यहां लों कि यह अचांचक एक बहुत बड़ी और भयानक घाटी के सिरे पर जाके खतम हो गया जिसके नीचे एक नाला बड़ेही वेग से बह रहा था।

इस स्थान से एलपाईन का एक बहुत विशाल आकाश भेदी दृश्य दिखाई पड़ता था। इस गहरी घाटी के एक किनारे पर तो ये दोनों खड़े थे परन्तु दूसरे किनारे पर सामनेही ऊँची और चौड़ी २ चट्टानों के तह पर तह जमे हुये थे और जहां लों दाहिने और बायें दृष्टि काम करती थी यही दिखाई पड़ता था। और इस बहते हुये नाले के किनारे २ इन दोनों के पैरों के नीचे बहुत बड़े २ पुराने वृक्ष चलती हुई तेज वायु में झूम रहे थे और जिसके किनारे की उत्तम भूमि होने के कारण भांति २ के मनोहर फूल खिल रहे थे। जिन्हें वास्तव आल्प्स के गुलाब के नाम से पुकारना उचित है।

चलते २ मेजनी एक स्थान पर रुक गया और इधर उधर देख के कहने लगा—

मैं जहां लों आशा करता हूं इस घाटी के उसपार कोई रास्ता अवश्यही होगा। देखो यहां की झाड़ियां और कांटे मनुष्यों के हाथों से साफ हुये दिखाई पड़ते हैं, (एक ओर घबड़ाहट से देख के) यह झाड़ियां जब मनुष्य के हाथों की साफ की होंगीं तो निश्चय उसने किसी कार्य के लियेही इन्हें साफ किया होगा। और देखो इन कटी हुई झाड़ियों के ठूठ में से नई २ कोपलें फिर से निकल रही हैं।

इसके उपरान्त मेजिनी और आटू उसपार निकल गये और मेजिनी एक उस पहाड़ी व्यक्ति की भांति जो पहाड़ों से बहुतही भली प्रकार परिचित हो बड़ीही सावधानी से इधर उधर घुस पैठ कर दृष्टि दौड़ाने लगे।

अभी उसे योंही घुस २ के देखते कुछही देर हुई होगी और आटू भी इधर उधर देख भाल कर रहा था कि सहसा मेजिनी के मुह से एक आनन्ददायक चीख निकल गई।

यह सुन्तेही आटू तुरन्तही उधर झपटा तो क्या देखता है कि वृक्षों के एक बड़े

झुंड के पीछे, उस चट्टान में जो उस घाटी के दाहिने ओर था एक छोटी और अंधकार मय गुफा दिखाई पड़ती है।

किसान—देखो यही वह गुप्त पथ है—और नहीं तो हम लोग बहुतही भारी धोखा खा रहे हैं—महाशय ! और ध्यान दीजिये—कि झाड़ियां और छोटे २ वृक्ष उसी राह के साफ करने के लिये काटे गये हैं और इन छोटी २ पत्तियों के भी देखने से जान पड़ता है कि मनुष्यों के आने जाने के कारण यह भी बहुतही कुचल गये हैं। परन्तु अब दो पहर ढल आई है—और बादल आकाश पर छा रहे हैं जिससे भय है कि थोड़ी देर में चारों ओर घोर अंधकार हो जायगा। इस लिये मैं तो यही उत्तम समझता हूं कि हमलोग इस समय लौट चलें और फिर—आज काम भी तो कुछ कम नहीं किया गया है।

आटू—कौनसी बातें ऐसी हैं जिन्हें देख के तुम भयभीत हो रहे हो?

मेजिनी—बरफ की आंधी से हम भय खाते हैं। बहुतही थोड़े घण्टों के उपरान्त बरफ पड़ने लगेगी और फिर इस घाटी का मोहाना, आश्चर्य नहीं कि मोटे २ बरफ की तहों के भीतर हो जाय।

आटू—परन्तु इतना तो हम लोगों को निश्चय कर लेना चाहिये कि इस गुफा में सचमुचही कोई राह है वा नहीं। इसके जानने में तो कोई घण्टा दो घण्टा न लगेगा दम भर की तो बात है।

इस पर किसान ने कोई उत्तर न दिया; बरन उन वृक्षों के झुंड में घुसता हुआ गुफा के मुहड़े पर जा पहुँचा और उसमें उतर गया उसी से कुछ दूरी पर आटू भी था वह भी बेधड़क गुफा में उतर पड़ा और मेजिनी के पीछे २ चला।

लगभग सौ गज पर्यन्त तो यह रास्ता बहुतही सकरा था—अर्थात् चौड़ाई में पूरा एक गज भी न होगा और उंचाई में चार फीट था; परन्तु जब वह पूर्वोक्त अन्तर पीछे हटा अर्थात् सौ गज के आगे ये लोग बढ़े तो इन्हें रास्ता कुछ चौड़ा मिला और थोड़ी दूर पर एक और घाटी दिखाई पड़ी जिसके किनारे तक जाके इनकी यह सुरंग तो समाप्त हो जाती थी परन्तु एक दूसरा मुहड़ा उसी के सामने अर्थात् घाटी के दूसरे ओर से प्रारंभ हो जाता था जिसकी चौड़ाई चार फीट से किसी प्रकार कम न होगी।

गुफा के उस स्थान से जहां वृक्षों का झुण्ड लगा था और जहां से इन लोगों ने उसमें प्रवेश किया था इस दूसरे गार के मुहाने पर्यन्त दो सौ गजों का अन्तर था।

और इस गुफा की बनावट से प्रतीत होता था कि यह प्राकृतिक है किसी मनुष्य के हाथों का बनाई हुई नहीं ।

और ऐसे विशाल कामों के बनाने में भगवान कैसे २ भयानक औजारों से काम लेता है !—वे शीघ्रता से बहते हुये नाले जो बड़े २ चट्टानों को भेद के अपने शरीर के निकल जाने योग्य रास्ता बना लेते हैं—वह भयानक भूकम्प जो पलक झपकते बड़े २ पहाड़ों को सुरमा जैसा कर देता है और देखते २ सैकड़ोंही घाटियां, गड़हे और दरार बना देता है—वह चमकती हुई लकीर जो संसार में बिजली के नाम से विख्यात है देखते २ सहस्त्रों वन को झुलस के साफ कर देती है,—और वह बरफों के ढेर का ढेर जो पहाड़ों पर से लुढ़क लुढ़क कर भयानक से भयानक गड़हों को पाट देता है । बस ऐसेही ऐसे औजार हैं जिन से प्रकृति अपनी कारीकरी के लिये काम लेती है ।

मेजिनी—क्या अभी हमलोगों को आगे बढ़ना होगा ?।

मेजिनी ने आकाश की ओर देख के यह कहा, क्योंकि इस समय उसे अपनी लड़की की चिन्ता लगी हुई थी—परन्तु साथही उसकी बढ़ी हुई हिम्मतों ने यह भी न स्वीकार किया कि यों अपने मकान लौट चलने की इच्छा को कायरता से प्रगट करे।

आटू—तुम अभी यह कही चुके हो कि दोपहर ढल चुकी है—परन्तु अब भी कुछ समय है जिससे यह निश्चय है कि हमलोग कुछ दूर और आगे जा सकते हैं! क्योंकि तुम्हीं सोचो कि कल प्रातःकाल तुह्मारे निवासस्थान से यहां लों आने में फिर इतना समय नष्ट करना होगा ।

मेजिनी ने फिर कोई भी बात न कही और वह वीरता से बढ़ता हुवा घाटी मे घुसा और एक ऐसे पथ पर हो लिया जो घाटी के बिलकुल किनारे २ जाता था और जिस के नीचे गहराई में नाले का पानी उछलता हुवा और एक भयानक शब्द करता हुवा बड़ेही वेग से बह रहा था ।

दोनों बिना रोक टोक के लगातार आधे घण्टे पर्यन्त, उसी पथ पर चले गये, और अब इस घाटी का भी अन्त हुआ और उन्हें एक ऐसा पथ दिखाई दिया कि जो सामने के ऊंचे २ पहाड़ों पर चक्कर खाता और गुफाओं में से होता ऊपर चला गया था ।

परन्तु जैसेही उन पथिकों ने अपनी घाटी का पथ समाप्त किया वैसेही बादल की

भयानक गरज बार २ उन्हें सुनाई पड़ने लगी। यह शब्द चट्टानों के बीच से आता था। उस बिशाल गगनस्पर्शी पर्वत एलपाइन में बादल के गरज की प्रतिध्वनि महा भयंकर जान पड़ती थी। बस यही बोध होता था कि मानों सहस्रों तोपों पर एक साथ बत्ती पड़ गई है।

आकाश शीघ्रता से अंधकाराच्छन्न होने लगा और तिमिर चारों ओर ऐसा छा गया कि जान पड़ता था कि संध्या होगई। बिजली पहाड़ के काले शरीर पर बार २ लोटती जान पड़ने लगी जिसका प्रकाश बरफ पर पड़ने से और भी चमकीला जान पड़ता था।

ठंडक शरीर में अब ऐसी पैठने लगी कि आटू की तो नाक से मारे सर्दी के दो चार बूंद रक्त के निकल पड़े और पैर ऐंठ से गये। परन्तु मेजिनी इन्हीं पहाड़ों का रहने सहने वाला था, अनेक बार उसे इन आपत्तियों से सामना पड़ चुका था इस कारण उसे कुछ बहुत कष्ट न बोध हुआ।

मेजिनी—(चिल्ला के) आंधी आ गयी! अब हम लोग आगे नहीं जा सकते और न अब उस सकरी घाटी में से लौटही सकते हैं और न अब हम लोग यहांही खड़े रह सकते हैं, अब थोड़ीही देर में निश्चय हमलोगों की मृत्यु होगी। भय है कि हमलोग खड़े बरफ में जम जायें। अच्छा, तो अब तो चाहे सो हो हम तो आगेही बढ़ते हैं।

इतना कह के वे दोनों आगे बढ़ने लगे।

वायु तब उस सकरी घाटी के रास्ते से बड़ीही तीक्ष्णता से सनसनाती हुई आ रही थी—उस्की कड़ाई बढ़ते २ यहां लों बढ़ गई कि कठिनता से इन दोनों के पैर पृथ्वी पर जमते थे। और साथही उस ठंढी २ वायु के बरफ के टुकड़े ऐसे उड़ २ के आ रहे थे कि दोनों का रक्त जम जाने के निकट पहुँच गया। इस समय पाला बड़ेही जोर से पड़ने लगा और उसकी तड़तड़ाहट से सारा पहाड़ भर उठा और ये दोनों बेचारे उसकी बौछार में छिप गये।

उसकी कड़ाई उस समय बड़ीही असह्य हुई जाती थी अब ठंढी २ वायु के कड़े झँकोर के साथ इन पर पाले के टुकड़े जोर से आके लगने लगे। आह इन पर बड़ाही कठिन समय उपस्थित था।

इस समय चारों ओर पहाड़ भारी तूफान में घिरा जान पड़ता था—आंधी की तीक्ष्णता—पाले की गड़गड़ाहट और उसके गिरने का महा भयानक रूप—बादल की

गरज—बिजली की कड़क—नालों का बहाव-इन सभों का शब्द मिलके एक महा भयङ्कर कोलाहल उत्पन्न करता था जिसको प्रकृति का शब्द कहना चाहिये और जिससे वेही लोग विज्ञ हैं जिन्हें कभी आल्प्स पर जाने और इन भयानक खबरों के सुनने का अवसर प्राप्त हुवा होगा।

दोनों बेचारे प्रत्येक पग पर घुटनों पर्यंत धँस २ जाते थे—पाले के बौछार से उन्हें कुछ सुझाई न पड़ता था-बादल की गरज से उनके कान के परदे फटे जाते थे-ठंडक के मारे उनके हाथ पैर शक्तिहीन हो गये थे। आगे जाते उन्हें भय जान पड़ता था और साथही पीछे फिरने में भी भारी कठिनता थी और खड़े तो वह रहही नहीं सकते थे—आटू और मेजिनी दोनोंही भारी आपत्ति में फँसे हुये थे—पहिला तो अपनी बेवकूफी पर अपनेही ऊपर घृणा कर रहा था कि जब मेजिनी ने लौटने को कहा था तो मैं लौट क्यों न गया और दूसरा अपनी लड़की की याद कर रहा था कि बेचारी इस समय बड़ीही कठिनता में होगी।

इसी प्रकार डेढ़ घंटे व्यतीत हो गये।

आंधी जिस शीघ्रता से आई थी—पाले जितनी जल्दी २ पड़ने लगे थे—वैसीही शीघ्रता से वे बंद भी होने लगे; पहले तो पालों का गिरना बंद हो गया-फिर वायु की वह तीव्रता मिट गई—वह अंधकार भी धीरे २ हट गया—चारों ओर प्रकाश फैलने लगा—और इसके उपरान्त बादल की गरज और बिजली की कड़कड़ाहट भी बिलकुलही बंद हो गई। कोई बीसही मिनिट के उपरान्त उस भयानक रव का कहीं नाम भी न रहा और एक अटल सन्नाटा चारो ओर छा गया। परन्तु बादल अब भी एक बड़ीही सुन्दरता से आकाश पर आच्छादित थे—जिनके नीचे की बरफीली चोटियां और उन पड़े हुये पाले एक बड़ीही बहार दिखा रहे थे। दोनों पथिकों ने भी अपने वस्त्रों पर की जमी हुई बरफ को झाड़ के साफ कर दिया।

अब आटू ने बहुतही लज्जित होके और अपने साथी को एक मर्यादा की दृष्टि से देख के कहा—वह जानता था कि यह वीर केवल वीरताही के उत्साह में मेरे साथ जान बूझ के इन आपत्तियों में चला आया है।

"क्या अब हमलोगों को लौटना चाहिये?"

मेजिनी—इस समय लौटने का उद्योग करना निरर्थक होगा। वह घाटी जिसमें से होके अभी २ हम लोग आये हैं अवश्यही बरफ से भर गई होगी जिससे हमलोगों

की राह भी छिप गई होगी। अब हमलोग पीछे भी नहीं लौट सकते, इसलिये आगेही बढ़े चलो।

आटू—हां तो तुम्हारी अनुपस्थिति में तुम्हारी प्यारी बेटी की क्या दशा होगी ?।

मेजिनी—भगवान की सौगंध, बेचारी लड़की आज की रात बड़ेही दुविधे में काटेगी। भाग्य-वश चलती समय हमने उससे यह भी कह दिया था कि दैवात् यदि हम आज की रात न आ सके तो कोई चिन्ता न करना और वह जानती भी है कि मैं इन पहाड़ों की राह घाट से भली प्रकार परिचित हूं। अच्छा तो अब हमलोगों को किसी प्रकार की चिंता न करनी चाहिये। क्योंकि वह देखो सामने एक चिन्ह बना हुआ है इसका तात्पर्य यह है कि कोई रक्षा का स्थान कहीं निकटही अवश्य है।

आटू—(चिन्ता से चारों ओर देख के) वह पत्थर पर का चिन्ह है कहां ?

यह सुनके मेजिनी ने एक छोटे से आले की ओर इशारा किया जो एक सूखे हुये वृक्ष के जड़ से तीन हाथ की ऊंचाई पर बना हुवा था जिसमें मट्टी की एक तसवीर मरियम की बनी हुई थी और जिसकी गोद में एक वैसीही मट्टी की तसवीर मसीह की भी थी।

देखतेही दोनों एक साथ उसी ओर बढ़े और उस पवित्र स्थान पर पहुँच के दोनों ने एक साथही घुटने टेक दिये और चुपचाप हार्दिक प्रेम से भगवान की प्रार्थना करी कि हे नारायण! हे जगत्पते हमारे इस महाव्रत को निरापत्ति समाप्त कर।

प्रार्थना इत्यादि को समाप्त कर अन्त वे अपने स्थान से उठे और अपने पथ पर हो लिये।

भगवान पर विश्वास न रखनेवाले लोग, चाहे इस बात को कितनेही ठठ्ठों में उड़ायें, परन्तु यह एक सच्ची बात है कि भय के समय में प्रार्थना करना आत्मा में एक प्रकार का विशेष साहस और उत्साह डाल देता है, और यह ध्यान कि भगवान वास्तव में हमारी रक्षा करनेवाला है कुल कठिनाइयों को सरल कर देता है—और विशेषतः ऐसे विशाल और भयानक दृश्यों में जब कि चारों ओर अटल सन्नाटा बरस रहा हो ये धार्मिक ध्यान और भी प्रबल हो जाते हैं और मनुष्य को बहुत कुछ सहायता देते हैं।

"तुमने तो कहा था कि वह रक्षा का स्थान कहीं निकटही है।"

आटू ने यह चलते २ और उस स्थान से बहुत दूर निकल आके कहा जहां इन लोगों ने प्रार्थना की थी—क्योंकि प्रार्थना ने इन लोगों के हृदय में एक ऐसी आशा डाल दी कि अभी लों उसी के प्रभाव से ये चुपचाप थे।

आटू—तो यदि वह रक्षा का स्थान जहां हमलोग चल रहे हैं उन्हीं लोगों के आधीन हो जो अपने पाजीपने को बहुत छिपा के रखना चाहते हैं तो फिर व्यर्थ वहां चलने और अपने को एक नई आपत्ति में डालने से क्या लाभ ?

मेजिनी—कहीं ठहरना तो हमलोगों को अवश्यही होगा, और प्रथम तो अभी हमलोगों को यही नहीं मालूम कि यह राह सीधे उसी गुप्त दुर्ग को जाती है या किसी अन्य गुप्त स्थान को—दूसरे, यदि यह राह वहीं जाती होगी तो हमलोगों की रक्षा का कोई स्थान तो कहीं निकटही होगा इस कारण हम उन लोगों से कोसोंही दूर रहेंगे। हमलोग पहाड़ों में तो रात व्यतीत नहीं कर सकते पहिला स्थान रक्षा के योग्य जो मिलेगा उसी में घुस चलेंगे, चाहे वह किसी का क्यों न हो।

आटू—अच्छा तो फिर शीघ्रता से बढ़े चलो।

पावही घण्टे में ये लोग उस चढ़ाई से ऊपर पहुँचे और इससे आगे बढ़तेही वे एक झोपड़ी के द्वार पर जा पहुँचे जो वरफ से इतनी ढकी हुई थी कि जबलों वे उसके बिलकुलही निकट न पहुँचे, तबलों इन्हें यह न मालूम हुआ कि यहां कोई मकान है वा नहीं।

इस स्थान पर भूमि समथर थी और यहां से दो रास्ते चोटी की ओर घूमते चले गये थे। इन में से एक तो दाहिने था और दूसरा बांये। बांयी ओर का रास्ता दूसरे की अपेक्षा कुछ चौड़ा था और इसके सिरे पर हाथ का एक निशान पत्थर में काट के बना दिया गया था। और दूसरा दाहिने हाथ वाला रास्ता बड़ाही संकरा ऊंचा नीचा और दोनों ओर के ऊगे हुये वृक्ष तथा निकली हुई चट्टानों से बिलकुल घिरा हुआ था।

इन दोनों रास्तों को देखतेही एकही प्रकार का ध्यान दोनों के हृदय में आया और दोनों ने आपस में एक दूसरे को देख के यह कहही दिया कि यदि इन दोनों पथों में से गुप्त दुर्ग का कोई पथ आया है तो वह दाहिने हाथ वाला ही है। क्योंकि प्रथम तो यह झाड़ झंखाड से बिलकुल साफ किया गया है दूसरे एक विशेष चिन्ह भी उसके द्वार पर लगा हुआ है।

मेजिनी ने प्रथम तो द्वार को बाहर से खटखटाया और जब कोई उत्तर न मिला तो ढकेल के द्वार खोल दिया और भीतर चला गया।

यह झोपड़ी दो कोठरियों में विभक्त थी; इस में कोई भी जीव इस समय न था; परन्तु अँगीठी के निकट सूखी लकड़ियों का एक भारी ढेर लगा हुआ था; और आले पर कुछ भोजन बनाने के बरतन रक्खे हुये थे।

मेजिनी—भाग्यवश ! मैं कुछ भोजन की सामग्री भी साथही लेता आया था।

कुछही देर में आग खूब भड़का दी गई उसी के निकट एक टूटा टेबुल और दो एक टूल भी रक्खे हुये थे जिन पर बैठ के मेजिनी और आदू ने अपनी खूबही उमड़ी हुई भूख को शान्त करना प्रारम्भ किया।

खाती समय इधर उधर की बातों के अतिरिक्त दोनों ने यह भी निश्चय कर लिया कि आज की रात इसी झोपड़ी में बिताना चाहिये और प्रातः कालहोतेही आगे बढ़ना उत्तम होगा।

सूर्यदेव अब अस्त हो गये; परन्तु यहां कुछ विशेष अंधकार न था क्योंकि सि-तारों की किंचित् मन्द पीली २ रोशनी बरफ के बड़े २ टुकड़ों पर पड़ २ के चारों ओर के स्थान को उजेला किये हुए थी।

दोनों व्यक्ति अन्य आवश्यकीय कार्यों से निवृत्त होके सोने की तैयारी करने लगे और निकट था कि आनन्द से खराटे लेने के लिये लेट जाते कि ठीक ऐसेही समय बाहर की ओर से बहुत से कंठस्वर सुन पड़े, जिन्हें सुनके ये दोनों चौंक पड़े और थोड़ी ही देर के उपरान्त द्वार किसी दृढ़ हाथों द्वारा जोर से खटखटाया जाने लगा जिसे इन दोनों ने अपने सोने के पाहिले और आने के उपरान्तही बंद कर दिया था।

छत्तीसवां बयान।

पर्वत पर की झोपड़ी।

आदू और मेजिनी शब्द सुन्तेही द्वार की ओर बढ़े और शीघ्रता से उन्होंने उसे खोल दिया; जैसेही द्वार खुला वैसेही दो मर्द एक स्त्री के साथ जो एक बड़ाही बहुमूल्य दुशाला ओढ़े हुई थी भीतर आये।

आदू ने तुरन्त एक तिपाई अँगीठी के सामने रख दी और उसपर उस स्त्री को बैठने के लिये कहा; तब से मेजिनी ने उस आग को लकड़ियां इत्यादि लगा के और भी भड़का दी।

स्त्री के वे दोनों साथी कारनीलेन के रहनेवाले पहाड़ी जान पड़ते थे। जब वह स्त्री आग के किनारे बैठ गई तो एक ने उन में से कहा।

अब हम लोगों को खच्चरों की भी सुध लेनी चाहिये। जहां लों मुझे याद पड़ता है इसी झोपड़ी के कहीं निकटही एक और छप्परदार मकान है—परन्तु इधर मुझे आये अधिक समय बीतता है अब वह हो या न हो मैं ठीक नहीं कह सकत।

इतना कहके वे दोनों बाहर चले गये, और इधर उस स्त्री ने जो दुशाले को अपने गर्दन और सिर पर ऐसा लपेटे हुई थी कि केवल उसका थोड़ा चेहराही मात्र दिखाई पड़ता था गरमी पाके धीरे २ खोलना प्रारम्भ किया। जब यह दुशाला बिलकुल ही खुल गया तो उसके भीतर से एक भुवनमोहिनी मूर्ति प्रगट हुई जिसके निमित्त अपने पाठकगण को इतनाही जता देना बहुत होगा कि यह स्त्री वही इटेनी थी।

इटेनी जब दुशाला उतार चुकी तो उसने जरमनी भाषा में मेजिनी और पेनिल्ला की ओर देख के कहा—

"महाशयो! आप लोगों ने सचमुच मुझ पर बड़ाही उपकार किया जिसका धन्यवाद में किसी प्रकार करही नहीं सकती। और यदि ये दोनों दयालुहृदय, पहाड़ी मनुष्य, मेरी सहायता न करते तो मैं इस बरफीली भूमि तथा आंधी में बन और घाटियों में सिर टकरा के मर जाती; क्योंकि मैं एक अन्य देश की रहनेवाली हूं जहां की आबहवा यहां से बिलकुलही पृथक् है।

मेजिनी—(जर्मनी भाषा में) मैं अनुमान करता हूं लेडी! कि आप के राह दिखाने वाले रास्ता भूल गये क्योंकि यदि आप की इच्छा इटली की ओर जाने की थी तो आप रास्ते से बहुत दूर निकल आईं।

इटेनी—हां—मेरे पुराने ईमानदार गुलाम बायनाही में मर गये। और अब मैं अकेली जरमनी से इटली की ओर जा रही हूं और वहां से मेरा विचार है कि जहाज़ पर सवार होके सीधे अपनी जन्मभूमि की ओर चली जाऊं।

आटू—परन्तु तुम लेडी! दूसरे देश की रहनेवाली हो के जरमनी भाषा ऐसी सरलता पूर्वक बोलती हो कि जिसे सुनके आश्चर्य होता है।

इटेनी—हां यह भाषा मैंने एक ऐसे व्यक्ति से सीखी थी कि जिसे मुझे इस भाषा के सिखाने में बड़ाही आनन्द आता था और जिसकी शागिर्दी की मुझे भी बड़ीही इच्छा

थी। (खेद से) परन्तु! हा! मैने उसे फिर कभी न देखा। एक भयानक और आश्चर्ययुक्त गुप्त रहस्य ने उसे अपने पर्दे में छिपा लिया।

इतना कहते २ इटेनी के नेत्रों में जल आ गया और उसी समय वे दोनों पहाड़ी भी फिर झोपड़ी में आ गये।

एक—हम लोग वह छप्परदार मकान पा गये, उसमें उन दोनों खच्चरों को बांध आये हैं जहां वे आराम से रह सकेंगे। परन्तु अब आप कैसी हैं लेडी?

लेडी—अग्नि की गरमी से मुझ में बहुत कुछ शक्ति आ गई है और मैं आशा करती हूं कि कल दिन निकलतेही हम लोग इटली की ओर कूच कर जांयगे।

एक पहाड़ी—यदि भगवान ने चाहा तो ऐसाही होगा परन्तु आप संध्या के पहिले इटली की सीमा पर्यंत नहीं पहुँच सकतीं क्योंकि हम लोग आठ या दस मील असली रास्ते से दाहिने भटक आये हैं।

मेजिनी—और यदि तुम्हें प्रातः काल इटली का रास्ता मिल जावे तो क्या तुम खच्चरों सहित संध्या पर्यंत इन्हें वहां पहुँचा दोगे?

दूसरा पहाड़ी—जहां लों मुझे आशा है पहुँचा तो अवश्यही दूंगा।

मेजिनी—अजी हमलोगों की सुनो कि हमलोग यद्यपि पैदल थे तो भी प्रातः काल के चले २ इस समय यहां पहुंचे हैं और इसके अतिरिक्त बीच २ में कई बेर पथ ढूढ़ने में हम लोगों का बड़ा समय नष्ट हुआ है।

एक—हां मैंने कारनेला के रहनेवाले बुड्ढे मनुष्यों से सुना है कि इन दोनों मुल्कों के बीच एक ऐसा छोटा रास्ता है कि बड़े रास्ते की अपेक्षा बहुतही शीघ्र इटली में पहुँचा देता है परन्तु आज लों न तो हमी लोगों को वह राह मिली और न किसी ने यथार्थ पताही दिया कि वह पथ है किधर?

मेजिनी—तो हम तुम्हें बिश्वास दिलाते हैं कि हमने और हमारे साथी ने वह छोटा रास्ता पा लिया है और यदि मेरा अनुमान ठीक है तो हम आज इस स्थान पर्यंत उसी पथ पर से चल के पहुँचे हैं और हमारी ऐसी इच्छा है कि कल प्रातःकाल उस रास्ते को देखें जो यहां से आगे दाहिनी ओर को जाता है।

पहाड़ी—तो मित्रो मैं आपका बहुत कुछ अनुगृहीत होऊँगा यदि आप कृपा कर वह छोटा रास्ता मुझे दिखा दें क्योंकि मेरी इच्छा है कि दूर का फेर न करके उसी रास्ते पर तड़के लेडी साहबा को लेके चल दूं।

आदू—नहीं–तुम्हारे खच्चर उस पथ पर से किसी प्रकार नहीं जा सकते, दूसरे तुम्हारी लेडी महाशया भी उस वहिड़ पथ और उन ऊँची २ घाटियों को देख के बड़ीही भयभीत होंगी ।

पहाड़ी–तब तो फिर हमलोगों को वही लम्बा चौड़ा पथ ढूढ़ना पड़ेगा । और मैं इस सूचना के निमित्त आपको धन्यवाद देता हूं युवक मित्र ! परन्तु यह संभव है कि किसी दिन जब मुझे काम काज न रहे तो मैं उस पथ को देखने निकलूं या मेरे साथ कोई पैदल चलनेवाला हो तो उसे ले के इस रस्ते पर से आऊँ इस कारण यदि दया करके वह रास्ता आप मुझे दिखा देते तो बड़ाही उपकार होता ।

आदू–जहां लों हमें मालूम है भगवान की सौगंध हमें बताने में किसी प्रकार का उज्र नहीं है परन्तु हमारी जान वा हमारे देखने में तो वह रास्ता बड़ाही बीहड़ और भयंकर है इस कारण मनुष्यों के आने जाने योग्य नहीं ।

पहाड़ी—(सूखी हुई आवाज में) महाशय ! आप भय न खाइये, मैं आप के कामों में किसी प्रकार का विघ्न न डालूंगा ।

आदू—भगवान की सौगंध पहाड़ियो ! तुम लोग भारी चूक कर रहे हो । सुनो न तो मेरी और न मेरे साथीही की ऐसी इच्छा है कि मुसाफिरों को इस पथ से ला लां के उनसे किराया वसूल करें; और न इस ध्यान से हमलोगों ने तुम्हें यह सिखापन दिया है, वरन यह एक सच्ची बात थी जिससे तुम्हें अवगत कर दिया है । और हमलोगों के काम की न पूछो तुम लोगों के बताने से विघ्न तो उस में किसी प्रकार का नहीं पड़ सकता । हां यदि तुम भी उसे सुन के उस काम में योग देने के लिये तत्पर हो जाओ तो हम तुम्हारे बड़ेही अनुगृहीत होंगे ।

पहाड़ी–मेरे इस उजड्डपन को क्षमा कीजिये । अब मैंने मालूम कर लिया कि आप एक बड़ेही स्वच्छहृदय और नेक मनुष्य हैं और मैं ऐसे व्यक्तियों का दास होके रहना पसन्द करता हूं परन्तु भगवान के लिये आप इतना तो बता दें कि यह आप जान बूझ कर अपने को आपत्ति में क्यों डालते हैं ?

आदू–एक कर्तव्य–हमारा एक पूरा कर्तव्य है जो हमें खींच के लिये जाता है यह सब हम अपने एक संबधी के निमित्त कर रहे हैं जिसे हम जानते हैं कि कारनेलियन की सीमा के ऊपरही किसी दृढ़ और गुप्त दुर्ग में बंद है ।

पहाड़ी—मेरी जान तो इस ओर कोई ऐसा दृढ़ स्थान नहीं है । हां एक है जो पोचिन

के पादरियों के हाथों में है—और हां उसे दृढ़ दुर्ग भी दूसरे शब्दों में कह सकते हैं।

यह सुनतेहीं आदू को उस अरगन बाजे का बजना और उसके साथही साथ भगवान की प्रार्थना की गीतें याद आ गईं जो उसने उस समय सुने थे जब उसे लोग पकड़ के उस दृढ़ मकान में ले गये थे, जिसमें बेरेन जेरनिन कैद था। यही सब सोच बिचार के आदू ने कुछ देर के उपरान्त उत्तर दिया—

"तो क्या वहां की पहुँच में कोई कठिनता नहीं है।"

मेजिनी भी इस प्रश्न का तात्पर्य समझ गया और उत्सुकता से उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

पहाड़ी—वह बड़ाही पेचीला रास्ता है परन्तु चौड़ा इतना कि उस पर दो खच्चर सरलतापूर्वक चल सकें, वह सीधे उस दुर्ग के द्वार पर्यन्त जाता है। और यह रास्ता उसी रास्ते से कट के निकला है जो सीधा कारनीला से इटली की ओर जाता है, जिसपर आते २ हम लोग भटक गये हैं। एक समय बीतता है कि जब उस दुर्ग के रहनेवाले पादड़ी अपनी योग्यता तथा मेहमानदारी के निमित्त विख्यात थे, परन्तु यह बात क्रमशः कम होती गई और अब बहुत दिनों से कोई व्यक्ति वहां जाना और उनकी शरण लेना पसन्द नहीं करता। परन्तु हमारी समझ में यह बात नहीं आती कि अन्त पहाड़ी लोग रहते किस प्रकार से हैं और खाते वहां क्या हैं क्योंकि न तो उनके पास कोई भूमि भाड़ाही है, और न कोई गाय भेड़ी वा जागीर ही है। और जब पथिकों की मेहमानी नहीं किया करते तो फिर न जाने किस आमदनी के सहारे पर उन्होंने अपना इतना बड़ा परिवार पाल रक्खा है।

यह सुनके आदू ने एक मतलबभरी दृष्टि मेजिनी पर डाली और फिर पहाड़ी की ओर फिर के पूछा—

"परन्तु क्या वहां चारों ओर के रहनेवाले उनकी ओर से अच्छे ख्याल रखते हैं?"

पहाड़ी—यदि आपका इस प्रश्न से यह तात्पर्य है कि वे पथिकों को कोई कष्ट तो नहीं पहुँचाते तो मैं कह सकता हूं कि "नहीं" क्योंकि वे सदैव अपनेही कामों के ध्यान में डूबे रहते हैं उन्हें दूसरों से कोई सम्बन्ध नहीं।

आदू—मेरे मित्रो! मैं आपकी बातों से यह परिणाम निकालता हूं और साथही यह भी कह देता हूं कि वह आपत्तियां जो इस छोटे पथ में हैं और जिनका वि-

वरण मैं इतः पूर्व आप लोगों से कह चुका हूं, कुल उसी दुर्ग में हैं, वाहर कुछ भी नहीं।

मेजिनी—और मैं भी ठीक ऐसाही अनुमान करता हूं!

पहाड़ी—परन्तु यह कैसे ?

पेनिल्ला—जव आप लोग इतने स्वच्छहृदय हैं और आप लोगों ने इतनी सचाई से वात चीत की है तो हम भी यही उचित समझते हैं कि आप से निष्कपट वात चीत करें और कोई वात अपने भेद की छिपा न रक्खें। यद्यपि हमारी कहानी या हमारे कामों का विस्तार तो वहुत वड़ा है परन्तु मैं संक्षेप में इतना कहना उचित समझता हूं कि जरमनी का एक उच्च श्रेणी का प्रतिष्ठित व्यक्ति उस गिरजे या दुर्ग में कैद है। और एक वात यह भी सुन लो कि अभी परसोंही की वात है कि हमने स्वयं उसमें वेरेन जेरनिन को देखा है और—"

इटेनी—(वाधा दे के और चिल्ला के) वेरेन जेरनिन! क्यों अजनवी महाशय—आप ने वेरेन जेरनिनही का नाम न लिया है ?

"हां लेडी !"

इतना कहके आश्चर्य से आटू इटेनी की उत्कण्ठा को देखने लगा और फिर वोला—"वेरेन जेरनिनही उस दुर्ग में वन्द है !"

इटेनी—(घवराहट से) तो क्या इस नाम के दो प्रतिष्ठित व्यक्ति वायना में हैं ?

आटू—नहीं कदापि नहीं, केवल एकही—वरन मैं आपको विश्वास दिला सक्ता हूं कि इस नाम का वायना में एकही व्यक्ति है। परन्तु आपका हय प्रश्न लेडी हमें वड़े आश्चर्य में डालता है। आपने यह प्रश्न किस कारण से किया ?—हमें उत्तर दो तो हम तुम्हें स्पष्ट रूप से समझा दें—क्योंकि मुझे स्वयं कई वेर सन्देह हुआ है कि वेरेन जेरनिन दो तो नहीं हैं और या वह दोनों एक साथ के उत्पन्न हुये भाई होंगे, क्योंकि दोनों की सूरत में तनिक भी विभिन्नता नहीं है।

इटेनी—वाह महाशय! यही प्रश्न तो हमारा आप से था क्योंकि वहुत दिवस वीते जव एक व्यक्ति थिउडोर वेरेन जेरनिन नामक से मुझ से प्रती हो गई थी। और ठीक उसी समय में जव हम दोनों का व्याह होनेवाला था वह अचांचक एक दम से गायव हो गया, कोई वर्ष के उपरान्त मुझे यह समाचार मिला कि वह वायना में है। मैं यह सुन्तेही उस नगर में पहुँची; और दो मास वीते कि

मैंने उस व्यक्ति को देखा कि जो बेरेन जेरनिन की उपाधि से भूषित है और जिसने कुल सम्पत्ति बेरेन जेरनिन की अपने हाथों में कर ली है। परन्तु आह! महाशय; एक स्त्री का चोट खाया हुआ हृदय जैसा कि मेरा है कभी धोखा खाही नहीं सकता। वह व्यक्ति जो इस समय वायना में है और जो अपने को बेरेन जेरनिन कहता है कदापि वह दयालु, प्रातिष्ठित, सुन्दर, मर्यादाशील, थिउडोर नहीं है, जिससे मुझ से प्रीति हो गई थी; क्योंकि वह एक बड़ाही सुशील, वीर और उदारहृदय युवक था। यद्यपि मुझे उसे देखे बहुत दिवस बीत चुके हैं और कदापि समय के हेर फेर ने उसके बालों को सुफेद कर दिया हो, नेत्रों में उतनी चमक न रह गई हो और चेहरे पर भी बल पड़ गये हों और वह सीधा तथा तना हुआ शरीर झुक गया हो—इतनाही नहीं वरन कदाचित् उसके उस समय के ध्यानों में भी बहुत कुछ अन्तर पड़ गया हो और उसका हृदय सांसारिक आनन्द में पड़के बिलकुलही नष्ट हो गया हो, वह अब अनेक पापों का भागी होने लगा हो तो भी मैं उसे भली प्रकार पहिचान लूंगी चाहे वह अपनहिी जैसी सूरतवालों में के सौ या सहस्रही व्यक्तियों में क्यों न खड़ा किया जावे।

आट्रू—भगवान तुम पर दया करे लेडी, तुमने तो हमारे हृदय में अनेकानेक प्रकार के ध्यान उत्पन्न कर दिये। "उसी कैदी को—आज छः वर्ष बीते, उसी स्थान में हमारे इस साथी ने बन्द देखा था" आट्रू ने मेजिनी की ओर ऊँगली उठा के कहा और जब उस दिन उस कैदी ने मुझ से अपने छुटकारे के निमित्त प्रार्थना की थी तो उसने भी यही कहा था कि मैं बहुत दिवसों से यहां बंद हूं। लेडी महाशया यदि आप अपने थिउडोर बेरेन जेरनिन का कुछ भी हाल जानती हों तो मुझ से कृपा कर के कह दीजिये क्योंकि मैं इस बारे में एक घनिष्ट संबंध रखता हूं। वह व्यक्ति जो वायना में बेरेन जेरनिन के नाम से विख्यात है मेरा बहनोई है अर्थात् मेरे बहिन ऐडा का पति है।

इटेनी—तो महाशय हम दोनों व्यक्तियों का साक्षात् इस पहाड़ी स्थान में अचानचक नहीं हुआ वरन भगवान को ऐसाही कुछ करना था। तुम तो अपनी जान एक ऐसे व्यक्ति के छुटकारे के निमित्त जाते हो जिसे तुम अपना संबंधी समझे हुये हो। और मैं इस ध्यान से भग्नहृदय हो के अपनी जन्मभूमि को लौटी जा रही थी कि मेरा प्राणप्यारा—मेरे नेत्रों का तारा थिउडोर या तो स्वर्गधाम को सिधारा या

उसने किसी अन्य स्त्री से व्याह कर लिया है और यह दूसरा कोई दुष्ट जो उसकी सूरत का है कपट से उसकी अतुल सम्पत्ति का स्वामी वन बैठा है। मैं आपसे साफ २ कहती हूं कि मेरे हृदय में यह बात पूरी तौर से जमी हुई है कि यह बेरेन कपटी है, वह असली बेरेन नहीं। परन्तु मैं एक अवला और फिर एक बेगाने देश में जहां कोई अपना नाम को भी सहायक नहीं किस प्रकार इस कठिनता को दूर कर सकती वा इस रहस्य को खोल सकती थी। परन्तु अब आपने मुझे एक अनूठी आशा की झलक दिखाई है—आह! आपने मुझे यह सुना कर पागल बना दिया है कि मेरा प्यारा थिउडोर अबलों जीवित है और मुझ से कुछ विशेष अंतर पर नहीं। भगवान का सहस्रों धन्यवाद मैं देती हूं कि उसने इस आल्प्स की बरफीली पहाड़ी पर लाके मुझ से आपकी साक्षात् करा दी। परन्तु अभी आपने मेरा सारा वृत्तान्त तो सुनाही नहीं; जिस समय आप उसे सुनेंगे उस समय आप निर्णय कर सकेंगे कि यह स्त्री दृढ़प्रतिज्ञ है वा नहीं कि जिसने एकही बार संसार में प्रित लगाई और फिर मनुष्यों और सुन्दर पुरुषों से भरे हुये इस संसार में दूसरे की ओर इस अभिलाषा से नेत्र उठा के भी न देखा।

इतना कह के इटेनी कुछ देर के निमित्त चुप हो गई।

इसके उपरान्त उसने एक सरलहृदया बालिका की भांति दुःखित हृदय से अपनी कुल कहानी बचपने से कह सुनाई—जिससे पाठकगण भली प्रकार विज्ञ हैं और जिसे आटू ने तो हृदय के कानों से सुनाही परन्तु इसके अतिरिक्त मेजिनी तथा उन दोनों पहाड़ियों ने भी हार्दिक उद्वेग से उस कहानी को श्रवण किया जिसे सुनके देवीतुल्य इटेनी की प्रतिष्ठा उनके हृदय में बेतौर जम गई।

जिस समय इटेनी अपना किस्सा कह रही थी—उस समय उसका चेहरा एक अकथनीय तेज से देदीप्यमान हो रहा था—उसके बड़े २ काले नेत्रों से अग्निस्फुलिङ्ग बहिर्गत होते जान पड़ते थे—और इस आशा से उसके होठों पर एक मन्द मुस्कराहट भी बोध होती थी।

कामिनी के मुखारविन्द पर एक ज्योतिर्मय प्रकाश जान पड़ता था—माथे पर के पड़े हुये बल, दूर हो गये थे जिस्से जान पड़ता था कि समुद्र ने हिलोरें लेना छोड़ गंभीरता धारण की है—उस्के नेत्र प्रसन्नता से चमक रहे थे—और उसके कपोलों के दोनों ओर के लटकते हुये केशों में अनिर्वचनीय कान्ति का अनुभव होता था।

कामिनी की रामकहानी सुनती समय वहां के उपस्थित चारो व्यक्तियों पर मौन देवी का पहरा सा बैठ गया था। और कहानी सुनने पर उसके एक २ अक्षर की सचाई का सबके हृदय में विश्वास जम गया।

इटेनी—(अपनी कहानी अन्त तक पहुँचा के) भला आप लोग अनुमान कर सकते हैं, कि कितना आनन्द मुझे इस गुप्त रहस्य के सुनने से हुआ है, जो आपलोगों ने दया कर अभी कहा है। निस्सन्देह ईश्वरी प्रेरणाही से मैं भटक के इस ओर आ निकली और मैं सत्य कहती हूं कि कोई गुप्त स्वर मेरे कर्ण कुहर में यह शब्द कहता जान पड़ता है, कि मेरा जीवनाधार—प्यारा थिउडोर वहीं है, जो उस पहाड़ी दुर्ग में बन्द है। अब जबलों कि यह रहस्य न खुले तबलों मैं इन पहाड़ों पर से टलनेवाली नहीं हूं। और तुम भी मेरे मित्रो (यह उसने उन दोनों कारनेलियइन पहाड़ियों की ओर देख के कहा) आशा है कि दया करके मेरे इस कार्य में योग देओगे, इस काम में तत्पर होने से तुम्हारी किसी प्रकार की हानि न होने पायेगी, क्योंकि मैं धनाढ्य हूं—और तुम्हारी हानि का दूना इनाम के साथही साथ तुम्हें चुका दूंगी।

इस पर दोनों पहाड़ियों ने अपनी सम्मति प्रगट की और इन लोगों के साथ चलना स्वीकार कर लिया।

इसके उपरान्त उन दृढ़ पहाड़ियों में से एक ने एक छोटा बेग टेबुल पर रख दिया, इसमें भोजन था—जिसे निकाल के इटेनी ने उदरपूर्ति की—और जब वह खा चुकी तो दोनों पहाड़ी भी उसी टेबुल पर आ बैठे और उन्होंने खूबही छक के भोजन किया।

अन्त भोजन समाप्त हुआ और कुल मण्डली अग्नि के किनारे बैठ के उसी पूर्वोक्त विषय पर विचार करने लगी।

अपनी २ पारी में आटू और मेजिनी ने उन कुल बातों से अपने साथियों को विज्ञ कर दिया जो उस दुर्ग में इन्होंने देखीं और अनुभव की थी, जिसमें कि बेरेन बन्द था। और जब उन्हों ने अपनी २ राय के साथ अपनी २ रामकहानियों को समाप्त किया तो सब मिलके दुर्ग की भीतरी अवस्था पर वादाविवाद करने लगे और अन्त यही निश्चय किया गया कि उस दुर्ग के गिरजाही में बेरेन बन्द है।

आटू—अच्छा तो अब आप लोग सुनिये, कि मैंने कौन सा मनसूबा बेरेन के छुड़ाने का बांधा है। मेजिनी को और मुझे वे हथियारबन्द सिपाही चाहे वे कोई

हों, जो उस गिरजे में रहते हैं, भली प्रकार पहचान चुके हैं । इस कारण हम दोनों तो किसी प्रकार उस खुले हुये गुफावाले पथ से जाके और फाटक पर खड़े होके उनसे टिकने के निमित्त स्थान नहीं माँग सकते । हां आप लेडी—और आप के साथी सचमुचही बिना रोक टोक के और बिना हिचकिचाये उस द्वार पर जा सकते हैं । और जब वहां आप लोग पहुंच जायें तो इसे निश्चय करें कि क्या यथार्थ में हमलोगों ने बेरेन जेरनिन को वहां देखा था या वह दूसरा व्यक्ति है, और यदि वह बेरेन जेरनिनही थे तो अब वह उस दुर्ग में हैं वा नहीं। हां तो अब आप लोग कल प्रातःकाल उस पथ से दुर्ग की ओर चलेंगे जिसका वृत्तान्त आप के साथियों ने किया है । तबसे इधर से हम लोग भी इस गुप्त पथ से दुर्ग की ओर चलेंगे जिसका निश्चय हो चुका है कि यह पथ दुर्गही की ओर जाता है । जितना शीघ्र कि दोनों दल—अर्थात् तुम लेडी अपने साथियों सहित एक ओर से पहुँचो और मैं अपने मित्र के सहित दूसरी ओर से उस दुर्ग में पहुँचूं और जो सोचा है उसमें मिलके कृतकार्य हो जायँगे। तो फिर हमलोगों का पृथकही पृथक आना भी उचित होगा, और इसी झोपड़ी में लेडी ! हमलोगों की पुनः साक्षात् होगी। इसके उपरान्त जब कृतकार्यता का मुकुट हमलोगों के माथों पर होगा और हम सब फिर यहां एकत्रित हो जैंगे उस समय जैसा देखेंगे वैसा काम करेंगे । इस मनसूबे को इटेनी, मेजिनी, और उन दोनों पहाड़ियों ने साहर्ष स्वीकार किया । अब निशा कुछ विशेष व्यतीत हुई थी, और प्रातःकाल के कामों के लिये एक प्रकार का निपटेरा भी हो चुका था, इस कारण मण्डली ने विश्राम किया ।

इटेनी ने अपने को उस मोटे शाल में भली भांति लपेट लिया और उस दूसरी कोठरी में जाके सो रही ।

इधर इस दूसरी कोठरी में अग्नि भली भांति धधकाई गई, और चारों ने उसके चारों ओर पैर फैला के खर्राटे लेना प्रारम्भ किया ।

निशा निरापत्ति व्यतीत हो गई ।

प्रातःकाल दोनोंही पथिक अपने स्थानों से उठे, प्रातःकाल का भोजन शीघ्रता से टेबुल पर चुना गया और उन लोगों ने साथही बैठ के भली भांति भोजन किया और और फिर सब अपनी २ राह लगे ।

सैंतीसवाँ बयान ।

गिरजा वा गुप्त-दुर्ग ।

हम पहले लेडी इरेनी, और उसके उन दोनों हृष्ट पुष्ट पहाड़ी साथियों का वृत्तान्त सुनायेंगे।

वे तीनों मजबूत खच्चरों पर आरूढ़ होके उसी पथ से जिसपर वे अन्धकार में भटक के आगे बढ़ गये थे, लौटे जा रहे थे।

एकही घण्टे के उपरान्त वे उस पथ पर पहुँच गये जिसपर उन्हें चलना उचित था। यह पथ लगभग चार फीट के चौड़ा था। और इसके दोनों ओर भयानक गहिरी घाटियां थीं, और कहीं २ इन घाटियों का अन्त हो जाता था और उनके स्थान दोनोंही ओर ऐसी बीहड़ गुफायें तथा झाड़ियां देख पड़तीं कि उन्हें देख के उन मनुष्यों को रोमाञ्च हो आता था।

एक पहाड़ी—(दोनों ओर की गहरी घाटियों को देख के और बड़ेही धीरे से) दोनोंही ओर भयानक गहिराई है लेडी ! और रात को हमलोग इसी पथ से झोपड़ी पर्यन्त पहुँचे थे।

इरेनी—तो क्या तुम्हें नहीं मालूम था कि हम ऐसे भयानक पथ पर हैं ?

इरेनी ने यह कांपते हुये और घाटियों की ओर नेत्रपात करके कहा, क्योंकि वह देख रही थी कि यहां तो यदि दिन को तनिक भी पथिक चूक जाय तो उसकी हड्डियों तक का पता न चले।

पहाड़ी—यदि हमें मालूम होता कि यह ऐसा भयानक पथ है तो भगवान की सौगन्द हम इस ओर का नाम भी न लेते। परन्तु इससे आप निश्चिन्त रहें कि इन खच्चरों के जमे हुये पैर दिन हो चाहे रात, किसी प्रकार बहकने के नहीं। आप देखही चुकी थीं लेडी कि, जब हमलोग रास्ता भूले तो न तो हम्ही को और न हमारे साथीही को मालूम हुआ कि हम कहां जाते हैं, परन्तु भगवान का इससे कुछ औरही तात्पर्य था, उसने हमलोगों को भटका के तुम्हें उस झोपड़ी के द्वार पर जा खड़ा किया जिसमें एक ऐसा व्यक्ति मिल गया जिसने तुम्हारे भग्न-हृदय में फिर से आशा का आवेश डाल दिया, और साथही प्रत्येक प्रकार की सहायता पर भी तुम्हारे कटिबद्ध हुआ।

इरेनी—भला तुम्हारी जान में हम उस गिरजा पर्यन्त कबलों पहुँच जांयगे ?
पहाड़ी—सन्ध्या से पहले तो किसी प्रकार पहुँचते नहीं दिखाई पड़ते !

वे लोग घाटी के बीचों बीच से बढ़ते चले जाते थे। इरेनी का भय प्रत्येक पग पर कम होता जाता था क्योंकि वह देखती थी कि सचमुचही इन जानवरों के जमे हुये पैरों में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं पड़नेवाली है।

चलते २ राह में इन लोगों को एक बहुत बड़ी झील दिखाई पड़ी, जिसके किनारे के बहुतही समीप से इनका रास्ता था और जिसके स्थिर जल पर उस विशालाकार पर्वत और उसके बरफ से ढँकी हुई चोटियों की परछांही बहुतही साफ पड़ रही थी और जिसे देखके ऐसा बोध होता था, मानों किसी बहुत बड़े दर्पण में उसके ऊपर का प्रतिबिम्ब पड़ रहा हो।

परन्तु अब हम पर्वत आलपाइन के उन दृश्यों को जो इरेनी के दोनों ओर बीतते जाते थे तथा अन्यान्य उन बातों को जो पहाड़ी तथा इरेनी के मध्य होती आई थीं, न लिखके एकबारगीही इन्हें लिये दिये उस मठ या गिरजा या गुप्त दुर्ग के फाटक पर ला खड़ा करते हैं।

हां इतना हमें अवश्यही लिखना होगा कि सूर्यास्त में अभी एक घण्टा बाकी था जब यह छोटा झुण्ड एक दृढ़ मकान के सामने जा खड़ा हुआ।

अब हमारे पाठकों को इस दृढ़ मकान के विषय में यह विचार लेना चाहिये कि यह पहाड़ का एक टुकड़ाही था, जो भीतर से प्राकृतिक भांति से खोखला था जिसमें कि यह मठ वा गिरजा स्थापन किया गया था।

इस मठ के चारों ओर प्राकृतिक दीवारें घिरी हुई थीं जिनसे सटी हुई मनुष्य के हाथों की बनी हुई एक दीवार और भी थी। पहिली दीवार में दूसरी दीवार के सटे रहने से यह दूसरी दीवार भी इतनी दृढ़ हो गई थी, कि न तो इसे भयानक से भयानक आंधीही से गिरजाने का भय था और न कोई बैरीही ऐसे अभेद्य दुर्ग को विजय कर सकता था।

प्रथम तो उस स्थान को देख के किसी को मनुष्यों के वहां होने का सन्देह भी नहीं हो सकता था, दूसरे यदि होता भी तो वे उस स्थान का क्या बना सकते थे। धुवां निकलने की चिमनियां पहाड़ के विशेष स्थानों में ऐसे छिपा के निकाली गई थीं, कि मनुष्य उन्हें नहीं देख सकता था। इस दुर्ग के, जैसा ऊपर लिखा गया है, केवल

दोही पथ थे। प्रथम तो वही पत्थर का जिसमें वह बड़ा फाटक लगा हुआ था, दूसरे वह सुरंगवाला जो ठीक इसके पिछवाड़े की ओर था।

यद्यपि इसके दो रास्ते अवश्यही थे, परन्तु उसपर भी किसी प्रकार वैरियों से आपत्ति का पहुँचना सम्भव नहीं था। क्योंकि एक तोप को उस फाटक पर और उस सुरंग में रहनेही से एक बड़ी से बड़ी फौज का मुँह भली भांति मोड़ दिया जा सकता था।

जब वे लोग उस बड़े फाटक पर पहुँच गये तो एक पहाड़ी ने अपने टट्टू से उतर के द्वार में के लटकते हुये एक बड़े कड़े को ज़ोर से खींच लिया जिसमें की लगी हुई डोरी के खिंचने से भीतर का घण्टा बोलने लगा।

कुछही मिनटों के उपरान्त फाटक खुला और एक लाल चेहरे का पादड़ी हाथ में लालटेन लिये हुये बाहर निकल आया। इसके चेहरे से बड़ी क्रूरता प्रगट हो रही थी बाहर आतेही इसने कड़े स्वर में पूछा।

"तुम कौन हो और क्या चाहते हो?"

पहाड़ी—पूज्यवर! धर्मपिता—हमलोग केवल एक निशा के निमित्त इस धर्मशाले में स्थान चाहते हैं।

पादड़ी—तुम लोग हो कितने?

पहाड़ी—तीन—एक स्त्री, और दो पथ दिखानेवाले।

पादड़ी—अच्छा तो सत्पुरुषो, तुम लोग भीतर आ जाओ, रात के समय हम लोग कदापि पथिकों को पहाड़ों में भटकने का कष्ट नहीं उठाने देते, हमारी मेहमानदारी विख्यात है।

पहाड़ी—(बहुतही धीरे से जिसे वह पादड़ी बिलकुलही न सुन सका) थुड़ी है, तुम्हारी इस मेहमानदारी पर पाजियो!।

सचमुचही वह पादड़ी इन शब्दों को न सुन सका क्योंकि वह इस समय बड़ा द्वार खोल रहा था जिसके चूरों पर घूमने से महा कोलाहल मच रहा था।

पादड़ी—टेडरिक, चलो!

पादड़ीने इतनाही कहा था कि साथही एक लम्बा चौड़ा हथियारबन्द मनुष्य उसके सामने आ खड़ा हुआ।

पादड़ी—इन दोनों पहाड़ियों तथा खच्चरों को अपने साथ ले जाओ और इन्हें उनके खच्चरों के बाँधने का स्थान दिखा दो, और फिर उनके रहने के निमित्त स्वयं कोई

कोठरी दे दो और साथही उनके भोजन इत्यादि का भी प्रबन्ध कर दो। (इरेनी से) लेडी ! मेरे साथ आओ मैं आप को अपनी मजदूरनी के सुपुर्द कर दूंगा जो आशा है कि आप की सेवा भली प्रकार कर सकेगी।

इरेनी पादड़ी के पीछे २ हो ली जो बहुत बड़े २ मकानों से होता हुआ उसे एक मकान में ले गया।

अन्त यह एक छोटी कोठरी में पहुँची जिसमे एक युवती स्त्री लोहे के कांटों से एक बहुतही उत्तम मोजा बिन रही थी जो इन दिवसों के ध्यान से अच्छा नहीं कहा जा सकता था वरन उसकी कारीगरी आजकल की कारीगरियों से भी उत्तम थी।

पादड़ी—(उसी युवती से) डेम मिलडेडा—यह देखो एक लेडी हैं जो हम लोगों की मेहमानी की इच्छा करती हैं। मैं इन्हें तुम्हारे पास छोड़ता हूं। इन्हें भोजनागार में ले जाओ और उत्तमोत्तम भोजन से इनकी मेहमानदारी करो—भगवान तुझे इसका बदला देगा पुत्री !

जिस समय पादड़ी ने ये अन्तिम शब्द कहे उस समय इरेनी उसका मुँह देखने लगी। परन्तु वह देर लों वहां न खड़ा रहा, इतनी आज्ञा देके वह चल दिया। और इधर उस स्त्री ने एक लम्प टेबुल पर से उठा लिया और कहा—

"मेरे पीछे २ चली आओ लेडी !"

इरेनी उस मजदूरनी के साथ सीढ़ियों पर से होती हुई एक बड़ेही सजे सजाये कमरे में आ खड़ी हुई। अँगीठी के निकट बहुत सी लकड़ियां रक्खी हुई थीं। जिन्हें लेके उस स्त्री ने अँगीठी में डाल दिया जिससे आग और भी भड़क उठी और लाल लपटें अग्नि की निकल २ के चिमनी के चारो ओर लपकने लगी।

इसके उपरान्त डेम मेलडिडा यह कहती हुई कोठरी के बाहर चली गई कि मैं कुछही मिनटों के उपरान्त आती हूं, और जब वह चली गई तो इरेनी ने स्वतन्त्रता से कोठरी को निरीक्षण करना प्रारम्भ किया।

देखते २ सहसा एक आश्चर्यमय चीख उसके होठों से निकल पड़ी।

क्या यह सम्भव था ?

हां—अब कुल आशङ्कायें इसकी निश्चय होती जाती थीं।

उस कोठरी में कोई खिड़की वा छेद न था, वरन केवल छत में एक गोल सूराख था जिससे आकाश दिखाई पड़ता था।

अब उसे स्मरण हो आया कि इस कोठरी का जिक्र केवल मेजिनी नेही नहीं किया था वरन आटू पेनिल्ला ने भी इसी के बारे में कहा था, और अब उसने अपने दोनों हाथों को मलते हुये यों बरबराना प्रारम्भ किया "हां—यही वह स्थान है जहां हमारा प्यारा—प्राणप्यारा थिउडोर बन्द है।"

इसी समय द्वार खुला और डेम मेलडिडा कई एक रकाबियां जो भिन्न २ प्रकार के मेवों से भरी हुई थीं और जिनमें दो एक बोतलें शराब की भी रक्खी हुई थीं, लिये भीतर आई।

डेम मेलडिडा—यह आप के भोजन के निमित्त मैं ले आई हूं लेडी। और वहां (यह कहके एक द्वार की ओर उँगली उठाई जो उस द्वार के ठीक सामने था जिससे इरेनी और वह स्वयं भी अभी आई थी) उस कोठरी में आपका बिस्तर लगा हुआ है। अच्छा तो अब मुझे आज्ञा दीजिये।

इरेनी—हाँ तुम जा सकती हो, और साथही मैं तुह्मारे इस परिश्रम के लिये बड़ाही धन्य-वाद देती हूं।

डेम मेलडिडा यह सुनके चली गई।

„आह !" इरेनी ने आपही आप कहा जब वह एक बेर पुनः अकेली हो गई—

"आह ! यदि यथार्थ में ऐसाही है कि मैं और मेरा प्यारा थिउडोर दोनो इस समय एकही मकान की दीवारों के भीतर हैं तो भगवान ऐसा भी अवश्यही कर देगा कि यह जुदाई की घड़ी कुछही घण्टों के निमित्त रह जायेगी। क्योंकि तू—सर्व शक्तिमान जगदीश्वर ! भली प्रकार हमारे हृदय की स्वच्छता को जानता है—और साथही इससे भी अवगत है कि मैं स्वार्थी नहीं हूं ! यदि मेरे प्राणप्यारे ने किसी अन्य से व्याह भी कर लिया होगा तो मैं दोनोंही के निमित्त प्रार्थना करूंगी;—परन्तु, आह ! वह व्यक्ति—वह ठग जिसे मैने वायना में देखा था—नहीं—नहीं—वह कदापि वह थिउडोर नहीं है, जिसे मैं भली प्रकार जानती हूं, और जिसे मैं हृदय से प्यार करती हूं !

इरेनी की यह बातें सहसा एक खड़खड़ाहट के शब्द से रुक गईं जो उस कमरे में सुन पड़ता था जो उसके सोने के निमित्त बनाया गया था और जिसके द्वार बन्द थे।

वह अपने स्थान से उठी परन्तु उसका रक्त उसकी नसों में मारे भय के ठण्ढा पड़ गया था।

क्या कोई धोखा उसे दिया जाता था ?

और यदि सच पूछो तो उसका अपने हृदय से यह प्रश्न करना बहुतही ठीक था क्योंकि वह एक ऐसे स्थान में थी जहां भयानक से भयानक घटना का संघटित हो जाना भी कोई आश्चर्य की बात न थी।

वह शब्द पुनः सुन पड़ा और अबकी स्पष्ट रूप से जान पड़ा कि कोई व्यक्ति कोठरी की दीवारों के बीच में घूम रहा है और उसी का यह शब्द है।

इतने में हठात् उन तख्तों की दीवार में से जिनसे यह कोठरी बनाई गई थी, पांच चार तख्ते नीचे सरकते जान पड़े और दम के दम में उसी स्थान पर एक द्वार दीख पड़ा जिसमें से शीघ्रता पूर्वक निकल के दो व्यक्ति इस कोठरी में घुस आये।

यह देखतेही इरेनी जोर से चिल्लाई "भगवान मेरी रक्षा करो" और फिर मारे भय के अपने दोनों हाथ मलती अपने घुटनों के बल बैठ गई।

"यह कण्ठस्वर ! क्या यह सम्भव है ?"

यह उन अजनबियों में से एक ने कहा जो इस प्रकार कोठरी में घुस आये थे।

यह सुनतेही यूनानी लेडी उठके खड़ी हो गई, क्योंकि उसके कानों में यह आटू पेनिल्ला का कण्ठस्वर बोध हुआ।

वह तुरन्त अपने पीछे की ओर फिरी और उस समय उसकी प्रसन्नता का क्या ठिकाना था जब उसने आटू पेनिल्ला तथा मेजिनी को अपने सामने खड़े, पाया।

अट्ठतीसवाँ बयान।

गुप्तदुर्ग की विशेष कोठरी।

इरेनी अपने दोनों साथियों के यों अचांचक आ जाने से बड़ीही विस्मित हुई, और उधर उन दोनों को भी इरेनी के मिल जाने से कुछ कम आश्चर्य नहीं हुआ था। साथही वे बड़ेही कौतूहलवशवर्ती तो तब हुये कि जब उन्होंने अपने को उसी कोठरी में पाया जिससे वे दोनोंही भली भांति परिचित थे।

इस अचांचक की साक्षात् से जो असर उन तीनों पर पहुँचा था वह कुछही देर में दूर हो गया—दोनोंही ओर के व्यक्ति अपने आपे में आये—और उस ध्यान ने दोनोंही ओर के व्यक्तियों के होठों पर मन्द मुसकान प्रगट कर दिया कि जब एक ने दूसरे को यों अचांचक अपने सामने पाया था, और दोनोंही ओर एक भारी भय एक-दूसरे को देख के उत्पन्न हो गया था। इरेनी ने जब उन्हें भी दीवार से निकल के

भयभीत देखा था तो तुरन्तही उसने खड़ी हो और अपना परिचय भली भांति दे उन्हें सन्तोष दिलाया और साथही उस कोठरी का विवरण भी संक्षेप में कर दिया।

जब उस घटना का असर भली भांति तीनों पर से पृथक् हो गया तो इरेनी ने उन्हें बैठने के लिये कहा और आप उसने आगे बढ़के कोठरी का द्वार बन्द कर दिया।

अब उन तीनों ने बैठके अपनी २ रामकहानी सुनानी प्रारम्भ की।

इरेनी ने अपने तमाम दिन के भ्रमण का वृत्तान्त और फिर सन्ध्या समय इस मठ में प्रवेश करने पर्यन्त से लेके अब तक का सब हाल पृथक् २ करके सुना दिया। इस पर आटू ने भी प्रातःकाल से लेके इस समय पर्यन्त की कुल व्यवस्था अपनी तथा मेजिनी की यों कहनी प्रारम्भ की—

"जैसेही आप अपने साथियों सहित हमसे पृथक् हुई लेडी! वैसेही हमने तथा हमारे मित्र ने आगे बढ़के वही दाहिने हाथवाला रास्ता लिया। मैंने देखा कि राह बहुतही स्वच्छ और सीधी चढ़ती चली गई थी, और इस कारण दो घण्टे पर्यन्त निरापत्ति हमलोग शीघ्रता से आगे बढ़ते चले गये, परन्तु उस दो घण्टे के भ्रमण के उपरान्त अब हमलोग एक ऐसे स्थान पर आ खड़े हुये कि जहां एक छोटा गिरजा बना हुआ था और जहां से दो पथ पृथक २ होके दाहिने और बायें ओर को जाते थे। अब यह समय हमलोगों के निमित्त बड़ाही कठिन था क्योंकि हमलोग यह निर्णय करने में असमर्थ थे कि कौन पथ सीधा गुप्तदुर्ग की ओर गया है, अन्त विचार के मैंने यही निर्णय किया कि एक पथ पर तो मेजिनी जाये और दूसरे की मैं खोज लगाऊं। और जब हमलोग पथों का पूरा २ पता लगा चुकें तो पुनः आके इसी गिरजा में एकत्रित हो जायें।

"यह निर्णय करके हमलोग तुरन्तही पृथक २ हो गये। मैं अपने पथ पर लगातार दो घण्टे पर्यन्त बढ़ता चला गया जब मैंने उसे क्रमशः सँकरा होते पाया और अन्त यह पथ एक ऐसी गुफा में चला जाता था जिसकी लम्बाई छः गज के लगभग रही होगी। शीघ्रता से मैं इसमें भी घुस गया और उसके उस पार जाने लगा; इस गुफा में बेतौर अन्धकार चारों ओर छाया हुआ था। मैंने अब अपने हाथों को अपना राह दिखानेवाला बनाया अर्थात् टटोलता हुआ मैं आगे बढ़ने लगा, टटोलते २ एक स्थान पर मेरा हाथ किसी लकड़ी पर जा पड़ा और जिसे टटोलतेही मुझे मालूम हो गया कि यह कोई द्वार है। अब मैं समझ गया कि हमारा परिश्रम ठिकाने लगा, परन्तु अकेले रहने

इसी समय सहसा हमारे कानों में किसी का शब्द सुन पड़ा—यह शब्द स्त्रियोंही का था—और बहुतही निकट से सुन पड़ता था। यह शब्द ऐसा जान पड़ताथा कि या तो गुफा से आ रहा है, और या उसी लकड़ी के द्वार में से आ रहा है, जिसे हम इतःपूर्व देख चुके थे। इसके अतिरिक्त स्वर इतना धीमा था कि हमलोग यह न मालूम कर सके कि वह बातें क्या हैं!

इरेनी—वह शब्द निश्चय हमारे और यहां की मजदूरनी की बातचीत करने से सुन पड़ा होगा।

आद्रू—ऐसाही होगा लेडी! हां तो हमलोगों ने यह इच्छा की कि चुपचाप हमलोग और निकट चलें, और सुनें कि वह बातचीत क्या होती है। क्योंकि हमने ऐसा अनुमान किया कि यदि इस बातचीत का कोई अंश भी हम सुन पायेंगे तो आश्चर्य नहीं कि उससे हम कोई अपना विशेष प्रयोजन फिर कर सकें। सोचते २ मैंने यह भी निश्चय किया लेडी! कि तुम अवश्यही मठ में जाने में कृतकार्य हो चुकी हो, और उन दोनों बात करनेवाली स्त्रियों में एक कण्ठस्वर तुम्हारा भी था। अब तुम अनुमान कर सकती हो लेडी! कि कितना धैर्य उस समयमें इस आशा ने हमलोगों को दिलाया और हमलोगों ने जो कुछ मनसूबा बांधा था उसे पूरा करने के निमित्त उद्यत हुये। निदान, मैंने मेजिनी का हाथ पकड़ लिया, और उस काठ के पल्ले को हटा के अन्धकार में सीढ़ियों पर से जो, उसके भीतर बनी जान पड़ी, धीरे २ उतरना प्रारम्भ किया। परन्तु अभी अन्तिम सीढ़ी पर्यन्त में न पहुंचा रहा होऊंगा कि सहसा मेरा पैर फिसल गया। और मैं शीघ्रता से लड़खड़ाता हुआ नीचे की ओर चला और फिर कुछ काठ के तखतों से आके टकराया। मेजिनी भी गिरने में मेरे साथही साथ था, और जैसेही हमलोगों के पैर बेग से उन तख्तों से टकराये वैसेही वे तख्ते नीचे गिर पड़े, और उसमें से हमलोगों को प्रकाश किया। और फिर इसके उपरान्त की कुल बातें तो लेडी तुम जानतीही हो।

इरेनी—तो यह बड़ेही सौभाग्य थे कि आप के पैर फिसल गये, नहीं कठिनता से आप के पैर फिसल गये। नहीं कठिनता से आप को इस कोठरी का द्वार मिलता। परन्तु अब यह तो कहिये कि आगे के निमित्त क्या करना होगा? मैं तो जहांलों अनुमान करती हूं कि, अब इस रात किसी के विघ्न डालने का भय नहीं है।

इस कारण हमलोग बात चीत करने की पूरी स्वतंत्रता—और कोई काम करने का भी पूरा समय पा गये हैं।

यूनानी लेडी ने बहुतही ठीक कहा और उसके हार्दिक आग्रह को आटू पेनिल्ला भली भांति समझ गया था; क्योंकि इस समय लेडी का प्रेम से पगा हुवा हृदय उस व्यक्ति के देखने को उछल रहा था जो, यथार्थ में उसका प्राण प्याराही था। और इसी मकान के किसी स्थान में बंद किया गया था।

आह—कितना पक्का और कितना सच्चा स्त्रियों का प्रेम होता है! कवि तथा उपन्यास के लेखक गण यद्यपि प्रेम कहानी प्रायः अपनी कविता वा उपन्यास में बांधा करते हैं परन्तु क्या वे प्रेम का कोई अंश भी किसी प्रकार अपनी लेखनी द्वारा दूसरों पर प्रगट कर सक्ते हैं? कदापि नहीं; यह पर्व तो भाव से असंभव है। वे उस प्रेम के प्रसाद सागर में हिलोरे लेते हुये हृदय का प्रतिबिम्ब खींचने में बड़ाही धोखा खाते हैं। किसी स्त्री का प्रेम ऐसा नहीं है कि जिसे "रखे गुल" वा कुमुदनी की प्रति इत्यादि से उपमा दे सके। आह! यह दृढ़ और अचल होता है—यह प्रतिष्ठा योग्य होता है—यह संपूर्ण रूप से स्वच्छ होता है—इस्को यदि मिट्टी की शरीर में परमेश्वर तुल्य कहिये तो अत्युक्ति का दोष नहीं लग सक्ता। आहा प्रेम! सच मुच तू धन्य है। प्रेमिका के हृदय में प्रेमी का प्रेमी का प्रेम—वह प्रेम जो हृदय में बड़ीही स्वच्छता के साथ प्रत्येक समय जलता रहता है—और जिसे वह अपने परमेश्वर के तुल्य मान के अपने हृदय पर स्थान दिये रहती हैं—और जिससे वह अपने को निर्बल होता नहीं पाती। वरन् उस्से अपने से वह एक अनूठी कान्ति का होना अनुभव करती है—ऐसे प्रेम का कौन अपनी लेखनी से किसी के सामने चित्र खींच सक्ता है?

हमें संसारिक कुल व्यक्तियों को प्रेमी के नाम से पुकारना न चाहिये—क्योंकि इस अनुपम प्रतिष्ठा के योग्य विशेषतः केवल स्त्रियांही हैं। हम अपने योग्य ग्रंथकार रेनाल्ड की उपरोक्त लिखी हुई बातों से बहुत कुछ सम्मति प्रगट करते हैं। और विवश होके, हार्दिक उत्तेजना से यह कुछ पंक्तियां उन्हीं की राय पर लिखे भी देते हैं कि, यथार्थ में स्त्रियांही प्रेम को कुछ विशेष प्रकार से जानती हैं—कठिन से कठिन आपत्तियों में,—दुष्कर से दुष्कर समय में—अनेक परीक्षा के स्थानों में और सब पर यह, कि मृत्यु शय्या पर भी इनका प्रेम अचलही देखा गया है। इनके चित्त को किसी

प्रकार की चंचलता न हुई—और यहीं लों नहीं वरन् इस्के उपरान्त मृत्यु के उपरान्त भी-यदि हमारे धर्म के अनुसार लोगों का स्वर्ग में साक्षात होना सत्य है । तो प्रेमिका जो पहलेही से लौ लगाये बैठी होगी अपने प्रेमी से सजल नयन धावित हो; कर पसार गले से मिलेगी; और फिर सदैव के निमित्त—हां सदैव सदैव के निमित्त—हां सदैव सदैव के निमित्त एक दूसरे के प्रीति सागर में हिलोरें लेते महान २ सुख और आनन्द का अनुभव करेंगे । इसी कारण आप से आप जिह्वा से निकला जाता है कि रमणियों तुम्हारा प्रेम धन्य है ।

यही सच्चा प्रेम यही स्वच्छ जलती अग्नि यूनानी लेडी के हृदय में भी बल रही थी—और भगवान के अतिरिक्त और कोई नहीं जान सक्ता—क्षमा कीजियेगा पाठकगण क्योंकि न तो हमारे लेखनीही में इतना सामर्थ बल है कि, हम उसे समझा सकें और न आपही के मस्तष्क में इतना बल है कि आप उस्का अनुभव कर सकें-इसी कारण लिखा है कि भगवान के अतिरिक्त और कोई नहीं जान सक्ता था कि, यूनानी लेडी के हृदय में कितनी प्रीति लार्ड जेरनिन या थिउडोर का वर्तमान था ।

बड़ी देर तक तीनों; अपने २ ध्यानों में डूबे हुये थे, अब आटू ने उस देर तक की छाई हुई निस्तब्धता को भङ्ग करके कहा:—

"अब दो मनसूबे मैंने अपने चित्त में ठीक किये हैं । प्रथम तो यह कि हम तथा मेजिनी दोनोंही इस लकड़ी की दीवार के पीछे छिपके आधी रात पर्यंत बैठे रहें—और फिर उसके उपरान्त हमलोग उसमें से निकलें और मकान के प्रत्येक भाग में घूम फिर के देखें कि यहां कितने हथियार बंद मनुष्य हैं, और इस मकान की बनावट कैसी है।"

इरेनी—नहीं यह ठीक नहीं, तुम पहचान लिये जा सकते हो, और फिर जब उन्होंने जरमनी के एक प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध व्यक्ति को इतने दिवसों से कैद में डाल रक्खा है, तो उसी अपराध के छिपाने के लिये तुम्हे भी कैद में डाल देते, वा तुम्हारे बैरियों का प्राणही ले लेते क्या लगता है ।

आटू—अच्छा तो मेरा दूसरा मनसूबा भी सुनिये—प्रातःकाल वह मजदूरनी अवश्यही तुम्हारे निमित्त भोजन इत्यादि की सामग्री लेके आयेगी । बस उसी समय हमलोग उसे पकड़ लेंगे और उसे मारडालने की धमकी देके—परन्तु केवल धमकीही देके यह न समझियेगा कि उस आदमी के—यहां के कुल स्थानों का पता तथा उस कैदी के बारे में भी बहुत कुछ पूछ सकते हैं ।

इस दूसरे मनसूबे को इरेनी तथा मेजिनी दोनोंही ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इसके उपरान्त लेडी उस दूसरी कोठरी में गई और अपने को कोच पर डाल दिया। उसे थकावट ने जो उस दिन भर के भ्रमण करने के कारण आ गई थी बहुतही शीघ्र निद्रित में कर दिया। नींद में पड़तेही उसका स्वागत उत्तमोत्तम स्वप्नों ने किया। निद्रा देवी ने एक जड़ाऊ मन्दिर सोने का द्वार इसके सामने खोल दिया—जिसके भीतर से आशा की प्रति मूर्ति मुस्कराती हुई सामने आई और यह कहती सुन पड़ी—

"सोओ प्यारी! सोओ—जिस प्रकार तेरा जीवन और तेरा ध्यान स्वच्छ है; इसी प्रकार तेरा प्रेम भी मेरी आली बड़ाही स्वच्छ है। आज लों तूने कोई भारी दोष भगवान की दृष्टि में नहीं किया—यद्यपि तू एक गरम देश की बाला है, परन्तु तेरे स्वभाव में नाम मात्र को भी गरमी नहीं है, इस कारण तुम्हें यदि प्यारी देवी के नाम से हम पुकारें तो कोई हानि नहीं।

सोओ, सुन्दरी सोओ! तुमने आज लों बड़ेही दुःख कष्ट सहन किये परन्तु तुमने कभी भी इसका दोष जगदीश्वर या अपने भाग्य को न दिया। साथही तुम कभी भी प्रातः-काल और सन्ध्या को भगवान की प्रार्थना को न भूलीं, और कोई दिवस ऐसा न बीता कि जिसमें तुमने भगवत का धन्यवाद न दिया हो। परन्तु देखो! अब तुमारे कुल कष्ट आनन्द और कुल दुःख, सुख से परिवर्तन हो जायँगे। तुम्हारी प्रार्थना से तुम्हारा ईश्वर बड़ाही प्रसन्न है; जिसका परिणाम यह होगा कि तुम्हारे हृदय पर की लिखावट - तुम्हारी हार्दिक कांक्षा को पूरी करेगा।"

उन्तालीसवाँ बयान।

मजदूरनी।

हां, पूरी गंभीरता तथा निश्चिन्तता से इरेनी ने निशा व्यतीत की।

वह रात भर ऐलपाइन की चोटी के मकान की कोठरी में एक सुरीले पक्षी की भांति रही जो अपने घोसले में रात भर चैन से पड़ा सोता हो। उसे आज स्वप्न ने कोई असहाय वस्तु न दीख पड़ी वरन् इसके स्थान उसे आशा की बड़ीही सुन्दर प्रतिमूर्ति दिखाई पड़ी।

आट्रू तथा मेजिनी अपने को लबादे में लपेटे हुये, जलती हुई अग्नि के सामने इधर और उधर रात भर टहल रहे थे—इन में जब एक सोता था तो दूसरा पहरे पर खड़ा रहता था।

इस प्रकार, निशा निर्विघ्नतापूर्वक समाप्त हुई।

प्रातःकाल हुआ। और चमकीले तथा निकलते हुये सूर्य की किरनें उसी छत के सूराख से दिखाई पड़ने लगी।

अब इरेनी भी उस कमरे से निकली; जिसमें वह रात भर आनन्द से विश्राम कर रही थी, और इन लोगों ने मिल के उसी कल वाले मनसूबे को दृढ़ कर लिया कि मजदूरनी के आतेही उसे पकड़ लेना चाहिये।

आट्रू और मेजिनी उसी विश्रामागार में जा छिपे और साथही इरेनी से यह भी कह दिया कि जब आप समय देखियेगा तो यह शब्द उच्च स्वर से कहियेगा कि "इस समय कितने बजे होंगे?" बस इतना सुन्तेही हम लोग निकल के तुरन्तही मजदूरनी को पकड़ लेंगे।

और यही चाल उन लोगों को भली भी जान पड़ी, कारण यह कि इस कोठरी में कोई छिपने का स्थान न था। दूसरे, कोठरी, छत के आते हुये प्रकाश से प्रकाशमय हो रही थी।

इधर तो ये सब बातें ठीक हो गईं उधर मजदूरनी ने कोठरी में प्रवेश किया। इस समय वह दोनों हाथों में भोजनों से भरी रकाबियां लिये हुई थी।

डेम मिलडेडा—(कमरे में प्रवेश कर, और अपने पीछे का द्वार बंद कर के झुक के इरेनी को सलाम करती हुई) आशा है कि कल के भ्रमण की थकावट रात के विश्राम करने से बिलकुलही मिट गई होगी।

इरेनी—हां इस में तो कोई संदेह नहीं कि मैंने बड़ेही आनन्द से रात बिताई; और साथही तुम्हारी मेहमानदारी का धन्यवाद देती हूं।

डेम मेलडिडा—और यह मैं श्रीमती के निमित्त भोजन ले आई हूं; आप के नौकर भी भोजन इत्यादि से निश्चिन्त हो चुके हैं।

इरेनी—और कदाच तुम यह भी पूछने आई होगी कि मैं यहां से कब विदा हूंगी? कदाचित् तुम्हारे मत का यह नियम है कि जहां लों शीघ्र बन पड़ता है पथिक को अपने यहां से विदा कर देते हैं। जहां लों मैं अनुमान करती हूं यह पहाड़ी मठ

केवल पथिकों के विश्रामार्थही बनाया गया है। और यदि मैं अनुमान करने में धोखा खाती हूं—वैसा यह नहीं है तो मैं यहां का किराया देने पर प्रस्तुत हूं—जो कुछ तुम्हारा लगेगा उस्का कोड़ी २—"

डेमभेलडिडा—क्षमा कीजियेगा लेडी! कि मैं आपकी बात में बाधा देके बात करती हूं! यह आप कदाप न सोचिये कि हमलोग किसी बुरी अवस्था में हैं। और केराये की लालच से लोगों की मेहमानदारी किया करते हैं। परन्तु साथही मैं इस्से भी आपको अवगत किये देती हूं कि मैं इस घर की कोई मालिकिन नहीं हूं। मैं दूसरे के सेवन के निमित्त यहां नियुक्त की गई हूं। और मेहमानों को प्रत्येक प्रकार से प्रसन्नही रखना हमारा कर्तव्य है। फादर ऐनस्लेम—बड़ा पादरी—यह एक बड़ेही कड़े स्वभाव का व्यक्ति है, एक आज्ञा के उपरान्त दूसरी आज्ञा देनाही नहीं जानता। साथही इसके, मैं यह भी आप से निवेदन करती हूं कि मैं यहां इस जनहीन सन्नाटे स्थान में कुछ प्रसन्नता पूर्वक नहीं रहती हूं वरन् और जीवन निर्वाह करने का मेरे कोई स्थान नहीं है—और न किसी प्रकार की मुझे आशाही है।

इरेनी—(डेमभेलडिडा तथा द्वार के बीच में इस इच्छा से खड़े हो के कि कहीं यह भाग न जाय) मेरी प्यारी! मैं तुम्हें किसी प्रकार से दुःखी नहीं किया चाहती! मैं केवल तुम से इतना पूछा चाहती हूं कि अन्त तुम इन लोगों में गुजारा कैसे करती होगी; और यदि तुम्हें इस्के बताने में भी कोई हानि दिखाई पड़ती हो, तो कम से कम इतना तो अवश्यही बताये जाओ कि इस समय बजा क्या होगा?

कठिनता से अभी ये शब्द इरेनी के मुंह से निकले होंगे कि सहसा भीतर वाली कोठरी का द्वार धड़ाके से खुला, और आटू डेमभेलडिडा पर टूट पड़ा और आतेही कड़ाई से एक हाथ से उसका मुँह बंद कर दिया जिस्से वह एक शब्द भी मुँह से न निकाल सकी।

इतने में मेजिनी भी उसके पीछे से एक नंगा खंजर हाथ में लिये आन उपस्थित हुवा। उधर इतने में इरेनी ने द्वार भीतर से भली भांति बंद कर दिया था।

आटू—सावधान! यदि प्राण प्यारे हैं तो एक शब्द भी जिह्वा से न निकालना; देखो—यदि तुमने हमारे कुछ प्रश्नों का उत्तर स्पष्टता से दे दिया तो तुम्हें किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुंचेगी, परन्तु यदि तुमने इस्के सिवा चिल्लाने, पुकारने या और

किसी पाजीपने की इच्छा की तो कड़ाई से मारी जाओगी। और कोई मनुष्य भी तुम्हारी सहायता को नहीं आ सक्ता क्योंकि कुल द्वार, हमारे मित्रों ने बंद कर रक्खे हैं। और यदि कोई आ भी जायगा तो उसे काट छांट के हमलोग साफ इस गुप्त सुरंग से निकल जांयगे। आह तुम घबड़ाती क्यों हो—तुम इतना चौंकती क्यों हो ? हम इस गुप्त स्थान में अकेले नहीं आये हैं। हमारे बारह हथियारबंद मित्र बाहर गार में छिपे बैठे हैं जो तनिक से इसारे पर आ कूदेंगे और इस प्रकार तुम लोगों की कोई चाल हम पर पूरी नहीं पड़ सक्ती ! एक बेर देखो मैं और तुम्हें सूचित किये देता हूं कि तुम व्यर्थ की चेष्टाओं को छोड़ के केवल हमारे और हमारे मित्रों के प्रश्नों का उत्तर दो इसी में तुम्हारा मंगल है।

मेजिनी उस समय अपनी मुस्कराहट न रोक सका जब आटू ने बारह हथियारबंद व्यक्तियों के गुफा में छिपे रहने का चलता फिकरा डेममेलाडिडा को दिया परन्तु डेम मेलाडिडा के चित्त में दृढ़ता से यह बात बैठ गई थी कि आटू जो कुछ कहता है उसका एक २ अक्षर सत्य है।

अब आटू ने उस भयभीत स्त्री के मुंह पर से अपना हाथ हटा लिया और उसे ले जाके एक स्थान पर बैठा दिया।

इसके उपरान्त, जब आटू ने देखा कि उसके हृदय से इस सहसा की घटना से जो भय छा गया था, वह कुछ कम हुआ तो उसने निम्निलिखित प्रश्न उससे कियाः—

"इस मठ के भीतर क्या कोई कैदी बन्द किया गया है ?

डेम मिलडेडा—(बड़े कम्पित स्वर से) हां एक कैदी है, महाशय; परन्तु मैं आप से प्रार्थना करती हूं कि मुझे किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाइये, तो मैं कुल वृत्तान्त स्पष्टता पूर्वक कह सुनाऊं।

आटू—तुम निश्चिन्तता पूर्वक बातचीत करो—हम तुम्हें कोई कष्ट न पहुंचायेंगे! मेजिनी! भाई अपना खंजर इस पर से हटा लो, इस भलेमानुस स्त्री की बातों से जान पड़ता है कि यह हमें धोखा न देगी (मजूरनी से) हां तो तुमने अभी कहा है कि एक कैदी इस मठ में कैद है। अच्छा तो उसका नाम क्या है ?

डेम मिलडेडा—मैं उसे नहीं जानती—और न उसका नामही सुना है! और सत्य तो यों है कि न मैंने उसे कभी देखाही है। वह बन्द कोठरी नामक एक कोठरी में बन्द रहता है, और हमलोगों का प्रतिनिधि मुझे वहां कभी जाने नहीं देता।

परन्तु मैंने लोगों को काना फूसी करते इतना सुना है कि कैदी, जरमनी का कोई प्रतिष्ठित रईस है।

इरेनी ने यह सुनके हार्दिक वेदना से एक ठण्ढी सांस खींची और जोर से "आह" की।

डेम मिलडेडा—और मैंने यह भी सुना है कि उसका वयस लगभग चालीस वर्ष का है—और उसका चेहरा बड़ाही सुन्दर, परन्तु पीला है।

इरेनी (हाथ मलते हुये चिल्ला के) निस्सन्देह यह वही व्यक्ति है! भला क्यों आली! वह कितने दिवसों से यहां बन्दी बना पड़ा है?

डेम मिलडेडा—लगभग आठ वर्ष के होते हैं! यह कैदी रात के समय बड़ीही सावधानी से लाया गया था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इसके सम्बन्ध में कोई बहुत बड़ा गुप्त रहस्य है। क्योंकि मैं प्रायः ऐसी बातें करते इत्यादि अपने साथियों से सुना करती हूं।

इरेनी—आठ वर्ष (दोहरा के) हाय आठ वर्ष का समय उसे बन्दी में बीत गया!

आटू—अच्छा तो इस बीच में कभी वह छूट भी गया था।

डेम मिलडेडा—नहीं कभी नहीं।

आटू—तब तो मुझे जिसका भय लग रहा था, वही सामने आता दिखाई पड़ता है, और वह व्यक्ति जो कैदी के नाम का वायना में उपस्थित है और जिसने मेरी भगिनी के साथ विवाह किया है, निश्चय कोई कपटी पुरुष है।

इरेनी—(बहुतही नर्म स्वर में) मेरे प्यारे आटू इसके लिये तुम इतने दुःखी न हो तुम्हारी बहिन को मैं प्राण से भी अधिक जतन के साथ अपने पास रक्खूंगी।

आटू पेनिल्ला—मैं इसके निमित्त आपको धन्यवाद देता हूं। अस्तु तो अब इन बातों की इस समय आवश्यकता नहीं है, क्योंकि समय बहुत थोड़ा है जिसे हाथ से गँवाना उचित नहीं है (इसके उपरान्त उसने मजदूरनी की ओर घूम के कहा) क्या तुमने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को भी देखा है जिसकी सूरत कैदी से बिलकुलही मिलती जुलती हो?

मेलडिडा—मैं इसका तात्पर्यही नहीं समझी महाशय!

इतना कहके वह आटू की ओर हैरानी से देखने लगी जिससे उसकी स्वच्छता स्पष्ट रूप से प्रगट होती थी।

आर्टू—मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि क्या कोई ऐसा व्यक्ति भी यहां प्रायः आया जाया करता है, जिसकी सूरत कैदी की सूरत से बिलकुल मिलती जुलती हो ?

मेलडिडा—नहीं—मैंने कभी ऐसे मनुष्य के बारे में कोई बात नहीं सुनी।

आर्टू—अच्छा तुम यह भी जानती हो, कि किस दोष से, और किसने इस अभागे कैदी को यहां बन्द किया है ?

मन्द्रनी—(चिल्ला के) भगवान् मेरी रक्षा करना, निश्चय यह बेचारा मनुष्य जिसके बारे में तुम मुझसे पूछते हो कोई पागल है। और उसके आत्मसम्बन्धियों ने उसे यहां बन्द करवा दिया है।

"पागल" इरेनी ने पागलों की भांति घबड़ा के कहा, और फिर बोली "आह! नहीं —नहीं" और इसके उपरान्त वह शोक से अपना दोनों हाथ मलने लगी।

आर्टू—(दृढ़ता और गम्भीरता के स्वर में) घबड़ाती क्यों हो लेडी ! सम्भव है कि दुःख से उसका चित्त ठिकाने न हो ! क्योंकि जब उसने अपनी सहायता के निमित्त मुझसे उस खिड़की में से सिर निकाल के प्रार्थना की थी तो उसके एक एक २ अक्षर से दुःख टपकता था, परन्तु उसकी बुद्धि में किसी प्रकार का भेद आया नहीं जान पड़ता था।

मेजिनी—और ऐसीही दशा उसकी तब भी थी ! जब मैंने आज से छः वर्ष पूर्व उसे देखा था।

इरेनी—(शोक से) जैसा तुम लोग कहते हो भगवान करे वैसाही हो।

आर्टू—(फिर उसी स्त्री की ओर फिर के) हमें तुम्हारी बात भी बे ठिकानेकी जान पड़ती है। कभी तुम कुछ कहती हो और कभी कुछ जो मैं पूछता हूं उसका उत्तर स्पष्ट क्यों नहीं देती ?।

मेलडिडा—अच्छा तो युवक, अब मैं आप से साफ २ कहती हूं, कि जो कुछ मैं कह गई सब झूठ था। परन्तु सोचिये तो कि यदि मैं ऐसा कहूं कि वेही पादड़ी जो इतनी प्रार्थना किया करते हैं घण्टों भगवान के सामने घुटने टेके रोया करते हैं एकही पाजी और छँटे हुये बदमाश हैं, तो क्या आपलोग विश्वास करेंगे ?।

आर्टू—क्यों नहीं ? इसमें आश्चर्य की क्या बात है। अच्छा यह तो बताओ कि इस मठ का महंत कौन है ?

मेलाडिडा—फादर ऐनसेलम नामक एक व्यक्ति, जो बला का पाषाणहृदय, दुष्ट, क्रोधी और लालची है। सोने का तो मानो वह दासही है।

आटू—सुवर्ण, सुवर्ण ! सदैव सुवर्णही महापापों का मुख्य कारण हुआ करता है।

मेजिनी—अच्छा तो हमें यह बताओ कि क्या फ्रिज़ही इन सब पापियों का मुखिया है? और क्या वह भी कैदी को तेरीही तरह पागल समझता है?

मेलडिडा—मिस्टर फ्रिज़ एक गंभीर व्यक्ति है महाशय! वह ऐसी २ बातों में कभी कुछ कदापि नहीं करता।

आटू—अच्छा तो अब ध्यानपूर्वक मुझ से सुनो। हमारा तात्पर्य केवल इतना है, कि उस कैदी को जिसके बारे में मैं अभी तुम से बातचीत कर चुका हूं, बंदी से छुड़ावें। यह तो मैं तुम्हें पहिलेही निश्चय करा चुका हूं, कि बहुत से मनुष्य मेरी सहायता के निमित्त निकटही तैयार बैठे हैं (इतना कहके उसने उस सुरंग की ओर देखा और फिर कहने लगा) परन्तु मेरी ऐसी इच्छा नहीं होती कि बश चलते बहुतों का रक्त बहाऊं और बहुतों से इस संसार को छुड़वाऊं।

मेलाडिडा—हे भगवान मेरी रक्षा कर।

इतना कहके वह अत्यन्त भयभीत हो अपने चारों ओर देखने लगी।

आटू—और इसी के निमित्त मैं तुमसे एक बात की इच्छा प्रगट करता हूं, तुम हम लोगों में मिल जाओ—हमलोगों की सहायता करो—कहो, यह तुम्हें स्वीकार है? तुम हमलोगों की यह एक सेवा करोगी? यदि तुम ऐसा करोगी—और हमारा विश्वास तुम पर हो जायगा—तो हम तुम्हें बहुत कुछ इनाम दे निकलेंगे।

इरेनी—हां हां तुम्हें इतना इनाम मिलेगा कि जहां लों तुम्हारा ध्यान भी न पहुँचा होगा। सुनो हम धनाढ्य हैं और हम तुम्हें इतना द्रव्य दे सकते हैं कि तुम अपने अन्तिम समय पर्यंत बैठी २ खा सकती हो और फिर तुम्हारा निवास भी इस बरफीले और पापी स्थान में न रहेगा तुम किसी उत्तम से उत्तम नगर में किसी अच्छे मकान में जाके स्वतंत्रतापूर्वक जीवन के दिवस व्यतीत कर सकती हो।

मेलडिडा—(कुछ देर लों सोचते रहने के उपरान्त) अच्छा मैं आपकी बात स्वीकार करती हूं! और मैं आपकी सेवा अवश्य करूंगी। और यदि आप मेरे साथ २ रहें महाशय! (आटू की ओर देख के) तो मैं प्रतिज्ञा करती हूं कि इस कार्य को बड़ीही सरलता से पूरा कर दूंगी। इस अवसर में यदि आप देखें कि मैं किसी प्रकार की भी आप से कोई बेइमानी करती हूं तो आप तुरन्त मेरा सिर उसके बदले में उतार सकते हैं। परन्तु यदि आप देखें कि मैंने आप के काम

को बड़ीही सावधानी से पूरा किया तथा, अपने वचन पर दृढ़ रही तो आप को मुझे वह इनाम देना होगा, जिसकी अभी आपलोग आशा दिला चुके हैं। मैं खुद इस सुनसान स्थान से बहुतही घबड़ा उठी हूं। परन्तु करूं क्या मुझे और कोई ठिकाना नहीं था। इस कारण यहां से छोड़के जाती तो कहां जाती।

ट्रेनी—हां मेलडिडा तुम बड़ीही स्वच्छता से बात चीत कर रही हो; हम लोग भी अपने दिये हुये वचन पर स्थिर हैं। हां कहो—वह मनसूबा तुमने कौन सा बांधा है ?

मेलडिडा—(जिसे यह सुनके बहुत कुछ आशा बंध गई थी।) सुनिये! बात यह है कि हमारी कोठरी जो इसी मकान के नीचले भाग में है, एक बड़ेही सन्नाटे स्थान में पड़ती है, और आप (आटू की ओर देख के) महाशय मेरे साथ उस कोठरी में चले चलिये यदि रास्ते में कोई व्यक्ति आपको पूछेगा तो मैं उत्तर दे लूंगी कि यह हमारे बहिन के लड़के हैं और अभी मठ में उपस्थित हुये हैं। यहां पहुँच के मुझे मठ के निचले भाग की तालियां प्राप्त करने में कोई कठिनता न पड़ेगी और जहां से हम निरापत्ति उस कैदी पर्यंत पहुँच सकते हैं जो दिन के समय उन्हीं स्थानों में टहलने के लिये निकाला जाता है।

आटू—तो क्या इसी निचले भाग के आगे कोई दीवार खिंची हुई है! जिसमें कि एक बहुत बड़ा फाटक लगा हुआ है ? और जिसमें एक छोटी खिड़की भी बनी हुई है !?

मेलडिडा—जान पड़ता है कि आप ने उस स्थान को अवश्यही देखा है। तब तो ऐसी स्वच्छता से वहां का वृत्तान्त वर्णन कर रहे हैं।

आटू—"क्या मैंने तुम से इतः पूर्व नहीं कह दिया था कि इस मकान के जितने स्थान हैं उनसे मैं अपरिचित नहीं !" आटू ने यह मुसकरा के कहा। "परन्तु यदि यह भी मान लिया जाय कि हम कैदी पर्यंत पहुँच गये तो ऐसी कौनसी तदबीर है कि जिससे हम उसे बिना रक्तपात के बाहर निकाल सकें !"

मेलडिडा—पहिली बात तो यह है कि इस मठ के निचले भाग में एक समय में दो संतरियों से अधिक, पहरे पर आर कोई नहीं रहता। और इस बात का मैं जिम्मा लेती हूं कि मैं उन दोनों के भोजन में कोई ऐसी बेहोशी की दवा मिला दूंगी, और ऊपर से इतनी कड़ी शराब पिला दूंगी, कि जिससे वे दोनों बेहोश हो जांयगे और तुम्हारे कार्य में बिलकुलही बाधा न डाल सकेंगे। परन्तु साथही एक ध्यान मेरा और भी है, कि यदि यह मनसूबा स्थिरता के साथ आज रात को पूरा किया जावे तो

किसी प्रकार की बाधा पड़ने की आशंका न रह जायगी। रात भी अँधेरी है और हमें अपने कार्य में इससे सरलता भी खूबही पड़ेगी।

आटू—(भयभीत होके) परन्तु मैं इतनी देर को नापसन्द करता हूं।

आटू ने सोचा कि कदाच थोड़ीही देर में इस स्त्री की मति बदल जाय तो फिर हमें और हमारे साथियों को यह फँसाही के छोड़ेगी इससे अच्छा है कि जो कुछ होना है दिनही दिन में हो रहे।

डेम मेलडिडा—(हार्दिक कष्ट से) मैं समझ गई महाशय! बात यह है कि आप मुझ पर विश्वास नहीं करते; और मैं बड़े खेद के साथ आप से निवेदन करती हूं, कि आप इतना तो विचारिये कि अन्त मैं रहूंगी तो आप के साथही, एक क्षण भी तो आप से पृथक् न हूंगी, फिर मेरा कोई दोष देखने पर क्या उसी समय आप मुझे दण्ड नहीं दे सकते?।

आटू—यह तो ठीक है—परन्तु यह तो विचारो कि जब तुम्हारा मालिक किसी कार्य के निमित्त तुम्हें अपने पास बुला लेगा तो उस समय मैं कैसे तुम्हारे साथ रह सकूंगा?।

आटू ने यह बात केवल उसकी हार्दिक इच्छा जानने के निमित्त कही थी।

डेम मेलडिडा—अच्छा तो जैसी आपकी इच्छा हो वैसाही कीजिये। परन्तु क्या आप अनुमान करते हैं, कि मैं इनाम की लालच पाने पर भी आप की सेवा से विमुख होऊंगी? वा आप ऐसा अनुमान करते हैं कि यह सुनसान स्थानही मुझे बड़ा प्यारा है? इस कारण मैं आप के साथ विश्वासघात करूंगी?।

इरेनी—(आटू के कान में ग्लानि दिलानेवाले स्वर से) मेरे प्यारे मित्र! इस पर विश्वास करो।

आटू—अच्छा, जैसा तुम कहती हो यदि मैं स्वीकार भी कर लूं तो यह लेडी सन्ध्या पर्यन्त कैसे रह सकेगी? इसके अतिरिक्त हमारी ऐसी भी इच्छा है कि हमलोग भागें इसी चोरद्वार से। परन्तु किसी को यह पता न लगे कि हम किस ओर से गये।

डेम मेलडिडा - आह! यह सब बातें आप मेरे ऊपर छोड़ के निश्चिन्त हो जाइये, मैं सब कर लूंगी। परन्तु एक निवेदन मेरा भी आप लोगों को स्वीकार करना पड़ेगा।

इरेनी—(शिघ्रता से) कहो!

मेलडिडा—जब आप लोग यहां से जाने लगें तो मुझे भी साथ चलने की आज्ञा दें।

कैदी के निकल जाने के उपरान्त, प्रथम तो यहां हमारा रहना कठिन होजायगा। दूसरे आश्चर्य नहीं कि महंत—वह पाजी महंत—संदेहही संदेह में मेरे वध की आज्ञा दे दे। क्योंकि मैंने लोगों से यह सुना है कि, (इतना कहके उसने अपने चारों ओर एक निगाह देखा और फिर बहुतही धीरे २ कहने लगी) उस में असीम बल है—और वह बड़ाही सामर्थी है—कुल उत्तरीय तथा दक्षिणीय कारनेलिया वासी उसके नाम से काँपते हैं। कारण यह कि वह इस प्रान्त के भयानक मनुष्यों का साथी है—जिनका काम यह है कि गुप्त से गुप्त और छिपे से छिपे वैरियों को दंड देना और—"

मेज़िनी—(कांप के) आह! अब मैं उन धमकियों का तात्पर्य भी समझ गया जो मुझे आज से छः वर्ष पूर्व इसी कमरे में दी गई थीं।

आटू—(बड़ीही गंभरिता से) और अब मैं भी समझ गया कि किन पाजियों की कैद में वह बेचारा मनुष्य पड़ा हुआ है। परन्तु उस भय से हम लोग अपने मनसूबों से नहीं फिर सकते।

इरेनी—(पीली पड़के और कंपित स्वर से) आप लोग जो यह सब कह रहे हैं इसका तात्पर्य क्या है?

आटू—(धीमे परन्तु दृढ़ स्वर में) शुभे! यहां जरमनी में एक ऐसी सभा है जिसका नाम मात्र भी कदाच तुमने न सुना होगा—उस सभा का बल अकथनीय है—उसके अधिकार असीम हैं। हां—जहां लों मैं अनुमान करता हूं यह कैदी भी उसी सभा के मेम्बर के हाथों में बंद है—इस सभा का नाम शुभे! अदालत विम है।

यह सुनतेही इरेनी घबड़ा उठी। वह इतनी व्याकुल हुई कि अपने आप ठहर न सकी, दीवार से लग गई और कंपित स्वर में पूछने लगी—

"तो क्या अब इस कैदी का छुटकारा असंभव है?"

आटू—नहीं लेडी! अन्त उस सभा के मेम्बरैं भी तो हमारे सदृश मनुष्यही हैं। परन्तु वे दूसरों को धोखा दिया करते हैं और इस प्रकार अपने बल का विस्तार बढ़ाते जाते हैं। देखा तो करो भगवान जानता है ऐसा कड़ा धोखा हम लोग भी उन्हें देंगे कि उनकी आंखेंही खुल जाँयगी। आह! अब मैं सभी कुछ समझ गया—इन पादड़ियों का लोगों को मेहमान बनाने में हिचकिचाना—यह गुप्त

पथ—यह सुरक्षित मठ ! हां—यह सब कुछ अदालत विम के बंधुओं तथा उनके गुप्त मेम्बरों के निमित्त है। परन्तु अब हम लोग यहां देर लों नहीं ठहर सकते, शीघ्रही कोई चाल चलनी चाहिये। आप लेडी, शीघ्रही अपने पहाड़ियों के साथ यहां से चल दें और उसी झोपड़ी में जा पहुंचें, जहां कल रात को विश्राम किया था। मेजिनी तथा हम सुरंग से होते हुए उसी छोटे गिरजे में जा पहुंचते हैं जहां से संध्या समय पुनः लौटेंगे और इसी गुप्त पथ से होते हुये इसी कोठरी में आ पहुंचेंगे। (मजदूरनी की ओर देखके) और देखो उस समय तुम्हारा यह कर्तव्य होगा कि हम से आके इसी कोठरी में मिलो। इसमें त्रुटि न होने पाये, केवल हम और हमारे यह मित्र मेजिनी तो इस कोठरी में आयेंगे, परन्तु स्मरण रक्खो कि हमारे बाकी हथियारबंद साथी भी हम से कुछ अन्तर पर रहेंगे। वे इसी सुरंग में छिपे बैठे होंगे।

डेम मेलडिडा—जैसी इच्छा हो वैसा करिये आप मुझे अपनी सेवा के निमित्त प्रस्तुत पाइयेगा।

इरेनी—और इसके पहले तुम अपने इनाम का एक छोटा सा अंश अभी से ले लो। (इतना कहके इरेनी ने अपनी ऊंगली से एक बड़ीही बहुमूल्य अंगूठी निकाल के डेम मेलडिडा के हाथ में दे दी जिसे उसने बड़ेही धन्यवाद के उपरान्त ले लिया)।

आटू—अच्छा तो एक बात और है कि जब लों यह लेडी यहां से विदा न हो जाँयगी, तब लों हम यहीं रहेंगे, यदि कोई आपत्ति इन पर आ पड़े तो हम सहायता कर सकेंगे।

डेम मेलडिडा। आप मुझ पर विश्वास रक्खें, इन पर अब किसी प्रकार की यदि आपत्ति आये तो आप मुझे दंड दे सकते हैं।

उस मजदूरनी ने बड़ीही दृढ़ता तथा गंभीरता से यह कहा। इसके उपरान्त आटू तथा मेजिनी इरेनी से विदा हुये और फिर उस कोठरी से गुप्तद्वार द्वारा निकल के बाहर हुये।

परन्तु बाहर आने पर भी वे कुछ देर लों उसी गुफा में बैठे रहे और आध घंटे के उपरान्त उन्हें मालूम होगया कि इरेनी वहां से चली गई।

तब वे भी धीरे २ उसी छोटे गिरजे की ओर चले।
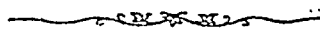
चालीसवां बयान।

बेहोशी।

डूबते हुये सूरज की किरनें पर्वत जूलियेन आल्प्स की बरफ से ढकी हुई चोटियों पर पड़ २ के उन रङ्गों का अनुभव करार ही हैं जो प्रायः बर्षा के उपरान्त वाले धनुष में देखे जाते हैं। बरफीली चोटियों का रङ्ग जैसे जैसे सूर्यदेव डूबते जाते हैं, वैसेही वैसे बदलता जाता है और उन चोटियों की चारों ओर की छिटकती हुई ज्योति से, बन रङ्ग बिरङ्ग के प्रकाशों से प्रकाशित हो रहा है।

उन बरफीली चोटियों पर; जिन्हें दिशा की कालिमा धीरे २ ढांकती जाती है, सूर्य देव की अन्तिम और लोप होती हुई किरनें क्रीड़ा करती दिखाई पड़ती हैं। अब क्रमशः वे किरने भी लोप हो गईं। केवल एक तीक्ष्ण प्रकाश ही रह गया—अब उसी प्रकाश में चोटियों का एक अद्भुत रङ्ग दिखाई पड़ता है—अब सूर्य देव बिलकुल डूब गये परन्तु उनका प्रकाश बाकी है उसमें पर्वत एलपाइन का अत्यन्त मनोहर दृश्य देखने योग्य हो रहा था—अब सूर्य देव के डूब जाने पर लालिमा जो बाकी रह गई थी वह भी लोप होने लगी—परन्तु बुझता हुआ लम्प जैसे एक बेर जल उठता है उसी प्रकार यह लोप होती हुइ लालिमा भी एक बेर चमक उठी—इस के चमकने से वे सुफेद चोटियां गाढ़े लाल रङ्ग से बदल गईं—परन्तु अब क्रमशः फिर वह लाल रङ्ग मन्द पड़ने लगा—यह लालिमा काले रङ्ग से ठीक वैसीही बदलने लगी, जैसे गिरगट के सिर की सुरखी बदलती है—इस प्रकार पर्वत आलपाइन में सूर्यास्त हुआ और अब संध्या के उपरान्त निशा हो गयी।

आटू इस दृश्य को बड़ीही गंभीरता से बैठा देख रहा था। वह स्वयं भी बड़ा चित्रकार था। इस कारण प्रकृति की चित्रकारी को बैठा बड़ेही हर्ष से निहार रहा था।

कुछ देर लों तो वह इस ध्यान में इतना डूब गया था कि उसकी आखों की टकटकी बंध गई थी और वह एक संगमरमर की मूर्ति सा जान पड़ता था।

इतने में मेजिनी ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया जिससे युवक चित्रकार चौंक पड़ा और अपने आपे में आ गया।

इसके उपरान्त पुनः वे लोग अपने पथ पर चले।

आर्टू—भाई अपनी २ तलवारें निकाल रक्खें, आश्चर्य नहीं कि हमलोगों पर कोई आपत्ति आ पड़े तो उस से तो अपने को निवारण कर सकेंगे।

मोजिनी—(दृढ़ता पूर्वक) इससे आप निश्चिन्त रहें कि हमलोगों के प्राण सस्ते दामों पर न जाँयगे।

इसके उपरान्त आर्टू चुप चाप उन सीढ़ियों से उतरा और चोरद्वार का तख्त धीरे २ खटखटाने लगा।

द्वार तुरन्तही खोल दिया गया और डेम मेलाडिडा लम्प हाथ में लिये वहां खड़ी दिखाई पड़ी।

यह देखके आर्टू बीरता से कोठरी में उतर गया, और उसी के पीछेही पीछे मेजिनी भी था।

जब यह दोनों कोठरी में उतरे तो डेममेलडिडा बड़ेही शान्त रूप से इन्हें देख रही थीं; परन्तु ये दोनों हार्दिक धड़कन से बार २ कोठरी के चारो ओर देख रहे थे।

डेम मेलडिडा—(इन लोगों की घबड़ाहट देख के) हम पर संदेह न कीजिये और इसे पढ़ जाईये।

इतना कह के उसने आर्टू को एक छोटा प्लेट वा हाथीदांत का साफ किया हुआ टुकड़ा टेबुल पर से उठा के दे दिया जिसे प्रायः उस समय की प्रतिष्ठित लेडियां भ्रमण में अपने साथ रक्खा करती थीं।

आर्टू ने शीघ्रता से उस प्लेट की लिखावट पर दृष्टि दौड़ाई तो निम्नलिखित बात उसमें लिखी पाई—

"मैं इस पुरजे को मठ के बाहर पहुंच के लिखती हूं। जब मैं वहां से बाहर निकल आई और एक ऐसे स्थान पर पहुँची जहां से मठ नहीं दिखाई पड़ता था तो साथही डेम मेलडिडा भी उस मठ में से यह बहाना करके आई कि लेडी का शाल छूट गया है और उसे मैं उन्हे देने जाती हूं। मेरे पास पहुंच के मेलडिडा ने सलाह की कि मैं उसे एक ऐसा पुरजा लिख दूं कि जिसे देखके तुम दोनों को यह मालूम हो जाय कि मैं निरापत्ति मठ के बाहर निकल आई। उसकी बिनती उचित समझ के मैं यह पुरजा लिखे देती हूं और साथही अपनी ओर से इतना और भी लिखती हूं कि मेलडिडा एक विश्वासपात्र स्त्री है। इस पर किसी प्रकार का संदेह न कीजियेगा। भगवान आप लोगों को उस कार्य में कृतकार्य करें। विशेष शुभ।"

आटू—अब हमें तुम पर किसी प्रकार का संदेह नहीं रहा। "इरेनी"! वास्तव में तू एक सच्ची और ईमानदार रमणी है और तेरे इन कार्यों का पूरा पारितोषिक वह यूनानी लेडी तुझे देगी।

डेम—अच्छा तो जब सब आशंकायें मुझ पर से आपकी दूर हो चुकी हैं तो अब मैं भी एक प्रश्न करती हूं, और वह यह कि जब आप मेरे साथ चलेंगे तो यह आपके साथी कहां रहेंगे?

आटू—बाहर सुरङ्ग में।

इतना सुनतेही मेजिनी उसी गुप्त द्वार से होता हुआ सुरंग में जा बैठा।

आटू—(कुछ चकित भाव से) तो यदि राह में कोई हथियारबन्द मनुष्य मिल भी जाय तो उससे हमें भयभीत न होना चाहिये?

डेम मेलडिडा—बिलकुल नहीं।

आटू—इसका कारण यह नहीं है कि मैं उनसे भय खाता हूं वरन वह मुझे देख चुके हैं; और आश्चर्य नहीं कि पहचान जाँयें।

डेम मेलडिडा—कदाच आप वही युवक हैं जो कुछ दिवस बीते आंखों में पट्टी बांध के इसी कोठरी में लाये गये थे।

आटू—हां हैं तो वही! परन्तु तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

डेम मेलडिडा—मैंने फ्रिज़ को अपने साथियों सहित तुम्हें यहां लाते देखा था।

आटू—अच्छा एक बात तुमसे और पूछूं नेक स्त्री! क्या तुमने बहुत से मनुष्यों को उस गुप्त पथ से निकालने के लिये आखों में पट्टी बांध के लाये जाते देखा है?

डेम मेलडिडा—लगभग दस वर्ष बीते कि मैं यहां आई हूं और जब से यह कैदी जिसे हमलोग छुड़ाने चल रहे हैं, कैद है, तबसे केवल चार या पांच व्यक्ति ऐसे यहां आये हैं।

इसके उपरान्त डेम मेलडिडा द्वार की ओर बढ़ी और आटू पेनिल्ला उसके पीछे २ था।

कुछही मिनटों में आटू मेलडिडा सहित उसी की कोठरी में जा पहुंचा, जो ठीक ऊपरवाली कोठरी के नीचेही बनी हुई थी। यहां उसने एक बोतल कड़ी शराब की ली और कुछ बेहोशी मिला हुआ भोजन लिया और फिर अपने को पादड़ियों के से लबादे में बिलकुल छिपा लिया।

मेलडिडा—अच्छा तो अब मेरे पीछे २ हो लीजिये। देखिये हमारे बारे में एक शब्द भी किसी के पूछने पर कुछ न कहियेगा। प्रत्येक की बातों का एक बना हुआ उत्तर मैं दे लूंगी जिससे आशा है कि हमलोग निरापत्ति आगे बढ़ते चले जायेंगे।

अब ये लोग आगे बढ़े और एक बहुत बड़े आगन में से जाने लगे। इसके बाद ये लोग विना किसी रोक टोक के निकल गये और फिर एक द्वार के निकट पहुंचे जिसे डेम मेलडिडा ने अपनी पास की ताली से खोल दिया जिसे उसने किसी बहाने गृहस्वामी से मांग ली थी।

यहां से वे मठ के विचले भाग में पहुँचे और जिसके उपरान्तही इन्हें दो हथियार बन्द सिपाही टहलते हुये दिखाई पड़े।

इन्हें देखतेही एक ने उनमे से चिल्ला के कहा:—

"कौन जाता है? धर्मपिता! कृपा कर हमे भी आशीर्वाद देते जाइये!"

डेम० – नहीं—यह धर्मपिता नहीं वरन एक महापातकी बेचारी अवला है। परन्तु चुप रहो प्यारे कारेल—तनिक मौन धारण करो। मैं तुमसे अपने जाने का तात्पर्य सब बताये देती हूं।

कारेल—और यह तुम्हारे साथ कौन है?

रात के छाये हुये अन्धकार में सन्तरी आटू को पहचान न सका।

डेम—देखो मैं तुम्हें थोड़ेही शब्दों में कुल बातों से विज्ञ किये देती हूं। यह युवक मेरा भतीजा है जो कुछ पहिले यहां आया है। परन्तु खेद का विषय है कि यह तो इसकी अवस्था और अभी से न जाने किन पापों के कारण गूंगा और बहरा दोनोंही हो गया है, और कारण पूछने पर वह किसी बात का भी स्पष्टरूप से उत्तर नहीं दे सकता।

कारेल—(जोर से ठट्ठा मार के) वह तो बेचारा अभागा व्यक्ति पुरुष है, यदि कहीं स्त्री होती तब तो बड़ीही कठिनता उपस्थित होती।

डेम०—सुनो २! हमारी ऐसी इच्छा होती है कि उसे गिरजे में ले जाके क्रूस को चुमवायें तथा धर्मपुस्तक के आगे वंदना करावें तो आशा है कि वह अपनी गई शक्तियों पर, पुनः अधिकृत हो जायगा। इस कारण मैं तुम से प्रार्थना करती हूं कि गिरजे की चाबी मुझे देदो और मुझे अपने भतीजे को कुछ मिनटों पर्यंत वहां प्रार्थना कर लेने की आज्ञा दे दो।

कारेल—असंभव! यह सर्वतो भाव से असंभव है। प्राण कहो तो उपस्थित कर दूं, परन्तु चाबी नहीं दूंगा।

डेम०—क्या कहना! तुमसे बढ़के बुद्धिमान और कौन होगा—और यह देखो मैं तु-

म्हारे वास्ते गर्मागरम कवाव ले आई हूं और साथही एक बोतल शराव की भी क्योंकि निशा आज वड़ीही ठण्ठी और—"

कारेल—(शीघ्रता से बात करके) आह ! गोश्त और शराव ? इससे बढ़के और मनोहर कौन सी वस्तु हो सकती है (अपने साथी से) क्यों यार ? -

उसका साथी । नहीं भाई हमें तो पसन्द नहीं ।

कारेल —तुम्हारी बातें भी मर्दे आदमी संसार से न्यारी होती हैं । सरीहन मैं देखता हूं कि मारे ठण्डक के तुम्हारा कलेजा कांपा जाता है परन्तु उस पर भी तुम शराब से नहीं करते जाते हो ।

साथी—हां यार सरदी तो सचमुचही वहुत है । -

कारेल—और यहां भूख भी कुछ कम नहीं लगी हुई है ।

साथी—तो यहां किस भकुवे को भूख नहीं लगी है ।

कारेल—(अपने साथी को देख के) अच्छा तो फिर अब क्या कहते हो ?

साथी—हमारी राय तो यार ऐसी है कि डेम मेलडिडा को ताली दे दो वह अपना काम करे, तब से यार लोग चैन से शराब और गोश्त पर हत्थे लगायें ।

कारेल—अच्छी बात है । हमलोग यहां किसी उत्तम स्थान में भी नहीं वैठे हैं। चलो उसी सायवान के नीचे चले चलें (डेम से) आओ डेम ! अब वहां प्रकाश भी है जिस में देख के अपने चाबियों के गुच्छे में से हम तुम्हें चाबी निकाल देंगे ।

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिनाही, सिपाही शीघ्रता से उसी सायवान में जो झोपड़ी की तरह बना हुआ था और जो उस स्थान से थोड़ेही अन्तर पर था वह सिपाही पहुंचा, और इसी समय आटू को ध्यान आगया कि यह वही सायवान था जिसके नीचे कुछ दिवस हुये हम फ्रिज् के साथ खड़े थे । उसी अवसर में कारेल चाबी लेने के लिये गया था ।

डेम मेलडिडा—[आटू के कान में शीघ्रता से] भगवान के निमित्त दीये के सामने न जाना ।

यह कहके वह शीघ्रता से आगे बढ़ी, और इसी सायवान की ड्योढ़ी में खड़ी हो गई ।

सायवान के बीचों बीच एक लम्प जल रहा था जिसका प्रकाश बचा के आटू एक कोने में खड़ा हो गया ।

यह मठ का मुरदाखाना था।

सायबान के तीनों ओर की दीवारों से लगे हुये बहुत से सिकुड़े हुये मुरदे खड़े किये गये थे और जो अपने बगलों के गड़े खंजरों के सहारे खड़े थे।

इन लाशों की सूरतों में कोई विशेष फरक न आने पाया था केवल उनका चमड़ा पीला पड़ गया था और उनके गले इत्यादि का चमड़ा सिकुड़ गया था। होंठ लाशों के बिलकुलही दांतों से चिपक गये थे। परन्तु इनके बाल न गिरे थे; वरन् वे अपनी प्राकृतिक रङ्गत में उनके कंधो पर पड़े झूल रहे थे। खोपड़ी बहुतों की सूख के थोड़ी सी रह गई थी। इसके अतिरिक्त उनके चेहरों से मृत्यु के समय की भयानक यंत्रणा के चिन्ह भी दिखाई पड़ते थे। वही संसार में लिप्त मनुष्य दृश्य तस्वीरों की भांति वहां लगे हुये थे।

ये लाशें उनकी थी जो पहाड़ में भटक २ के मर गये थे। उन्हे ऊंचे पर्वत पर गरमी और सरदी दोनोंही मौसिम एक सां जान पड़ते थे, इस कारण बेचारे पथिक, चांहे वह किसी ऋतु में आयें अपनी राह से भटकतेही भयानक बरफ की आंधी में पड़ के अपने प्राण विसर्जन कर दिया करते थे।

कारेल—प्यारी डेम! यह लो तुम्हारे निमित्त कुंजी उपस्थित है। परन्तु वह मांस और मदिरा कहां है? आहा कितना अच्छा भोजन यह भी होता है—और विशेषतः ऐसे समय में तो हम और हमारे साथी में जानही डाल देगा। परन्तु क्यों डेम क्या तुम हमलोगों में बैठ के एक प्याला भी न पी के जाओगी।

डेम—[भयभीत हो के] भला मैं भी कभी शराब पीती हूं।

कारेल—तुम और शराब! अजी यदि मेरा ध्यान मुझे धोखा नहीं दे रहा है तो सैकड़ोंही बेर हमने तुम्हें शराब पीते देखा है।

डेम—हां—परन्तु यह भी कुछ देखते हो कि आज मुझे कोई बड़ा काम लग रहा है।

कारेल—[चिल्ला के] अजी तुम नहीं तो तम्हारा भतीजा तो अवश्यही पीयेगा उससे कहो कि इसका स्वाद लेता जाय; हमें निश्चय है कि पीतेही उसकी जिह्वा खुल जायगी।

डेम—नहीं उस बेचारे को भी क्षमाही करो [इतना कहके डेम बीच द्वार में यह देख के खड़ी हो गई कि कारेल झपट के बढ़ने और आटू का हाथ पकड़ के लाने पर उद्यत है] अरे भाई वह शराब तो तुम्हीं लोगों को पूरी न पड़ेगी फिर दूसरों के निमित्त इतना ऊधम क्यों मचा रहे हो?

कारेल---डेम ! हम दोनोंही तुम्हारी इस उदारता का धन्यवाद देते हैं ।

इतना कहके दोनों हथियारबंद मनुष्य बेंच पर बैठ गये और अपने बीच में रकाबी और बोतल रख के आनन्द से खाने पीने लगे ।

अब एक क्षण का भी बिलंब न करके डेम अपने स्थान से आगे बढ़ी और आटू पेनिल्ला के पास आ पहुँची ।

डेम [आटू के कान में शीघ्रता से]-देखाही तुमने कि मैंने अपना काम कितनी चतुरता से किया ? परन्तु अब एक क्षण भी हमें गँवाना न चाहिये । शीघ्रता से हमारे पीछे चले आओ गिरजे की कुंजी हमारे हाथ में है और हमलोग निश्चय अपने काम में कृतकार्य हो सकेंगे ।

आटू---अच्छा जब वे दोनों हम लोगों की गिनती लौटती समय तनि पायेंगे तब के लिये भी तुमने कोई बहाना बिचार रक्खा है या नहीं ?

डेम---(बे परवाही से) आह ! उस समय तो वे बेहोश पड़े खर्राटे ले रहे होंगे ।

इसके उपरान्त ये लोग आगे बढ़े और एक दूसरे मकान में एक छोटे द्वार से इन्होंने प्रवेश किया । इसके उपरान्तही इन्हें एक दालान मिली, जल्दी २ वे इसे समाप्त कर रहे थे ।

परन्तु कठिनता से अभी वे दालान के उस सिरे पर पहुँचे थे कि सहसा एक लम्बी शकल दीवार से पृथक होके इनके सामने आई और बोली---"कौन जाता है ?"

शब्द सुनतेही डेम मेलडिडा का रक्त बिलकुल सूख गया । इस सहसा की विपद से वह प्रायः ज्ञानशून्य हो गई, और धंसती हुई आवाज में आटू से बोली "अब नहीं बच सकते मठ का महंत फादर एनसलेम यही है ।"

इकतालिसवां बयान ।

"महंत, फादर ऐनसलेम यही है" इतना सुनतेही आटू के हृदय पर भी एक भारी-आघात हुआ और वह भी मारे भय के तसवीर की तरह एक स्थान पर खड़ा रह गया। परन्तु यह अवस्था कुछही क्षणों पर्यंत रही इसके उपरान्तही वह अपने आपे में आ गया और जल्दी से सोचने लगा कि अब हमें क्या करना उचित है । जब से उधर उस महंत ने चिल्ला के कहा—

"अहा ! क्या यह डेम मेलडिडा का कंठस्वर है ? परन्तु यह भेष किस लिये बदला है ? यह तेरे साथ कौन है ? और तुम जाते कहां हो ? '

डेम०—(कांप के और हाथ जोड़ के) धर्मपिता ! मुझे क्षमा कीजिये; मुझ पर दया दृष्टि कीजिये !

महंत—क्या ! तुम्हारा मनसूबा कोई भारी बेइमानी करने का था ! नहीं तो यह भेष बदलने की क्या आवश्यकता थी ? और, तुम, महाशय—कौन–"

फादर एनसलेम की जिह्वा से कोई दूसरा शब्द न निकलने पाया। आटू ने देखा कि हमारी अवस्था इस समय बड़ीही भयानक हो रही है,—उधर प्रत्येक क्षण में मजदूरनी अपनी हिम्मत छोड़ती जाती है, और महंत यह भली प्रकार समझ गया है कि इन लोगों की इच्छा निश्चय किसी पाजीपने की है,–आटू ने यह विचार के देखा कि अब केवल एकही वीरता का कार्य ऐसा है कि जिससे हम बच सकते हैं और यह विचारतेही वह शेर की भांति महंत पर टूट पड़ा और ज़ोर से उसे भूमि पर गिरा दिया।

तब शीघ्रता से उसने अपने घुटने तो उसकी छाती पर टेक दिये और बांये हाथ से उसका मुंह बंद करके दहिने हाथ से अपना खंजर निकाला, ; और उस व्यक्ति के गरदन पर ले जाके एक तेज परन्तु जल्दी के स्वर से कहने लगा। "खबरदार जो तनिक भी हिला–या एक अक्षर भी मुंह से निकाला। इधर यह तुमने किया और साथही यह खंजर तुम्हारे हृदय में डूबा हुआ दिखाई पड़ेगा—मैं बिलकुलही निडर हूं–और अपने छेड़े जाने का फल तुरन्तही तुम्हें दिखा दूंगा।

इसके उपरान्त आटू ने गरदन फेरी और डेम मेलडिडा से जो इसके यों कृतकार्य हो जाने पर बड़ेही आश्चर्य से इसकी ओर देख रही थी, यों कहा—

"झटपट उस द्वार का ताला खोल दो—घबड़ाओ मत—सब कुशलही होगा।"

जब से डेम मेलडिडा आटू इस आज्ञा के प्रतिपालन में करने लगी तबसे इधर आटू ने अपने हाथ का खंजर अपने दांतों में दबा लिया और इस प्रकार उसका दाहिना हाथ खाली हो गया; इसके साथही वह पागलों की भांति महंत की छाती पर लोहे के सिल की भांति चढ़ा हुआ अनेकानेक दुर्वचन कहता जाता था और जब हाथ खाली हो गया तो उसने महंत की कमर से एक बहुत बड़ी रेशमी डोरी जिसमें खंजर और सलीब बँधी हुई थी (जो महंतों तथा पादड़ियों का चिन्ह है)

खोल लियां और शीघ्रता से उसी डोरी से उसका हाथ बांधना प्रारंम्भ किया, इस समय महंत की बड़ी २ आंखें बड़ेही भयानक रूप से अपने खाने से कुछ निकल २ कर आदू की ओर देख २ के चमक रही थीं। परन्तु जैसे कोई जीवित पिशाच महंत की छाती पर चढ़ा बैठा हो वैसेही आदू उसकी छाती पर घुटना टेके बैठा था जिससे महंत न तो हिलही सकता था और न वह एक अक्षर भी सहायता के निमित्त मुंह से निकाल सकता। आदू के दोनों घुटने उसकी छाती पर लोहे के गदे के तुल्य जान पड़ते थे और उसके मुंह का दबा हुआ खंजर, चमक २ के उसे बार २ त्रास दिला रहा था कि उधर बोले और इधर तनपिंजर में प्राण न रहगे।

"तुम मुझे मार तो न डालोगे ?"

महंत ने यह बहुतही धीमे स्वर से बड़बड़ा के कहा क्योंकि आदू से जो भयानक बातें बड़ बड़ा २ के कह रहा था महंत बड़ाही भयभीत हो रहा था।

आदू—यदि तुम चुपचाप रहोगे—हमारे कार्यों में बाधा डालने का उद्योग न करोगे तो तुम्हारे प्राण बचा दिये जाँयगे।

महंत—तुम्हारी इच्छा क्या है ? तुम यहां आये किस कारण से हो ?

आदू—(डांट के) चुप ! मैं कड़ाई को पसन्द नहीं करता मैं कोई खूनी नहीं हूं—परन्तु इस समय कार्यवश मेरी अवस्था वैसीही हो रही है, भगवान की सौगंध इस समय हमारे किसी प्रश्न के बे किये एक अक्षर भी यदि तुमने जिह्वा से निकाला तो यह पूरा खंजर मैं तुम्हारी छाती में उतारही दूंगा।

आदू की यह बातें तथा पादड़ी के हाथ की बँधाई इससे बहुतही थोड़े अवसर में समाप्त हो गई जितना कि गाय के बढ़ने में समय व्यय हुआ है और जैसेही द्वार खुला वैसेही आदू महंत की छाती पर से उतर के उसे खींचता हुआ उस द्वार के भीतर ले गया जिसका ताला अभी डेम मेलडिडा ने खोला था; और भीतर ले जाके द्वार फिर अन्दर से बंद कर दिया।

यह गिरजा दो मोमबत्तियों के प्रकाश से जगमगा रहा था जो सीढ़ियों के ऊपर जल रहीं थीं। आदू ने शीघ्रता से कमरे के चारों ओर दृष्टि दौड़ाई तो देखा कि वहां कोई विघ्नदाय वस्तु न थी इससे वह बड़ाही प्रसन्न हुआ।

अब महंत को यहां रखने का एक काम था परन्तु इसमें कोई विशेष कठिनता न थी। आदू निर्दयी न था इस कारण उसकी इच्छा कुछ खून करने की न थी।

परन्तु साथही वह चैतन्य और दृढ़ भी था जिसने ऐसे समय में उसकी बहुत कुछ सहायता की। उसने महंत का बड़ा लबादा उस पर से उतार लिया और फिर उसके चारों ओर इस प्रकार लपेट दिया कि उसके मुंह से एक अक्षर भी न निकल सके।

डेम मेलडिडा ने भी युवक के इस कार्य में सामर्थ भर सहायता देने में त्रुटि उठा न रकखी क्योंकि वह समझता था कि यदि यह निर्दयी महंत किसी प्रकार अपने सहायता के निमित्त मनुष्य बुला लेगा तो हम दोनों के काम में तो विघ्न पड़ेहीगा फिर किसी प्रकार प्राण पर्यंत भी न बच सकेंगे।

आटू पेनिल्ला—(जब वह महंत को बिलकुल बेवस कर चुका तो खंजर की धमकी देते हुये) देखा हमलोग अभी कुछही क्षणों में यहां आयेंगे। और यदि उस समय हमने तुम्हारे छुटकारा करने के उद्योग का कोई चिन्ह देखा तो समझ लेना कि तुम्हें वहीं दंड दिया जायगा जो किसी हत्यारे को फांसी के मैदान में उचित दंड दिया जाता है।

इतना कहके आटू डेम मेलडिडा के साथ गिरजा को समाप्त करके एक ऐसे द्वार के निकट आया जिसमें जंजीर और डंडे चढ़े हुये थे। इसके खोलने में कुछ बहुत समय न व्यय हुवा। द्वार के बाहरही एक लम्प जल रहा था जिसे आटू ने यह देखने के निमित्त हाथ में उठा लिया।

डेम मेलडिडा के पीछे २ अब वह उन सीढ़ियों पर से उतरने लगा जिसे एक बेर वह बिना देखेही गिन चुका था। यह गिनती में सत्तर था। और अब इसके आगे उसे भली भांति मालूम होने लगा कि यह वही स्थान है जहां मैं पहलेही पहल कैदी बनके और आंखों में पट्टी बंधवा के सिपाहियों के झुंड में आया था।

सीढ़ियों को समाप्त करने के उपरान्त उसने अपने को एक पक्के रासते पर पाया जो सीधा सामने चला गया था और जिसे पर पहाड़ी पत्थर लगे हुये थे।

यह रासता; जिस पर आटू और डेम मेलडिडा जा रहे थे क्रमशः चौड़ा होता जाता था अन्त यह एक बहुत बड़े मकानके सामने जा पहुंचा। इसी का नाम मठ का "तीसरा भाग" था और जिसके बारे में डेम मेलडिडा पहलेही से आटू को जता चुकीथी।

यह रास्ता और यह मकान यथार्थ में बड़ेही भद्दे परन्तु पुष्ट भी प्रथमही श्रेणी के थे। मकान के भीतर पहाड़ी जैतून के बड़े २ खंभे लगे हुये थे जो अपने सिरों पर इमारत के भारी बोझ को संभाले हुये थे।

इसके दाहिने वह बड़ी दीवार दिखाई पड़ती थी जिसमें एक बहुत बड़ा फाटक लगा हुआ था और जिसमें एक खिड़की भी थी।

आटू ने यहां की बनावट को देख के स्थिर कर लिया कि यह स्थान मनुष्य तथा प्रकृति दोनों के उत्तम बनाव से इतना दृढ़ हो रहा है कि किसी भी प्रकार इसमें घुसना असंभव है।

वायु के कड़े झोंकों से अपने प्रदीप को बचाता हुआ आटू डेम मलाडिडा के पीछे२ शीघ्रता से चला जा रहा था।

मकान में घुस के ये लोग एक बहुत बड़े दालान में पहुँचे और वहां से आगे बढ़तेही उसी अंधकार में उन्हें एक खिड़की दिखाई पड़ी जिसमें से प्रकाश बहिर्गत हो रहा था।

डेम—जहां लों मैं अनुमान करती हूं यहीं कैदी के रहने की कोठरी है।

ये लोग शीघ्रता से उसी स्थान पर जा पहुँचे।

यह एक प्राकृतिक गार था जिसे उन लोगों ने कोठरी के सदृश बना लिया था और जिसमें रक्षा के निमित्त एक बहुत बड़ा द्वार भी लगा दिया गया था। द्वार के ऊपर एक छोटी चौखूटी खिड़की भी बना दी थी।

एक बहुत बड़े द्वार से यह गार बंद किया गया था।

इसे शीघ्रता से आटू ने खींच के अलग कर दिया और कोठरी में द्वार खोल के वह घुस गया। कोठरी लगभग बारह फीट के चौखूटी थी और इसमें कुछ सामान सोने और भोजन करने का रक्खा हुआ था।

जिस समय युवक चित्रकार ने भी कोठरी में प्रवेश किया उस समय एक सुन्दर परन्तु पीले रङ्ग का मनुष्य, टेबुल के निकट की रक्खी कुरसी पर से जिस पर कुछ भोजन इत्यादि रकखा हुआ था, उठ बैठा।

कैदी—(आटू को गहिरी दृष्ट से देख के आश्चर्य से) आह! मुझे स्मरण होता है कि इतः पूर्व मैं आप को कई बेर देख चुका हूं।

आटू—हां आपने मुझ से कुछ दिवस हुये बड़े फाटक की खिड़की से सिर निकाल के कुछ कहा था और उसी के निमित्त अर्थात् आपको छुड़ानेहीको मैं यहां आया हूं।

कैदी (जोर से)—मुझे छुड़ाने! (अपने दोनों हाथ मलते हुये) क्या यह संभव है?

आटू—बातें न कीजिये—अब समय नहीं है—एक २ क्षण हमारा बहुमूल्य है।

यह पादड़ियों का वस्त्र पहिन लीजिये (इतना कह के उसने अपने पास से पादड़ियों का सा एक वस्त्र दे दिया) इस में अपना चेहरा भी छिपा लीजिये—वहां ! अभी वहां चलना है—मुझ से एक शब्द भी रास्ते में न कहियेगा, बस अब चलें, आइये ।

यह छोटा झुंड अब शीघ्रता से उस कोठरी से निकला और झट पट उन सीढ़ियों पर्यंत जा पहुँचा । सीढ़ियों को इन लोगों ने बहुतही जल्द समाप्त किया और गिरजे में आ पहुँचे ।

इस पवित्र स्थान पर भी एक पूर्ण सन्नाटा छाया हुआ था ।

आटू शीघ्रता से आगे बढ़ा और उस समय उसे बड़ीही प्रसन्नता हुई जब उस ने महंत को उसी स्थान पर और उसी अवस्था में पड़े पाया जहां वह उसे छोड़ गया था।

आटू—मैं खेद के साथ कहता हूं कि मैं तुम्हें इस समय खोल नहीं सकता, क्योंकि खुलतेही तुम हमारे भागने में विघ्न डालोगे; रात भर तो तुम्हें यहीं रहना पड़ेगा परन्तु प्रातः काल कोई तुम्हाराही आदमी तुम्हें खोल जायगा । इस समय तो तुम्हें इतनाही दंड बहुत है, परन्तु याद रक्खो कि भगवान तुम्हारे पाजीपने का अभी और भी बहुत कुछ दंड देगा ।

इतना कहके आटू ने अपने हाथ के लम्प का प्रकाश पादड़ी के चेहरे पर डाला तो देखा कि वह पूर्ववत् सांस ले सकता है परन्तु बोलने की शक्ति उसमें नहीं है । साथही इसके आटू ने यह भी देखा कि महाक्रोध के चिन्ह उस समय महंत के चेहरे पर दिखाई पड़ रहे थे । बंधी हुई बात है कि क्रोध, द्वेष, पश्चात्ताप इत्यादि जो कुछ मनुष्य के हृदय में होता है उसका साया उसके चेहरे पर अवश्यही पड़ता है; उस समय यदि कोई बुद्धिमान व्यक्ति हो तो एकही दृष्टि में उसे मालूम हो सकता है ।

आटू कुछ भयभीत होके उसके पास से हटा और शीघ्रता से अपने साथियों सहित द्वार के निकट जा पहुँचा ।

यहां आके लम्प तो उसने पृथ्वी पर रख दिया और दाहिने हाथ में खंजर खींच लिया । फिर डेम मेलडिडा से बंद द्वार की चाबी माँगी ।

उसने शीघ्रता से द्वार खोला और भयभीत होके द्वार के बाहर चारों ओर देखने लगा परन्तु वहां पूरा सन्नाटा था । सामने के मकानों की खिड़कियों से प्रकाश बहिर्गत हो रहा था परन्तु निस्तब्धता पूर्ववतही छाई हुई थी ।

जब वे शीघ्रता से गिरजे के बाहर होने पर थे, कि आटू की दृष्टि एक छोटे सन्दूक पर पड़ गई जो एक कोने में एक लकड़ी की तिपाई पर रक्खा हुआ था। आटू जल्दी से उसके निकट पहुँचा और उसे खोला तो उसमें एक बहुत चौड़ी कुल्हाड़ी रक्खी हुई पाई। इसे आटू ने निकाल लिया और कैदी के निकट आके कहने लगा। 'श्रीमान्!—क्योंकि मैं समझता हूं कि निश्चय आप लार्ड जेरनिनही हैं—यह एक हथियार आप अपने पास रखिये; आश्चर्य नहीं कि किसी समय आवश्यकता पड़े तो यह काम देगा।'

उस व्यक्ति ने उसे ले लिया और इस प्रकार हाथ में पकड़ा कि जिससे बोध हुआ कि समय पड़ने पर वह उसे काम में ला सकेगा।

इसके उपरान्त यह छोटा झुंड गिरजा से निकला; द्वार से बाहर होके आटू ने ताला बंद कर दिया और ताली अपने पास रख ली।

वे झट पट उस द्वार की ओर बढ़े जिससे निकल के दूसरे मकान का रास्ता था और जब ये लोग उसके भी पार हो गये तो आटू ने अपने साथियों को दम भर के निमित्त ठहरने को कहा और आप ताली लिये दौड़ता उस मुर्दे वाले मकान में पहुँचा। वहां प्रकाश तो पूर्ववत्‌ही हो रहा था परन्तु उसकी झिलमिलाती हुई रोशनी में नीचे दिखाई पड़ा कि वे दोनों सिपाही उन बेहोशी के वस्तुओं के खा लेने से बेंचों पर पड़े खर्राटे ले रहे हैं।

आटू की प्रथम तो ऐसी इच्छाही न थी कि बेचारा कारेल महंत की क्रोधाग्नि में पड़े, दूसरे जिस कार्य के निमित्त चाबी ली गई थी वह भी संपादन किया जा चुका था और सिपाहियों को भी इसका प्रयोजन न मालूम हो सका था; इस कारण आटू ने चाबी कारेल की जेब में डाल दी।

इसके उपरान्त वह फिर दौड़ता हुआ अपने साथियों में आ मिला।

इन लोगों के और आगे बढ़ने पर एक और द्वार मिला जो इसी तीसरे भाग के मकानों में ही बना हुआ था।

यहां से वे शीघ्रता से उस घुमावदार सीढ़ी पर चढ़ने लगे और दम के दम में उस कोठरी में आ पहुँचे जिसकी छत में आकाश से प्रकाश आने के निमित्त एक छेद बना हुआ था।

अब यहां पहुँच के आटू अपनी प्रसन्नता को न रोक सका और वह अपने आपे से बाहर होके कहने लगाः—

"अब हम बच गये—अब हम बच गये !"

"ईश्वर का सहस्रों धन्यवाद है" ! यह उस छुटकारा पाये हुये कैदी ने बड़ीही गंभीरता और बड़ीही नम्रता से कहा।

इतने में आटू ने गार का मुहाना खोल दिया और साथही मेजिनी ने भी शीघ्रता से कोठरी में प्रवेश किया।

आटू (मेजिनी से)–भाई; हम कृतकार्य हुये ! यह देखो कैदी को छुड़ा के अपने साथ ले आये।

मेजिनी—उफ्फोह ! भगवान की सौगंध, जब से तुम गये आध घंटे से मैं कितने सोच विचार में पड़ा हुआ था परन्तु नारायण ने सब कुशलही की।

आटू—अच्छा तो अब आगे बढ़ना चाहिये, विलम्ब का समय नहीं है।

यह सुनके डेम मेलडिडा सबसे पाहिले गार में घुसी इसके उपरान्त वह स्वतंत्र कैदी और फिर आटू तथा मेजिनी ने भी गार में घुस के द्वार बंद कर दिया।

अब यह छोटा झुंड उसी सँकरे रास्ते को समाप्त करने लगा।

बयालीसवां बयान।

बुरे तथा भले समाचार।

यह व्यक्ति जिसे आटू पेनिल्ला ने कैद से छुड़ाया था अनुमान चालीस या बयालीस वर्ष की उम्र का व्यक्ति था।

वह एक बड़ाही सुन्दर पुरुष था परन्तु साथही उसके चेहरे से असीम दुःख और कष्ट के चिन्ह भी प्रगट होते थे। परन्तु इन दुःख के चिन्हों ने न तो उसकी आंखों की चमकही में कोई हानि पहुंचाई थी और न उसके काले २ बालोंही में किसी प्रकार की क्षति उत्पन्न करी थी।

यथार्थ में एक विचित्र प्रकार की ज्योति इस व्यक्ति के चेहरे पर झलकती थी जो उसे वायना के बेरेन जेरनिन या एडा के पति से बहुत कुछ पृथक् किये देती थी। यद्यपि इन दोनों की बनावट वास्तव में एकही तरह की थी परन्तु दोनों

की प्रकृति में बहुतही विभिन्नता थी ! क्रोधी, दुराचारी, पाखंडी, नीच, तो एडा यानी आटू की बहिन का पति था—और धार्मिक, दयालु, शीलवान, बुद्धिमान, अपना बेरेन जेरनिन था ।

जब आटू ने अपनी बहिन के पति तथा इस स्वतंत्र कैदी की सूरत से सूरत मिलाई तो उसे सूरत में तो जान पड़ा कि दोनों एकही तरह के हैं; परन्तु साथही इसमें एक सरदारी की ज्योति और बुद्धि की गंभीरता ऐसी थी कि जो उन दोनों में आकाश पाताल का फरक डाले देती थी । इसकी अङ्ग २ की बनावट बड़ीही सुडौल थी; उसके दाँत सुफेद तथा चमकीले थे; उसका माथा ऊंचा और प्रशस्त था; और उसकी सूरत से सरदारी तथा अधिकार के चिन्ह दिखाई पड़ते थे । उसका कंठस्वर बड़ाही मीठा था और उसकी बातों में नम्रता थी (कंठस्वर मीठा कहने से कहीं बिलकुल स्त्रियोंही सा गला न समझ लीजियेगा) तात्पर्य यह कि उसकी सूरत देखतेही जान पड़ता था कि यह कोई उच्च पदाधिकारी और बड़ाही प्रतिष्ठित व्यक्ति है ।

जब वे लोग चन्द्रमा की निर्मल तथा शीतल चांदनी में उस पथ पर बढ़ते चले जा रहे थे तो आटू को बेरेन जेरनिन को कुछ विशेष बातों के जता देने का ध्यान आया और उसने मेज़िनी तथा डेम मेलाडिडा को तो अपने से कुछ आगे बढ़ चलने के लिये कहा और आप बेरेन से बातचीत करने लगा ।

आटू—श्रीमान ! मैं जहां लों अनुमान करता हूं तो मेरी बुद्धि मुझे धोखा देती नहीं जान पड़ती; क्या श्रीमानही जेरनिन के बेरेन हैं ?

बेरेन—हां युवक महाशय ! मैं वही अभागा व्यक्ति हूं और न जाने मैं कितने दिवसों पर्यंत और भी वहां पड़ा २ सड़ा करता परन्तु भगवान ने तुम से दयालुचित्त व्यक्ति को भेजा जिसने उस भयानक बंदीखाने से छुटकारा दिला दिया । आह ! युवक महाशय ! जिस समय मैं अपने स्थान पर पहुँच जाऊँगा उस समय जहां लों कि कोई मनुष्य सामर्थ भर अनेक प्रकार से धन्यवाद दे सकता है वहां लों तुम्हें दूंगा, और उतने पर भी मैं तुम्हारे एहसान के बोझ से हलका नहीं हो सकता इस कारण आजन्म तुम्हारी अनेक प्रकार से सेवा किया करूंगा । अच्छा अपना नाम तो मुझे बताओ कि जिससे मैं अपने अनुग्रह करनेवाले को धन्यवाद तो दे सकूं ।

आटू—मेरा नाम आटू पेनिल्ला है, परन्तु मैं आप से किसी प्रकार का पारितोषिक

नहीं चाहता। श्रीमान! मैं चित्रकारी का काम करता हूं और भाग्य ने बहुत दिवसों मुझे संसार का दुख झेलवाया परन्तु इधर कुछ महीने से मैं एक प्रकार अच्छी अवस्था में हूं। हां यदि श्रीमान् कुछ इनाम दिया चाहते हैं तो इस गरीब किसान की सहायता करें जिसने मुझे इस काम में बहुत कुछ सहायता दी और भारी परिश्रम किया है। इसके उपरान्त मैं कई एक बातें श्रीमान् को सुनाया चाहता हूं,–जिनमें कुछ अच्छी और कुछ बुरी हैं। परन्तु मैं आशा करता हूं कि अच्छी बातें इतनी विचित्र हैं कि जिन्हें सुनके आप बुरी बातों को बिलकुल भूल जाइयेगा।

बेरेन—अपनी वर्तमान अवस्था को देख के तो मेरे मित्र!—मुझे यही कहना पड़ता है कि तुम पहले अच्छाही समाचार सुना चलो। वर्ष दो वर्ष के कष्टों ने—जो मुझे कैदखाने में पहुँचाये गये और जिनसे तुमने मुझे उद्धार किया–इस योग्यही नहीं रक्खा कि मैं किसी और भारी कष्ट को सहन कर सकूं। हाय! वह समय मेरा कितने कष्ट से बीतता था। हे नारायण!

आटू—अच्छा तो मैं श्रीमान् को पाहिले भलेही समाचार सुनाता हूं। निस्सन्देह आप को इरेनी नोटेरेस का नाम तो यादही होगा!

बेरेन—इरेनी नोटेरेस!–मेरी चन्द्रमुखी!–मेरी देवी!–मेरी प्राणप्यारी! इस वर्ष दो वर्ष के बंदी में की आशा; हाय क्या उसे मैं कभी भी भूलने वाला हूं? हाय! कहो प्यारे युवक!—इरेनी कहां है? किस प्रकार है? सब शीघ्रही कह डालो।

आटू–वह जीवित है श्रीमान्! और आप से वैसीही प्रीत रखती है जैसी कि उस व्याह की संध्या के पूर्व जब आप अन्तिम बेर उसकी साक्षात् करके दमिश्क में उसी की वाटिका से बहिर्गत हुये थे, प्रेम किया करती थी।

बेरेन—(जोर से चिल्ला के) जगदीश्वर! तेरा कोटानुकोट धन्यवाद है! इरेनी जीवित है! और अबलों मुझ से प्रेम रखती है! क्या यह संभव है? क्या मैं स्वप्न नहीं देखता हूं? क्या मैं फिर इस स्वप्न से जब जागूंगा तो अपने को उसी छोटी और अँधेरी कोठरी में पाऊँगा? नहीं—नहीं! यह कोई स्वप्न नहीं है! मैं जाग रहा हूं—और बात चीत करता जाता हूं। सुन्दर चन्द्रमा मेरे सिर पर है। बरफीली चोटीवाले पहाड़ हमारे चारो ओर हैं (युवक की ओर देख के) क्षमा करना युवक व्यक्ति! हमारी इस बहकी २ बातों को क्षमा करना! यह बँधी

हुई बात है कि मनुष्य जब महा कष्ट से बाहर होता है तो उसे प्रसन्नता की कोई बात हो एक बार संदेह दिलातीही है—एक बार उसे अपने ज्ञान पर संदेह होता है, बस यही अवस्था मेरी है। परन्तु आह! अब मुझ से इरेनी नोटरेस का वृत्तान्त कहो! तुम उसे जानते हो? तुमने उसे देखा है? वह कहां है?

आटू—मैं उसे जानता हूं श्रीमान्—मैंने उसे बहुत थोड़ा काल बीता कि देखा था। इतना कहके आटू ने अपनी बात को ऐसे ढंग से बदल दिया कि बेरेन को धीरे२ सु समाचार मिलने लगा क्योंकि उसे उस आनन्ददायक समाचार के एक दम सुना देने से भय जान पड़ता था कि कहीं मारे हर्ष के बेरेन का देहान्त न हो जावे) कुछ दिवस बीते कि इरेनी बायना में थी—फिर वहां से वह कारनीला में आई। तात्पर्य यह कि वहां से चल के उसने अपनी एक रात उसी मठ में बिताई, और वह रात श्रीमान् कल की रात थी।

बेरेन—(उसी की बात को जोर से दोहरा के) कलकी रात! तब तो वह निश्चय कहीं निकटही होगी। परन्तु—नहीं—एक भयानक बात सहसा मेरे ध्यान में आ गई:-मुझ से साफ २ कहो—क्या वह उन्हीं नरपिशाचों की कैद में है? यदि ऐसा है, तो हमें लौटना चाहिये—"

इतना कहके उस प्रतिष्ठित व्यक्ति ने युवक चित्रकार का हाथ कड़ाई से थाम कर उसे आगे बढ़ने से रोक लिया।

आटू—नहीं, श्रीमान्—वह स्वतंत्र है—वह इन्हीं पहाड़ों के बीच, एक स्थान में है—बस अब तीन घटों में—"

बेरेन—(हैरान होके और आटू का हाथ पकड़ के और उसको रोक के) बस अब केवल तीन घण्टों में! —"

आटू—आप उनसे मिलेंगे—आप उन से साक्षात करेंगे।

यह सुन्तेही वह प्रतिष्ठित व्यक्ति ज्ञानशून्य हो गया; और पृथ्वी पर गिरनेही को था कि आटू ने उसे सँभाल लिया।

बेरेन—(कुछ देर के बाद) आह! क्या यह सब सत्य है? तुम निस्संदेह कोई देवता हो, तुम्हें भगवान ने हमें कष्टों से निकालने और सुखसागर में डालनेही के लिये भेजा है! प्यारी इरेनी!—प्राणाधिक इरेनी!—क्या मैं इतना शीघ्र तेरा दर्शन सचमुच पाऊंगा? क्या अब लौं तू मुझी से लौ लगाये बैठी थी?—आह! आज

से मैं कभी भी स्त्रियों पर सन्देह न करूंगा—कभी भी उन्हें अविश्वासी कहने का साहस न करूंगा—स्त्रियोंही के हृदय को भगवान ने संसार की यावत् वस्तुओं से स्वच्छ और साफ निर्मित किया है।

आटू ने इसका कोई उत्तर न दिया क्योंकि जिस समय बेरेन यह सब कह रहा था, उस समय उसका ध्यान अपनी बहिन एडा पर था; वह सोच रहा था कि पापिष्ठा एडा और देवी इरेनी में कितना भेद है।

जब से आटू यह सब सोच रहा था तबसे बेरेन भी गंभीरता पूर्वक किसी बात का विचार कर रहा था परन्तु उसका ध्यान बहुतही शीघ्र हटा और उसने आटू से कहा:—

मैं तुम से यह नहीं पूछता कि तुम इरेनी से कैसे मिले—वा वह कैसे इन पहाड़ों में, आई! घटना से तो ऐसा असंभव है—यह सब भगवानही की इच्छा से हुआ होगा। और इन बातों को मैं प्यारी इरेनी के कोमल कंठस्वर—आह वीणास्वर को लज्जित करनेवाले स्वरही से सुना चाहता हूं। तुमने निस्संदेह मेरे प्यारे मित्र! एक बहुतही भला समाचार मुझे सुनाया और इतना भला समचार कि जिससे बढ़के और हो नहीं सकता। इस सुख समाचार ने सचमुचही मुझ में बहुत कुछ बल डाल दिया और अब उन बुरे समाचारों को भी सुना चलो क्योंकि मैं अब उन्हें सुनने के लिये अपने को प्रस्तुत पाता हूं।

आटू—बुरे समाचार श्रीमान्! केवल आपकी उस अतुल सम्पत्ति के बारे में है जो एक समय में आपकी थी।

बेरेन—एक समय में मेरी थी! तो अब उस पर कौन और किस प्रकार से अधिकृत हो गया? वहीं खाते में मैं एक कागज पर जो मेरी जायदाद का बैनामा था हस्ताक्षर करने पर बहुत दबाया गया और साथही मुझे यह लालच भी दिलाई गई कि यदि तुम अपनी कुल जायदाद की बेची लिख दो तो तुम इस कैद से छोड़ दिये जाओगे, परन्तु इतने मंहगे मूल्य पर अपनी स्वतंत्रता का खरीदना उचित न जान पड़ा इस कारण मैं उसे अस्वीकारही करता गया। मैंने उन्हें आधी सम्पत्ति देना स्वीकार किया था—परन्तु उसे उन लोगों ने अस्वीकार किया। फिर मैंने जब अपनी जायदाद के बारे में कोई कागज बेची का नहीं लिखा तो मेरी जायदाद के अधिकारी दूसरे कैसे हो गये?।

आटू—अच्छा श्रीमान् मुझे एक बात का तो उत्तर दें। क्या श्रीमान किसी ऐसे व्यक्ति

को जानते हैं जिसकी सूरत ठीक आप से मिलती है ? और विना किसी विशेष व्यक्ति के जांचे आपलोगों में कोई फरक सामान्य दृष्टि वाला बताही नहीं सकता।

बेरेन—हां मैं एक ऐसे बदमाश, लुच्चे व्यक्ति को जानता हूं जो इसी मठ में रहता था परन्तु तुम्हें इससे क्या ?

आद्रू—अच्छा तो श्रीमान अब उस बुरे समाचार के सुनने के निमित्त प्रस्तुत हो जाँय जिसके बारे में मैं आप से कह चुका हूँ—इसी व्यक्ति ने आपका नाम रख के आपकी कुल सम्पत्ति ले ली है—गवर्मेन्ट ने भी भली भांति उसकी जांच परताल कर जायदाद कुल उसके हवाले की।

बेरेन—(घृणा से मुसकरा के) वाह! क्या चाल इस पाजी वाल्सटेन ने हमारे साथ खेली है। उस जायदाद को, जिसमें हमारे पुरखों के धन के अतिरिक्त हमारे चाचा की भी कमाई मिली हुई थी किस सफाई और पाजीपने से ले लिया और हमारे बड़ों के महलों पर अधिकार कर लिया।

आद्रू—मुझे ऐसा भय था श्रीमान कि कदाच कुल वृत्तान्त हमें आपको सुनाना पड़ेगा, परन्तु आप तो पहलेही से विज्ञ हैं—इस पाजी ने हमें भी अपनी एक दुष्टता से बड़ा कष्ट पहुंचाया है—अर्थात् इस झूठे नाम तथा उपाधि को धारण करके उसने मेरी बहिन के साथ विवाह कर लिया है।

बेरेन—(चिल्ला के) तुम्हारी बहिन का व्याह इस पाजी के साथ हुआ है (फिर कुछ देर ठहर के) कोई परवाह नहीं चाहे तुम्हारा संसार में कोई क्यों न हो मैं उसे मर्यादाही की दृष्टि से देखूंगा—मैं उन्हें क्षमा कर दूंगा—मैं उनको मर्यादा की दृष्टि से देखूंगा—तुम्हारी भगिनी है इस कारण वह हमारे सिर और आखों पर है।

आद्रू—आह श्रीमान! आपके उदार हृदय की जो कुछ प्रशंसा इरेनी ने मुझसे की थी वह सब सत्यही थी। अच्छा तो अब मैं भले तथा बुरे दोनोंही समाचारों से आप को अवगत कर चुका। एक ओर तो वह—भुवनमोहिनी स्त्री जो सौन्दर्य, धन, ईमानदारी, और धर्म्म में एकही है,—आपसे व्याह करने के निमित्त उत्सुक है और दूसरी ओर वह पाजी, नीच, दुरात्मा है जो आप के सत्व तथा आप की सम्पत्ति को लौटा देने में झगड़ा करेगा।

बेरेन—(कड़ाई से) अब इन बातों को किसी समय पर उठा रखो—हम इस समय इस बारे में बात चीत नहीं किया चाहते। इस समय मेरा कुल ध्यान इरेनी पर लग

रहा है। पन्द्रह वर्ष बीते जब मैंने सुन्दरी को देखा था! क्यों युवक कभी तुमने भी प्रेम के पथ में पैर रखा है? नहीं तब तो तुम उस दुःख को किसी प्रकार भी अन्दाजा नहीं कर सकते जो इन पन्द्रह वर्षों में मुझे हुआ है—गुलामी-कैद—फांसी इत्यादि, सभी कष्टों से कहीं विशेष दुःख मुझे अपनी प्यारी के बिछोह से हुआ। मैं तुम से सत्य कहता हूँ कि मेरे प्राण अपनी प्यारी से पृथक् होतेहीं निकल जाते परन्तु एक ध्यान—एक बात—और वह केवल आशाही एक ऐसी वस्तु थी जो अबलों मुझे जीवित रक्खे हुये है। आह! मैं सत्य कहता हूं इस बात में मेरा प्रेम और भी दग्ध सुवर्ण की भाँति लाल हो रहा है; मैं अपनी प्यारी का प्रेम अब भी अपने हृदय में वैसाही स्थापन किये हुआ हूं—तुमने तो कभी किसी से प्रेम कियाही नहीं परन्तु यदि करते तो मुझसे विशेष कष्ट तुमको कदापि न झेलने पड़ते। आह! मैं इरेनी को जानता था—मुझे यह निश्चय था कि जैसा मेरा अटल प्रेम है वैसाही मेरी प्यारी का भी मेरे प्रति होगा। वह मुझे कभी हृदय से न बिसारेगी—वह अपने हृदय के सिंहासन से मुझे उतार के दूसरे को कदापि न आरूढ़ करायेगी। यही ध्यान कैदखाने में मेरे जीवन का कारण होता था—और यही इन दुःखदायी पन्द्रह वर्षों में मुझ पर एक आशा की किरन बन के झलक मारता था। हां यदि तनिक भी मेरे हृदय में अपनी प्यारी की ओर से शंका उपस्थित होती तो इसमें कोई संदेह नहीं कि मैं पागल हो गया होता—मैं अपने माथे को उन्हीं दीवारों से टकरा के चूर्ण कर दिये होता जिसमें कि मैं इतने दिवसों पर्यंत बंदीवत् रक्खा गया था—परन्तु मैं जानता था कि इरेनी कोई सामान्यहृदया स्त्री नहीं है—उसकी आत्मा स्वच्छ है, और उसका हृदय धर्म तथा इसके अन्तर्गत और गुणों का कोष है। येही सब ध्यान हैं जो मुझे बंदीखाने में भी आह्लादित रखते थे; और कभी २ एक शब्द मेरे कानों में यह कहता सुनाई पड़ता "इरेनी जीवित है, और उसका जीवन केवल तुम्हारेही निमित्त है!" आह! इसके पूर्वही मेरे बाल दुःख के कारण सुफेद हो जाते—इसके पूर्वही रोते २ मैं अंधा हो गया होता—परन्तु मेरे मित्र! उन पन्द्रह वर्ष के असह्य कष्टों को इन्हीं प्रेमदेव की कृपा से मैं निरापत्ति झेल गया—यदि यह न होता, मेरे हृदय में प्राणप्यारी से मिलने की एक आशा—और उससे मेरे हृदय में आनन्द न आता तो अब लों मैं यथार्थही बहुत जीर्ण हो गया होता"

आटू के हृदय पर उन शब्दों से जिन्हे बेरेन ने अभी विशेष उत्तेजना से कहे थे बड़ाही गहरा असर पड़ा।

और अब राह भी ऐसी आ पड़ी थी कि जिसमें विवश होके इन दोनों को आगे पीछे चलना पड़ा, इस कारण बातों का सिलसिला टूट गया।

अर्धनिशा थी जब यह छोटा झुंड उस झोपड़ी के निकट पहुँचा जिसमें इरेनी अपने पहाड़ियों सहित उतरी हुई थी।

बेजिनी—(धीरे से) "खिड़की से प्रकाश वहिर्गत हो रहा है—तथा चिमनी से धुवाँ भी निकलता जान पड़ता है—निस्संदेह वे लोग झोपड़ी में हैं"। यह सुनके आटू ने भी बड़ीही धीमी आवाज़ में परन्तु बड़ीही प्रसन्नता से कहा।

"भगवान का कोटानुकोट धन्यवाद है कि लेडी इरेनी यहां लों निर्विघ्नता-पूर्वक पहुँच गई (बेरेन से) अच्छा तो श्रीमान्! पहले मैं प्रवेश करता हूं और उन्हें आपकी साक्षात् के निमित्त तैयार किये देता हूं।"

परन्तु जब से बेरेन कोई उत्तर दे तब से इरेनी के कोमल कंठस्वर ने इसके कर्ण कुहर में प्रवेश किया।

एक बड़ेही सुरीले और दिल लुभानेवाले स्वर में वह लहरा के निम्नलिखित गज़ल गा रही थीः—

मौसिमे गुल हो बाग़ हो, हम हों वो गुल अजार हो।
लुफ्त उठें बहार में, औ नई बहार हो ॥
सहने चमन में हर जगह, रङ्ग जमे निशात का।
नहरें रवाँ हो जा-बजा, जोश्दे आबसार हो ॥
एक तरफ हो जामे मै, व एक तरफ हो बांगे नैं।
एक बग़ल में शीशः हो, व एक बगल में यार हो ॥
जोशे मये निशात में, उसकी कमर में एक हाथ।
दूसरे हाथ में मेरे, ज़ुल्फे मुश्कबार हो ॥
सीना बसीना लब बलब, हसरतें दिलकी निकलें सब।
उससे मैं, हमकिनार हूं, मुझसे वो हमकिनार हो ॥
उसके गले में मेरे हाथ, मेरे गले में उसके हाथ।
दोनों तरफ से चाह हो, दोनों तरफ से प्यार हो ॥

मैं कहूं दम तो लो जरा वस्ल को है तमाम शब ।
वो कहे किसको ताब है, दिल पै भी एख्तियार हो ॥
चेहरा बहाल हो उधर, शर्म से सर नगूं इधर ।
सुबहः को छेड़ छाड़ हो, आंख अगर दो चार हो ॥

बेरेन—वह कंठस्वर—हाय! मैं इस कंठस्वर से कितना परिचित हूं! वह गजल! हाय कितनींही बार मैंने इसे दमिश्क में अपनी प्यारी के मुँह से सुना है!

इतना कहके बेरेन ने दोनों हाथ बांध के परमेश्वर की ओर उठाये और जब लों गाना होता रहा वह चित्रपट की भांति उसी स्थान पर खड़ा रहा।

गाना बंद हुआ और अब उत्सुक प्रेमी अपने हृदय के उद्वेग को किसी प्रकार थाँभ न सका।

पागलों की भांति आगे बढ़ते हुये बेरेन को आटू ने पकड़ लिया, क्योंकि वह समझता था कि यदि ऐसे अचांचक दोनों का सम्मलिन हो जायगा तो आश्चर्य नहीं कि मारे आनन्द के दोनोंही के प्राण पखेरू तन पिंजर से निकल के स्वर्ग-लोक को सिधारें! परन्तु उसका यह उद्योग निरर्थक हुआ बेरेन ने दो चार झटके जोर से देके अपने को आटू से पृथक कराया और सजल-नयन दौड़ता हुआ झोपड़ी के द्वार पर पहुंचा—द्वार को उसने एक बड़े कड़े धक्के से धड़ाधड़ खोल दिया और पागलों की भांति दौड़ता हुआ झोपड़ी में घुसा।

उधर सौन्दर्य की खान इरेनी सहसा अपने स्थान से उछल के अपने आगे की ओर दौड़ी और दूसरे क्षण में, अपने को अपने प्यारे की गोद में डाल दिया।

"इरेनी"

"थिउडोर"

इतना कहके वे दोनों प्रसन्नता से रोने लगे—अश्रुधारा दोनों के गालों से बहती हुई नीचे आने लगी—और लोकलाज छोड़ के सहस्रों बार इरेनी ने बेरेन को तथा बेरेन ने इरेनी को चूम लिया—इस समय दोनों के हृदय की अवस्था का उल्लेख हमारी शक्ति से बाहर है—दोनों एक दूसरे को उन सहस्रों प्यारे २ नामों से स्मरण कर रहे थे जिन्हें प्रेमी या प्रेमिकाही बना के तैयार कर लेते हैं।

आह दोनों बिछड़े हुओं के निमित्त कितनी आनन्ददायक घड़ी यह थी! कोई ऐसा न होगा कि जिसके चित्त में चुभ जानेवाला यह दृश्य निरख के आंसू न आ जायें।

अन्त हार्दिक आवेग से लिपटा हुआ जोड़ा कुछ देर के उपरान्त एक दूसरे की

छाती से पृथक हुआ—और वह भी केवल इस निमित्त कि इरेनी की इच्छा अब उन व्यक्तियों को भी धन्यवाद देने को थी जिनके कारण यह शुभ घड़ी और शुभ अवसर उसे देखना नसीब हुआ था।

अपने प्यारे की छाती से पृथक होके इरेनी ने आटू की ओर देख के कहा—

"तुम्हें, मेरे प्यारे युवक मित्र! मैं नहीं जानती कि किन शब्दों से बुलाऊँ और कैसे तुमसे बात चीत करूं। यह वीर! इटलीनिवासी अवश्य एक अच्छा पारितोषक मेरे हाथों से पायेगा, मेलडिडा को भी जो मैं कह चुकी हूं, दूंगी। परन्तु तुम्हें, आटू—प्यारे आटू—(उसके नेत्रों में जल भर आये और गला भारी हो गया) मैं क्या कह सकती हूं?—तुम मुझे अपनी बहिन जानो और मेरे प्यारे थिउडोर को अपना भाई! अब तुम हमलोगों को छोड़ के कहीं न जाना—और यह हमलोगों का कर्तव्य होगा कि हम तुम्हें सदैव प्रसन्न रक्खा करें।

इतना कहके उसने बेरेन की ओर देखा।

थिउडोर—"अपनी कुल शक्तियाँ अपने प्राणपण से मैं उस बात की चेष्टा में लगा रहूंगा जिसे अभी तुमने आटू से कहा है। प्यारी इरेनी! (आटू से) आटू! आज से मैं तुम्हारा सहोदर हूं—और मेरी प्यारी इरेनी तुम्हारी बहिन!" युवक चित्रकार ने केवल उन दोनों हाथों को जो युगल मूर्ति की ओर से बढ़ाये गये थे अपने हाथों में लेके दबाया। परन्तु उनकी इस असीम दया से इसका हृदय इतना भर आया था कि जिह्वा से एक शब्द भी न निकाल सका।

इसके उपरान्त; दोनों पहाड़ियों ने भोजन की सामग्री टेबुल पर चुन दी, और लकड़ियां अँगीठी में डाल दीं। जिससे अग्नि खूब भड़क गई और फिर यह प्रसन्न झुंड भोजन के निमित्त टेबुल के चारों ओर बैठ गया।

तैंतालीसवाँ बयान।

बेरेन ज़ेरानिन के महल का एक दृश्य।

जिस घटना का ऊपर के बयान में उल्लेख किया गया उसको हुये लग भग दो मास के व्यतीत हुये होंगे।

एडा इस समय वायना के महल जेरनिन में अपने निज कमरे में बैठी आपही आप अनेकानेक विषयों पर विचार कर रही है।

समय सन्ध्या का है। इस कारण उस टेवुल पर, जिसके सामने यह बैठी हुई है एक लम्प जल रहा है। उसके दाहिने हाथ की कुहनी तो सामने के रक्खे टेवुल से लगी हुई है और उसी हाथ की हथेली पर उसका सिर सहारा लिये हुआ है।

इतने में सहसा द्वार खुला और उसके पति ने कोठरी में प्रवेश किया। इस ने पहिली दृष्टि में यह भी मालूम कर लिया कि इस समय वह शराब के नशे में चकनाचूर है।

एडा—(बड़ीही घृणा से) अपने मित्र शर्मन के साथ बैठके शराब पीने का आनंद छोड़ के तुम यहां कैसे आ गये? क्या तुम अब उस्के साथ रहते २ उससे उकता गये? मैं जहां लो अनुमान करती हूं आज कुछ महीनों से; जब से वह इस महल में रहने लगा है तबसे तो वह मानों तुम्हारा उस्तादही सा बना बैठा है, प्रत्येक बातों में तुम्हारी गर्दन नापता—"

बेरेन—(बेसब्री से चिल्लाके) बस बस एडा ऐसी २ बातों से अपनी जबान रोको। स्मरण करो कि अन्तिम बेर हमसे तुमसे क्या वादा हुआ था यही न कि न तो तुम हमारे कामों में विघ्न डालो और न हम तुम्हारी बातों में छेड़खानी करें। बस तो उचित है कि हमलोग उसी बात पर दृढ़ रहें और अब दूसरे के भेदों में हस्तक्षेप करने का उद्योग न करें।

एडा—(सकोच से) फिर तुम हमारे इस निज के कमरे में दर्राते हुये इस समय क्यों घुस आये?

बेरेन—इस कारण कि हमें तुम स कुछ कहना है—एक बड़ीही आवश्यकीय बात है (इतना कहके वह एक कुरसी पर बैठ गया) सत्य तो यों है कि शर्म्मन ने जब से तुम्हें देखा है तब से तन मन से आसक्त हो गया है।

एडा—(उसके चेहरे पर रक्त दौड़ने लगा) मुझ पर आसक्त हो गया है! वह कमीना पाजी मुझ से प्रेम का दम भरता है?

बेरेन—हां-हां—तुम पर प्राण दिये देता है! और क्यों न प्राण विसर्जन करे? शर्म्मन एक बड़ाही रसिया व्यक्ति है! और उसमें ऐबही क्या है तनिक वह बन ठन के निकले तो देखो लोगों की ऊँगलियां उसपर उठने लगें। उसे तुमने समझ क्या रक्खा है?

एडा—लोगो ! यह क्या अंधेर है कि पति अपनी स्त्री से ऐसी बातें करे और ऐसे मुये खबीस की इतनी प्रशंसा (संकोप) बस महाशय बस अब आप इस प्रकार की बातें मेरे सामने न कीजियेगा—इसी कारण आप मेरे निज के कमरे में बिना बुलाये घुस आये हैं आपको लज्जा आनी चाहिये।

बेरेन—सुनो सुनो; लज्जा का स्थान नहीं है। वह बेचारा तुम्हें हृदय दे चुका है और अब देखने को भी तरसता है। वह कहता है कि तुम उसके साथ एक टेबुल पर बैठ के पति और स्त्री की भांति भोजन कर लो और इस समय बड़े कमरे में टेबुल तैयार है केवल तुम्हारीही देर है।

एडा—(क्रोध से) मैं अपने कमरे में विष की मिली हुई रोटी को भी, उन टेबुलों के भोजनों से जो शर्म्मन—भयानक शर्म्मन के साथ खाना होगा, हजार बार पसंद करती हूं। अब आपको उचित है कि यहां से—"

बेरेन—ठहरो !—देखो यह तुम्हारा बड़ाही अन्याय है। वह मेरा मित्र है और मित्र भी कौन ? परम मित्र! और तुम मेरी पत्नी। फिर पत्नी को मैं अपने पास रख के करूंहीगा क्या यदि उसने अपना कर्तव्य न साधन किया। अरे तुम्हारा और कामही क्या है? बस अब विशेष हठ न करो जो मैं कहता हूं उसे स्वीकार करो।

एडा—इन कामों के निमित्त मुझ से आप से व्याह नहीं हुआ है। आपका मित्र तो दूर रहा आपका भी यथार्थ में कोई अधिकार इस प्रकार का मुझ पर नहीं है। तुम्हें रुपये की आवश्यकता थी और मुझे एक ऐसे मकान की आवश्यकता थी जहां स्वतंत्र होके अपना जीवन बिताऊँ और साथही मुझे पतिवाली भी कहलाने की आवश्यकता थी (इसे उसने कुछ धीमे स्वर में कहा) इसके उपारन्त तुम्हें वह अतुल सम्पत्ति जिसकी तुम्हें आवश्यकता थी दी गई, जिसे तुमने शराबखोरी में उड़ा दिया; परन्तु मुझे वह स्वतंत्रता; जिस्की मुझे चाह थी न मिलने पाई। तुमने अपने मकान में एक ऐसे बदमाश को टिका रक्खा है जिसे दिन भर सोने, शराब पीने, नौकरों से गाली गलोज तथा मार धाड़ करने के अतिरिक्त और कोई कामही नहीं। यदि मैं इस्से दुखी होके क्रुद्ध होती हूं तो तुम मेरा एक ऐसा भेद जानते हो कि जिसे सुना के मुझे धमका देते हो और मैं मारे भय के चुपकी हो रहती हूं। परन्तु आज तुम एक नयाही फूल खिला के मुझे प्रसन्न करने के निमित्त आये हो कि "शर्म्मन तो तुम पर प्राण देता है !"

बेरेन—अंजी मैं तो तुमसे केवल इतनाही कहता हूं कि तुम शर्म्मन के साथ बैठके एकही टेबुल पर भोजन करलो बस इतनीही उस्की इच्छा है इसे तुम्हारी कौन सी हानि है ?

एडा—बस तो फिर ऐसा कदापि नहीं हो सकता !

बेरेन—तुम केवल उसे क्रुद्ध किये देती हो; और फिर—"

एडा—और फिर वह तुम्हारा कोई गुप्त भेद खोल देगा जिस्की धमकियाँ प्रायः वह तुम्हे दे चुका है (कड़ाई से) इससे हमे भी यह प्रतीत हो गया कि निस्संदेह उसके साथही साथ तुम कोई भारी अपराध के दोषी हुये हो जिस्की धमकियां वह प्रायः तुम्हें देता है और या कोई भारी दोष तुमने किया है जिससे वह भली प्रकार अवगत है और उसी की—"

बेरेन—(चिल्ला के और जोर से पृथ्वी पर पैर पटक के) आह ! इन बातों से तुम्हें कोई लाभ नहीं।

"वास्तव में कोई लाभ नहीं !"

इतना कहता द्वार खोल के शर्म्मन भीतर घुस आया और फिर बोला " हा ! हा ! हा ! अब तो बेरेन महाशय आपके पीछे २ आके मुझे इस सुरीली चिड़िया का घोसला मालूमही होगया अब तो मैं जैसे बन पड़ेगा इसे पकड़ही के छोडूंगा। (बेरेन से) और क्यों यार तुम तो बड़े झूठे निकले—जब मैं कहा करता था कि आप मेरी प्यारी से मुझे मिला दो तो तुम मुझसे कहा करते थे कि उसने कल के निमित्त कहा है—और फिर जब मैं दूसरे दिवस कहता तो फिर तुम यही बहाना किया करते आज महीनों तुमने योंही भविष्य का वादा कर २ के मुझे टाल दिया और यहां आजही तुमने इस बात को मेरी प्यारी से कहा है।

एडा—और क्यों कमीने पाजी ! अब तेरी ढिठाई इतनी बढ़ गई कि यों निधड़क तू हमारे निज के कमरे में घुसा चला आया !

शर्म्मन—(घृणा से) छी—छी! अब मुझसे किसी प्रकार का परदा नहीं है इस कारण मेरे सामने निज और दूसरों का सभी बराबर है। मैं लगभग पाव घण्टे के यहीं छिपा खड़ा तुम लोगों की बातें सुनता रहा मुझे तुम्हारे दोषों की पूरी विज्ञता हो गई है।

ऐडा अब अपने क्रोध को रोक न सकी तो मारे क्रोध के चिल्ला के बोली—

"हरामजादे !—"

शर्म्मन—(गंभीरता से उसकी बात दोहरा के) हारामजादा निस्संदेह ! परन्तु अपने व्याह का वृत्तान्त में तो कहो—क्या वह इस हरामजदगी से कुछ कम था ? धन तो बेरेन के निमित्त—और स्त्री का नाम मात्र तुम्हारे निमित्त ! और फिर उस पर वह बड़ा कारण, जिसे बेरेन महाशय भी छिपाये हुये हैं ! क्यों—क्या मैं तुम्हारे इतने भेद नहीं जान गया हूं कि जिससे तुम्हारे गर्व का भाँड़ा चूर्ण कर दूं ? क्यों—अब इन भेदों के न खोलने के निमित्त मेरी प्यारी सुरीली चिड़िया ! तुम उसी हरामजादे शर्म्मन के पैरों पर न पड़ोगी जिसे तुम अब लों घृणा करती आई हो ? (बेरेन से) बेरेन, तुम तनिक बाहर तो चले जाओ; —मैं यहां स्वतंत्रता में श्रीमती बेरेन महाशया से दो एक गुप्त बातें कहा चाहता हूं।

एडा—(चिल्ला के) यहां से कदापि न जाइयेगा श्रीमान् !—देखिये मुझे इतना विवश न कीजिये कि मुझे मकानवालों को सहायता के निमित्त बुलाना पड़े—यदि यह महाशय अब एक पग भी मेरी ओर बढ़े तो मैं मकान के नौकरों को सहायता के निमित्त बुलाऊँगी।

शर्म्मन (गरज के)—बेरेन ! यहां से चले जाओ ! मैं कहता हूं न !

बेरेन—मैं बाहर नहीं जा सकता—मैं बाहर न जाऊँगा।

शर्म्मन—तब तो बेवकूफ ! तुझे कोठरी के बाहर करना पड़ेगा।

इतना कहके शर्म्मन ने अपनी तलवार म्यान से निकाल ली।

यह देखतेही बेरेन ने भी अपनी तलवार म्यान से बाहर निकाली और सकोप कहने लगा—

"अच्छी बात है, आजही रोज २ का बखेड़ा समाप्त हो जावे। सुनो शर्म्मन ! मैं तुम्हारी बातें सहते २ दुःखी हो गया। तुम्हारी घृणायुक्त बातें—तुम्हारी असह्य बे अदबियाँ—तुम्हारी नौकरों के सामने की गालियों ने हमें दुःखी करके, इस बात पर उद्यत कर दिया है कि इसका मैं आजही वारा न्यारा कर डालूं—जिसें रोज २ की झंझटों से प्राण छूटे। अच्छा बचाओ अपने को!"

इसके उपरान्तही दोनों ओर झनाझन तलवार के हाथ चलने लगे।

यह देख के एडा जोर से चिल्लाई और शीघ्रता से द्वार की ओर भागने को थी कि सहसा द्वार खुला और नरडूड, (एडा की मजदूरनी) कोठरी में आ गई।

इसे देखतेही दोनों लड़ाकों की तलवार पृथक होके शीघ्रता से म्यान में चली गई।

"श्रीमान !" बस इतनाही कहके जरट्रूड पीछे हट गई। मारे आश्चर्य के वह आगे एक अक्षर भी अपने मुँह से न निकाल सकी।

एडा—कैसे आ गई? कहती क्यों नहीं लड़की!

जरट्रूड—एक व्यक्ति श्रीमान बेरेन महाशय से साक्षात् किया चाहतो है।

बेरेन—(बड़ेही क्रोध से) अरी! क्या मैंने तुझ से नहीं सहेज दिया था कि आज जो कोई आवे कह देना कि बेरेन तुम से नहीं मिल सकते?

जेरट्रूड—कह तो श्रीमान् ने सब कुछ दिया था परन्तु जब वह व्यक्ति माने तब न! मुझ से उसने यह भी कहलाया है कि जब तू मेरा नाम श्रीमान के सामने लेगी उसी समय वे अवश्य मुझ से मिलने चले आयेंगे।

यह सुनके उस बने हुये प्रतिष्ठित व्यक्ति ने घबड़ाहट से पूछा—

"और उसका नाम?"

"फ्रिज़!"

"फ्रिज़!" इतना कहतेही एडा का पति बिलकुलही पीला पड़ गया! "हां—मैं उससे मिलूंगा—इसी क्षण मिलूंगा।"

इतना कहके वह द्वार की ओर मुड़ा और वहां पहुंचते २ आपही आप कहने लगा, "भगवान जाने यह किस लिये यहां आया है?"

शर्म्मन—(नकली बेरेन को जाते देख के) ठहरो भाई हम भी तुम्हारे साथही चलते हैं! हमें भी बड़ी उत्कंठा लगी हुई है कि इसके आने का कारण क्या है!

इसके उपरान्त वे दोनों कोठरी के बाहर चले गये।

इस ऊपरावली कोठरी के ठीक नीचे एक बड़ी दालान में फ्रिज़ इधर उधर टहल रहा था। कुछही देर में शीघ्रता से द्वार खुला और नकली बेरेन ने अपने मित्र शर्म्मन सहित दालान में प्रवेश किया।

फ्रिज़—(आगे बढ़के और एडा के पति से मिल के) कुल भेद खुल गया!—चिड़िया पिंजड़े से उड़ भागी।

यह सुनतेही दोनों के चेहरे का रङ्ग हवा हो गया—शर्म्मन और बेरेन दोनोंही काँपने लगे; और फ्रिज़ की बातों का उत्तर मानों इन्हा भय के चिह्नों से उन दोनों ने दिया।

फ्रिज़—हाँ; असली बेरेन बंदीखाने से भाग गया और एक युवक व्यक्ति ने जिस्की करतूतही से यह सब कछ हुआ है, फादर एनस्लेम को अधमुवा करके गिरजे में

बाँध बूंध के डाल दिया था—और यह युवक व्यक्ति निस्संदेह आटू पेनिल्लाही है ।

नकली बेरेन—अरे ! यही आटू पेनिल्ला ?

फ्रिज़—हाँ यही आटू पेनिल्ला ! एक दिवस वह किसी प्रकार धमसे आ पहुँचा और महन्त के मुँह में कपड़ा ठूस उस्के हाथ पैर बांध के बेरेन को छुड़ा के सीधा यहाँ चला आया । इस्के उपरान्त हमलोग भी महंत सहित वायना में आये थे और उन्होंने उस व्यक्ति को पहचाना जिसने उनके साथ वह अनुचित व्यवहार किया था, और वह यही आटू पेनिल्लाही था ।

शर्म्मन—(चिल्लाके) तो बस, अब मैं देखता हूं कि सब मामला चौपट हो गया और अब मुझे तो इनलोगों से कोई वास्ता है ही नहीं । मैं सीधा यहाँ से अपने वस्त्र इत्यादि लेके किसी दूसरे स्थान पर भागता हूं जहां अपना ठिकाना कर लूंगा ।

इतना कहके वह पागलों की भाँति महल के भीतर दौड़ा और द्वार के निकट आके उसने जोर से धक्का दिया जिससे द्वारतो खुला परन्तु साथही एक धड़ाका भी हुआ। अब जो इसने भीतर पहुँच के देखा तो जान पड़ा कि पथरीले फर्श पर एडा गिरी पड़ी है ।

शर्म्मन - (चिल्ला के) क्यों ! द्वार में लग के तुम क्या सुन रही थीं ?

इतना कहके शर्म्मन ने उसकी बांह पकड़ के उसे उठाया और गोद में दबाये हुये शीघ्रता से कोठरी में ले आया ।

एडा—यह छिप २ के बातें सुनना मैंने तुम्हीं से तो सीखा है ।

इतना कहके उसने बल से अपने को उसकी गोद में से निकाला और फिर कहने लगी, "जो कुछ तुम लोगों में बातें हुई उसे मैंने सब सुन लिया । अच्छा इस असली बेरेन के क्या तात्पर्य ? हमारे भाई आटू ने क्या किया ? उसने किसे छुड़ाया है ? बतलाओ ?" यह उसने अपने ऊंचे स्वर में और जोर से चिल्ला के शर्म्मन से पूछा ।

शर्म्मन—(जोर से आंखें झपका के) आह! आह ! कुल भेद खुल गया है !—और अब श्रीमान् बेरेन की महाशया, तुम्हें भी हमलोगों के कष्ट में भाग लेना पड़ेगा । सच तो यों है कि तुम्हारा प्यारा पति—और मेरा प्यारा और सच्चा मित्र—एक सामान्य व्यक्ति के अतिरिक्त जैसा कि मैं हूं कोई बेरेन वेरेन नहीं है—वह केवल एक बेचारा गरीब वालसटेन है जो कभी तुरकिस्तान में असली बेरेन जेरनिन का एक बड़ाही सुयोग्य सेवक माना जाता था ।

एडा—हाय ! यह बात यहां लों बढ़ी हुई है !

इतना कहके वह कोच पर गिर पड़ी और उसने दोनों हाथों से अपने चेहरे को छिपा लिया।

ठीक उसी समय द्वार खुला और शाही गारद के हथियारबंद सिपाहियों से कुल दालान भर गयी।

गारद में से एक अफसर आगे आया और उसने नकली बेरेन की ओर बढ़के कहा, "शाहंशाह जरमनी की आज्ञा से तुम हमारे कैदी हो।"

यह सुनतेही एडा तीर की तरह कोच से उठके द्वार की ओर झपटी और द्वार के एक कोने में खड़ी होके कहने लगी:—

"चाहे हमारे पति का कोई दोष क्यों न हो परन्तु उसमें यह व्यक्ति भी (शर्म्मन की ओर ऊंगली उठा के) अवश्यही मिला हुआ है। इससे मैं प्रार्थना करती हूं कि यह भी बांध लिया जाय।"

जब शाही गारद के सिपाहियों ने उस व्यक्ति को पकड़ लिया उस समय एडा ने उसकी ओर एक बड़ीही घृणायुक्त दृष्टि से देखा।

इस्के उपरान्त गारद के अफसर ने फ्रिज़ की ओर फिर के कहा—

"कदाच तुम भी इन बातों में किसी प्रकार का मेल रखते होगे, इस कारण तुम्हें भी हमलोगों के साथ चलना पड़ेगा; वहां चल के तुम अपनी सफाई देके छूट सकते हो।"

शर्म्मन—(चिल्ला के और एडा की ओर इंगित करके) और इस स्त्री को क्यों नहीं पकड़ते ? यह अपने पति की चालचलन से भली भांति विज्ञ है और मैं बेचारा तो व्यर्थही—"

अफसर—मुझे किसी स्त्री के पकड़ने वा लाने की आज्ञा नहीं प्रदान की गई है, इससे मैं उसे नहीं पकड़ सकता।

शर्म्मन—परन्तु उसने भी एक बड़ा भारी अपराध किया है जिसे जब वह अपने पति से कह रही थी तब मैंने सुना था।

यह सुन के एडा एक क्षण के निमित्त कांप गई।

अफसर—अच्छा वह अपराध किस प्रकार का है ?

शर्म्मन—यह तो मुझे मालूम नहीं, परन्तु इतना अवश्यही कह सकता हूं कि अपराध भारीही था।

अफसर—ऐसी वाहियात बात पर मैं उसे पकड़ नहीं सकता (अपने आदमियों से) आओ मेरे जवानों ! कैदियों को लेके आगे बढ़ो।

सबके आगे २ शर्म्मन था, और जब वह एडा के निकट से जाने लगा तो एडाने फिर एक घृणायुक्त दृष्टि उसपर डाली। इस समय उसने उन कुल पाजीपनों का बदला शर्म्मन से लिया था जो उसके साथ वह प्रायः किया करता था, और इस समय उस बदले के आनन्द में यह इतना डूबी हुई थी कि उसे अपने पति का जो एक समय में उसके साथ ब्याहा गया था तनिक भी शोक न जान पड़ा।

शर्म्मन के उपरान्त फ्रिज द्वार से बाहर किया गया और फिर सबके अन्त में ग्रेगरी वालसटेन महल से बाहर निकाला गया। यह पहिलाही समय है जब हम नकली बेरेन को उसके असली नाम से लिखते हैं—

चलती समय उसने एक बेर अपने चारों ओर की भूमि को देखा, जहां इतने दिवसों पर्य्यन्त वह आनन्द से रहता आया था। वहां से इसकी दृष्टि एडा पर जा पड़ी जिसे देख के और लज्जित होके उसने अपनी आंखें नीची कर लीं।

जैसेही ग्रेगरी वालसटेन उस मकान से निकला जिसमें वह कई बेर अधिकारी की भांति रह चुका था। वैसेही उसके निकट से एक स्त्री जो काला लबादा ओढ़े और कालाही नकाब पहने हुई थी और जिसके दाहिने हाथ की उँगली में एक बड़ीही विचित्र अँगूठी पड़ी हुई थी, निकली और वह उसके कान में शीघ्रता से यह कहती आगे चली गई—

"भय न खाओ! मेरे भाई सीज़र तथा फादर एनस्लेम दोनोंही वायना में वर्तमान हैं!"

इस स्त्री की यह चाल देख के एक सिपाही ने वालसटेन से पूछा—

"क्या तुम से इस स्त्री ने कुछ कहा है?"

वालसटेन—(बड़ीही बीरता से) नहीं!

परन्तु उन रहस्यमय वाक्यों ने जो इसके कानों में पड़ गये थे बहुत कुछ इसे ढाड़स दिया।

चौवालीसवाँ बयान।

ब्रेरेन जेरनिन का वृत्तान्त।

इस घटना के दूसरे दिवस—अर्थात् ९ जून सन् १४६६ के प्रातःकाल—वायना की बड़ी अदालत में भारी सन्नाटा छाया हुआ था और साथही वहां रोब तथा दबदबा भी मालूम पड़ता था।

एक ऊँचे काठ के चबूतरे पर, जो एक हरे बरामदे के नीचे था, सोनहली कुरसियों पर तीन जज बैठे हुये थे। इनके ऊपर अर्थात् उसी हरे बरामदे पर एक बहुत बड़ी आराम कुरसी पर प्रेसिडेन्ट कौन्ट कोमारयेन विराजमान थे। जजों के चबूतरे से कुछही अन्तर पर, सामने एक बहुत बड़ा लोहे का जँगला अदालत की दाहिनी दीवार से लेके, बाईं दीवार पर्यन्त, खिंचा हुआ था, और इसी में इस समय तीन कैदी जिनके हाथों में हथकड़ियां और पैरों में बेड़ियां पड़ी हुई थीं, खड़े थे।

ये तीनों व्यक्ति—ग्रेगरी वाल्सटेन, फ्रिज़, तथा शर्मन थे।

जजों के चबूतरे तथा कैदियों के जँगले के बीचों बीच एक बहुत बड़ी और ऊँची चौकी पर, जो गवाहों का स्थान था—थिउडोर, बेरेन ज़ेरनिन, आटू पेनिल्ला, मेजिनी और डेम मेलडिङा बैठे हुये थे।

कुल अदालत इस समय दर्शकों के झुण्ड से भरी हुई थी। उस व्यक्ति के पकड़े जाने से, जो अबलों असली बेरेन ज़ेरनिन के नाम से विख्यात था, तथा एक दूसरे व्यक्ति के आने से, जो अपने को बेरेन जेरनिन बताता था, नगर में भारी आन्दोलन हो गया था। इन दर्शकों में प्रायः सभी श्रेष्ठ और उच्च पदाधिकारीही व्यक्ति थे। कारण यह कि यह अदालत सामान्य व्यक्तियों के जाने योग्य नहीं थी। इसमें वेही व्यक्ति जाने पाते थे जिनसे जज महाशयों से परिचय था और जिन्हें वे आने की आज्ञा प्रदान करते थे।

एडा, इस समय यहां नहीं उपस्थित थी। परन्तु कौण्ट ओरेना सामने की बेंच पर बड़े ठाठ से विराजमान था। अदालत के दूसरे भाग में एक लेडी कुरसी पर बैठी हुई थी। इसके चेहरे पर नकाब पड़ा हुआ था और इसके समीपही एक स्वरूपवती बाला बैठी हुई थी जिसका गेहुवां रङ्ग तथा बड़ी २ काली २ आंखें बता रही थीं कि वह इटली की कामिनी थी। इनमें पहिली तो इरेनी अर्थात् अब बेरोनेस जेरनिन थी-तथा दूसरी मेजिनी की पुत्री नाईना थी। इनके अतिरिक्त जिस स्थान पर, फोष्ट बैठा हुआ था उसके बहुतही पीछे कोने में एक लेडी खड़ी थी। यद्यपि यह स्त्री एक काला लबादा तथा काली नकाब पहने हुई थी परन्तु उसमें से भी उसके शरीर की अकथनीय कान्ति फूट २ के बहिर्गत हो रही थी। इसका गोरा २ दाहिना हाथ, कपड़ों में से बाहर निकला हुआ था। उसकी बिचली बड़ी ऊँगली में एक उत्तम कारीगरी की अँगूठी थी। यद्यपि वह अँगूठीवाला दाहिना हाथ कभी २ अपने कपड़ों में डाल लेती थी, परन्तु फिर भी

उसकी आभा उसके भीतर से निकलती जान पड़ती थी और इन्हीं सब कारणों से फोष्ट उसे दृष्टि गड़ा के देख रहा था।

ऊपरी दिखाव में बेरेन जेरनिन तथा ग्रेगरी वाल्सटेन बिलकुलही मिलते जुलते नज़र आते थे। उन्हें देख के लोग बड़ेही चकित हो रहे थे। बेरेन इस समय बिलकुलही सादे कपड़े पहने हुआ था, परन्तु तमाशाई दोनों को देखतेही पहचान सकते थे कि किसके मुख पर कान्ति की आभा पड़ रही है और कौन बिलकुलही उजड्ड जान पड़ता है। इसके अतिरिक्त और कोई पहचानने की राह नहीं थी। क्योंकि दोनो व्यक्तियों के बाल भी एकही रङ्ग के तथा उतनेही लम्बे थे। दोनों के नेत्र बिलकुलही मिलते जुलते थे। चेहरा एकही सा था। परन्तु उसमें की लकीरों में कुछ विभिन्नता थी—बेरेन के चेहरे का कहीं २ का उतार चढ़ाव ऐसा आ पड़ा था कि जिसे देखतेही यह बोध होता था कि यह कोई श्रेष्ठ घराने का और विलक्षण कान्तिवाला व्यक्ति है। ऊँचाई में दोनोंही व्यक्ति समान थे, और सच तो यों है कि इन्हें देख के ऐसा प्रतीत होता था कि मानों किसी कारीगर ने दोनों को एकही सांचे में ढाल के तैयार किया है। परन्तु असली बेरेन गम्भीर श्रेष्ठ और सदा कान्तिवाला व्यक्ति जान पड़ता था तथा नकली बिलकुलही गँवार उजड्ड, तथा छिछोरा बोध होता था।

न्यायालय में दोनों के लाये जाने का कारण यह भी था कि असली बेरेन इतने दिनों के उपरान्त उपस्थित हुआ था और सूरत भी दोनों की मिलती जुलती थी, इस कारण बिना इज़हार के यह बता देना असम्भव था कि "इनमें असली बेरेन कौन है?"

अब अदालत की कार्रवाई प्रारम्भ हुई।

प्रेसिडेण्ट ने असली बेरेन थिउडोर को उन तीनों व्यक्तियों के विरुद्ध प्रमाण देने की आज्ञा प्रदान की।

यह सुनके बेरेन अपने स्थान से उठा और पुकार के कहने लगा—

"श्रीमान्! यह मैं भली भांति जानता हूँ कि अदालत का समय बड़ाही बहुमूल्य होता है। इस कारण मुझे अपने प्रमाण को बहुत लम्बा चौड़ा करके न कहना चाहिये। परन्तु मुझे इन धूर्तों की धूर्तता प्रगट करने के अतिरिक्त अपनी जायदाद इत्यादि के भी लौटा लेने का दावा है। इस कारण मैं अदालत से निवेदन करता हूं कि मेरा कुल वृत्तान्त सन् १४७८ से अर्थात् जिस दिवस से मैं बायना से चला था सुन लिया जाये।"

जज—यदि वह वृत्तान्त जिसे तुम सुनाया चाहते हो परमावश्यक है तो, तुम सुना चलो, अदालत उसे सुनने को प्रस्तुत है ।

यह सुनके बेरेन नम्र हो गया और फिर उसने अपना निम्न लिखित वृत्तान्त सुनाना प्रारम्भ किया—

"सन् १४८६ ई० में मैं तेईस वर्ष का था—और उसी समय मेरी और मेरे चाचा की सम्पत्ति जो वे मेरेही नाम लिख गये थे मेरे हाथों में आई । चाचा के मरने पर कुछ दिनों तक तो मैं घरही में बैठा रहा परन्तु फिर मेरे हृदय के हौसलों ने निकलने का उद्योग प्रारम्भ किया । मैं पूर्व दिशा के मुल्कों में भ्रमण करने की इच्छा को बहुत दिवसों से हृदय में पालता आता था । मैं उन लोगों की चालचलन रीति व्यवहार तथा बोल चाल के सुनने का बड़ाही उत्सुक था । मुझे ओलिम्पस पर्वत के रहनेवाली विचित्र जातियों के देखने का बड़ा शौक था । साथही बाईजेनटिउम जो उसी देश की राजधानी है और जिसकी सरहद से आष्ट्रिया तथा हंगरी की सरहद मिली हुई है उसको देखने के निमित्त भी मैं व्यग्र हुआ जाता था । हां—तो उन राजधानियों में घूमने का विचार मैं बहुत दिवसों से किये हुआ था और जैसेही मेरे चचा का स्वर्गवास हुआ और मैंही अपनी अतुल सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हुआ वैसेही अपनी कामनाओं के सफल करने के निमित्त सफर की तैयारी में तत्पर हुआ; और अन्त अपने छः ईमानदार व्यक्तियों के साथ मैं भ्रमण के निमित्त बाहर निकल खड़ा हुआ । यह भ्रमण मैंने जनवरी सन् १४७९ में प्रारम्भ किया और क्योंकि मुझे कोई आवश्यकता तो थीही नहीं इस कारण थोड़ी२ दूर पर पड़ाव डालता आनन्दपूर्वक आगे बढ़ने लगा । मैं पथ के उन कष्टों वा उन उत्तमोत्तम दृश्यों का बयान करके श्रीमान् का समय नहीं नष्ट किया चाहता ।

उन सब का निचोड़ केवल इतनाही है कि मैंने सरविया, मोलडेविया, और वेलेचिया के कुल प्रसिद्ध २ स्थानों का निरीक्षण किया और वहां के रहनेवालों की मेहमानदारी भी मेरे हृदय पर अंकित हो गई । इसके उपरान्त मैं रोमानिया से होता हुआ तुर्की राजधानी कस्तुनतुनिया में जा पहुँचा । इस स्थान पर मैंने कई मास व्यतीत किये; और फिर बास्फोरस को पार करके मैं अनरोनिया में जा पहुँचा । यहां से मैं ब्रूसा में पहुँचा—जहां हाल के सुलतान गाड़े गये थे । वहां उनकी कबर देखी, फिर वहां से मैं करामानिया में गया और करामानिया से साईरिया में जा दाखिल हुआ। घर से निकले अब मुझे दो वर्ष के लगभग व्यतीत हो चुके थे और सन् १४८१ के

प्रारम्भ में मैं एक भारी रेगिस्तान को अपने छः बहादुर व्यक्तियों तथा बीस हथियार बंद सिपाहियों से पार कर रहा था ये बीसो जवान मुझे एलेप्पोवासी मिश्र के गवर्नर-ने दे दिये थे। *

मैं दमिश्क के बिलकुल पड़ोस में पहुँच चुका था। जब मुझ पर एक महा भयानक घटना संघटित हुई। जो मेरे दुःख तथा कष्टों का प्रारंभ थी। हमलोगों के ठीक सामने दमिश्क दिखाई पड़ता था और प्रसन्नता से थके हुये पथिक पैर उठाये चले जा रहे थे ऐसे समय हम पर डाकुओं के एक बहुत बड़े झुंड ने; जिनकी गिनती साठ से किसी प्रकार कम न होगी और जो हथियारबंद थे—हमलोगों पर हमला किया। हमने भी बचाव करना प्रारंभ किया परन्तु खेद का विषय था कि हमलोगों की गिनती बड़ीही थोड़ी थी। मेरे छओं ईमानदार व्यक्ति काट डाले गये और लगभग दस के वे हथियार बंद सिपाही भी कट के बालू पर फड़कते दिखाई दिये। उस महा कठिन समय में एक ईश्वरी सहायता हमलोगों को मिल गई। उसी समय—उस प्रांत का एक बड़ाही प्रसिद्ध सौदागर जिसका नाम डेमिट्रिउस नोटेरस था—अपने अनगिनती हथियारबंद सवारों सहित, उस स्थान पर आन उपस्थित हुवा जहां यह मृत्यु का बाजार गरम हो रहा था। डाकू उसको देख के विना हमें लूटे पाटेही भाग खड़े हुये। वह दयालु हृदय सौदागर हमें लिये हुये दमिश्क में जहां उसका मकान था जा पहुँचा। मैं भयानक रूप से डाकुओं द्वारा आहत हुआ था, परन्तु देवता तुल्य उसकी प्रिय पुत्री ने तन मन से मेरी सेवा सुश्रुषा की। इससे क्रमशः मेरे घाव भर आने लगे। परन्तु घाव के अच्छे होने से कहीं शीघ्र, क्रमशः मेरी प्रीत सुन्दरी इरेनी से भी बढ़ती गई। यह चाहत की अग्नि कुछ एक ओर तो भड़कतीही नहीं। प्यारी इरेनी ने भी मुझे इस योग्य समझ हृदय में स्थान दिया, और यह देख के उसके पिता डेमीट्रिउसनोटरेस ने हम लोगों को व्याह की आज्ञा दे दी। और अब हमलोगों को इस असीम आनन्द के पूरा करने में कोई वस्तु बाधादायक न बोध हुई। मैं धनाढ्य था, मेरी जन्मभूमि में एक बहुत बड़ी जागीर मेरे अधिकार में थी और साथही मेरे पास बड़ेही बहुमूल्य जवाहरात भी थे। उधर वह सौदागर भी उस देश में का एकही धनाढ्य व्यक्ति था; और इरेनी इकलौती बेटी उसकी थी; जो कुल समपत्ति की एक मात्र उसकी अधिकारिनी

* साइरिया उस समय सुलतान के राज में नहीं था वरन् उस समय मिश्री गवरमेन्ट उस पर अधिकृत थी।

होनेवाली थी। वस तो इन वातों को विचार के—और उपयुक्त पात्र पाके—मैंने अपनी हार्दिक कांक्षाओं के निकालने का प्रवंध प्रारंभ किया।

"एक संध्या को—जिसके ठीक दूसरेही दिवस मेरे व्याह का दिवस ठकि किया गया था—मैं अपनी प्यारी इरेनी से पृथक हुआ। मेरी इच्छा थी कि मैं वाजार में जा-के अपने वहुमूल्य जरमनी के जवाहिरों से जो सैकड़ोंही मेरे पास भरे थे कुछ वहां के वहुमूल्य गहने खरीदूं और साथही व्याह के योग्य कुछ और सामग्री खरीद लूं जो प्रातःकाल व्याह के समय मैं अपनी प्यारी के भेट करता और जिसे देख के निस्सन्देह वह वड़ीही प्रसन्न होती। मैं शीघ्रता से वाजार में पहुंचा। जिन वस्तुओं की मुझे आवश्यकता थी उन्हें खरीदा और फिर पथ पर से सौदागर के मकान की ओर मुड़ा। इस समय घोर अन्धकार चारों ओर फैल रहा था, और मैं उसी अन्धकार में भटक के एक वड़ेही सँकरे अन्धकारमय तथा सुनसान वाजार की ओर आ निकला। उसी समय सहसा एक शाल मेरे सिर पर किसी ने ओढ़ा दिया और साथही इतना कस दिया कि मेरे मुँह से एक सव्द भी न निकल सका। साथही मेरे दोनों हाथ पीछे से-वाँध दिये गये और दो व्यक्ति मुझे लिये शीघ्रता से एक ओर चले। इसी प्रकार हम लगभग आध घण्टे के वरावर आगे वढ़े चले गये। इस समय मेरे चित्त में भांति२ की भयानक कल्पनायें उठ रहीं थीं। अन्त में एक स्थान पर ठहराया गया वह शाल मेरे सिर तथा मुँह पर से हटाया गया और इस समय मैंने अपने को लगभग आठ हथियारवन्द मनुष्यों के वीच में शहरपनाह के भीतर खड़ा पाया। इसके उपरान्त मैं घोड़े पर चढ़ाया गया उधर उन लोगों के भी घोड़े तैयार खड़े थे जिनपर उन लोगों ने सवार होके घोड़ों का मुँह नगर के वाहर की ओर किया और शीघ्रता से घोड़ा सरपट फेंकते आगे वढ़ने लगे, इनके वीचोंवीच मैं था। हमलोग लगातार दो घंटे पर्यंत आगे वढ़ते चले गये अन्त ऐसे स्थान पर ठहरे जहां का वालू पत्थर की भांति कड़ा होगया था। यहां पहुँच के मुझे मालूम हो गया कि अव भाविष्य में मेरे भाग्यों में क्या लिखा हुवा है। मैंने उन में उस डाकुओं के झुंड के कप्तान को पहचान लिया था जिसने एक वेर आक्रमण करके मेरे आदमियों को काट डाला था। अव मुझे याद पड़ गया कि इसी कप्तान ने मुझे वाजार में जव मैं अपने जवाहिरात वेचने गया था तो पहचान लिया होगा। और जव मैं अपनी कुल वस्तुओं को खरीद के मकान की ओर फिरने लगा था तो यह कप्तान अपने एक साथी सहित; मेरे पीछे

पीछे हो लिया था अन्त एक स्थान पर आके मुझे बांध लिया । अब मुझे यह सब भली प्रकार मालूम होगया। हां तो जिस समय मैं उस कड़ी भूमि पर पहुंचा और ये लोग ठहरे उसी समय मेरे वस्त्र मेरे शरीर पर से उतार लिये गये और उसमें जो कुछ गहने तथा जवाहिरात थे वह सब उन्हीं पाजियों ने निकाल लिये। परन्तु इस पर भी मेरी एक पेटी जो मैं अपने कपड़ों के नीचे बांधे हुवा था और जिसमें बहुत से बहुमूल्य जवाहिर थे वह बच गई।

"इस समय मैंने उनकी बड़ीही मिन्नत खुशामद करनी प्रारंभ की और निवेदन किया कि यदि हमें दमिश्क में सौदागर के मकान पर पहुँचा दो तो जितना रुपया हमारे बदले में तुम मांगोगे मैं देने को तैयार हूं। परन्तु उन लोगों ने मेरी प्रार्थना पर तनिक भी ध्यान न दिया। उसके दूसरे दिवस में उन लोगों के साथ समुद्र के किनारे की ओर जाने पर विवश किया गया। श्रीमान्! मैं इस समय प्यारी इरेनी के बिछोह का दुःख व्यर्थ नहीं बयान किया चाहता। प्रत्येक व्यक्ति जो इस समय हमारी कहानी को सुन रहा है उस समय के हमारे दुःख को अनुभव कर सकता है—हाय उस समय मेरा चित्त विह्वल हो रहा था। कुछही दिवसों में हम समुद्र के किनारे जा पहुँचे और यहां उन डाकुओं ने मुझे एक गुलाम की भांति एक जहाज के अधिकारी के हाथ जो कदाच डाकू था जिसका जहाज़ खाड़ी में कहीं जाने के निमित्त खड़ाही था बेच दिया। इसके उपरान्त तुरन्तही जहाज़ का लंगर उठा दिया गया और जहाज चल खड़ा हुआ; परन्तु संध्याही को यह एक तुरकी जहाज़ से; जिस पर एक पूरी फौज सवार थी और जिस पर कोई बहरी पाशा विराजमान था मिल गया। डाकुओं का जहाज़ पकड़ लिया गया। इन डाकुओं का सरदार फांसी लटका दिया गया। जहाज़ के कुल व्यक्ति (जिन में एक मैं भी था) पाशा के सामने भेजे गये। यहां हमलोग जंजीरों द्वारा गुलामों की भांति बँधे हुये थे और उसी जहाज का डाँड़ा खेने पर नियुक्त किये गये। एक दिन समय पाके हमने पाशा से कुल अपनी राम कहानी वहां आने पर्यंत की कह सुनाई। परन्तु इसका कोई विशेष लाभ न हुआ। कारण यह कि उन्हीं दिवसों सुलतान तथा जरमनी नरेश से लड़ाई छिड़ गई थी। इस कारण मैं एक गुलाम की भांति जहाज पर रक्खा गया परन्तु इस पर भी मैंने अपने जवाहिरात को छिपाही रक्खा क्योंकि तुर्क लोगों ने यह अनुमान करके मेरी तलाशी नहीं ली कि जब यह डाकुओं के हाथ में पड़ा होगा तो इसकी कोई वस्तु काहे को बाकी रह गई होगी।

आह इन दिनों मेरा समय बड़ेही दुखः में कटता था। दिन रात एकही स्थान पर मुझे बँधे पड़ा रहना पड़ता था। वही मेरे सोने का स्थान था तो वही मेरे भोजन का भी। हमारे साथी डाकू—जो हमारे साथही पकड़े गये थे कड़े से कड़े कष्टों के झेलने के आदी हो गये थे इस कारण वे आनन्द से उसी स्थान पर खाते और सूर्यदेव की तीक्ष्ण, किरनों का जलता बलता जल समुद्र से लेके पीते। परन्तु मुझ से यह सब कुछ भी न होता और मैं रो २ के अपने मृत्यु के निमित्त भगवान से प्रार्थना किया करता।

एक वर्ष के लगभग मैं इसी दुःखावस्था में पड़ा २ सड़ा किया। इसके बीच में कई लड़ाइयां जरमनी तथा तुर्कों के बीच में हुई जिनमें प्रायः तुर्कही जय पाते रहे। यहां लों कि जरमनी वालों के करीब २ कुल जहाज़ उन लोगों ने पकड़ लिये। पकड़े हुये जहाजों के गुलाम हमारे जहाज़ के पाशा के सामने निरीक्षणार्थ भेजे गये जिन में दो जरमन वासियों को उन्होंने पृथक करके अपने जहाज़ पर रखलिया और जिन्हें मेरे साथ रहने के निमित्त उन लोगों ने मेरे पास भेज दिये। वे दोनों जरमन कैदी यही दोनों शरमन तथा ग्रेगरी वालसटेन हैं जो आप के सामने जंगले में खड़े हैं। जिस समय हमारी तथा वालसटेन की साक्षात् हुई उस समय मुझे उसकी सूरत देख के बड़ाही आश्चर्य हुआ क्योंकि हम दोनों की सूरत में कोई विभिन्नता न थी। ये दोनों मेरे देशवासीही थे इस कारण इन लोगों से मुझ से बड़ीही प्रीति हो गई और हम लोग आपस में घुल २ के वार्तालाप करने लगे। परन्तु विशेषतः मैं वालसटेनही से कुछ विशेष प्रीति रक्खा करता था। हम लोगों को दिन भर बैठे २ अपने देश के बात चीत के अतिरिक्त और कोई काम न था। वही देश वही मातृभूमि जिसके देखने की कामना हम लोगों के हृदय में आग की तरह सुलग रही थी। ऐसे २ समय बीता और हमलोगों की मैत्री प्रगाढ़ होती गई वैसेही वैसे मैं अपने कुल भेदों से वालसटेन को अवगत करता गया। मैंने अपने जरमनी के अधिकार का कुल वृत्तान्त उससे कह सुनाया—मैंने अपने अलय—पदवी—तथा जागीर इत्यादि का भी विवरण उससे कर दिया। इसके अतिरिक्त जितनी अनोखी बातें मेरे जीवन में हुई उन सभों से ही मैंने उसे अवगत कर दिया। मैंने उससे अपने प्यारी इरेनी की प्रीत का भा वृत्तान्त कह सुनाया और फिर जिस अत्याचारी तरीके से मैं उससे पृथक किया गया वह भी उससे छिपा न रक्खा। तात्पर्य यह कि हम दोनों ने एक दूसरे को अपने २ भेद से विज्ञ कर दिया और कुछही दिवसों में हम एक भाई की भांति होगये। यद्यपि शरमन भी हमलोगों के साथही

था और उसे भी हम लोग अपना धर्म भाईही मानते थे परन्तु इन बातों से हमने उसे विघ्न न किया।

"वालसटेन ने भी अपना परिचय मुझे इस प्रकार दिया कि मेरे भाग्य ने पलटा खाया था जब मैं कैदी बनाया गया। कुछ दिवस, मैंने अपने इटली में बिताये परन्तु अपनी जमा जथा सब मैंने जुवा तथा अयाशी में उड़ा दी। इसके उपरान्त मैंने गुप्त अदालत विम की ऐजन्टी स्वीकार करली और गुप्तचर की भांति लड़ाई का समाचार लेने के निमित्त जरमनी के जहाज़ पर भेजा गया जहां से पकड़ा जाके मैं यहां लाया गया हूं। यह अर्थात् वालसटेन अपनी पिछले जीवन के दिवसों को बड़ीही खेद की दृष्टि से देखा करता था इस कारण मुझे इसपर बड़ीही दया आई और मैंने इससे प्रतिज्ञा कर ली कि यहां से छूटने पर मैं तुह्मारी प्रत्येक प्रकार की सहायता करूंगा और कम से कम तुह्में इस योग्य तो अवश्यही कर दूंगा कि निरापत्ति तुम एक स्थान पर बैठके आहारादि कर सको।

वर्ष के उपरान्त वर्ष व्यतीत होते गये और हमलोग के इस दुःखदायी कैद का किसी प्रकार अन्त न हुआ। मुझे इस समय विचार के आश्चर्य होता है कि कैसे मैं उस दुखदायी कैद में जीवित रह सका। अन्त सन् १४८८ में हमलोगों के भाग्य ने पुनः पलटा खाया और वह घड़ी जिसके निमित्त हम इतने उत्सुक हो रहे थे आन उपस्थित हुई। कुछ दिनों के उपरान्त हमलोग पाशा के जहाज से एक छोटे जहाज पर उतारे गये और हमारे छोटे जहाज को आज्ञा दी गई कि मोरिया को ले जाया जावे। एक दिवस प्रातः काल हम से और एक जरमनी के जहाज़ से केफेलोनिया के समुद्र पर मुकाबला हो गया; और तीन घण्टे की कड़ी लड़ाई के उपरान्त क्रिस्तानी जहाज ने तुरकी जहाज़ को अपना झंडा उतार लेने पर विवश किया और फिर निकट आके उसे पकड़ लिया। एक भारी प्रसन्नता हमलोगों के हृदय में हुई और हम सब के सब इस जहाज़ से जरमनी के जहाज़ पर उतारे गये जिसके कप्तान ने जब मेरा अल्य तथा नाम सुना तो बड़ेही आदर सत्कार से हाथों हाथ लिया। मेरे कारण वालसटेन तथा शरमन की भी भारी आव भगत की गई। यह जहाज़ वेनिस की ओर जा रहा था जहां कुछही दिवसों में यह निर्विघ्नता पूर्वक जा पहुँचा।

"मेरी इच्छा थी कि अब जहां लों शीघ्र बन पड़े मैं वायना में जा पहूंचूं। और वहां जाके अपनी जायदाद को देख भाल लूं (क्योंकि मुझे भय था कि इतने दिवस हो

गये आश्चर्य नहीं कि मेरी जायदाद गवरमेन्ट में जब्त हो गई हो) दूसरे मेरी ऐसी इच्छा भी थी कि वायना पहुँच के और भ्रमण का सामान प्रस्तुत करके मैं शीघ्रही इ-रेनी के पास लौट जांऊ क्योंकि मेरे हृदय में उसका प्रेम तपाये सोने की भांति वैसाही दहक रहा था। मैंने वेनिस में पहुंचतेही अपने पास के जवाहिरात में से कुछ थोड़ा बेचा और अपने दोनों मित्रों को, अपने साथ वायना चलने के निमित्त आग्रह किया। परन्तु शरमन ने अपनी इच्छा वेनिसही में रहने की प्रगट की, जिस पर मैंने उसे बहुत से रुपये उसके जविन निर्वाह करने के निमित्त दे दिये और वालसटेन मेरे साथ वा-यना में चलने को प्रस्तुत हुआ।

"परन्तु मेरे भाग्य में तो वेनिस से निर्विघ्नता पूर्वक निकलना वदाहीनही था मैं निकलता कैसे। वायना आने का जो दिवस निश्चय किया गया था उसके दो एक दि-वस पूर्व मैं संध्या समय बाजारों में इधर उधर घूम रहा था। बाजार के भारी से भारी मकान; तथा सजी से सजी दूकानों को मैं अपने पीछे छोड़ता आगे बढ़ा जाता था ऐसे समय मुझे जान पड़ा कि वालसटेन जिसे मैं अभी २ वायना जाने की तैयारी करने के निमित्त पीछे होटल में छोड़ आया था वह हमारे बगल से निकल के एक बहुत बड़े और सुन्दर मकान के फाटक में घुम गया। यह देख के मुझे बड़ाही आ-श्चर्य हुआ क्योंकि वालसटेन ने मुझ से चलती समय कह दिया था कि आज मैं होटल के बाहिर पैर न रक्खूंगा फिर यह जिसे मैं वालसटेनही समझे हुये था यहां कैसे आया। यही सब विचार करता मैं मकान के फाटक पर खड़ा था कि सहसा मकान के भितर से किसी स्त्री की चिल्लाहट सुन पड़ी जिसे सुनके प्रतति होता था कि किसी स्त्री पर कोई अत्याचार किया जा रहा है। यह सुन्तेही मैं बिना एक क्षण के भी बिलंब किये शीघ्रता से फाटक के भीतर घुसा। फाटक के दाहने चौड़ी २ सीढ़ियां थीं जिन पर मैं बेधड़क चढ़ गया। और ऊपर पहुँच के जिधर से लगातार कहरने की अवाजें आ रही थीं उसी ओर मुड़ा। यह रास्ता बड़ाही अँधेरा था परन्तु उसपर भी मैं उन द्वारों को बराबर देख सकता था जो दीवार में बने हुये और बन्द थे। मैं उस आवाज पर बढ़ताही गया और अन्त एक द्वार पर आ खड़ा हुआ जो उन कुल द्वारों में से अ-न्तिम द्वार था और जिसमें से कराहने की आवाज आ रही थी। यहां आतेही मैंने पहले तो तलवार खींची और तदुपरान्त जोर से द्वार खोल के भीतर घुस गया। परन्तु वहां कोई न था। और वह कराहने की अवाज भी एकबारगाही बन्द हो गई। परन्तु यह कमरा जिसमें इस समय मैं खड़ा था कुछ इतना विचित्र था कि जिसे देख के मैं एक

क्षण के निमित्त अचेत सा हो गया। और जिसकी अवस्था का उल्लेख करना इस समय हमें आवश्यक बोध होता है।

"यह कमरा बहुत बड़ा और सुन्दर था परन्तु इसकी सजावट कुछ बड़े साज सामान द्वारा न की गई थी। इस में प्रकाश एक झिल मिलाते हुये लम्प द्वारा आ रहा था जो कमेर के बीचों बीच टंगा हुआ था इसके बीचों बीच एक टेबुल रक्खा हुआ था जिस पर दो तीन शीशे की सुराहियां धरी हुई थी और जिन में किसी प्रकार का सुफेद अरक भरा हुआ था और जिन पर के लगे हुये लेबिलों पर "केन्ट्रेला" शब्द लिखा हुआ था। इन्हीं के निकट तीन चार और बोतल भी सुफेदही अरक से भरी रक्खी हुई थी, परन्तु इस में का अरक पहली बोतल के अरक से कुछ पतला था और इन पर "अरक कन्ट्रेला" लिखा हुआ था। कोठरी के एक कोने में एक बहुत बड़ा भालू जिसके पिछले दोनों पैर जंजीरसे बंधे हुये थे कोठरी की छत से बंधा लटक रहा था। यह जानवर मरा हुआ था; और इसी के नीचे कोठरी की बेंच पर एक चाँदी की रकाबी रक्खी हुई थी। जिस में उसी प्रकार का सुफेद फेनदार अरक भरा हुआ था।

यह सुफेद अर्क; जो रकाबी में भरा हुआ था उसी भालूके मुँह से, एक २ बून्द करके टपक रहा था। परन्तु इस कोठरी में, इसके अतिरिक्त, और भी बहुत सी विचित्र वस्तुयें रक्खी हुई थीं। कोठरी के दूसरे कोने में चार खम्भे एक सम अन्तर पर खड़े थे। जिन में एक बैल के चारों पैर—जो कोठरी की गच पर उलटा पड़ा हुआ था बंधे हुये थे। यह बैल भी, भालू की भांति मुरदाही था और उसके पेट में एक बहुत बड़ा छेद बना हुआ था, साथही उसका पेट अँतड़ियों इत्यादि से भी साफ था। इस बैल के निकटही पथरीले फर्श पर किसी के रक्त से डूबे हुये पैरों के चिन्ह बने हुये थे जो लगातार, कोठरी के चौथे कोने की ओर एक चार पाई पर्यंत बने हुये थे। इधर उस चारपाई पर के बिछौनें तथा उस पर बिछे हुये चद्दर के देखने से प्रतीत होता था कि कोई रक्त से डूबा हुआ व्यक्ति इस पर आके लेटा था क्योंकि वह बिछौना बिलकुलही रक्त से डूबा हुआ था।

जिस समय मैं उस भयानक दृश्य को देखता उस सुन्दर कोठरी में खड़ा था जो बूचड़ों के मकान को भी मात कर रही था; और आश्चर्य से आत्म विस्मृत कर रहाथा, उसी समय पीछे से, मेरे कानों में किसी के पद शब्द सुन पड़े। यह सुनतेही मैं शीघ्रता से पीछे की ओर मुड़ा तो अपने सामनेही एक रमणी मूर्ति को खड़े पाया।

यह स्त्री इतनी स्वरूपवती थी कि आजलों इतनी बड़ी उम्र होने पर भी वैसी कामिनी मैंने कहीं नहीं देखी थी। इसी स्त्री के पीछे मुझे एक व्यक्ति की ओर भी झलक दिखाई पड़ी। परन्तु वह व्यक्ति, भली भांति पहचाना गया कि वालसटेन के अतिरिक्त दूसरा कोई न था। उधर—उस अद्वितीया सुन्दरी रमणी मूर्ति ने जिसके कपड़े भी बड़ेही उत्तम तथा बहुमूल्य थे मेरे समीप होके मुझ से यों कहा "तुम यहां क्यों आये हो ?" इस पर मैंने उससे कुल बात कह सुनाई कि जिस प्रकार, हमारा यहां आना हुआ था। यह सुनके उसने एक गहरी दृष्टि से मुझे घूरा। इस दृष्टि से मानों वह मेरे हृदय का भाव जाना चाहती थी। इसके उपरान्त फिर उसने हमारा नाम पूछा। जिस पर मैंने उत्तर दिया कि "मैं ज़ेरनिन का बेरन हूं परन्तु यदि हमारे यहां आने से तुम्हारी किसी प्रकार की क्षति हुई है तो मैं शीघ्रही यहां से चला जाता हूं" इस पर उस स्त्री ने उत्तर दिया "अच्छी बात है श्रीमान्! कि तुमने जिस शीघ्रता से मकान में प्रवेश किया है उसी शीघ्रता से मकान के बाहर निकल जाओ "इतना कहके उसने कोठरी के चारों ओर दृष्टि दौड़ाई और फिर मुझ पर एक गहरी दृष्टि डाल के कहने लगी "और मैं तुम्हें इस बात से भी सूचित किये देती हूं कि जो कुछ यहां देखा है यदि प्राण प्रीय हों तो कदापि इसका हाल किसी से न कहना।" इतना कहके उसने हाथ के इशारे से मुझे चले जाने के लिये कहा और मैं शीघ्रता से द्वार के बाहर निकल गया। बात करती समय, मैंने यह भी लक्ष किया था कि इसी सुन्दरी के हाथ में एक बड़ीही विचित्र अँगूठी थी जिस पर एक सिंह का सिर बना हुआ था और जिसके दोनों आंखों में दो बड़ेही चमकीले तथा बहुमूल्य नग जगमगा रहे थे।

"जिस समय मैं मकान से बाहर निकला उसी समय शीघ्रता से पैर उठाता होटल में, जहां मैं ठहरा था जा पहुँचा। क्योंकि मुझे इस बात के निर्णय करने की बड़ीही उत्सुकता लग रही थी कि वह व्यक्ति, जिसे मैंने अभी उस मकान से देखा था वह यथार्थ में वालसटेनही था वा कोई अन्य व्यक्ति, परन्तु जिस समय मैं होटल में पहुँच के अपने कमरे में प्रवेश किया उस समय मैंने वालसटेन को टेबुल के निकट बैठा शराब पीते पाया। इसके सामने एक बोतल शराब की रक्खी हुई थी जिसमें से लगभग आधी के समाप्त कर चुका था। मैंने उससे उसके बाहर जाने के बारे में पूछा। परन्तु उसने शपथ खा के कहा कि जबसे आप बाहर गये हैं तबसे मैं बराबर बैठा शराब ही पी रहा हूं, और इस कुरसी से हिला तक नहीं हूं। मैं बड़े आश्चर्य में था, परन्तु

उसने कुछ इस प्रकार अपने वहां रहने का प्रमाण दिया कि मुझे विश्वास हो गया। इसके उपरान्त मैंने उस घटना को सुनाया जिसे मैं उस बड़े महल में देख आया था। जिस पर उसने प्रश्न किया कि क्या आपने यह भी पूछा था कि यह मकान किसका है, इस पर मैंने उत्तर दिया कि नहीं मैंने नहीं पूछा और यह उत्तर सुनतेही वह अपने आ. से उठा और मुझ से कहने लगा "तो कृपा कर वहां तक चले चलिये और मुझे उस मकान को दिखा तो दीजिये।" परन्तु प्रथम तो मैं थका हुआ था, दूसरे मेरी स्वयं इच्छा वहां जाने की न थी, इस कारण मैं उसके साथ जाने पर प्रस्तुत न हुआ और अपनी कोठरी में जाके लेट रहा।

"बड़े तड़के, मैं वालसटेन के साथ डोंगे पर सवार हुआ और कुछही घण्टे के उपरान्त उस पार उतर गया। उस पार हमें तीन हथियारबन्द व्यक्ति मिले जिन्हें वालसटेन ने पथ में हमलोगों की रक्षा के निमित्त प्रस्तुत कर ठहराया था, क्योंकि इटली के उत्तरस्थ भागों में उन दिनों प्रायः लूट पाट हुआ करती थी। हमलोग बराबर आगे बढ़ते गये और कुछही दिवसों में जूलियन आल्प्स के निकट जा पहुँचे जिसे पार करके हमारी इच्छा कारनिउला में जा पहुँचने की थी, परन्तु अभी हमलोग कुछ बहुत आगे न बढ़े होंगे कि जब हमारे साथियों की नीचता हमपर प्रगट होने लगी। हमारे उन तीन हथियारबन्द साथियों का नाम, फ्रिज़, कोनरेड और कार्ल था और उन दोनों का सरदार यही फ्रिज था श्रीमान्! जो आप लोगों के सामने खड़ा है। चलते २ हमलोग एक झोपड़ी में पहुँचे, जो पहाड़ पर बनी हुई थी, और जहां डेरा डालने के निमित्त हमने उन लोगों से कहा। डेरा पड़ा और हम भोजनादि के उपरान्त अपने बिछौने पर लेटे परन्तु अभी मेरी झपकी लगीही थी कि सहसा मैं उन्हीं बदमाशों द्वारा बाँध लिया गया। मेरे कुल जवाहिरात छीन लिये गये और मैं वहां से उसी मठ में डाल दिया गया जहां लगभग आठ वर्ष के मैं कैद में पड़ा रहा।

"मैं एक ऐसे मकान में बन्द किया गया था, कि जिसमें सटी हुई एक बड़ी दीवार थी और जिसमें एक बहुत बड़ा फाटक लगा हुआ था और उस फाटक में एक खिड़की भी थी। इस खिड़की में प्रायः ताला लगा रहा करता था परन्तु कभी २ किसी कारणवश, हमारे पहरे की सिपाहियों के भूल से वह खिड़की खुली भी रह जाया करती थी। उसी खिड़की के निकट खड़ा होके मैं घण्टों उसके बाहर का स्थान देखा करता था, परन्तु उन्हें देख के मुझे किसी प्रकार से भी भागने की आशा न होती

थी । लगभग छः वर्ष के होते हैं कि एक दिवस मुझे उसी खिड़की में से देखते देखते एक मनुष्य की मूर्ति दिखाई पड़ी जिसे देखतेही मैंने अपने छुटकारे की प्रार्थना की । परन्तु मेरे पहरे के सिपाहियों ने यह सुनतेही मुझे खींच के पीछे कर दिया और फिर बाहर निकल के उस व्यक्ति को भी कैद कर लिया; और वह व्यक्ति देखिये यह है (यह कह के बेरेन ने मेजिनी की ओर इशारा किया) और यदि आप पूछेंगे तो यह बयान कर देगा कि कैसे वे लोग उसे पकड़ के ले गये थे। क्रमशः समय बीतता गया और इस बीच में मुझ से कई पथिकों से उसी खिड़की में से साक्षात हुई परन्तु वे सदैव अकेलेही रहते थे और मेरी दयाभिक्षा पर ये सिपाही उन पर जा पड़ते और उन्हें गिरफ्तार कर लेते थे। उनके साथ भी वैसाही व्यवहार किया जाता जैसा कि मेजिनी (इस आप के सामने खड़े व्यक्ति) से किया गया था। (इसके उपरान्त बेरेन ने आटू की ओर दृष्टि की और फिर कहा) अन्त यह सुशील युवक (इतना कहके बेरेन ने पुनः एक धन्यवादयुक्त दृष्टि से आटू को देखा और फिर कहने लगा) उसी खिड़की के सामने एक दिन मुझे दिखाई पड़ा—जिसने मेरी दयाभिक्षा सुनके मेरे निकलने का प्रबंध किया ।

परन्तु इसके बीच में मुझे आठ महा दुःखदायी वर्ष उसी कैदखाने में काटने पड़े थे। उस रात से जिसमें कि वालसटेन ने मुझे कैद करा दिया था फिर मैंने आज के अतिरिक्त और कभी उसकी सूरत न देखी थी । परन्तु वहां मठ में एक ऐसा व्यक्ति था जो लगातार तीन वर्ष पर्यंत मुझे एक कागज पर जो मेरी कुल जायदाद का बैनामा था हस्ताक्षर करने के निमित्त जोर दिया करता था। यह व्यक्ति मठ का महंत—ऐनस्लेम नामक था। मैंने उसे अपने छुटकारे पर एक बहुत भारी रकम का देना स्वीकार किया परन्तु उसे उसने अस्वीकार कर दिया । अन्त कैद की असह्य वेदना से दुःखित होके तथा प्यारी इरेनी के प्रेम से पीड़ित होके मैंने ऐसा विचार कर लिया कि फादर एन्सलेम की बात को स्वीकार कर लूं क्योंकि मैं समझ गया कि मुझे यहां बन्द करके भी ये लोग अपने दूतों द्वारा अपना तात्पर्य वायना में साधन करही सकते हैं। परन्तु इसके उपरान्तही उनके पाजीपने की ओर मेरा ध्यान गया। मैंने सोचा कि यह इनकी चाल है कि मुझ से बैनामे पर हस्ताक्षर कराते हैं और कहते हैं कि इसके उपरान्त तुम्हें हम छोड़ देंगे परन्तु पहले तो मुझे इतने भारी मूल्य पर अपनी स्वतंत्रता को खरीदनाही उचित नहीं है। दूसरे मैंने सोचा कि आश्चर्य नहीं कि मुझ से हस्ता-

क्षर कराके वे मुझे मारही डालें जिससे इनकी कामना भी पूरी होजायगी और मैं कहीं का न रहूंगा। नहीं तो इस प्रकार मैं छूटने पर, अपनी जायदाद का दावा तो कर सकता हूं। यह विचार कर मैंने उस पर हस्ताक्षर करना अस्वीकार कर दिया। वे लाख कहते रहे, परन्तु मैं उनकी एक न सुनता था, अन्त उन लोगों ने भी कहना छोड़ दिया और फिर कभी इसका नाम भी न लिया।

"परन्तु आह! वे फिर मुझसे उसके ऊपर हस्ताक्षर कराने को काहे को जोर देते? क्योंकि पाजी वालसटेन ने तो चाल खेल के अपनी हार्द्दिक कामना पूरी करही ली थी। मेरे उन गुप्त रहस्यों को—जिन्हें मैंने तुरकी जहाज पर एक साथ रहने में उसे जता दिये थे—और उन जवाहिरात को प्रमाण में दिखा कर जिन्हें हमसे पर्वत जूलियेन आल्पस में उसने छीन लिये थे—और हम दोनों की सूरत के एकही होने से—यह नीचप्रकृति वालसटेन (इतना कह के बेरेन ने वालसटेन की ओर उँगली उठाई और जिससे वालसटेन ने सिर नीचा कर लिया) अपने मनसूबों में कृतकार्य हो गया और मेरी कुल सम्पत्ति तथा मेरे अल्य का अधिकारी हो गया।

"श्रीमान् अब मैं अपनी कहानी को समाप्त करता हूं और उसके समाप्त करते २ मैं यह भी कहता हूं कि मेरे इस कैद का कारण अबलों मुझ पर न खुला। मेरी समझ में यह दो कारणों से हुआ प्रथम तो यह कि कदाच इसी पापिष्ठी वालसटेन ने जो आपके सामने खड़ा कांप रहा है अपनी कामना निकालने के निमित्त मुझे कैद कराया और दूसरे यह कि वह रहस्य जिसे मैंने वेनिस में देखा शायद उसके देखने के कारण मैं बंद कराया गया। जो हो मैं इतने दिवसों बंद रहा और कैद के कष्ट भुगतता रहा अब इसे अदालत स्वयंही अनुमान कर सकती है कि किस कारण मैं कैद किया गया था।

"मुझको अपनी अतुल सम्पत्ति के नष्ट हो जाने का कुछ भी खेद नहीं है क्योंकि बेरोनेस जेरनिन कुछ इतने धन और ऐश्वर्य की अधिकारिणी है कि जो मेरी सम्पति से सैगुना विशेष है। परन्तु उसपर भी मैं कष्टों के बदले में अदालत से चाहता हूं कि फ्रिज, तथा ग्रेगरी वालसटेन दोनों पाखंडीयों को पूरा २ दंड दिया जाय।"

इतना कह के बेरेन निस्तब्ध हुआ और चीफ जज ने, जिन्हें बेरेन के एक २ अक्षर का विश्वास हो गया था पूछा—

"तो श्रीमान् को इस शर्मन नामक कैदी पर किसी प्रकार की शंका नहीं है?"।

बेरेन—बिलकुल नहीं।
चीफ जज—अच्छा तो शर्मेन स्वतन्त्र है और ग्रेगरी वालस्टेन तथा फ्रिज हवालात में भेजे जायें। इनके बारे में प्रातःकाल अन्तिम आज्ञा दी जायगी।

पैंतालीसवाँ बयान।

यह स्त्री कौन है?

बेरेन के इस इजहार ने कुल सुननेवालों के चित्त पर एक विलक्षण प्रभाव डाला। वेनिस की उस घटना को सुनके, जिसपर अबलों एक मोटा परदा पड़ा हुआ था, लोगों ने अनुमान किया कि कदाच बेरेन की कैद का कुछ न कुछ उससे अवश्यही सम्बन्ध है।

इस मुकद्दमे के दूसरेही दिवस चीफ जज कौन्ट कोनिगसेन ने बेरेन जेरनिन की मिसिल उसके कहे हुये वृत्तान्त सहित शाहंशाह जरमनी मेकसमिलियेन की सेवा में भेज दी।

उदारहृदय शाहंशाह ने मिसिल देखतेही बेरेन की अवस्था पर बहुत कुछ खेद किया और उसे उसकी पूर्व पदवी से तुरन्तही विभूषित किया और साथही अपने खजाने के नाम एक आज्ञापत्र भिजवा दिया कि दस सहस्र रुपये बेरेन को प्रतिमास मिला करें। इसके उपरान्त एक शाहंशाही परवाना गवर्नर के नाम कारनेलिया में भेजा गया जिसमें उसे लिखा गया था कि परवाने के देखतेही तुम दल बल सहित उस पहाड़ी मठ पर जा पड़ो। उसे तोड़ के कुल अधिकारियों को जंजीरों से बँधवा के शाहंशाह की सेवा में भेज दो। इस परवाने के साथही मठ पर चढ़ाई करने के तीन रास्तों का भी उल्लेख कर दिया गया और एक नक़शा भी बना के उसी के साथ कर दिया गया जो आटू द्वारा बड़ीही सावधानी से निर्मित किया गया था।

इसके उपरान्त प्रेज़िडेन्ट ने स्वयं शाही आज्ञापत्र लिया और उस महल की ओर बढ़े जिसमें अब बेरेन जेरनिन तथा इरेनी या बेरोनेस जेरनिन अधिकारी हो गये थे; जिन्हों ने आटू पेनिल्ला, मेजिनी तथा नाइना को अपने सिर और आंखो पर रख के अपनेही यहां टिका रखा था। वे लोग इस शाही आज्ञा को देख के बड़ेही प्रसन्न हुये और साथही इस बात का भी बहुत कुछ धन्यवाद दिया कि शाहंशाह ने उस कंटक को भी, जो आस्पस में था दूर करने की आज्ञा प्रदान की है।

इन आवश्यकीय बातों का उल्लेख करके हम फिर कारणवश उसी समय से अपना लेख आगे बढ़ाते हैं जब अदालत बंद हुई और उन तीनों का फैसला प्रातः काल पर उठा रक्खा गया।

वे दोनों कैदी हवालात में भेजे गये—और शर्म्मन स्वतंत्र कर दिया गया। इसके उपरान्त वह भारी भीड़ जो अदालत में भरी हुई थी क्रमशः खसकने लगी और कुछ देर में पूरा सन्नाटा हो गया। वह नकाबपोश स्त्री, जिसके हाथ में एक विचित्र प्रकार की अँगूठी थी अपने स्थान पर शीघ्रता से ठहर गई। वह उतनी देर लों ठहरी रही जबलों कि कुल भीड़ अदालत से बाहर न हो गई। भीड़ के छँटने की वह बाटही जोह रही थी क्योंकि लोगों के छँटतेही वह अपने स्थान से बाहर जाने के लिये उठी।

अदालत में से निकलतेही वह बड़े २ बाजारों की ओर न जा कर शीघ्रता से सँकरी और अन्धकारमयी गलियों की ओर मुड़ी जो अदालत के पिछवाड़े से भिन्न भिन्न स्थानों की ओर जाती थी। उसकी गति बड़ीही शीघ्र थी जिससे प्रतीत होता था कि इस समय वह किसी कारण वश बड़ीही उत्सुक थी।

इसका यह सब कुछ फोष्ट की दृष्टि से छिपा न था। क्योंकि वह उसी समय से जबसे कि अदालत मे बेरेन ने अपना इजहार प्रारम्भ किया था। उसकी ओर दृष्टि गड़ाये देख रहा था बेरेन के इजहार के समय भी लोगों की दृष्टि तो बेरेन के ऊपर पड़ती थी परन्तु फोष्ट उसी को घूर रहा था।

अब क्रमशः सन्ध्या हो चली थी और उसी के साथही साथ अन्धकार भी फैलता जाता था और वह लेडी किसी विशेष कार्य के निमित्त शीघ्रता से पैर उठाती आगे बढ़ती चली जाती थी। उस अन्धकार में भी इतना प्रकाश तो अवश्यही था कि आगे जाने वाली लेडी के पैरों की कांति उस काले लबादे पर भी फोष्ट को फूट २ के बहिर्गत होती जान पड़ती थी।

सहसा आगे जाने वाली लेडी के कंधे पर किसी के हाथ की मुलायम थपकी पड़ी और उसी के साथ उसे यह आवाज भी सुन पड़ी —

"शुभे! तुम अकेली हो, और वांयना के बजारों में कोई चौकी पहरा नहीं दिखाई पड़ता इससे मुझे आज्ञा दो कि मैं तुम्हारे साथ २ चलके तुम्हें तुम्हारे मकान पर छोड़ आऊँ।"

यह सुन के लेडी चौंक पड़ी और पीछे फिर तथा फोष्ट की ओर देख के सकोप कहने लगी —

"मुझे चोर उचक्कों से उतना भय नहीं है जितना किसी भलेमानुष की उजड्डता से।

फोष्ट—नहीं लेडी! तुम्हें हमारी प्रार्थना अस्वीकार नहीं करनी चाहिये। अभी २ हम तुम दोनों जिस अदालत से निकले आते हैं वहां तुमने क्या वेरेन की कहानी नहीं सुनी कि बेचारे पर दिन दिहाड़े कितनी आपत्तियां आईं और वेनिस जैसे भारी नगर में कितने गुप्त तथा लोमहर्षण रहस्य उसने देखे?

लेडी – आह! तो आप का तात्पर्य क्या है? (इतना उसने बड़ीही व्यग्रता तथा घबराहट से कहा और फिर इसके उपारन्तही वह सँभल के कहने लगी) जान पड़ता है कि उस सामान्य कहानी ने आप के हृदय पर बहुत कुछ असर किया है जिससे आप इतनी दया मुझ पर प्रगट कर रहे हैं।

फोष्ट—हां लेडी! असर तो अवश्यही किया है परन्तु किसी झूठे और बनावटी किस्से ने नहीं। मुझ पर तो जो कुछ असर हुआ वह हुआही—क्या तुम इसके असर से बच रहीं मैं देर से तुम्हारी अवस्था बैठे २ देख रहा था।

लेडी–(शीघ्रता से) तुम्हारे शब्दों में उजड्डता भरी हुई है महाशय! तुम्हारा पथ कौन है? क्योंकि जिधर से तुम जाओगे, उसके ठीक दूसरी ओर से मैं जाऊँगी। मैं तुम्हारे साथ चलना पसन्द नहीं करती।

फोष्ट—सुनो सुन्दरी! चाहे तुम कुछही क्यों न कहो वा कैसीही क्यों न हो, परन्तु मैं तुम्हें इन सुनसान बाजारों में अकेला नहीं जाने दे सकता। इसके अतिरिक्त, मैं तुम्हारी बातचीत में भी एक बड़ेही अनूठे आनन्द का अनुभव करता हूं। कदाचित् तुम्हें मेरे नाम के जानने का भी प्रयोजन होगा, तो लो मैं बताये देता हूं कि मैं कौन्ट ओरेना हूं।

लेडी—आह! तब तो तुम कुछ न कुछ अवश्यही आज के मामले से संबंध रखते हो?

फोष्ट—कैसे?

लेडी—यह तो आप देखही चुके हैं कि उस दगाबाज का जीवन, इस समय बड़ेही खतरे में है। तो उसके जीवन पर बन आने से, क्या आपकी सुन्दर तथा प्यारी प्रेमिका एडा के हृदय पर कुछ भी आघात न पहुँचेगा?

इस प्रश्न को नकाबपोश लेडी ने बड़ीही गंभीरता से पूछा। उसके कोमल स्वर से जरमनी भाषा बहुतही अच्छी तरह निकल रही थी। इसके साथही बीच २ में कोई २ शब्द वह इटली का भी अपने वाक्य में प्रयोग कर बैठती थी।

फोष्ट—इस बात को यों निधड़क कह बैठना तुम्हाराही काम था लेडी ! परन्तु जहांलों मैं अनुमान करता हूं तुम उस बेचारी पर व्यर्थही दोषारोपण करती हो। अभी तो कदाच तुमने उसकी सूरत पर्यन्त भी न देखी होगी (कुछ ठहर के) परन्तु आह! अब मेरी समझ में कुल बातें आ गईं (यह कहते २ उसका चेहरा प्रफुल्लित हो आया) तुम से और मेगरी वालसटेन से जान पहचान है ? हां—निस्संदेह जान पहचान है ! बस तो उसी ने तुम्हें उस भेद से विज्ञ कर दिया होगा कि जिसे मैंने उसे अपने हृदयही में रखने के लिये कहा था।

लेडी—(धीरे से हँस कर) मुझे इसकी कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती कि मैं आपको बताती फिरूँ कि मुझे यह भेद कहां से मालूम हुआ। हां यह तुम अलबत्ते बताओ कि मेरा कहना ठीक है वा नहीं ?

फोष्ट—परन्तु इसके साथही लेडी ! मैं तुम से भी स्वीकार कराया चाहता हूं कि तुम भी बेरेन जेरनिन के कहे हुये वृत्तान्त से निश्चय कोई संबंध रखती हो, और जिसके सबूत में यह शेरवाले मुँह की विचित्र अँगूठी तुम्हारे हाथ में है।

लेडी—(जोर से हँस के) नहीं—नहीं, आप धोखा खाते हैं श्रीमान् देखिये यह अँगूठी अज़दहे के सिर की बनी हुई है।

इतना कहते २ वह एक खिड़की के नीचे जा पहुँची जिसमें से प्रकाश बहिर्गत हो रहा था और उसी के सामने उसने अपनी अँगूठी मुलायम २ हाथों से निकाल के फोष्ट के सामने कर दी और कहने लगी।

"देखिये यह अजदहे का सिर है या शेर के ?"

फोष्ट—हां यह तो निस्संदेह अजहदेही के सिर की है परन्तु इसके अतिरिक्त और भी तुम्हारे पास हो सकती है।

लेडी—भगवान की सौंगंद जब से मैंने इस अंगूठी को पहना है तब से दूसरी कोई अँगूठी हाथ में पहिनीही नहीं और न कोई वैसी अँगूठी मेरे पास है जिसे मैंने कहीं छिपा वा रख दिया हो।

इतना कहके वह लेडी आते हुये प्रकाश की ओर से घूम के अपने पथ पर हो ली और आगे बढ़ने लगी उसी के साथही साथ फोष्ट भी हो लिया।

फोष्ट—यथार्थ में मुझ से भारी अपराध हुआ कि मैं व्यर्थही आप से इस अँगूठी के बारे में तकरार करता रहा और इसके लिये मैं क्षमा का भी प्रार्थी हूं परन्तु इस

के लिये तो मैं भी शपथ खा सकता हूं कि प्रातः काल, जब तुम कचहरी में बैठी हुई थीं तो अवश्यही वही शेरवाली अँगूठी पहने हुई थीं क्योंकि उसके नेत्रों में जो हीरे जड़े हुये थे वें बड़ेही बहूमूल्य और चमकदार थे।

लेडी—श्रीमान कहते हैं वही ठीक है—मुझे व्यर्थ एक अँगूठी के निमित्त वादविवाद नहीं करना है। और अब—जब आपने दया करके मुझ से बात चीत करनी प्रारंभ की है तो कृपा कर मुझे यह पूछने की भी आज्ञा दीजिये कि अब आपकी राय ग्रेगरी वालस्टेन के बारे में क्या है?

फोष्ट—यह तुम काहे को पूछ रही हो लेडी? क्या सचमुच तुम से उस व्यक्ति से किसी प्रकार का संबध है? मुझ से तो एडा ने कह दिया है कि तुम ग्रेगरी वालसटेन की कोई परवाह न करना यदि वह बच भी गया तो ऐसे जीवन से उसका मर जाना ही उत्तम होगा।

लेडी—तो क्या श्रीमान यह स्वीकार करते हैं कि उसके बचा देने की आप में सामर्थ है?

फोष्ट—(मुस्करा के) मेरे मुँह से तो अभी कोई शब्द ऐसा नहीं निकला कि जिससे यह प्रतीत होता हो कि मैं उसे बचा सकता हूं।

लेडी—तो आपके मुँह से कोई ऐसा शब्द भी तो नहीं निकला कि जिससे यह प्रतीत होता हो कि आप उसे न बचा सकेंगे।

इतना कहके वह खड़ी हो गई और अपना स्वर बदल के फोष्ट से कहने लगी—

"यदि श्रीमान ऐसी शक्ति रखते हैं तो निधड़क उसे काम में लायें—उसे अवश्यही आजमायें; इस्का ऐहसान मेरे ऊपर बड़ा भारी होगा। मानों इस्का मैं कर्जदार रहूंगी, उस्के बदले में मैं भी आपकी इच्छा पूरी करूंगी।"

फोष्ट—मैं ऐसी सुन्दरी—ऐसी कामिनी—ऐसी मोहिनी की सेवा से क्या किसी प्रकार गरदन फेर सकता हूं? वरन—"

लेडी—(बात काट के) परन्तु यह श्रीमान पर कैसे विदित हुआ कि मैं सुन्दरी हूं?

फोष्ट—क्या तुमने यह नहीं सुना कि बेरेन ने अपने इजहार में यह भी बयान किया था कि वह स्त्री जो उसे वेनिस के महलों में मिली थी इतनी स्वरूपवती थी कि उसने अब तक एक को छोड़ के वैसी स्त्री संसार भर में नहीं देखी? और वह एक स्त्री उसी की स्त्री इरेनी थी।

लेडी—आह तो आप मानों मुझे—बेरेन के बयान की हुई कहानी की नायिका से

उपमा दे रहे हैं—परन्तु यह आपने कैसे जाना कि मैं वही वेनिसवाली स्त्री हूं क्योंकि आप देखही चुके हैं कि मेरे हाथ में शेर के मुँहवाली अँगूठी नहीं वरन् अजदहे के मुँहवाली है।

फोष्ट - हां निस्संदेह अब तो यह अजदहेही के मुँहवाली है।

लेडी—और पहले भी अजदहेही के मुँह की थी। अस्तु, तो इन बातों को जाने दीजिये व्यर्थ के वादविवाद से क्या लाभ! क्या आप दया कर मेरे काम के लिये कटिबद्ध होते हैं?—क्या आप साहस करके ग्रेगरी वालस्टेन को बचाइयेगा?

फोष्ट—मुझे आश्चर्य है लेडी कि तुम ऐसी कामिनी—स्वरूपा,—चन्द्रमुखी हो के एक बदमाश के पीछे पड़ी हो; माना मैंने कि वह छूट भी गया तो तुम्हें उस से क्या लाभ?

लेडी-(कुछ दुःखित स्वर में) तो हमें मालूम हो गया कि कौन्ट ओरेना प्रेम के पथ से; जिस में प्रायः स्त्रियोंही का दबाव प्रेमियों पर विशेष पड़ता है बिलकुलही अज्ञ है! आप विश्वास करें श्रीमान, कि मैं भी एक भारी घराने की हूं, और मेरा पिता मुकुटधारी और सिंहासन का बैठने वाला है और उसकी आज्ञा केवल उसी के देशमात्र में नहीं मानी जाती बरन क्रिस्तान मात्र उसके अधीन हैं। तो श्रीमान आप इतनेही में अनुमान कर सकते हैं कि यदि मेरे साथ किसी प्रकार का ऐहसान कीजियेगा तो भगवान की सौगंद वह किसी प्रकार खाली नहीं जायेगा। जब आपकी इच्छा होगी तब उसका बदला भली भांति आप को दिया जायेगा।

फोष्ट—सुन्दरी—रहस्यमयी—विचित्र कामिनी। मैं तुम्हारी सेवा से किसी प्रकार विमुख हो सकता हूं? हां प्यारी मुझ में ग्रेगरी वालस्टेन को बन्दी से छुड़ा लाने की शक्ति है। परन्तु इसके साथही यह तुम्हारा प्रेमी—तुम पर तन मन न्योछावर करने वाला—तुम्हारे इन सुन्दर कपोलों का मन्द मुसकान भी देखा चाहता है—तुम्हारे नेत्र कमल के कटाक्षों को भी हृदय में रखने की इच्छा रखता है। बस इतनेही से मैं समझ जाऊंगा कि तुम्हारे अतुल सम्पत्ति के अधिकारी पिता ने हमे बहुत कुछ इनाम दे डाला। क्योंकि यथार्थ में लेडी (इतना कहते २ उसने मस्तक उठा के सदर्प कहा) मैं तुम से स्पष्ट कहता हूं—यह मेरी कोई शेखी और झूठी लनतरानी नहीं है—कि मुझे धन दौलत की कोई परवाह नहीं

है कुल बादशाहियों की सम्पत्ति मेरे एक नेत्र के कोर पर एकत्रित हो सकती है और इसका सहस्रों गुना मेरे भंडार में उपस्थित है। इसके अतिरिक्त मान संभ्रम के निमित्त मुझे कुछ कहनाही नहीं है वह तुम स्वयंही देख रही हो-"

इतना कहते २ उसने अपनी बात आपही रोक ली और जोर से क़हकहा मार के हँसा और फिर सँभल के कहने लगा—"बादशाही और तख्त मेरे पैरों के तले पड़े मिलें—परन्तु मेरी स्वयं इच्छा उतने झंझटों में पड़ने की नहीं है।—"

इसके उपरान्त दोनोंही ओर पूरी २ निस्तब्धता रही और इस बीच में फोष्ट तथा वह रहस्यमयी स्त्री दोनों अपने हृदय में अनेकानेक विचित्र कल्पनाओं का विचार करते आगे बढ़े जाते थे।

जाते २ लेडी एक खिड़की के सामने फिर खड़ी हो गई जिसमें पहिली खिड़की से भी कुछ विशेष प्रकाश बहिर्गत हो रहा था। फोष्ट भी इसकी बगलही से सटा चल रहा था इसके खड़े होतेही वह भी ठहर गया और तब उस लेडी ने कहा—

"क्यों श्रीमान्! तो आप मेरा काम करने पर तैयार हैं? तो अच्छा मेरी ओर देखिये—और ये ओंठ सदैव आप की मोहीनी मूर्ति को देख के मुसकराया करेंगे और ये आंखे सदैव आप के एहसान से झुकी रहेंगी यदि आप ग्रेगरी वालसटेन और उसी के साथ फ्रिज़ को भी छुड़ा सकेंगे।"

इतना कहते २ उसने अपनी नकाब चेहरे से हटा ली और अब फोष्ट को ऐसा बोध हुआ मानों पूर्णमासी का चांद उसके सामने काले बादलों से निकल के आ खड़ा हुआ है। चाँद को भी लज्जित करनेवाला उसका वह मुखड़ा जिसमें एक प्रकार का घमंड भरा हुआ था सुराहीदार ग्रीवा पर रक्खा हुआ था। कामिनी का कुल शरीर ज्योति के साँचे में ढला जान पड़ता था। उसके अङ्ग २ से कान्ति फूट २ के निकल रही थी, इसकी उम्र लगभग छब्बीस वर्ष की रही होगी परन्तु उसकी आँखों की चमक, चेहरे का भराव, बदन का कसाव इससे कहीं छोटा उसे मालूम करा रहा था।

फोष्ट—अनुपम! सुन्दरी—चाहे तुम कोई क्यों न हो—मैं तुम्हारे लिये किसी बात को अस्वीकार नहीं कर सकता—परन्तु यदि मैं ग्रेगरी वालसटेन तथा फ्रिज़, दोनोंही को छुड़ा लाऊंगा—यदि मैं तुम्हारी आज्ञा का प्रतिपालन करूंगा—तो फिर क्या मैं तुम से किसी समय साक्षात कर सकता हूं—क्या फिर तुम्हारे इन लाल और कोमल होठों से तुम्हारी प्रसन्नतामयी कोकिला के स्वर को मात करनेवाली

कोमल वाणी का आनन्द उठा सकता हूं ?

इतने में उस लेडी ने अपनी नकाब फिर दुरुस्त कर ली और फोष्ट के साथही साथ फिर आगे बढ़ती हुई कहने लगी—

"हां हमारी साक्षात पुनः हो सकती है! आज रात को फ्रिज तथा ग्रेगरी वालस्टेन को किस प्रकार बने कैद से छुड़ाना चाहिये—आजही रात को यह कार्य समाप्त हो जाय श्रीमान—क्योंकि प्रातः काल पुनः अदालत बैठेगी और इसमें कोई संदेह नहीं कि चीफ जज उसी समय उनकी गरदन मारने की आज्ञा देगा और फिर उस समय हमलोगों के करते धरते कुछ न बन पड़ेगा। बस तो आज रातको यह काम कीजिये और कल संध्या समय, हमारी आपकी साक्षात दुर्ग के उत्तरवाले बुर्ज के नीचे होगी! समझे न आप ? अच्छा तो अब हमलोगों को पृथक् होना चाहिये आप मेरी बातों को भली भांति समझ चुके हैं और मिलने का समय कल ठीकही हो गया है, अच्छा तो प्यारे उतनी देर के निमित्त तुमसे विदा मांगती हूं।

फोष्ट—विदा प्यारी! कल संध्या समय दुर्ग के उत्तरीय बुर्ज के नीचे हमारी साक्षात होगी!

इतना कहके फोष्ट तो एक ओर चल दिया और इधर यह रहस्यमयी लेडी अपने पथ पर जाने लगी।

परन्तु घटनावश एडा ने फोष्ट के कहे हुये अन्तिम शब्दों को किसी प्रकार सुन लिया। वह उसी बड़े पथ से जिसपर अभी यह दोनों भी पृथक हुये थे होती हुई अपने महल की ओर जा रही थी। एडा कुछ दिन रहते अदालत में अपने पति के मुकदमे का परिणाम जानने के निमित्त गई थी। और जब वह अदालत से लौटी तो उसने दूर से अपने आगे २ एक स्त्री तथा एक पुरुष को एक गली से निकल के जाते देखा। इस से वह कौतूहलवश जल्दी २ आगे बढ़ने लगी कि देखें ये दोनों कौन हैं और जब वह और निकट पहुंची तो पहचान लिया कि यह फोष्टही है। यह देखतेही उसका माथा ठनका और वह धीरे २ छिप के उनकी बातें सुनने लगी परन्तु उसी समय फोष्ट ने कहा "विदा प्यारी! कल संध्या समय दुर्ग के उत्तरीय बुर्ज के नीचे, हमारी साक्षात होगी।" बस इतना कह के वे दोनों पृथक हो गये और साथही एडा के माथे पर मानों बिजली सी गिर पड़ी। वह समझ गई कि फोष्ट ने इस नकाबदार लेडी से अब प्रीति लगाई है और यही जान के वह मारे क्रोध के विह्वल हो गई। यह तो

उसे मालूमही था कि फोष्ट से वह किसी प्रकार का बदला नही ले सकती थी—क्योंकि चौंतीस वर्ष पर्यंत शैतान उसके गुलामी में था वह अपने जादू से किसी प्रकार का हथियार अपने ऊपर न असर करने देगा; परन्तु उसने अपना क्रोध उस स्त्री पर निकालने की इच्छा की। उसने स्थिर किया कि उसी का काम तमाम करके अपनी कामना सिद्ध करे।

पाठकगण पर यह भी विदित रहे कि एडा ने फोष्ट के मुँह से केवल वेही शब्द सुने थे जो उसने नकाबपोश लेडी से चलती समय कहे थे। इसके पहले फोष्ट से और उससे क्या बातें हुईं; नकाबदार लेडी ने फोष्ट से किस प्रकार ग्रेगरी वालसटेन के छोड़ाने की प्रतिज्ञा कराई इन सब से वह पूरी अज्ञ थी।

इसके अतिरिक्त एडा की कुछ यह भी कामना न थी कि उसका पति मृत्यु के मुँह से बचायाही जावे। उस पापिष्ठा तथा दुराचारिणी स्त्री की तो हृदय से यही कामना थी कि किसी प्रकार वह कौन्टेस आफ ओरेना बन जावे और लोगों की दृष्टि में मान मर्यादावाले पद पर आरूढ़ हो जाये और फोष्ट की मान मर्यादा में भाग ले। यही कारण था कि एडा ने थेरिज़ा को विष दिया था कि जब वह संसार में न रह जायेगी तो विवश होके फोष्ट मेरेही पास आयेगा और अन्त मुझी को अपने हृदय की अधिकारिणी बना व्याह कर लेवेगा। कामना तो उसने बड़ी भारी की थी और उसमें कृतकार्य भी हो जाती परन्तु न जाने उस गुप्त व्यक्ति को कैसे समाचार लग गया कि उसने उस विष का तोड़ आद्रू पेनिल्ला के हाथों थेरिज़ा को पिलवा दिया जिस से उस विष का कोई फल न हुआ और इस प्रकार एडा की कामना उसके हृदयही में ध्वंस हो गई।

अब एडा ने अपने हृदय में यह स्थिर कर लिया था कि वह अपने पति से बिलकुल अलग हो जाये। किसी प्रकार की सहायता न करके उसे केवल उसके भाग्यही पर छोड़ दे। परन्तु यह कहते भी उसे भय जान पड़ता था और वह अपने भेदों के कारण भयभीत होती थी परन्तु साथही उसे यह ध्यान एक प्रकार की आशा भी बँधा देता था कि यदि मेरा परदा खुल जायेगा तो साथही फोष्ट भी बेतौर बदनाम होगा इस कारण वह अवश्यही कोई न कोई रुकावट की तदबीर निकालेगा और मुझे तथा अपने को इस महान आपत्ति से जरूरही बचावेगा।

यह उसने सोचा—और पूर्वोक्त बात स्थिर की, और अब अपने

पति के ओर से वह निश्चिन्त हो गई उसने इस विषय को फोष्टही पर छोड़ दिया कि वह जैसा चाहेगा वैसा करेगा और यही विचार के वह आपही आप बरबरा भी उठी।

"हां—अब हमें इस व्यर्थ के सोच में न पड़ना चाहिये! क्या फोष्ट को अपने नाम का भय नहीं है? वह अपने को खतरे में पड़ता देख के कोई तदबीर उसकी निकालेगा। अब मुझे सोचना चाहिये तो केवल इस विषय को कि किस प्रकार उस दुई-चारी स्त्री से बदला लेना होगा।"

इतना सोचती हुई वह महल जेरनिन की ओर जाने लगी। यद्यपि उसे यह भली प्रकार मालूम हो गया था कि कुछही घण्टों में अब वह अपने असल अधिकारी के हाथ आ जाने वाला है और आश्चर्य नहीं कि आ भी गया हो; तो भी वह अपने भाई आटू के भरोसे पर ढाढ़स किये आगे बढ़ी जाती थी।

छियालिसवां बयान।

पांच घटनायें।

दूसरेही दिवस, नगर वायना में पांच, विचित्र प्रकार की घटनाओं की चर्चा घर २ हो रही थी।

ये घटनायें गत रात्रिही की थीं और आज प्रातः कालही से वायु की भांति चारों ओर फैल गई थीं—बाजार, घर, गली, कोई स्थान ऐसा न था जहां इनकी चरचा न हो रही हो, साथही उन विचित्र घटनाओं ने नगर के बड़े २ हाकिमों के भी छक्के छुड़ा दिये थे।

उन पांचों में, पहिली बात तो यह थी कि फ्रिज तथा ग्रेगरी वालसटेन उस कैद से जिसमें वे रात को बंद किये गये थे निकल भागे। इन बंधुओं के द्वार पर संतरियों का पहरा था। इनके कैद की कोठरी का द्वार भी बड़े मोटे २ लोहे की सलाखों का बना हुआ था। इसके अतिरिक्त ये जंजीरों द्वारा कसे हुये थे और जंजीरों का सिरा दीवार में के लगे हुये एक लोहे के कड़े से बँधा हुआ था। रात को किसी ने द्वार खोला और इन दोनों की कैद काटी और फिर कोठरी की एक खिड़की से, जिसमें लोहे की सलाखें थीं तोड़ कर कैदियों को ले भागा। परन्तु आनेवाला कब और कैसे आया तथा खिड़की से कैसे निकाल ले गया, (क्योंकि खिड़की के नीचे भी सिपाहियों का पहरा पड़ रहा था)—यह किसी सिपाही को न मालूम हुआ। यह घटना, यथार्थ में बड़ीही आश्चर्ययुक्त थी कि कैदी भागे तो कैसे भागे!

दूसरी घटना उस शाही सवार की हत्या थी जो शाही आज्ञापत्र, उस मठ के तोड़ने के बारे में लिये लेवच के गवर्नर के पास वायना से जा रहा था। अभागा व्यक्ति नगर से पांच कोस पर एक घने जङ्गल में मारा गया, इसकी छाती पर एक खंजर गड़ा हुआ मिला जिसके कवजे पर कुछ रस्सी लपटी हुई थी—जिसके देखतेही प्रतीत हो गया था कि यह खून अदालत विम का बदला है। उस रस्सी में एक कागज भी लिपटा हुआ था जिसमें निम्नलिखित इबारत लिखी हुई थी और जिसके अन्त में हस्ताक्षर के स्थान तीन खंजरों का चिन्ह बना दिया गया था:—

"जिन व्यक्तियों की इच्छा अदालत विम के मेम्बरों को कष्ट पहुँचाने की है वे इस अभागे व्यक्ति की अवस्था देख के उचित शिक्षा ग्रहण करें, और आगे से ऐसा करने का कदापि साहस न करें क्योंकि जो कोई इस पाक अदालत के विरुद्ध होगा उस्के भाग्यों का इसी प्रकार वारा न्यारा कर दिया जायगा। इस्के अतिरिक्त जो हमारे विरोधियों की आज्ञा का प्रतिपालन करेंगे उनकी भी यही गति बनाई जायगी।"

इस मरे हुये व्यक्ति के रुपये तथा हथियार तो कुल उसी के पास थे परन्तु उस हुकुमनामे का पता न था जिस्को लेकर वह जा रहा था।

यद्यपि तीसरी घटना—इन दोनों घटनाओं से कोई विशेष संबन्ध न रखती थी तथापि थी वह दोनोंही से विचित्र और बड़ीही आश्चर्यदायक—और वह घटना यह थी कि:—

जब शांहशाह मेक्समिलियेन की निन्द्रा प्रातः काल भङ्ग हुई तो उन्होंने अपने पलंग के निकटही के रक्खे हुये टेबुल पर एक खंजर गड़ा हुआ पाया। यह अदालत विम का खंजर था जिस्के कबजे पर रस्सी लपटी हुई थी; और जिस्के भीतर एक कागज रक्खा हुआ था। इस्के खोलने पर उसमें केवल एक शब्द लिखा हुआ पाया गया कि "सावधान!"।

चौथी घटना यह थी कि एक व्यक्ति, जिसे खुल्लम खुल्ला सहस्त्रों मनुष्यों के बीच लगभग पच्चीस वर्ष के बीतते थे कि फाँसी दी गई थी वह उसी संध्या को जिस्की रात को इतनी घटनायें हुईं वायना की बाजारों में इधर उधर घूमता दिखाई पड़ा। यह व्यक्ति अलरिक किनिस नामक वही संतरी था जिसने डिउक लिउपोल्ड के उत्पन्न होने के समय डाक्टर से रिशवत ली थी जिसमें वह अपनी बहिन के लड़के को बादशाह के लड़के से बदल डालने पर था।

दो व्यक्तियों ने जो हंगरी के सिपाही थे और जिन से उस सिपाही से पहिले बड़ी

जान पहचान थी इस बात की शपथ खाके लोगों के सामने कहा कि यह जो पादड़ियों का कपड़ा पहने नगर में घूम रहा है वही अलरिक किनिसही है। इन दोनों सिपाहियों में से एक का तो यह कथन था कि मैंने उसे सूर्यास्त के कुछही देर उपरान्त, अदालत के निकट देखा था ; और दूसरा सिपाही यों कहता था कि मैंने उसे नगर के उत्तरीय फाटक पर एक घण्टा पूर्व देखा था । इन दोनों व्यक्तियों की आपस में जान पहचान न थी, परन्तु यह भली भांति निश्चिय किया जा सकता था कि इन दोनों ने मिलके झूठही कोई हवाई लोगों को आश्चर्य में डालने के निमित्त नहीं उड़ाई है।

किन्तु नगर के जो बुड्ढे थे वे सोच साच के पिछली बात अपने ध्यान में ले आते और कहते कि हमारे तथा अन्य नगरवासियों के सामने अलरिक किनिस, तथा डाक्टर और उस दाई (अर्थात् डाक्टर की स्त्री) को फांसी दी गई थी और फिर उनकी लाशें जेल के डाक्टर के समीप निरीक्षणार्थ भेजी गई थीं। पर वह डाक्टर जिसने लाशें देखी थी अब मौजूद न था परन्तु अलरिक किनिस जीता जागता सबके सामने घूम रहा था जिसे देख २ के लोग आश्चर्यसागर में डूबे जाते थे ।

ये चार घटनायें—अर्थात् उन कैदियों का भाग जाना—उस सवार का मारा जाना—अदालत विम के खंजर का बादशाही विश्रामागार में जा पहुँचना—तथा मुरदा अलारिक किनिस का निधड़क बाजारों में घूमते हुये दिखाई पड़ना—तो हम आप को सुनाही चुके और जिन से नगर के बड़े २ हकिमों के हृदय में भी शंका उत्पन्न हो आई थी। परन्तु एक दिवस के उपरान्त—अर्थात् ये चारों घटना तो एक रात की थीं किन्तु उसके दूसरे दिन की सन्ध्या को पांचवीं घटना संघटित हुई, और उसने भी नगर निवासियों के हृदय पर उन चारों घटनाओं से कुछ कम काम न किया ।

सूर्य के अस्त होने में अभी कोई पाव घण्टा बाकी था जब वही नकाबपोश लेडी दुर्ग के उत्तरीय बुर्ज के नीचे जा पहुँची ।

वहाँ पहुँच के उसने आपही आप कहा—

"माई सीजर ने मुझे बड़ीही कठिनता से इधर आने की आज्ञा दी है" इतना कहके उसने अपने गोरे २ सुन्दर हाथों से अपनी नकाब को सँवारना प्रारंभ किया इस समय उसके दाहिने हाथ में, वही शेर के मुँहवाली अंगूठी थी जिसे फोष्ट ने अदालत में देखी थी इस कार्य से निवृत्त होके उसने फिर आपही आप कहा—

" भाई सीज़र है भी बड़ा शकी स्वभाव का व्यक्ति"

इतना कहके उसने अपना हाथ अपने कपड़ों में छिपा लिया और फिर यों कहने लगी:—

"परन्तु मैं तो कौन्ट ओरेना से प्रतिज्ञा कर चुकी थी—आह! वह है भी कितना स्वरूपवान, मैंने इस प्रतिष्ठित व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ सुना है। क्रमशः हमने भी इतनी उन्नति की कि आज इस प्रांत में हमारी बराबरी करनेवाला कोई दिखाई नहीं देता हमने एक २ करके सब को मार डाला। वे कबर में पैर फैलाये चैन से सो रहे हैं परन्तु यहां किसी को कानों कान खबर नहीं—परन्तु यह फोष्ट, कौन्टओरेना भी अवश्य कोई गुप्त रहस्य रखता है—वह अतुल सम्पत्ति का अधिकारी है प्रत्येक स्थान पर उस्का मान संभ्रम होता है—बड़े २ अल्यों की वह कोई परवाह नहीं करता और करे भी तो किस प्रकार, क्योंकि कुल संसार का वह मालिक जान पड़ता है इसी प्रकार मेरा पिता भी एक दिन कुल संसार का अधिकारी बन गया—मुझे आशा है कि कौन्ट जब मेरा नाम सुनेगा तो एक बेर भौंचक सा रह जायेगा—और अब मैं उससे अपना नाम छिपाने की आवश्यकता भी नहीं देखती—कारण यह कि मेरे कहने से तो उसने इतना बड़ा जानजोखिम काम किया और यदि मैं अपने को उससे छिपाऊँ तो अन्याय है वा नहीं, और मुझे जहाँ लो आशा है यह मेरे भाई सीज़र का भी परम मित्र होगा क्योंकि यहाँ जरमनी राज्य में हमलोगों का एक व्यक्ति रहना चाहिये था और वह फोष्ट से बड़ के और कौन होगा इसकी शाहंशाह के दरबार में इतनी मान मर्यादा है इससे हमारे बहुत से काम निकलेंगे—और हमारी इतनीही इच्छा नहीं है कि केवल इटलीही राज्य के भेद हमपर खुला करें और अन्य स्थान के नहीं—"

यह लालची स्त्री अपने ध्यानों के उलझेड़े में यहाँ लों डूबी रही कि एक व्यक्ति जो सवारों की सी पोशाक पहिने हुआ था और जिस्की टोपी में का खोंसा हुआ पर बाहर वायु में लहरा रहा था बिलकुलही इस्के निकट पहुँच गया। तब यह सचेत हुई। उसे देख के इसने ज़ोर से कहा —

"फोष्ट!"

एडा—(क्योंकि मर्दाने भेषमें एडाही थी)—नहीं मैं फोष्ट नहीं हूं जिस्की तू बाट जोह रही है हरामज़ादी!—वरन मैं फोष्ट की पहिली—प्राण से प्यारी प्रेमिका हूं जिसे अपनी सौत की डाह क्षण भर भी नहीं देखी जा सकती।

इतना कह के एडा ने अपने कमर के लटकते हुये खंजर को निकाला और उसे तान के शीघ्रता से नकाबपोश लेडी की ओर झपटी कि एकही हाथ में उसकी छाती में उतार दे।

परन्तु एडा एक लम्बा कोट पहने हुये थी इसी कारण उसमें फँस के उसका दाहिना हाथ पूरा काम न कर सका। इसके अतिरिक्त उधर वह लेडी भी एकाध कदम दाहिने हट गई जिससे इसका मनसूबा पूरा न हो सका। वार खाली गया।

एडा इसके उपरान्त तुरन्तही सँभली और दूसरी चोट लगाने के निमित्त प्रस्तुत हुई, परन्तु साथही वह नकाबपोश लेडी इतना शीघ्र कि जितना ध्यान में आ सकता है आगे बढ़ी और उसने अपने हाथ की अँगूठी को छू दिया जिसके छूतेही अँगूठी का मुँह अजदहे का सा हो गया; और तब उसने एडा का दाहिना हाथ बांये हाथ से पकड़ के जो इस पर चोट करने के लिये बड़ाही चाहता था उसके गुलाबी गालों पर वह अजदहे के मुंहवाली अँगूठी ज़ोर से मल दी।

यह कुल काम एक क्षण में समाप्त हो गया और इसके उपरान्त नकाबपोश लेडी कुछ कदम पीछे हट के खड़ी हो गई।

अभी इस बात को बीस सेकेंड भी न बीते होंगे कि एडा सहसा उस विष के असर से जो उस अँगूठी में भरा हुआ था ज़ोर से चिल्लाई और फिर दूसरेही क्षण में मुर्दा होके धम से पृथ्वी पर गिर पड़ी।

"अब मैं यहां ठहरने तथा कौन्ट ओरेना से मिलने का किसी प्रकार साहस नहीं कर सकती।" इतना कह के वह नकाबपोश लेडी घूमी और शीघ्रता से पैर उठाती एक ओर को चल दी।

सैतालीसवां बयान।

यह स्त्री कौन है?

कठिनता से अभी यह लेडी उस स्थान से बीस कदम आगे बढ़ी होगी जहां ऐसे आश्चर्य्य युक्त रीति से एडा मरी पड़ी थी कि सहसा उसके हृदय में एक ध्यान आया और उसने आपही आप कहा—

"उत्तम होगा कि यह काम किसी डाकू वा चोर का समझा जावे। इस कारण मुझे उसका प्रबंध करना चाहिये।"

इसके उपरान्त एक क्षण भी विलम्ब न करके शीघ्रता से वह उस भयानक स्थान पर पलट गई, जहां एडा एक विचित्र रूप से मरी पड़ी थी।

वहां कोई न था; और अब चन्द्रदेव की चांदी के पानी की सी चांदनी उस मरी हुई स्त्री के चेहरे पर अठखेलियां करती दिखाई पड़ती थी। साथही वायु भी मन्द २ पूर्व दिशा से हिलोरे लेती आती और उस लाश पर से होती पश्चिम की ओर चली जाती थी।

"मैं मुरदे से नहीं डरती—क्योंकि इसके पहले मैं सैकड़ोंही मृत्यु ऐसी देख चुकी हूं।"

यह उस स्त्री ने कड़े स्वर से कहा। इस समय उसके एक २ अक्षर से निर्दयता टपक रही थी।

अब इसने एक बेर अपने चारों ओर देखा और जब इससे निश्चिन्त हो चुकी कि कोई बाधा देने वाला निकट नहीं है तो यह लाश पर झुक गई। एडा की जेब में जो बटुआ था उसे इसने निकाला उसकी अंगूठी इत्यादि उतार के इसने उसमें रक्खी और उसे अपने जेब में डाल लिया।

वह छुरा जिसे एडा ने नकाबपोश लेडी के मारने के लिये निकाला था उसी की बगल में पड़ा; चमकते हुये चांद के प्रकाश में चम चमा रहा था और उसकी बगल की पड़ी एडा ऐसी जान पड़ती थी मानों कोई छोटा बच्चा लपलपाती हुई जीभ से बढ़ते हुये सर्प से बिलकुल बे खबर हो नींद में पड़ा खर्राटे ले रहा हो।

नकाबपोश लेडी ने उस छुरे को उठा लिया और उसे लाश के कलेजे में उतार दिया।

उसी समय नकाबपोश स्त्री के कानो में किसी के पद शब्द सुन पड़े, जिसे सुन्तेही वह शीघ्रता से बुर्ज के नीचे से एक ओर भागी।

दूसरेही मिनिट में फोष्ट—जो इस समय एक बड़े लबादे में लिपटा लिपटाया था उस स्थान पर आ पहुंचा जहां यह भयानक और हृदय विदारक दृश्य उपस्थित था।

अपने सामनेही एक मनुष्य देह को पड़ा पाके वह वहाँ ठहर गया और उसका चेहरा देखने लगा।

"एडा! और इस मरदाने भेष में। एडा—मारी गई—वह मुर्दा है! भला यह काम किसका है? आह! उसका बटुवा—उसकी अंगूठी, कुछ भी तो नहीं है।

उसका कपड़ा फटा हुआ है और उसका जेब उलटा पड़ा है। यह अवश्य किसी डाकू का काम है।"

फोष्ट ने इतनाही कहा था कि उसके कानों में पिशाच का कंठस्वर सुन पड़ा—"तुच्छ बुद्धि मनुष्य !"

इतनी आवाज़ के उपरान्तही एक छाया वायु में से पृथ्वी पर उतरता जान पड़ा और फिर वही छाया क्षण भर में बदल के एक मनुष्य की सूरत में उस छिटकी हुई चांदनी में फोष्ट के सामने खड़ी दिखाई दी।

फोष्ट शब्द सुन्तेही शीघ्रता से उसकी ओर फिरा और गरज के कहने लगा "तू यहां क्या करता है ? मैंने तो तुझे नहीं बुलाया !"

पिशाच—(स्थिरता से अपनी दोनों बगलों में हाथ दिये हुये और पड़ी हुई लाश की ओर देखता हुआ) नहीं ! तुमने तो नहीं बुलाया परन्तु मैं यह भली भांति जानता था कि तुम अवश्यही इसका सोच करोगे कि हमारी प्रेमिका का मारनेवाला कौन है। तुच्छ बुद्धि मनुष्य ! मैं फिर भी तुझे उसी नाम से बुलाता हूं। अरे क्या तू इतना नहीं अनुमान करता कि जिस में उसके मारने की शक्ति थी उस में क्या उन चिन्हों के बनाने की शक्ति नहीं थी कि जिसे देख के तू अनुमान कर सके या धोखा खा जाय कि यह काम किसी लुटेरे का है ? नादान ! सुन ! और याद रख ! कि जिस व्यक्ति ने उसे मारा है उसी की यह सब करतूत है। अर्थात उसी ने इसकी अंगूठी इत्यादि ले ली है कपड़े भी फाड़ डाले हैं और केवल इतनेही के लिये कि जिस में तू धोखा खा जाय और अनुमान करे कि यह काम किसी डाकू का है।

फोष्ट—(उसकी बातों से लज्जित हो के) सच ! तो क्या तू ने यह काम होते देखा था क्या तू यहीं मौजूद था ? और फिर भी उसकी सहायता न की जो मुझे प्राणों से भी प्यारी थी।

पिशाच—हां मैं इसी स्थान पर उपस्थित था जब वह गहिरी चोट उसे लगाई गई थी। मारने और मरने वाले दोनों के दांव घात को मैं खड़े २ यहीं से देख रहा था। परन्तु एडा का अन्तिम समय आ पहुँचा था और मुझ में वह ताकत नहीं है कि जिससे मैं मृत्यु के मुँह में के पड़े हुये व्यक्ति को किसी प्रकार बचा सकूं।

फोष्ट—उसका मारनेवाला कौन था ? बतला ! जलदी बतला !

पिशाच—एक स्त्री ने—एक स्त्री ने इसे मारा है। एडा ने तुम्हारी और उस नकाबदार लेडी की बातें सुन ली थी जो हाथ में एक विचित्र आकार की अँगूठी पहने हुई थी और जिस से तुमने यहां मिलने का वादा किया था। बस तुम्हारी बातें सुनतेही वह आग हो गई और अपनी सौत से बदला लेने के निमित्त वह यहां आई थी। वह देखो मुरदे के गाल पर एक काला सा चिन्ह है, यह उसी लेडी की अँगूठी द्वारा बनाया गया है—इस अँगूठी में फोष्ट, इतना विष है कि कदाच् विषैले से विषैले सर्प में भी उतना न होगा।

फोष्ट। (चिल्ला के) आह! जभी उस अँगूठी विषयक मेरे हृदय में अनेकानेक प्रकार की चिन्ता उत्पन्न होती थी।

पिशाच—तो बस भई उसी अँगूठी के छुलातेही तुम्हारी एडा का प्राण पखेरू तनपिञ्जर छोड़ के हवा हो गया।

पिशाच ने इसे बड़ेही शान्तरूप से और बड़ीही प्रसन्नता से बनाके कहा। अपने हिसाब मानों वह फोष्ट को कोई बड़ीही आनन्ददायक घटना सुना रहा था। इसके उपरान्त वह फिर बोला—

"और फिर उसी खञ्जर को, जिसे एडा अपने सौत की छाती में भोंकने के लिये लाई थी उस नकाबपोश लेडी ने उसी की छाती में भोंक दिया!"

यह सुनके फोष्ट कुछ काल पर्यन्त चिन्तित रूप से खड़ा रहा।

फोष्ट—हमें उस नकाबपोश लेडी तथा उस भयानक अँगूठी के बारे में और भी बहुत कुछ जानने की उत्कण्ठा लग रही है। मैंने एक क्षण के निमित्त उसका मुखड़ा देखा था—जिसपर, इतना तो मैं अवश्यही कह सकता हूं कि आज लों मनुष्यों तो मैंने वैसा अलौकिक सौन्दर्य कभी नहीं देखा था।

पिशाच—(ताने की राह से) तो क्यों महाशय आपने थेरिजा में भी वैसे सौन्दर्य का अनुभव नहीं किया?

फोष्ट—नहीं! थेरिजा में भी नहीं!

पिशाच—(ताने से मुसकरा के और उसबार से भी कुछ विशेष घृणित स्वर में) और एडा में?

कौन्ट ओरेना—नहीं एडा में भी नहीं। बस अब देख, एक क्षण का भी विलम्ब बिना किये हमें उस सुन्दरी के निवास्थान पर पहुँचा दे।

पिशाच—तो क्या लाश ऐसेही बे अन्तिम क्रिया किये इस स्थान पर छोड़ जाने का विचार है? समझ लो कि बेचारी की बिलकुलही मिट्टी खराबी होगी। यह रास्ता है।

फोष्ट—तेरी भी बुद्धि कभी २ चर जाती है। अरे! यदि मैं लाश उठवा कर उसके मारनेवाले का खोज लगवाना-प्रारम्भ करूँगा तो लोगों के चित्त में मुझपर भांति २ के सन्देह होंगे कि न होंगे? बस तो इसी वास्ते मैं कहता हूं कि इसे यहांही पड़ा रहने दे—जब रास्ता है तो कोई व्यक्ति इधर से जायेगा बस लाश देख के वह निश्चय लोगों से कहेगा और फिर थाने के जवान आके अपना २ कर्तव्य पूरा करेंगे। अच्छा तो आगे—मुझे उस लेडी का सविस्तर वृत्तान्त जानने का शौक बिलकुही व्यग्र किये हुये है वह रहती कहां है? वह है कौन? उसका नाम क्या है? कल उसने अपने घराने का पदवी तथा बल के बारे में एक रहस्य मय परिचय मुझे दिया था। वह कहती थी कि मेरा पिता सिघांसनारूढ़ है—परन्तु मैंने इसे स्वीकार तो कर लिया परन्तु बड़ीही लापरवाही से क्योंकि मुझे उससे क्या लाभ?"

पिशाच—तो उसने झूठ क्या कहा जो कुछ कहा उसका एक २ अक्षर सत्य था। हां—उसका पिता एक बलिष्ठ शांहशाह है और वह अपने किसी निकटस्थ संबंधी में; जो शाहज़ादा है व्याही गई है।

फोष्ट—अरे! तो क्या वह व्याही हुई है?

फोष्ट ने इसे गिरे हुये स्वर और हृदय की निकलती हुई आहों को दबा के पिशाच से पूछा।

पिशाच—जिससे अब उसने व्याह किया है उसका दूसरा पति है। परन्तु फिर इससे क्या? वह अपने कामों की स्वतंत्र अधिकारिणी है—धर्म और लोक लाज को वह सामान्य शब्दों के अतिरिक्त और कुछ मानतीही नहीं। देखो मैं भी उन्हीं शब्दों का प्रयोग करता हूं जिसे तुम तुच्छ बुद्धि मनुष्य किया करते हो कि यह यथार्थ में एक पिशाचिन है जो मनुष्य के जामे में संसार में वर्तमान है—हां निस्संदेह वह पिशाचिनही है (इसके उपरान्त वह फोष्ट को घृणा से देखने लगा और फिर बोला) अस्तु! इन बातों के कहने से इस समय क्या लाभ! तनिक तुम अपने शोक को रोको फोष्ट! तो मैं तुम्हें उस अद्भुत वस्तु को दिखाये देता हूं। तनिक अपने दोनों हाथ तो मुझे पकड़ा दो।

कौन्ट ओरेना ने पिशाच के कहनेहीं के अनुसार किया और इसके दूसरेहीं क्षण में वह तथा पिशाच—मनुष्यों की दृष्टि से गायब—वायना के बाहर एक बहुत बड़ी अट्टालिका की एक कोठरी में खड़े थे।

यह कोठरी जिसमें फोष्ट तथा पिशाच ने गायबाना अभी २ प्रवेश किया है, उत्तम और बहुमूल्य सामानों से सजी सजाई थी। और इसमें इस समय दो व्यक्ति कुरसियों पर बैठे हुये थे। एक तो बैठनेवालों में फादर, ऐन्सलेम, जूलियेन आल्प्स नामक पर्वत में के गुप्त मठ का महन्त था तथा दूसरा व्यक्ति एक युवा था जिसका वयस अन्दाजन तीस के होगा इसका कद लम्बा, बाल काले तथा नेत्र भी बड़े २ और स्याह थे। इसकी दाढ़ी कुछ सुर्खी मायल थी। वह गरदन से लेके पैर पर्यन्त रङ्ग विरङ्ग की बहुमूल्य पोशाकें पहने हुआ था, इसके सिर पर एक काली मखमली टोपी थी जिसमें एक लम्बा काला फुँदना बांये कन्धे पर पड़ा हिल रहा था।

यह दोनों व्यक्ति एक टेबुल के सामने बैठे थे। जिसपर अनेकानेक प्रकार के फल शराबें, तथा चमकते दमकते दो चार बिल्लोर के प्याले रक्खे हुये थे। जिस समय फोष्ट तथा पिशाच ने कोठरी में प्रवेश किया उस समय वे दोनों बातचीत करने में लगे थे—फोष्ट तथा पिशाच दृष्टियों से लोप थे इस कारण उन लोगों ने किसी के आने का ध्यान करके अपनी बातों का सिलसिला न तोड़ा, वरन आगेही बढ़ते गये—और जिसे ये दोनों भी चुपचाप खड़े होके सुनने लगे वह बातें यह थीः—

युवक व्यक्ति—तो क्यों फादर ऐन्सलेम तुमने आज रात को वायना से चला जाना निश्चय कर लिया है?

फादर ऐन्सलेम—हां श्रीमान् विचार तो ऐसाही है। जरमनी की राजधानी कुछ हमारे रहने के योग्य नहीं, एक हुल्लड़ था जो प्रायः कुल नगर में मचा हुआ था कि मैं पुनः जीता जागता वायना में आ गया हूं। वरन् दो व्यक्तियों ने तो मुझे पहचान भी लिया था। अस्तु यह तो आपने समझही लिया—दूसरे अदालतविम का एक विशेष अफसर इतने दिवसों पर्यन्त वायना में स्थिर नहीं रह सकता—क्योंकि इस स्थान में अदालत विमका कोई बल नहीं है। इस कारण मेरे भी अधिकार मिट्टीही के तुल्य समझने चाहिये।

युवक—(हँसके) अजी तुमने बादशाह पर्यन्त को तो घबराही दिया और स्वयं उसके महल में क्या—उसके विश्रामागार में पहुँच सके।

इतना कहके युवक ने एक दूसरा कहकहा लगाया।

फादर०—सच तो ऐसे है श्रीमान्! कि अदालत विम का मेम्बर होने के कारण बादशाही खवासों में का एक व्यक्ति मुझसे मिल गया और उसी के हाथों मैंने खंजर जो अदालत का चिन्ह है शाहंशाह के पलँग के निकटस्थ एक टेबुल पर गड़वा दिया।

युवक—परन्तु उस सवार को तो वह नहीं मार आया, जो हुकुमनामा लिये गवरनर लेनिच के पास जा रहा था!

इतना कहके युवक ने एक और कहकहा लगाया।

फादर ऐन्सलेम—(बड़ीही गम्भीरता से) नहीं श्रीमान्! वह काम वास्तव में मैंने अपने हाथों से संपादन किया था, विम अदालत के अफसरों का कर्तव्य है कि समय पर हाकिमों का काम करें और समय पर, नौकरों का; और मुझे उस हुकुम के देखने की बड़ीही आवश्यकता थी जो शाहंशाह की ओर से गवरनर लेनिच के नाम भेजा गया था और जिसे देखनेही के कारण मुझे कष्ट उठा के उस जङ्गल पर्यन्त जाना पड़ा और सवार को मार के हुकुमनामा लेही आना पड़ा। उसे यहां लाके मैंने देखा तो जान पड़ा कि गवरनर लेनिच को यह आज्ञा दी गई थी कि फौज लेके जूलियेन आल्प्स की प्रत्येक घाटियों को साफ कर देना। उस पहाड़ी दुर्ग या मठ को हस्तगत करके वहां सरकारी सिपाही बैठाना और वहाँ के मनुष्यों को पकड़ के हमारी सेवा में भेज देना। उस नकशे को देख के—जिसे आटूने प्रस्तुत किया था स्पष्ट रूप से विदित होता था कि किस ओर से आक्रमण करना चाहिये; जिससे हमारे रसद इत्यादि पहुँचने के कुल रास्ते बंद हो जायें और (भगवान न करे) यदि ऐसा होता तो भीतर के कुल सिपाही भूखों मर जाते और विवश होके उन्हें अपना दुर्ग वैरियों के हाथ में देही देना पड़ता।

युवक—तो क्या अब तुम्हारी इच्छा है कि तुम दल बल सहित सदैव के निमित्त उस दुर्ग को छोड़ दो?

फ़ादर ऐन्सलेम—नहीं श्रीमान्! अब फ्रिज् तथा वालसटेन, दोनों मिलके बहुत बड़ा रसद का भंडार दुर्ग में एकत्रित करलेंगे। क्योंकि बादशाह तो भयभीत होही चुका है और यदि बहुत दिवसों के निमित्त नहीं तो कुछ दिवसों के निमित्त तो अवश्यही रस्सी और खंजर का भय, उसके हृदय पर अङ्कित रहेगा और तबलों हमलोग रसद का एक भारी भण्डार दुर्ग में एकत्रित कर लेंगे। बस फिर उस स-

मय यदि बादशाही कुल फौजही क्यों न हमलोगों पर अग्रसर हो । परन्तु जबलों रसद है तबलों हमारा बाल भी बीका नहीं कर सकतीं ।

युवक—भई ! इन दोनों अदालतविम के मेम्बरों का कैद से निकलना भी बड़ेही विलक्षण रीत से हुआ । सबसे भारी दिल्लगी तो यह है कि वे स्वयम् हैरान हैं । अपने निकलने का ब्योरा हमलोगों के पूछने पर नहीं बता सकते । इसके अतिरिक्त मैं स्वयम् भी यह नहीं जानता कि मेरी बहिन ने किस प्रकार कौन्ट ओरेना को अपने वश में कर लिया जिसने यह बड़ाही प्रशंसा युक्त कार्य किया है ।

फादर०—मैं भी नहीं समझ सकता कि किस प्रकार धोखा देके श्रीमती ने उस व्यक्ति से यह काम करा लिया है । जो हो—किसी प्रकार से कार्य तो हमारा निकल गया । फ्रिज़ तथा ग्रेगरी वालसटेन छुड़ा लिये गये और इस समय वे यहां से कोसों की दूरी पर कारनेलिया पार कर रहे होंगे । अब अनुमान दो घण्टे में मैं भी उसी ओर जाऊंगा ।

युवक–और प्रातःकाल, मैं भी अपनी बहिन को लेके वायना से चला जाऊँगा । हमलोगों का आना केवल उन्हीं दोनों व्यक्तियों के कारण हुआ । क्योंकि मैं जानता था कि वालसटेन हमारे भेदों से विज्ञ है । ऐसा न हो कि अदालत के क्षोभ में पड़ के हमारा कुल भेद खोल दे । भगवान जानता है मुझे उसकी अवस्था तथा उसकी धूर्तता पर प्रायः हंसी आया करता है कि उसने कैसी चालाकी की है दोनों की एक सूरत होने के कारण अबलों उसे कोई न पहचान सका था ।

फादर ऐन्सलेम—और मुझे श्रीमान्! अभी वालसटेन से समझना है । पाजी ने बेरेन की कुल सम्पत्ति ऐयाशी में उड़ा दी । इस्के अतिरिक्त मुझे श्रीमान् तथा श्रीमती आपकी बहिन महाशया से यह भी पूछना है कि एक बेर तो किसी प्रकार यह बेरेन ज़ेरनिन कैद से निकल भागा अब इस्के बारे में क्या आज्ञा होती है । उसी प्रकार बंद किया जाय या योंही जिस अवस्था में अब है रहे—"

युवक—क्या मैने तुमसे नहीं कहा था कि एक दिन संध्या को यही बेरेन ज़ेरनिन हमारे वेनिस वाले महल में घुस आया था—उस समय हमलोगों ने अपने पिता के विरुद्ध एक मनसूबा बाँधा था और जिस्के खुल जाने के कारण कुछ दिवसों पर्यंत हमें उसी मकान में छिपके रहना पड़ा था । हाँ तो तुमसे हमने अभी यह कहा है कि एक संध्या को बेरेन; उसी मकान में घुस आया और तब उसी कोठरी में

घूमता चला आया जिस्में हमलोग एक-गुप्त कार्य का संपादन किया करते हैं और जिससे तुम भी भली प्रकार अवगत हो। वालसटेन भी उस समय हमी लोगों के मकान में था और वह हमारी बहिन से तुर्कों की कैद का वृत्तान्त और बेरेन की साक्षात इत्यादि का विवरण करता उसी के पीछे २ चला जा रहा था। हमारी ब-हिन ये सब बातें सुनती उसी गुप्त कोठरी में जा पहुँची। वह और वालसटेन को-ठरी ही की ओर बढ़े क्योंकि वालसटेन कन्टेला का अरक माँग रहा था जो आप जानतेही हैं कि हमारे घराने की एक बड़ीही उत्तम वस्तु है। कठिनता से अभी ये लोग द्वार के निकट पहुँचे होंगे कि सहसा उन्होंने एक मनुष्यमूर्ति को को-ठरी में खड़ी पाया। हमारी बहन ने देखा कि उसकी सूरत ग्रेगरी वालसटेन से बिलकुलही मिलती जुलती है और उस समय उसे यह जान के और भी आश्चर्य हुआ, जब उसने सुना कि यह वही बेरिन जेरानिन है जिसके बारे में कि अभी २ ग्रेगरी वालसटेन बात चीत कर रहा था। उसने जो कुछ अपने आने का कारण बतलाया वह न जाने सच या झूठ था परन्तु जहां लों मैं अनुमान-करता हूं वह सचही था क्योंकि अपने स्वभाववश हमारी माता उस समय यथार्थही में एक मजदूरनी को कड़ी मार मार रही थीं। आगे यह तो तुम जानतेही हो धर्मपिता!—कि जब हमारे घराने का रक्त चक्कर मारने लगता है तो वह क्रोधानल में बिलकुलही गिरा के किसी बात का विचार नहीं करने देता। अस्तु तो हमारे कहने का तात्पर्य यह कि उसी मजदूरनी की चिल्लाहट के कारण आश्चर्य नहीं कि बेरेन मकान में घुस आया हो। उस स-मय जासूसों में घिरे रहने के कारण—और इतने वैरियों की दृष्टि पर चढ़े रहने के कारण—जिन में हमारे पिता के अतिरिक्त एक प्रकार से कुल हमारे घराने के लोग एक ओर होके उन्हीं से मिल गये थे हमको अपने बचाव पर कुछ विशेष ध्यान देना पड़ा था। इसी कारण हमने और हमारी बहिन ने सलाह करके वालसटेन से कह दिया था कि बेरेन को मठ में तुम्हारी अधीनता में बंद कर दिया जाय—परन्तु इसके साथही मैंने यह नहीं कह दिया था कि उसकी सूरत बनके कोई दूसरा व्यक्ति वायना में जाय और उसकी कुल सम्पत्ति पर अधिकृत हो जाय।

युवक ने यह हँसते २ कहा।

फादर—श्रीमान ने बेरेन के कैद के कारण को, मुझ से कभी ऐसी स्पष्टता से नहीं प्रगट किया था। परन्तु अब मैं भली भांति समझ गया। बेरेन आपके वेनिस के महल में गुप्त के आप के भेदों से अवगत हो गया था और आप को यह उचित जान पड़ा कि यह भेद किसी प्रकार किसी पर प्रगट न होने पाये इसी कारण आपने उसे मेरे यहां कैद करवा दिया था।

युवक—वास्तव में धर्मपिता यही बात है। वह उन गुप्त रहस्यों को देख के हमारे उस महल से जीवित कदापि बहिर्गत न होने पाता, परन्तु, उसके सौन्दर्य को देखके हमारी बहिन का हृदय नर्म होगया और उसने उसे जीवितही निकल जाने दिया। इसके अतिरिक्त मैंने अपनी बहिन से यह भी कहा कि फ्रिज़ कारेल तथा वाल्सटेन उसे मारके उस पर रसूसी खंजर लगा दें जिससे यह बखेड़ा सदैव के निमित्त मिट जावे। परन्तु हमारी बहिन ने उसे स्वीकार न किया वरन इसी बात पर जोर दिया कि उसे आप के मठ में जीवन पर्यंत बंदही रक्खा जावे। अन्त उसी स्त्री की बातों के मानने का परिणाम यह हुआ कि वह उस कैद से छूट आया और कल सहस्रों व्यक्ति के सामने उसने हमारे भेदों को स्पष्ट रूप से कह दिया।

फादर ऐन्सलेम—(वे सबरी से) रस्सी से लिपटा हुआ खंजर अब भी उसकी छाती में डूब सकता है श्रीमान!

युवक—नहीं अब उसे जीवितही रहने दो। वह बिलकुलही अज्ञ है कि किस के मकान को उसने वेनिस में देखा था। इसके अतिरिक्त (कुछ घमंड से) हमारा घराना अब इतना दृढ़ है—इतना अधिकारी हो गया है कि ऐसी २ बातों की परवाह नहीं कर सकता। नहीं—उसे जीवित रहने दो, मैं आज्ञा देता हूं।

फादर ऐन्सलेम—(नरमी से) जैसी आज्ञा। मैं श्रीमान के घराने के ऐहसानों से इतना दबा हुआ हूं कि यदि आप की आज्ञा प्राण के देने से प्रतिपालन की जा सकती हो तो मैं उसे भी देने को प्रस्तुत हूं।

युवक—वास्तव में तूने हमलोगों की सेवा तन मन लगा के की है ईश्वर चाहेगा तो शीघ्रही इसका प्रतिफल तुझे मिल जायेगा।

"आह! श्रीमान्!" फादर ऐन्सलेम ने यह चिल्ला के कहा। उसका चेहरा मारे प्रसन्नता के इस समय प्रफुल्लित हो गया।

"आह ! श्रीमान् मैं किन शब्दों से आपकी असीम दया का धन्यवाद दूं।"

युवक—मैं तुम्हें कदापि नहीं भूल सकता धर्मपिता । परन्तु मेरी बहिन ने आने में इतना विलंब क्यों लगाया ? मैंने उसे सैकड़ोंही बेर दृढ़ता से समझा दिया है कि वायना की गलियों में खुल्लम खुल्ला घूमना हमलोगों के निमित्त लाभदायक नहीं है—परन्तु उसका खुदपसन्द स्वभाव—उसकी स्वतंत्र आत्मा—उसे भूतों के भांति कुल नगर का चक्कर दिलाया करती है । स्थिर हो के एक क्षण भी वह एक स्थान पर नहीं ठहरती ।

फादर ऐन्सलेम युवक को इस बात का कोई उत्तर देनेही को था कि सहसा द्वार खुला और वही नकाबपोश लेडी—वा फोष्ट की नई प्रेमिका कोठरी में प्रवेश करती दिखाई पड़ी ।

अढ़तालीसवां बयान ।

एडा की चिट्ठी—आरसी ।

उस लेडी ने कोठरी में घुसतेहीं नकाब तो एक ओर फेंक दिया और आप मारे थकावट के एक ओर एक आरामकुरसी पर यह कहती हुई गिर पड़ी—

"शराब, भाई ! मैं थक के चकना चूर हो गई हूं । सीज़र—मैं कहती न हूं—वही युवक वा सीज़र । (शराब को एक बिल्लौर के गिलास में उँडेलते हुये हँसी की राह से) और इसमें थोड़ा विष भी मिला दूं जिस में तुम्हें रोज़ २ थकना न पड़े । जिसमें मेरी हुकुमउदूली आगे से कभी न किया करो ।

लेडी—नहीं मेरे प्यारे भाई (मुसकरा के) इस प्रकार, व्यर्थ, मुझे दोषी न ठहराओ । क्या तुम्हें नहीं मालूम (इतना कहते उसके चेहरे का रङ्ग गुलाबों से काला होगया) कि यदि हमलोग आपस में लड़े झगड़ेंगे तो इस में कोई संदेह नहीं कि उसका परिणाम बड़ाही भयानक होगा ।

इतना कह के वह शराब का भरा हुआ प्याला चढ़ा गई ।

लेडी—परन्तु बेवकूफ सीज़र ! (इतना कह के वह आरामकुरसी की पीठ से बिलकुल टिक गई, इसका रहस्यमय अँगूठी वाला हाथ बिलकुलही नङ्गा था और फोष्ट भली भांति देख सकता था कि उसकी उँगली में इस समय शेर के मुँहवाली अँगूठी है) अपने घराने में हमें और तुम्हें कदापि किसी बात पर झगड़ना नहीं

चाहिये। हम दोनों एक दूसरे की हार्दिक कामनाओं से भली भाँति विज्ञ हैं। साथही हमलोगों को एक दूसरे की सहायता के निमित्त तैयार रहना भी परमावश्यक है। इस कारण मेरे प्यारे भाई मैं कहती हूं कि इस प्रकार की बातें न किया करो।

सीज़र—अच्छा तो फिर जो मैं कहता हूं उसे तुम मानती क्यों नहीं ? कौन सा कारण है जिस से तुम तमाम नगर में घूमा करती हो ?। जब वज़ीर आज़म ने जो आजकल शांहसाह जरमनी का बड़ाही विश्वासपात्र वज़ीर माना जाता है इसबात को स्वीकार कर लिया है कि हम शांहशाह मेकसमिलियेन को तुम्हारे पिता से दोस्ताना बरताव करने के निमित्त समझा रहे हैं तो फिर तुम व्यर्थ का उद्योग और परिश्रम क्यों कर रही हो। भला सोचो तो सही कि यदि शांहशाह को कहीं समाचार मिल जावे कि हमलोग यहां ठहर के वज़ीर आज़म को इस काम के लिये उसका रहे हैं तब तो सबही किया कराया खेल बिगड़ जावेगा न ? बादशाह बिगड़ के फिर एक भी किसी की कभी न सुनेगा।

लेडी—हां हां, यह मैं मानती हूं—मानती हूं। परन्तु ये सब बातें एक प्रकार से निरर्थक हैं। कल तो हमलोग वायना छोड़ के चलेही जावेंगे और उधर शांहशाह मेकस्मिलियन भी उस कागज़ पर हस्ताक्षर करने को प्रस्तुत हुआ है जिसमें यह लिखा है कि हमारा पिता जिस्को अपना वैरी समझे उसे निधड़क कटवा डाले। तो फिर अब काहे का डर है। और तुम जो यह समझाते हो कि मेरा इधर उधर का घूमना निरर्थक है सो वैसा नहीं है। मैं बिना प्रयोजन के ऐसे घूमा नहीं करती। क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि मैं उसी समय ठीक बेरिन ज़ेरनिन के महल के नीचे जा पहुँची थी जब वाल्सटेन कैदी बनाकर हवालात में भेजा जा रहा था ? और निस्संदेह यह उन्हीं चन्द बातों का असर है कि जिन्हे मैंने उस्के कानों में कह दिया था और उसी से उसने हमारे भेदों को नहीं खोला। नहीं मसल मशहूर है कि मरता क्या न करता। वह सब बातें कह देता जिससे पिता का सिंहासन डाँवा डोल हो जाता। देखा नहीं कि अदालत में मारे भय के उसकी जिह्वाही बंद हो गई थी। फिर ऐसे समय यदि उसे उस आशा की ढाढ़स न रहती तो क्या वह बिना कुछ कहेही रहता।

सीज़र—हां बहिन यह तो मैं मानता हूं कि यह काम तुमने परम बुद्धिमानी और अत्यन्त चातुरी का किया।

लेडी—और सुनिये (मुस्कराके) तुमने मुझे ! प्यारे भाई अदालत में भी जाने से मना किया था। परन्तु मैंने जो उस समय अनुमान किया तो वह २ बातें मुझे दिखाई पड़ीं जिसे तुमने बिलकुलही नहीं सोचा था। बस यह अनुमान करते ही मैंने तुम्हारी आज्ञा भङ्ग की—और अदालत में पहुँचीही पर पहुँची और जिस्का परिणाम यह हुआ कि मुझसे तथा कौन्टओरेना से साक्षात हुई और मैंने उससे कैदियों को कैदखाने से गायब करने के निमित्त कहा और उसने वैसाही किया भी जैसा तुमपर प्रगट हो चुका है।

सीज़र—यह तो मैं स्वयं मानता हूं कि जो कुछ तुमने किया सौभाग्यवश बहुतही अच्छा किया परन्तु आज रात को जो तुम इतनी देर लों बाहर घूमती रहीं तो यदि दैवात कोई आपत्ति आ पड़ती तो जितना तुमने नफा नहीं किया था उस्का सहस्रों गुना नुकसान हो जाता।

"नुकसान!"

लेडी ने भुजङ्गिनी के भाँति मस्तक उठा कर सदर्प इसी बात को कहा और फिर वह आगे बोली—

"आज संध्या को भी मैं तुम्हारी बिना आज्ञा के नगर में घूमने घामने चली गई थी सीज़र! जिस्का परिणाम यह हुआ कि अब हमलोगों की एक भारी पहुँच शाही दरबार में हो गई।"

सीज़र—अच्छा तो इस बात का सबूत क्या है—तनिक स्पष्ट रूप से कहो तो सब मालूम हो जाय और यदि जैसा तुम कहती हो यह बात ऐसीही है तो समझ रखना कि आज से मैं कदापि तुम्हे बाहर जाने देने से न रोकूंगा—तुम सदैव अपने कार्यों के निमित्त मनमाना बाहर जा सकोगी।

लेडी—अच्छा तो ध्यानपूर्वक सुनो—पहले तो मैंने ग्रेगरी वालसटेन की स्त्री एडा को मार डाला है—"

सीज़र—(घृणा से) वाह! तो यही आज का बड़ा भारी काम था जिसे तुमने किया है?

लेडी—अजी घबड़ाये क्यों जाते हो तनिक ध्यान देके सुनो तो सही—एडा कौन्ट औरेना की प्रेमिका थी।

सीज़र—तब तो और भी कठिनता हुई क्योंकि कौन्ट भी अब अपनी प्रेमिका के हत्यारे के पता लगाने में कोई बात उठा न रक्खेगा।

लेडी—(घमंड से) परन्तु कौन्ट अब हम लोगों के वश में है—और देखो अब हमें बीच में न टोकना—सुनो तो सही देखो मैं सब सुनाये देती हूं। एडा को मार के मैंने कारणवश उसका बटुवा इत्यादि भी ले लिया जिसमें एक चिट्ठी मुझे दिखाई पड़ी और जिसे एक दृष्टि से मैं पढ़ भी गई हूं। इस चिट्ठी में एक बहुत बड़ा रहस्य लिखा हुआ है—एक इतना बड़ा गुप्त रहस्य कि जिसे सुन के तुम" इस समय फोष्ट घबड़ा के पिशाच की ओर फिरा और उसका हाथ पकड़ के शीघ्रता से वहां से निकलने के लिये उससे कहा।

इस पर पिशाच ने केवल अपनी गरदन हिला दी जिसका तात्पर्य यह था कि तनिक और ठहरो यहां का रङ्ग ढङ्ग भली भांति देख लो तो फिर चलेंगे।

परन्तु फोष्ट को बड़ा भारी भय तो इसका लग रहा था कि कहीं उस चिट्ठी में जो एडा की है और जिसे यह लेडी पा गई है उस पालनेवाली कोठरी से लड़कों के बदलने का बृत्तान्त न दिया हो नहीं तो उसके सुनतेही पिशाच सब समझ जायगा तो फिर बड़ीही कठिनता होगी यही विचार के इसने पिशाच के कान में शीघ्रता से कहा—

"मेरे साथ आ! मैं तुझे अपने लिखे हुऐ अहदनामे के नाम से आज्ञा देता हूं।"

अब पिशाच वहां ठहर न सका। क्योंकि वह भी उस अहदनामे के तोड़ने का साहस नहीं कर सकता था। उसने फोष्ट के दोनों हाथ पकड़े और एक क्षण में उसी बुर्ज के नीचे ला खड़ा किया जहां से एक बार ये दोनों उड़ के गयेथे। इन लोगों से कुछही अन्तर पर एडा मुर्दा पड़ी हुई थी।

पिशाच—(तानेकी राह से) मुझे आश्चर्य है कि श्रीमान् ऐसे उत्तम जलसे से इतना शीघ्र क्यों चले आये!

फोष्ट—चुप रह! मैं तेरा स्वामी हूं और तू मेरा गुलाम! मेरी बातों में दखल देने का तुझे कोई अधिकार नहीं है।

पिशाच—हां हां, इसे मैं अस्वीकार कब करता हूं। हां तो श्रीमान् की और भी कोई आज्ञा है?।

फोष्ट—हां एक और है। मुझे उस स्त्री का नाम बता दे कि जिसके हाथों एडा मारी गई है।

पिशाच—पर एक वह नाम है कि जिससे लगभग कुल यूरोप के लोग विज्ञ हैं, यह एक

वह नाम है कि जिसे सुनके बड़े २ वीरों की छाती दहल जाती है। क्या आप उसका नाम सुनेंगे ?

फोष्ट—(बेसबरी से चिल्ला के) हां सुनेंगे। बोल उसका नाम क्या है ?

यह सुनके पिशाच ने अपना हाथ फौस्ट के कन्धे पर रक्खा और अपने लम्बे शरीर को उसकी ओर निकट खिसका के उसका नाम धीरे से उसके कानों में कह दिया !

"आह !" फोष्ट ने कांप के कहा—हां कांप के, क्योंकि वह नाम सुनतेही उस पर भी एक प्रकार की कँपकँपी आ गई।

"और यह स्त्री—"

इतना कहके वह फिर रुका और कुछ ठहर के फिर बोला—

"कहती है कि मैं उसके वश में हूं !"

उसी समय एक सिपाही जो उस राह से जा रहा था एडा की लाश को दूर से देख के निकट आया और पहचानतेही शीघ्रता से, निकट के थाने पर जा पहुँचा और उसे वहां से उठा ले जाने के निमित्त बहुत से सिपाही अपने साथ ले आया परन्तु सिपाहियों ने जब लाश देखी तो हैरान रह गये कि वस्त्र तो यह मरदाना पहने हुये हैं परन्तु है यथार्थ में स्त्री।

इन सिपाहियों में से एक वह सिपाही भी था जो औरों के साथ ग्रेगरी वाल्स्टेन फ्रिज़ तथा शर्म्मन को गिरफ्तार करने गया था और वहां से उसने एडा की सूरत भी देखी थी। अब जो उसने इस लाश को देखा तो सोचने लगा कि मैंने इस सूरत की स्त्री को कहीं देखा अवश्यही है परन्तु कहां देखा है यह उसे याद न पड़ता था। परन्तु अब सोचते २ उसे मालूम होगया कि यह लाश ग्रेगरी वाल्सटेन के स्त्री की है।

यह समाचार एक घण्टे के उपरान्त समस्त वायना में फैल गया और खबर उड़ते २ अन्त आटू पेनिल्ला के कानों पर्यंत भी पहुंची जिसे सुनतेही वह दौड़ा हुआ थाने में आया।

भाई ने देखा कि समाचार यथार्थही में ठीक मिला था ! थाने में—एक भद्दे और ऊँचे नीचे बेंच पर, एक मोटे फौजी कोट में ढंकी हुई एक समय की स्वरूपवती, परन्तु पापिष्ठा एडा बेजान पड़ी हुई थी।

लाश देखतेही आटू जमीन पर गिर पड़ा और फुट २ के रोने लगा।

सिपाही सब चले गये और बेचारा आटू अपनी बहिन की लाश के लिये तड़प रहा था। यह वही उसकी बहिन थी जिसने कभी बुराई छोड़ के भलाई न की और साथही अपने अनाथ भाई की भी सामर्थ रहते कोई सुध न ली थी।

"एडा! मेरी बहिन—मेरी प्यारी बहिन" यह उसने उसके सुफेद खुले हुये होठों तथा निकली हुई आंखों को चूम के कहा और फिर रोता हुआ बोला—

"हाय मेरी प्यारी बहिन, तू इतना शीघ्र मुझसे क्यों पृथक हुई! कदाच तूने अभी अपने पापों के निमित्त भगवान से क्षमा भी न मांगी होगी। क्या तेरे भाग्य में खञ्जरहीं से मारा जाना लिखा था। क्या परमेश्वर को तुझे ऐसाही दण्ड देना स्वीकार था। परन्तु आह! यदि तू बहुत बड़ी पापिष्टा थी तो भगवान का नाम भी करुणासागर दीनदयाल है। यह सारा खेल उसी का है वह कुल बातों को जानता है संसार में जो उस पर भरोसा रखता है उसको वह राह दिखलाता है—अच्छा बहिन भगवान तेरी कब्रको बैकुण्ठ बनाये तेरे कुल दुराचारों को क्षमा करे। आह! मैं बुरे भाग्यों का बर्ताव भली भांति देख चुका हूं, मैंने पेट भर के दुःख के प्याले पीये हैं—मैं जानता हूं कि गरीबी कैसी कठिन होती है—आवश्यकता बड़ी बुरी होती है—परन्तु उस पर भी हे भगवान्! मुझे तेरा सहारा बराबर रहा—और जिस समय मैं भूख से दुःखी होके सरदी से ठिठुर के—पानी के प्यास से विह्वल होके—हे जगदीश्वर तेरे सामने प्रार्थना के निमित्त अपना सिर झुका देता तो एक भारी आशा मेरे आत्मा को हो जाती थी—और एक आवाज मेरे कानों में यह कहती सुनाई पड़ती थी "तेरी प्रार्थना सुनी गई है!" आह प्रार्थना करना कैसी उत्तम बात है—भगवान पर निर्भर रहने में कितना आनन्द आता है—सब आनन्दों की सीमा है—परन्तु यह आनन्द असीम है।

रोता २ आटू अपनी बहिन के लाश के बराबर में घुटने टेक के खड़ा हो गया और देर लों ईश्वर के सामने उसके पापों—महापापों के क्षमा करने के निमित्त प्रार्थना मांगता रहा।

कुछ देर लों वह इसी प्रकार प्रार्थना करने के उपरान्त उठ बैठा अब इस समय उसका चेहरा प्रफुल्लित जान पड़ता था जिससे ऐसा मालूम पड़ता था कि मानों उसकी प्रार्थना स्वीकार हो गई है।

इसी समय द्वार खुला और बैरेन जेरनिन अपने भृत्यों सहित कफन तथा संदूक लिये हुये कोठरी में आन पहुँचा और आटू के ओर बढ़के तथा उसका हाथ अपने हाथ में लेके दुखित स्वर से यों कहने लगा—

"मेरे प्यारे युवक मित्र, तुम्हारी बहिन की लाश को पहिले तो मैं अपने मकान पर और फिर वहां से कबर में गाड़ने के निमित्त ले जाऊँगा।

बेरेन की इस बात ने आटू को बड़ाही अनुगृहीत बनाया और उसके हृदय में ढ़ाढ़स हो गई।

जैसा थिउडोर ने कहा वैसाही किया गया। लाश पहिले उठके बेरेन ज़ेरानिन के महल में गई और फिर वहां से बड़े धूम धाम के साथ नगर के एक प्रसिद्ध मक़बरे में गाड़ी गई।

दूसरे दिवस थेरिज़ा तथा आर्कडचेज मेरिया यह वृत्तान्त सुनके रोती हुई आटू के पास आईं। उन्होंने अपने उस बचपन के साथी के चले जाने पर जो अपने पापों के कारण बड़ीही बोझिल हो चुकी थी बड़ाही खेद प्रकाश किया।

एडा के कबर में गाड़े जाने के उपरान्त बहुत से पादड़ी उसकी कबर पर उसकी आत्मा को सुख पहुँचने के निमित्त प्रार्थना माँगने पर नियुक्त किये गये।

इति दूसरा भाग।